MARJ-07

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

साहित्य शास्त्र अर पाठालोचन

ISBN/978/81 - 8496 - 258 - 1

MARJ-07

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

साहित्य शास्त्र अर पाठालोचन

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

अध्यक्ष
प्रोफेसर (डॉ.) नरेश दाधीच
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक / समन्वयक / सदस्यगण

संयोजक :
प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

समन्वयक :
डॉ. मीता शर्मा
सहायक आचार्य, हिन्दी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

1. **डॉ. हीरालाल माहेश्वरी**
   पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
2. **श्री रघुराजसिंह हाडा**
   वरिष्ठ कवि-साहित्यकार,
   झालावाड़ (राजस्थान)
3. **डॉ. गोरधनसिंह शेखावत**
   निदेशक, श्री कृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय
   सीकर (राजस्थान)
4. **डॉ. अर्जुनदेव चारण**
   अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
   जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

सम्पादन एवं इकाई – लेखन

सम्पादक
प्रो. (डॉ.) कल्याण सिंह शेखावत
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

इकाई–लेखक	इकाई संख्या
1. डॉ. एम.एम.एस. माथुर (से.नि.) पूर्व सह आचार्य, राजस्थानी विभाग जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर (राज.)	**1,2,8**
2. डॉ. मंगत बादल पूर्व व्याख्याता हिन्दी (से.नि.) शहीद भगत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय रायसिंह नगर, श्रीगंगानगर (राज.)	**4,5,6,7,9,10,11,12**
3. डॉ. मदन सैनी व्याख्याता हिन्दी ब.ज.सी. रामपुरिया जैन महाविद्यालय बीकानेर (राज.)	**3,15**
4. डॉ. प्रकाश अमरावत व्याख्याता राजस्थानी डूंगर महाविद्यालय बीकानेर (राज.)	**13,14**

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. (डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रो. (डॉ.) एम. के. घड़ोलिया**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक (अकादमिक)	प्रभारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : फरवरी, 2011 ISBN/978/81 - 8496 - 258 - 1

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में 'मिमियाग्राफी' (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
कुलसचिव, व.म.खु.विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित।
दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर द्वारा 500 प्रतियां मुद्रित।

MARJ-07

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

साहित्य शास्त्र अर पाठालोचन

इकाई सं.	इकाई–शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	खण्ड – I	
1.	साहित्यसास्त्र रो रूप अर विवेचन	1–14
2.	भारतीय साहित्यसास्त्र रा तत्व, मूल प्रेरणा अर प्रयोजन	15–29
3.	भारतीय काव्यसास्त्र : सामान्य परिचै	30–44
	खण्ड–II	
4.	भारतीय काव्यसास्त्र : ध्वनि सम्प्रदाय	45–52
5.	भारतीय काव्यसास्त्र : वक्रोक्ति सम्प्रदाय	53–59
6.	भारतीय काव्यसास्त्र : अलंकार सम्प्रदाय	60–67
	खण्ड–III	
7.	रस सिद्धान्त काव्य सास्त्र : सामान्य जाणकारी	68–80
8.	पास्चात्य मतानुसार साहित रा तत्त्व, मूल प्रेरणा अर प्रयोजन	81–91
9.	प्रमुख चिंतक–डॉ. आई. ऐ. रिचर्डस अर वांरा सिद्धान्त	92–101
10.	प्रमुख चिंतक–कॉलरीज अर वांरा सिद्धान्त	102–110
11.	प्रमुख चिंतक–अरस्तू अर वांरा सिद्धान्त	111–120
12	प्रमुख चिंतक–क्रोंचे अर वांरा सिद्धान्त	121–129
	खण्ड – IV	
13.	राजस्थानी छंदसास्त्र अेक ओळखाण	130–145
14.	राजस्थानी काव्य रा प्रमुख छंद, अलंकार अर काव्य दोस	146–165
	खण्ड – V	
15.	पाठालोचन : सिद्धान्त, प्रक्रिया अर प्रशिप्त अंश	166–175

खण्ड परिचै

खण्ड–I

ईं खण्ड में तीन इकाईयां है। इकाई 1 में साहित्य सास्त्र रा रूप री जाणकारी रै साथ–साथ उणरो विवेचन करयौ गयो है। इकाई 2 में 'भारतीय साहित्य सास्त्र रा तत्व, मूळ प्रेरणा अर प्रयोजन' नै समझायो गयो है। इकाई 3 में भारतीय काव्य सास्त्र रो सामान्य परिचय दियो गयो है।

खण्ड–II

ईं खण्ड में तीन इकाईयां है जिणामें भारतीय काव्य सास्त्र रा प्रमुख सम्प्रदायां री विगत मंडी है। इकाई 4 में ध्वनि सम्प्रदाय, इकाई 5 में वक्रोक्ति सम्प्रदाय अर इकाई 6 में अलंकार सम्प्रदाय री जाणकारी कराई गई है।

खण्ड–III

ईं खण्ड री दो इकाईयां में 'पाश्चात्य' काव्य सास्त्र रो परिचै दिरीजियो है। इकाई 7 में 'पाश्चात्य' काव्य सास्त्र री सामान्य जाणकारी कराई गई है। इकाई 8 में 'पाश्चात्य' मत सूं काव्य सास्त्र रा तत्वां री विगत दी गई है।

इण खण्ड री चार इकाईयां है में पाश्चात्य काव्य सास्त्र रा प्रमुख चिंतकां अर वांरा सिद्धान्तां री जाणकारी कराई गई है। इकाई 9 में 'पाश्चात्य काव्य सास्त्र रा प्रमुख चिंतक आई.अे. रिचर्डस' री जीवनी, वांरा सिद्धान्त अर योगदान री निरख–परख हुई है।

इकाई 10 में 'पाश्चात्य' काव्य सास्त्र रा प्रमुख चिंतक 'कालरीज अर उणारी जीवनी काव्य सिद्धान्त अर योगदान नै दरसायो' गयो है। इकाई 11 'पाश्चात्य' काव्य सास्त्र रा प्रमुख चिंतक 'अरस्तुरी जीवनी, काव्य सिद्धान्त अर योगदान' री जाणकारी दी गई है अर इकाई 12 में 'पाश्चात्य काव्य सास्त्र रा प्रमुख चिंतक 'क्रांचे री जीवनी, काव्य सिद्धान्त अर योगदान' री विगत है।

खण्ड–IV

ईं खण्ड री इकाई 13 में 'राजस्थानी छंद सास्त्र' अर इकाई 14 में राजस्थानी भासा रा प्रमुख छंदां, अलंकारां अर काव्य दोस री विगत है ।

खण्ड–V

इण खण्ड में पाठालोचन पद्धति पर विचार हुयो है। इणमें एक इकाई है। इण 15वीं इकाई में पाठालोचन रा सिद्धान्त अर प्रक्रिया नै समझाई गई है। पाठालोचन रो सम्बन्ध वां जूना ग्रंथां रै सम्पादन अर समीक्षा सूं जुड़यौड़ो है, जिण ग्रंथां री एक सूं ज्यादा हाथ लिखी पोथ्यां मिळै–उण ग्रंथ रा सम्पादन में पाठालोचन सूं उणरा मूळपाठ तक पूग्यो जा सकै है।

इकाई – 1

साहित्यसास्त्र रो रूप अर विवेचन

इकाई रो मंडाण –

1.0 उद्देस्य

1.1 प्रस्तावना : साहित्य रो अरथ अर सरूप

1.1.1 उतपत

1.1.2 परिभासा : भारतीय अर आथूणै विद्वानां रा मत

1.2 साहित्य रो उद्देस्य : भारतीय अर आथूणै विचारकां रा मत

1.3 साहित्य : विद्या कै कला

1.4 साहित्य री विधावां (भेद रूप वरगीकरण)

1.4.1 विधावां रो वरगीकरण : विभिन्न विद्वानां रा मत

1.4.1.1 भारतीय विद्वानां री दीठ सूं साहित्यिक विधावां :

1.4.1.2 पास्चात्य विद्वानां री दीठ सूं साहित्यिक विधावां।

1.4.2 वरगीकरण रा प्रमुख आधार

1.4.2.1 सैली री दीठ सूं

1.4.2.2 माध्यम री दीठ सूं

1.4.2.3 विसै री दीठ सूं

1.5 इकाई रो सार

1.6 अभ्यास रा प्रस्न

1.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1.0 उद्देस्य –

इण इकाई रो उद्देस्य विद्यार्थियां नैं साहित्य रै अरथ नैं समझावता हुया साहित्यसास्त्र रै सरूप सूं अवगत करावणो है। भारतीय अर आथूणै विद्वानां रै मतै साहित्य रै सरूप अर उणरै उद्देस्य री व्याख्या रो पण अठै खुलासो हुवैला। इण ब्योरै रै पूठै म्हां विद्यार्थियां नैं साहित्य कला है कै विद्या, बाबत विचार करण रो ओसर देवालां। आखर में म्हां साहित्य रै विविध वरगीकरण। अर खास–खास विधावां–री ओळखांण करावालां।

1.1 प्रस्तावना : साहित्य रो अरथ अर सरूप

1.1.1 उतपत –

भासा रै विकास सागै मिनख आपरै सुख–दुख, हास–विखै नैं आपस में बांटण री कोसिस करी हुवैला। मिनख रै इण व्यापार नैं लेखन कला कै लिपि रै विगसाव सूं ओजू बधाप मिळी हुसी। आपरी बुद्धि मुजब वो इण नैं अेक ठावो नांव दिरायो साहित्य। मतळब साहित्य रो उत्स है – व्यापक जीवन, उणमें समायोड़ी विध दैवी, प्राक्रतिक अर मिनख रा सिरजियोड़ा कार्य–कलाप। इण भांत मानखै री सामूहिक आफळ सूं ई साहित्य री उतपत व्ही हुवैला।

संस्क्रत – ग्रंथां में साहित्य सारू 'वाड.मय' सबद बरतीजियो है। भासा–विंग्यान री दीठ सूं 'साहित्य' तत्सम (संस्क्रत रो) सबद है, जिणरी उतपत सम् (उपसर्ग) + धा (धातु) + यत् (प्रत्यय) त्र सहित है। इण संजोग

सू 'सहित' रो भाववाचक सबद साहित्य है। अठे धा धातु व्याकरण मुजब 'हित' बणै जिणरौ अरथ हुवै–धारण करणो (धा–धारणे)। इण उतपत सूं कैय सकां क जिणमें सगळी तरिया सूं धारण करण, सागै रैवण रो भाव मौजूद हुवै, वो साहित्य कैईजै।

संस्क्रत में साहित्य सबद री उतपत इण तरिया ई करीजै – ''सहितस्य भावः इति साहित्यम्'' अर्थात् जिण (रचना) में साथ रैवण कै हुवण रो भाव रैवै, वो साहित्य है। इण भांत 'स–हित' कै 'सह–हित' अर्थात् हित सागै हूवणो ई साहित्य है। अेक उतपत यूं पण कैईजै – 'हितेन सह (सहितम्) तस्य भावः साहित्यम् 'अर्थात् प्राणिमात्र रै हित रो भाव धारण करण वाळी रचना साहित्य है। इण दीण सूं ज्योतिस, गणित, भूगोल, राजनीति अर दर्सन पण साहित्य कैईजैला, क्यूं क हित साधन तो अै रचनावां भी करै। 'पण भावलोक रै समावेस रै अभाव में अै रचनावां साहित्य वरग री नीं कैयी जा सकै। आं रचनावां री प्रक्रिया बारली (बाह्य) अर भौतिक बेसी है। तात्पर्य ओ क साहित्य में हित रै सागै भाव रो सामंजस हुवै। ओ भाव सामंजस ई आनन्द देवै। अतः साहित्य में आनन्द तत्व रो समावेस जरूरी है।

इंगरेजी रै 'लिटरेचर' सबद में आनन्द देवणिये साहित्य (ललित साहित्य) रै सागै ई इतियासं, भूगोल, दर्सन, गणित, जोतिस आद (ज्ञान रो साहित्य) पण समावेसित है। 'लिटरेचर' सबद री उतपत 'लैटर्ज' सूं करीजै जिणरो अरध हुवै– आखर – समूह।' इण दीठ सूं म्हां साहित्य नैं 'आखरां रो समूह कै विस्तार मात्र 'कैय सकां। इंगरेजी में लिटरेचर व्यापक रूप में बरतीजै पण संस्क्रत में इणरो बर्ताव सांकड़ै रूप में ई हुयौ है। इण वास्तै साहित्य वा विद्या है जिकी मानखै रै हित रो संपादन करै। अर्थात् साहित्य में आनन्द मिश्रित कल्याण रो भाव जरूरी है।

1.1.2 परिभासा :–

'साहित्य' सबद री इण उतपत पांण संस्क्रत, हिन्दी अरं आथूणै विद्वान साहित्य नैं परिभासित करता थका उणरै सरूप नें थरपियो है। भारतीय आचारिज साहित्य नैं काव्यरूप में पण परिभासित कर्‌यौ है, क्यूं क अठै साहित्य रै सिरजण रो सरूआती माध्यम पद्य ई रैयो। अतः अठै काव्य सबद पण साहित्य सारू रूढ़ रयों। इण रै अलावा साहित्य कै काव्य 'कला' में ई भेद गिणिजियो अतः कई विद्वान कला रै संदर्भ में पण साहित्य री परिभासा करी है।

भारतीय अचारिजां री परिभासावां –

यूं तो आचार्य भरत साहित्य कै काव्य माथै स्वतंत्र रूप सूं कोई विचार नहीं प्रकटिया, पण नाटक नैं काव्य रो अेक भेद मानता थका वै साहित्य अथवा काव्य कला री सरावणा यूं करी है – 'जिणरी रचना कंवळै अर ललित पदां में करीजै, सबद अर अरथ गूंढ़ नीं हुवै, जन–साधारण जिण नैं सरलता सूं समझ जावै, जिकी तरक– संगत हुवै .. आदि (गुणां सूं सम्पन्न रचना) साहित्य है।' आं विचारां में ओ खुलासो तो हुवै ई क नाटक (त्रसाहित्य) रो संबन्ध सामान्य जन सूं हुवै। इण भांत साहित्य रो 'सहित' भाव पण अठै रैवै।

आचार्य भारत रै आं विचारां रै पूठै आचार्य भामह री आं परिभासा सबसूं पैलां साहित्य नैं परिभासित करै – ''शब्दार्थौ साहितौ काव्यम् ''अर्थात् सबद अर अरथ सूं संजुक्त या सहित रचना काव्य (साहित्य) कईजै। भामह री इणी परिभासा सूं विद्वान 'सहित' सबद नैं अंगैज 'र उण री भाव वाचक संग्या बणाय लीवी –'साहित्य' दण्डी री परिभासा पण इणी तरीया री है– ''इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'' अर्थात् इष्ट कै चावै अरथ नैं प्रगट करण वाळी पदावली रो नांव काव्य कै आधुनिक संदर्भ में साहित्य है। इणी तरिया रा विचार ध्वन्यालोककार आनन्दवर्धन रा है–' ''शब्दार्थ शरीरं तात्वकाव्यम्'' अर्थात् काव्य (साहित्य) तो सबदारथ – सरीर वाळों हुवै, जिणरी आत्मा कै वास्तविक तत्व कुछ न्यारो ई है। काव्य रो व्यावर्त्तक तत्त्व जिकी कोई वस्तु हुवै वो ई काव्य री आत्मा है। इणी व्यावर्त्तक तत्व री विरोळ सारू भारतीय काव्यसास्त्र में अलंकार, नीती, ध्वनि, रस, वक्रोक्ति, औचित्य तत्वां नैं मानता थका आं सम्बन्धित काव्य सम्प्रदाय थरपीजिया।

आचार्य रूद्रट ''तत्तु शब्दार्थो काव्यम्'' कैयर साहित्य नैं परिभासित करै। रसवादी आचार्य विस्वनाथ री आ परिभासा घणी चावी रैयी'' वाक्यं रसात्मकम् काव्यम्'' पण्डितराज जगन्नाथ काव्य (साहित्य) री परिभासा

''रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'' अर्थात् रमणीय अरथ री उतपत करण वाळा सबद काव्य है, कैयर कीवी है। आचार्य कुन्तक रै मुजब 'सबद अर अरथ रो वो ठावो संजोग साहित्य है, जिका में रमणीयता, मनोहरता, आनन्द–भाव अर रागात्मक भाव विराजै– साहित्यमनयोः शोभा शालितां प्रति काव्यसौ। अन्यूनानतिरिक्तत्व मनोहारिण्यवास्थिति।।

कुन्तक री आ परिभासा सागै अरथां में साहित्य रै संकुचित अरथ (ललित साहित्य) अर व्यापक अरथ (ज्ञान रो साहित्य) में अन्तर बतावणं वाळी है। आनन्दवर्धन, आचार्य विस्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ आदि आचारिजां री परिभासा इणी वरग री हैं, ज्यां में लोकोत्तर आल्हाद रै ग्यान री गोचरता समाहित है।

संस्क्रत रै अलावा भारतीय भासावां बीजा काविसर पण साहित्य (काव्य) नैं आपरी दीठ सूं परिभासित कर्‌यो है। महाकवि तुलसीदास काव्य रै पांण साहित्य में लोकहित नैं महताऊ मानता थका उण नैं यूं परिभासित करै –

कीरति भणिति भूति भल सोई ।

सुरसरि–सम कहं हित होई ।।

रीतिकाल रा प्रमुख कवि चिंतामणि काव्य (साहित्य) नैं परिभासित करता हुया लिखै –

सगुनालंकारान सहित, दोष रहित जो होई।

शब्द–अर्थ–ताको कवित, कहत विबुध सबकोई।।

अर्थात् गुण – अलंकार सहित अर दोसां सूं रहित अरथ वाळा सबद कविता है। कवि ठाकुर पिंडतां अर चतुर मिनखां रो मनोरंजन करण वाळी सबदावली नैं कविता (साहित्य) वै – ''पण्डित और प्रवीनन को जोऊ चित्र हरे सो कवित्त कहावे ।''

राजस्थानी भासा रा मानीता निबन्धकार श्री कुंवरकृष्ण कल्ला कविता (साहित्य) री प्रवृत्ति पांण उण नैं परिभासित करण री आं सबदां में आफळ करै– ''कविता सोरठ सी अलल बछेरी है, जिण पर मोत्या जड़ी आखरां की लगाम सजीजै । पारखी फेरण वाळा सईस उण नैं, पण उण पर चढ़णै री हूंस तो कोई क छैल जवान ही कर सकै!'' मतलब ओ क कविता कै साहित्य रचना सरस अर अलंकारिक सबदावली सूं भरपूर हुवै जिण रौ रसास्वादन उण नैं समझण वाळो रसिक इज कर सकै।

राजस्थानी भासा – साहित्य रा विद्वान डॉ. गोवर्द्धन शर्मा साहित्य री व्याख्या आं ओळियां में करै –'' जुगां सूं मिनख ज्ञान री खोज में खपियों, पीढ़ियां तर पीढ़ियां कोसीस की। कामयाब हुयो। इण ज्ञान रो अंपूरब भंडार, अनुभव रो आगार अर जमानै री झंकार – इणरो नाम साहित। मानखै रै सुख–दुख री कांणी, हारजीत री विगत अर उन्नति रो इतिहास – इण रो नाम साहित। अच्छाई रो घर, पूटरपणै रो माप नै मनां रो दरपण – इण रो नाम साहित। भावनावां रो चितराम, जीवण रो अरथ नै धरम रो मून–इण रो नाम साहित। जगत रो सार, तरक्की रो कारण नै धरती नैं सरग बणावण वाळो – इण रो नाम साहित। इण धरती माथै जो भी चोखो , सुन्दर अर हितकारी – उण रो नाम साहित।''

बांगला रा कवीन्द्र रविन्द्रनाथ टैगोर साहित्य नैं परिभासित करता हुया कैवें क साहित्य सबद सूं साहित्य में मिळण रो भाव लखावै। वो फगत भाव–भाव रो, भासा–भासा रो, ग्रंथ–ग्रंथ रो मिळण कोनी, बल्कि मानखै सागै मानखै रो, अतीत रै सागै वर्तमान रो, दूर रै सागै नैड़ै रो घणाई अन्तरंग मिळण पण है, जिको सहित्य नैं छोड़'र कठै ई संभव कोनी।' इण भांत रवी बाबू साहित्य में आन्तरिक अर बाह्य दोया रो मिनळ अर सामंजस्य नैं महताऊ मानै। आ परिभासा साहित्य रै उद्धेस्य री पूरति करण वाळी है।

हिन्दी रा आचारिज ई साहित्य नैं परिभासित करण री पूरी कोसिस करी। डॉ. श्यामसुंदर दास साहित्य नैं परिभासित करता थका लिख्यो'' मानव मस्तिष्क के पोषण के लिए भाव–सामग्री के संचित भंडार को साहित्य कहते हैं।'' आचार्य महावीर– प्रसाद द्विवेदी पण साहित्य नैं इणी रूप में परिभासित करै –''ज्ञान राशि के संचित कोष को साहित्य कहते है।'' अै दोई परिभासावां साहित्य नैं उणरै व्यापक अरथ में परिभासित करै। डॉ. दास

'भाव' सबद रो प्रयोग कर र उणमें विसिस्टता लाय दी। सागै ई ग्यान रै साहित्य अर सक्ति रै साहित्य में अेक महीन विभाजक रेख ई मांड दीवी।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रसवादी हा। वै इणी दीठ सूं साहित्य (कविता) नैं परिभासित कर्‌यो है'' कविता वह साधन है जिसके द्वारा हमारे मनोविकारों का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है। '' इणी री व्याख्या करता वै आगै कैवै'' जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार ह्रदय की यह 'मुक्तावस्था रस –दशा' कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द–विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। साँच आई ई क काव्य (साहित्य) रो चरम उद्देस्य हिरदै री मुगती है। आई म्हानैं म्हारै (ममत्व), थारै (परत्व) री भावना सूं ऊपर उठा' र चित्त नैं निरपेख कर' र साहित्य रै आनन्द सूं रू–ब–रू करावै।

कवि अर नाटककार पं. जयसंकर प्रसाद काव्य कै साहित्य नैं आत्मा री अनुभूतियां रै रहस्य नैं खोलण वाळो बतळावता हुया लिखै– ''काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है, जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक' ज्ञान धारा है।'' प्रसाद जी री इन परिभासा पण इर वादी है अर उपनिषद रै'' अयंआत्मावाड्.मयः'' अर भवभूति रै'' अमृतात्मनः कलाम्'' कथनां सूं प्रभावित है।

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद रै मतै साहित्य री सर्वोत्तम परिभासा'' जीवन की आलोचना'' है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी रै मुजब'' साहित्य केवल बुद्धि विलास नहीं है। वह जीवन की वास्तविकता की उपेक्षा करके सजीव नहीं रह सकता।'' डॉ. गुलाबराय साहित्य नैं आप रै व्यापक रूप परिभासित करता हुया लिख्यो है– ''साहित्य शब्द अपने व्यापक अर्थ में सारे वाड्.मय का द्योतक है। वाणी का जितना प्रसार है, वह सब साहित्य के अन्तर्गत है।''

आथूणै विद्वानां री परिभासा –

भारतीय विद्वानां री दाईं आथूणैं विद्वान ई 'साहित्य' बाबत घणी चरचा करी। उठै सरू सू ई काव्य अर साहित्य मुजब न्यारी–न्यारी विचारधारा रैयी। साहित्य री व्याख्या मुजब आथूणै विद्वानां री दीठ व्यावहारिक रैयी। इण वास्तै उणां री इण चरचा में धरम, नीति बाबत बातां पण आयगी अर वै सगळी लिपिबद्ध रचनावां नैं साहित्य कैयो। पास्चात्य दीठ सूं साहित्य (Literature) रो अरथ व्यापक रूप में लीरिजियो । इण वजेह सूं पास्चात्य विद्वानां मुजब सक्ति रै साहित्य (Literature of power–ललित साहित्य) रै सागै इज ग्यान रै साहित्य (Literature of knowledge) पण साहित्य में सामिळ करीजिया। इणी आधार पांण एक विद्वान साहित्य नैं परिभासित करता हुया कैयो – "Literature is nothing more than the result of certain social forces" अर्थात् साहित्य जुगीन चेतनावां रीं अभिव्यक्ति सूं बथो कोनी । मैथ्यू अर्नाल्ड कैवैं क 'साहित्य वां विसयां नैं कोनी अंगैजै जिका अतीत है बल कैवां विसयां नै अंगैजै जिला सास्वत हुवै । आगै वै साहित्य नैं औजू परिभासित करता हुया कैयो क साहित्य जीवन री व्याख्या है।'

मनौवैग्यानिक फ्रॉयड साहित्य नैं वासनावां री तिरपत रो साधन बतावण रै सागै ई सिरजनात्मक वासनावां रो उत्प्रेरक पण मानै। एमर्सन सांतरै विचारां रै संग्रै नैं साहित्य कैवे। इणी परिभासा रै अनुरूप डी क्विन्स री साहित्य मुजब परिभासा है वै साहित्य रै व्यापक रूप नैं अंडीगैजता हुया उणरा दो भेद करै – (1) सक्ति रो साहित्य (Literature of power) जिणमें वै कविता नाटक, कहाणी अर उपन्यास आदि सूं जुड़योडी भाव प्रधान ललित साहित्य नैं सामिळ करै अर (2) ग्यान रो साहित्य (Literature of knowledge) जिणमें वै विग्यान, राजनीति अर बीजा विसयां नैं राखै।

डी क्वीन्स री इण व्याखा सूं खुलासों हुवै क साहित्य में भाव तत्व प्रमुख हुवै। इणरी हामळ हैनरी हडसन, फोर्ड मैडाक्स आद पण भरी। इणी भाव तत्व नैं महताऊ मानता थका वर्ड्सवर्थ साहित्य नैं सान्ति रै समै सिमरण करण वाळा प्रबल मनोवेगां रो स्वच्छन्द प्रवाह मानै – "Poetry is the spontaneous overlow of powerfull fellings. It takes its origin from recollected in tranquillity." मिल्टन कविता (साहित्य) नैं सादा परतिखमूलक अर रागात्मक मानैं – "poetry should be simple, sensuous and passionate." कॉलरिज अभिव्यक्ति नैं

खास मानता हुआ कविता (साहित्य) नैं उत्तमोत्तम सबदां री उत्मोत्तम विगत मानैं– "Poetry is the best words in the best order."

साहित्य अथवा काव्य री आं परिभासावां सूं लखावैं क ब्रज कवियां री साहित्य मुजब परिभासा वां संस्कृत आचारिजां री विचारधारा सूं प्रभावित हैं। आचार्य शुक्ल, कविवर प्रसाद, डॉ. नगेन्द्र आद विचारकां री परिभासावां परम्परा सूं प्रभावित हुवता थका ई मौलिक पण है। बंगला, राजस्थानी अर हिन्दी री परिभासावां में आथूणो प्रभाव लखावै। इणरौ खास कारण है समै रो बदळाव। समै रै मुजब साहित्य रै उत्स में बदळाव आयो अर आलोचक उण सामयिकता पाण ई साहित्य री परिभासा सिरजी । पण भाव तत्व, लोकहित नैं सगळा ई विद्वान महता दिरायी। इण ओळावै साहित्य में मानव–मन री अतळ गै राई में समायोड़ा भावां नैं आन्दोलित कर' र अेक सहज आनद री अनुभूति जगावण री सक्ति रैवै। आ सक्ति इज व्यापक साहत्य रै अरथ सूं सैमूचै वाड्.मय सूं विधायक साहित्य नैं अळगो कर' र उण नैं खास परिवेस में थरपै। इण भांत साहित्य जीवन सूं जुड़योड़ी रचना है। वो मिनख जमारै रो व्याख्याता, मनोरंजन अर पथ प्रदर्शक हुवै। वो मिनख रो मस्तिस्क पण है अर हिवड़ौ भी। साहित्य अैडी तिखूंटी आरसी है जिणमें मिनखां रै भूत, वर्तमान अर भविस्य रा ई दर्सन हुवै। साहित्य री आत्मा रागात्मक अर स्वरूप कलात्मक है। उणरो चरम उद्देस्य लोक–जीवन रो अनुरंजन अर हित संपादन है।

1.2 साहित्य रो उद्देस्य : भारतीय अर आथूणै विचारकां रा मत –

साहित सबद री उतपत सूं खुलासो हुवैक सबद अर अरथ में 'सहित' भाव सम्बन्ध नैं थरपीजणो ई साहित्य रो उद्देस्य हुवै। अठै ओ ई उल्लेख जोग है क सबद अर अरथ रो पाधरो संबन्धः मानव–जीवन अर समाज सू जुड़योडो है। अतः समाज री मूल इकाई मानखै रै लोकहित रो मंडण इज साहित्य रो उद्देस्य हुय सकै। इणरी विवेचना भारतीय अर आथूणै विद्वान लगोलग करता रैया है, जिणरो परिचै म्हां अटै दिरावं –

भारतीय विचारकां मुजब साहित्य रो उद्देस्य –

आचार्य भरत नाटक रै संदर्भ में साहित्य रै उद्देस्य माथै विचार कर्‌यो है। खास तौर सूं संस्कृत रा विद्वान इण रो विवेचन प्रयोजन नांव सूं करयो है। इण बाबत भरत री मानता है क साहित्य रो उद्देस्य मिनख नैं दुःख, श्रम अर सोक सूं मुगती दिलावणो है। आचार्य मम्मट साहित्य रो उद्देश्य धरम, अरथ, काम, मोक्ष, कलावां में विलक्षणता, कीर्त्ति अर आनन्द री पावती करावणो मानैं–

धमार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

प्रीतिं करोति कीर्तिं च साधु काव्य निबन्धनम्।।

(काव्यालंकार 1/2)

राजशेखर रै मुजब साहित्य (काव्य) रो उद्देस्य कवि री दीठ सूं साहित्य रो प्रयोजन (उद्देस्य) अखै कीरत है, जद क सहिरदै (पाठकत्रदर्सकत्रसामाजिक) री दीठ सूं आनन्द री पावती। आनन्दवर्धन काव्य रो खास प्रयोजन प्रीति (हृदयाल्हाद) नैं मानैं–"तेनब्रमः सहृदयमनसः प्रीतये तत्स्वरूपम्।'' पंडितराज जगन्नाथ यस, लोकोत्तर आनन्द, गुरू, राजा अर देवतावां री प्रसन्नता नैं काव्य (साहित्यं) रो उद्देस्य मानता हुया लिखे–" तत्र कीर्ति परमाल्हाद गुरूराजदेवता प्रसादाघनेक प्रयोजनस्य काव्यस्य–।''

संस्क्रत काव्यसास्त्र रा मानीता आचार्य मम्मट द्वारा बतायोडा काव्य–प्रयोजन घणा महताऊ कैईजिया है। उणा रै मुजब यस, अरथ, व्यवहार–ग्यान, अमंगलनास आनन्द अर कान्ता सम्मत उपदेस नैं साहित्य रो उद्देस्य है–

काव्यं यससेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवतेरक्षतये।

सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततेयोपदेश युजे।।

संस्क्रत आचारिजां सूं प्रभावित रीतिकालीन कवि कुलपति मिश्र पण यस, धन, आनन्द अर व्यवहार ज्ञान नैं ई साहित्य रो उद्देस्य मानै–

जस सम्पति आनन्द अति दुखिन डारै खोय।

होत कवित तें चतुरई जगत राम बस होई।।

आधुनिक हिन्दी–विद्वान आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी साहित्य रो उद्देस्य 'ग्यान विस्तार' अर मनोरंजन नैं मानै। 'प्रियप्रवास' रा कवि अयोध्या सिंघ उपाध्याय 'हरिऔध' साहित्य रो प्रयोजन 'लोकहृदय में विद्यमान तम पुंज का नाश, अलौकिक आनन्द की सुधा का पान' करावण नैं मानैं। स्व. रास्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त रो साहित्य रै उद्देस्य बाबत कथन है–

'केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये।

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'लोक मंगल' नैं साहित्य रै उद्देस्य रूप में थरपै। महादेवी वर्मा मुजब ''साहित्य का उद्देस्य समाज के अनुशासन के बाहर स्वच्छन्द मानव स्वभाव में उसकी मुक्ति को अक्षुण्ण रखते हुए समाज के लिए अनुकूलता उत्पन्न करना है।''

राजस्थानी रा विद्वान डॉ. गोवर्द्धन शर्मा ई साहित्य रो बखाण आपरै अेक निबन्ध 'साहित्य अर उणरा भेद' में कर्‌यों है। उणा रै मुजब साहित्य रो उद्देस्य जगत री भलाई करणो है। उणा रै मुजब साहित्य रो उद्देस्य जगत री भलाई करणो जीवण अर जगत में जिको खराब है उण नैं आपरै करतब सूं फूटरै पण में दाळर धरती नैं सरग् बणावणो है। इणसूं ई साहित्य सत्यं शिवं सुन्दरम् कैईजै।

आथूणै विचारकां री दीठ सूं साहित्य रो उद्देस्य–

साहित्य (काव्य) रै उद्देस्य कै प्रयोजन बाबत आथूणै विद्वानां रा सारू में साफ दोय मत लखावै–

(1) एक मत रै मुजब लोकमंगल साहित्य रो खास उद्देस्य हुवै अर (2) दूजै मत रा समर्थक साहित्य सिरजण रो खास प्रयोजन आनन्द री प्राप्ति नैं मानै। प्लेटो, रास्किन, टॉलस्टॉय पैले वरग रा विचारक हैं अर शिलर, शैली, वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, लौजाइनस आद विद्वान दूजैडै मत रा समर्थक हैं। आं विद्वाना रा साहित्य रै मुजब विचार प्रस्तुत है–

प्लेटो साहित्य रो उद्देस्य लोकमंगल नैं मानैं। इण रै अभाव में होमर री उत्कृष्ट काव्य कला ई उणा रै विचार में निदंनीय है "It Would be wrong to honour a man at expense of truth." अरस्तू री साहित्य रै उद्देस्य मुजब मानता है, कला (साहित्य), रो खास उद्देस्य आनन्द है, पण औ आनन्द नीति सापेख है–ओ अनैतिक कोनी हुय सकै, इण भांत अरस्तू नीति अर आनन्द रै मेळ नैं साहित्य रो प्रयोजन मानै। लौजाइनस आनन्द री प्राप्ति नै साहित्य रो उद्देस्य मानता हुया लिखै–

"...For work of genius does not aim at persuasion but ecstasy, or lifting the ready out of himself."

आं दो मानतावां रै पूठे साहित्य रै उद्देस्य बाबत दो विचारधारावां औजू साहित्य जगत में विकसित व्ही। अेक विचारधारा फगत नीति अर आनन्द नैं ई साहित्य रै सिरजण रो उद्देस्य मानै ही अर दूजी विचारधारा रै मतै कला (साहित्य) रै सिरजण रो उद्देस्य सिरफ कला रो दरसाव करावणो हो। स्विनबर्न, आसकर वाइल्ड, क्रोंचै, फ्रायड आद विचारक इणी मत रा हा। साहित्य रै उद्देस्य रूप में नीति अर आनन्द रो समन्वय करण वाळा आलोचका में अरस्तू, निओतालमेस, वर्ड्सवर्थ, लॉ बोस्यू, ड्राईडन आदि रा नावं उल्लेखजोग है। आं में सूं कतिपय विद्वानां रा मत इण भांत है–

निओतालमेस रै मुजब काव्य (साहित्य)–प्रयोजन नीति, सिक्षा अर आनन्द रो समन्वय करणो है। होरेस पण निओतालमेस सूं प्रभावित हो, अत वो ई नीति इन आनन्द रै समन्वय नैं साहित्य रो प्रयोजन मानता हुया कैयो – "The Poet saim is to profit or to please, or to blend in one the delightfull and the useful... the man who mingles the useful with the sweet carries the day by charming his reader and the same time instructing him" अर्थात कवि रो उद्देस्य या तो उपयोगिता हुवै कै आल्हाद अथवा वो उपयोगिता अर

आल्हाददायी रो अेकमेफ (समन्वय) कर देवै। जिको कवि उपयोगी अर मधुर रो मेळ कर दिरावै वो सफल हुवैं क्यूंक वो पाठक नैं आल्हादित पण करै अर सिक्षित ई।

इण् भांत आथूणै विचारकां में प्लेटो सूं अजै लग साहित्य रै उद्देस्य रो खुलासो करणवाळा अै तीन मत प्रचलित रेया–

1. कला (साहित्य) जीवन सारू
2. कला (साहित्य) जीवन सूं पलायन करण वास्तै अर्थात् सिरफ आनन्द री पावती सारू। मतळब सिरफ कला वास्तै हुवै। वा जीवन निरपेख हुवै। उणरो समाज सूं कोई सरोकार कोनी हुवै।
3. कला (साहित्य) नीति सागै रैवता हुया आनन्द री प्राप्ति वास्तै।

पण आं तीन्यू मतां री विरोळ करण पूठै पास्चात्य साहित्य जगत में साहित्य रै प्रयोजन बाबत अै दो उद्देस्यां रो ई खुलासो हुवै–

1. आन्तरिक उद्देस्यवादी विचारधारा अर 2. बाह्य उद्देस्यवादी विचारधारा। आनन्द प्राप्ति आन्तरिक प्रयोजन है। इण सूं बीजा सगळा उद्देस्य बाह्य उद्देस्यवादी विचारधारा में समाहित होय जावै। इण भांत आं दोई विचारधारावां नैं म्हां आथूणै विद्वानां में प्रचलित निम्नलिखित मानतावां में विवेचित कर सकां–

1. कला (साहित्य) कला वास्तै, अर
2. कला (साहित्य) जीवन सारू।

भारतीय अर आथूणै विद्वानां री साहित्य रै उद्देस्य मुजब मानतावां रै अध्ययन पूठै म्हां कैय सका क साहित्य सिरजण कदैई निरूद्देस्य कोनी करीजै। उणरी सिरजणा सदीव सोद्देस्य हुवै। उद्देस्य उणरी अनिवार्यता है। अतः साहित्य में सदीव लोकहित कै लोकमंगल री भावना रैवै। ओ भाव साहित्यकार तद इज आप री रचना में मांड सकैला जद वो आपरी रचना रो निर्माण समाज रै सुख–दुख, उणरी जरूरतां अर नीति–अनीति री मान्यतावां नैं ध्यान में राखता करै। आं सगळै कोजी रूपाळी कल्पना इज मिनख नैं आनन्द दिरा सकै। इण वास्तै साहित्य रो उद्देस्य नीति (समाज रा आदर्स) रै आधार पांण आनन्द रो सिरजण करणो चाईजै तद इज वो मिनख अर समाज नैं आनन्द साधना अर लोकमंगल देवण में सफल हूय सकैला।

1.3 साहित्य : विद्या कै कला –

साहित्य विद्या है कै कला? इण खुलासै रै पैलां म्हानैं विद्या अर कला रो अरथ समझणो जरूरी है। सिक्षादि सूं प्राप्त ग्यान अर सास्त्र जिका सूं म्हानैं विद्या विसेस री जाणकारी मिलै, विद्या कैईजे। विद्या रो सीधो सम्बन्ध सास्त्र सूं। इण रा च्यार अर चोवदै, भेद कथीजिया है, जिणमें काव्य कोसादि रो ई उललेख है। विद्याध्ययन रो खास प्रयोजन मुगती री प्राप्ति है। इणरै विपरीत कला मानव संस्क्रति री उपज है। इण संसार में मानखो जूझतो थका जिका संस्कार रूप में फूटरी दीठ पायी है, वा सगळी अमानत कला कैईजे। इण भांत कला में सौंदर्यानुभूति रो अहसास जरूरी है। इण सौंदर्यानुभूति रै पांण ही मिनख नुवी सूं नुवी सिरजणा करै। अतः कला रो उद्देस्य आनन्द री प्राप्ति सागै ई मिनख नैं इचरज ई करावै। कल्पना रै माध्यम सूं ई कवि अथवा कलाकार आनन्द रो भोग करै अर करावै। कला सूं म्हाणो मानस–क्षितिज उदार, व्यापक अर उन्नत बण सक्यो हैं।

भारतीय मनीसा रै मुजब 54 कलावां प्रसिद्ध है। विसै वस्तु री दीठ सूं कला दो तरिया री हुवै। उपयोगी कला अर ललित कला। उपयोगी कला व्यवहार जनित अर सुविधा बोधी हुवै, ज्यान–पाक कला, सूची कला, कास्ठ कला, कुंभकारी, सुनारी, लुहारी आद। पण ललित कलावां रो सम्बन्ध भावनावां अर वां फुटरापै सू. हुवै। उन मैं जीवन रै अनुभूत कै भोगोड़ी सांच रै फुटरापै रो पुनर्विधान कर मानव चेतना नैं अनुरंजित करण री आफळ हुवै। वास्तु कला, मूर्ति कला, चित्रकला, संगीत, निरत कलावां इणीवरण में गिणीजे।

इण विवेचन पांण भारतीय अर पास्चात्य दोई विचारधारा रा विद्वान इण विसै माथै विचार कर्‌यो। भारतीय

विद्वानां मुजब साहित्य विद्या है क्यूंक इण रो सम्बन्ध सास्त्र सूं है। मुगती दिरावण में इणरो महताऊ योगदान है। साहित्य नैं ब्रह्मानंद सहोदर कथीजियों है। अतः वो आनन्द प्रदाता है। क्यूं क साहित आनन्द दिरावै अतः वो मुगती रो प्रमुख साधन है। अै विद्वांन आपरै आं तरकां सूं विद्यावा में साहित्य नैं पण सिरै थरपै। बाकी री विद्यावां नैं अें विचारक साहित्य रा अंग मानैं राजशेखर साहित्य नै पांचवी विद्या कथीजता बाकी विद्यावां नैं उण रो सार मानैं ''पंचमी साहित्य विद्या...सा हि चतसृणामपि विद्यानां निष्यन्दः।''

आचार्य भामह आपरी रचना काव्यालंकार में कैवे–

न तच्छब्दो नतद्वाच्य न सा कला।

जायते यन्न काव्याड़ग्मंहे भारः महान कवेः।।

अर्थात् स्सैं सबद, वाच्य, विद्या अर कलावां काव्य कै साहित्य रा ई अंग हैं। संस्क्रत री आ प्रचलित उक्ति पण साहित्य नैं विद्या में ई सामिळ करै–''साहित्यसंगीत कला विहीनः साक्षात पशु पुच्छः विषाणहीनः'' अर्थात् साहित्य संगीत अर कला विहीन व्यक्ति पूंछ अर सीगां सू रहित पसु समान है।

मतलब ओक भारतीय परमपरा में साहित्य नैं विद्या मानीजी हैं, कला कोनी। इण रो मूल कारण साहित्य रो ब्रह्मानन्द सहोदर अथवा मोक्षवत आनंद प्रदाता हुवणो है। विद्वाना री आ ई मानता रैयी क कला आपरै प्रसाधनात्मक गुणां रै कारण साहित्य रै उदात्तता री बरोबरी कोनी कर सकै। सांच तो आ है क कला में ई उदात्त तत्त्व री भरमार हुवै अर उण रो अेक महताऊ तत्व मानीजै।

पास्चात्य विद्वानां रा मत–

यू ंतो आथूणै विद्वान काव्य अथवा साहित्य नैं कला में सामिळ करै पण उठै ई कुछ विद्वान साहित्य नैं सास्त्र मानता रैया है। साहित्य नैं सास्त्र मानण रै कारण आं रै विचारां में ई विद्यात्व रो भाव साफ लखीजै। प्लेटो री मानता है क 'जै परमात्मा है तो ब्रह्माण्ड उणरी अनुकृति (नकल) है, जै पदारथ है तो उणां रा पड़बिम्ब वां री अनुकृतियां है।' अठै प्लेटो स्पस्टतः कला (सिल्प वस्तुवां) नैं ईस्वरीय पदारथां री अनुकृति कैय'र उण नैं सास्त्र सागै जोड़ दिरायो है। हीगेल री मानता पण इण कांनी ई इसारो करै–'प्राक्रतिक फुटरापो ईस्वरीय फुटरापै रो आभास हुवै। कला उणी आभास री पुनराव्रत्ति है।' रास्किन री मानता है क 'हर महान कला ईस्वरीय संरचना रै प्रति मानव मन रै आल्हाद री अभिव्यक्ति हुवै।' माइकेल अैंजिलो पण इण तथ्य नैं अंगैजैं–'सांची कलाकृति दैवीय पूर्णता री प्रतिकृति हुवै, परिभासावां में अभिव्यक्त दिव्यता री भावना साहित्य नैं सास्त्र रै बेसी नैड़ै लावेती निजर आवै।

पण पास्चात्य विद्वाना रै बिचै आ भावना ज्यादा दिनां लग नीं टिक सकी। प्लेटो रा पटु अरस्तू रै समै सूं ई इण विचारधारा रो विरोध हुवण ढूक्यो। नतीजो ओ निकळयो क कला अर विद्या न्यारै–न्यारै परिपेखां में मूल्यांकन हुवण लागी। अबै कला आत्माभिव्यक्ति रो साधन मानी जावण लागी। उणरै विवेचन री दीठ नैतिक नीं हूय'र सौंदर्यवादी हुयगी। कला रो उद्देस्य अब टॉलस्टाय री दीठ दांई मानव मात्र नैं आपस में अेक भाव में बांधण अर मानव हित साधन मान्यो जावण लागो। साहित्य नैं सास्त्र सूं अेकदम न्यारी अेक कलात्मक विद्या रूप में अंगैज लीवी ही। रोमान्टिसिज्म (स्वच्छंदतावाद) रै पूठै तो आथूणै विद्वान इणी विचारधारा सूं प्रभावित लागै।

साच तो आ है क भारतीय अर आथूणी दोई विचारधारा में साहित्य नैं कला मानण री परम्परा रैयी। म्हां ऊपर कैय चुका हा क भरत नाटक नैं कला मानता थका ही काव्य (साहित्य) री सरावणा करी है। भारतीय काव्यसास्त्रियां में इन दीठ सातमी सदी सूं लगोलग लखावै। आचार्य विश्वनाथ, कुंतक, जगन्नाथ, राजशेखर, अभिनवगुप्त, आचार्य शुक्ल, जयसंकर प्रसाद, गौवर्धन शर्मा, आद भारतीय आचारिजां रा साहित्य मुजब विचार इण कांनी ई आपरी साख भरै। आ इज बात आथूणैं आचारिजां री है। वै रास्किन री दाई It is the witness of the glory of God (ओ ईस्वर महिमा रो दरसाव है) नीं मान'र आई.अे.रिचर्ड्स रै सबदां में "Arts are the supreme form of the Communicative activity" (कलावां संप्रेस्णीय प्रक्रिया रो स्सैं सूं सिरै रूप है) साहित्य नैं अंगैजे। सार रूप में साहित्य अेक कलात्मक विद्या है जिणरो संपर्क मिनख नैं रमणीयता सूं रू–ब–रू करावै।

1.4 साहित्य री विधावां (भेद रूप वरगीकरण) –

'साहित्य' में विधा सूं अरथ उणरी विविध रचना–प्रक्रिया सूं है। आपरै मूल रूप में सहित्य कै कलावां रो अेक ई लक्ष्य हुवै–भावामिव्यक्ति अर भाव–संप्रेषण। पण इण अभिव्यक्ति (सम्प्रेषण) री सैली कै माध्यम में साव फरक हुवै। चितेरो अर कवि दोई आपरी रचना मांडै। पण चितेरा (चित्रकार) रा उपकरण (माध्यम) तूलिका, रंग, चित्रफलक है, जद क कवि रा उपकरण लेखनी अर सबद हुवै। इणी पांण साहित्य अथवा काव्यकला में ई उपकरणां री दीठ सूं भेद करीजै। इणी भेद रो नांव है–साहित्यिक विद्या। इण भांत कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध समीक्षा आद साहित्य री विधावां है। अेक साहित्यकार अेक सूं बेसी विधावां में पण साहित्य सिरजण कर आपरै साहित्य कौसल रो परिचै दिरा सकै, ज्यांन – मैथिलीसरण गुप्त सिरफ कवि हा, पण प्रसाद जी कवितावां रै सागे ई गद्य में नाटक, कहाणी, उपन्यास, निबन्ध पण लिख्या। इणी भांत राजस्थानी में सतप्रकास जोसी री पिछाण कवि रूप में ई है, पण यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' कवितावां रै सागै इज नाटक, उपन्यास अर कहाणियां रो ई सिरजण करयो।

साहित्यक विधावां री दीठ सूं हर देस अर जुग रो निजु महत्व हुवै। रीतिकाल लग खास तौर सूं कवितावां ई लिखिजी पण आधुनिक काल में कविता री विविध सैलिया सागै, गद्य री विविध विधावां में साहित्य रचीज रैयो है। अतः काल मुजब साहित्यिक विधावां रो वरगीकरण भारतीय अर आथूणै विद्वान आप–आप री दीठ सूं कर्‌यो है। इण री विगत म्हां अठै प्रस्तुत करां हा–

1.4.1 विधावां रो वरगीकरणः विभिन्न विद्वानां रा मत

1.4.1.1 भारतीय विद्वानां री दीठ सूं साहित्यिक विधावां–

आचार्य पाणिनी साहित्य री हेटै लिखोड़ी छव विधावां (भेद–रूप) बतावै–

1. द्रिस्य साहित्य (वेदां री रिचावां ज्यांनै रिखेसर अनुभूत करियो)
2. प्रोक्त–साहित्य (गुरू–स्यावां रा पडूतर)
3. उपग्यान साहित्य (भौतिक विसयां सूं जुड्‌योडो साहित्य),
4. सूत्र–साहित्य
5. कृत–साहित्य (रचनात्मक साहित्य), अर
6. व्याख्यान साहित्य (टीकावां)।

व्याकरणाचार्य पाणिनी रै पूठै संस्कृत काव्यसास्त्रीयां में सबसूं पैलां भामह (5वी सदी) आपरी रचना 'काव्यालंकार' में काव्य रा गद्य अर पद्य दो भेद करता हुया दो भेद ओजूं करया हैं। इणरै पछै वै भासा रै आधार माथै संस्क्रत, प्राक्रत अर अपभ्रंस नांव रा तीन भेद कर्‌या है। इण रै उपरांठ वै विसै री दीठ सूं अै च्यांर भेद में साहित्य नैं विभाजित कर्‌यो है–

1. इतिहास आधारित – चरित काव्य,
2. उत्पाद्य (कल्पित) वस्तु वाळा काव्य,
3. कला प्रधान काव्य, अर
4. सास्त्र प्रधान काव्य।

आं रा उपभेद बतळावता हुया भामह सम्बन्धित उपभेदां, महाकाव्य रै भेद आद नैं ई विस्तार सागै समझायो है।

आचार्य दण्डी (7 वीं सदी) आपरी रचना 'काव्यादर्श' में साहित्य रा खास तीन भेद बतळावै–गद्य, पद्य अर चम्पू (मिश्र)। इणरै पूठै वै मुक्तक, कुलक, कोष, संघात आदि भेदां रो वर्णाव करता हुया सर्गबन्ध महाकाव्य रै रूप में पद्य काव्य रैं रूपां रो बखाण करै। वै गद्य काव्य रा कथा अर आख्यायिका दो भेद बतळावता थका मिश्र

काव्य रै रूपां में नाटकादि अर श्रव्य मिश्र चम्पू रो उल्लेख करै।

वामन काव्य रा गद्य अर पद्य दो भेद बतळावता हुया अनिबद्ध (मुक्तादि) अर बद्ध (खण्डकाव्य, महाकाव्य) पद्य रै दो भेदां रो वर्णन कर्‌यो है। राजशेखर (10 वीं सदी) मुक्तक अर प्रबन्ध भेदां रो खुलासो करता हुया दोया रै पांच–पांच भेदां रो बखाण कर्‌यो है। अै भेद हैं–सुद्ध चित्र (सप्रपंच), कथोत्थ (ऐतिहासिक इतिवृत), संविधान काव्य (संभावित इतिवृत्त), आख्यानककाव्य (परिकल्पित इतिवृत्त)। आनंदवर्धन प्रसंगवस आप री रचना 'ध्वन्यालोक' में आं दोई काव्य भेदां (मुक्तक अर प्रबन्ध) रो उललेख कर्‌यो है। अठै आचार्य विश्वनाथ आपरी रचना 'साहित्य दर्पण' में साहित्य री विधावां रो विभाजन कर्‌यो है–द्रिस अर श्रवकाव्य रूपां मे। उणां रैं मुजब द्रिस्य काव्य रा रूपक अर उपरूपक भेद हुवै। आं री संख्या क्रमसः दस अर अट्ठारै कैयीजी है। आचार्य श्रव्य काव्यरा पण दो भेद करै–

1. पद्य–मुक्तक, युग्मक, संदानितक, कलावक, महाकाव्य, एकार्थकाव्य, खण्डकाव्य, कोष अर व्रज्या।
2. गद्य–मुक्तक, वृत्त गंध, उत्कालिका प्राय अर चूर्णक।

आचार्य मम्मट सबदार्थ रै वाचक, लक्षक अर व्यंजक प्रयोगां रै आधार माथै काव्य कै साहित्य रा तीन भेद मानै–उत्तम, मध्यम अर अधम।

भारतीय परम्परा में हिन्दी रा समीक्षक पण साहित्य रै भेद बाबत विचार कर्‌यो। वै पण संस्क्रत आचारिजां री भांत साहित्य कै काव्य नैं द्रिस्य अर श्रव्य रूपां में बांटता हुया श्रव्य काव्य रा तीन भेद करै–कविता, गद्य अर चम्पू। हिन्दी आचारिजां रै मुजब कविता (पद्य) रा दो भेद प्रमुख हुवै–प्रबन्धकाव्य अर मुक्तक काव्य प्रबंध काव्य रा भेद महाकाव्य, खण्डकाव्य काव्यरूपक हुवै अर मुक्तक काव्य इज अजै पाठ्य मुक्तक, प्रगीत मुक्तक अर प्रबन्ध मुक्तक रूपां में लिखीज रैया है।

आधुनिक हिन्दी विद्वानां रै मतै गद्य साहित्य रा समैयानुरूप धणाई रूप (भेद) संभव हैं। आं में सूं खास–खास हैं–उपन्यास, कहाणी, निबंध आलोचना, आत्मकथा, रिपोर्ताज, संस्मरण, जीवनी, गद्यकाव्य, डायरी, लघुकथा (मिनी स्टोरी) आद।

हिन्दी आचारिजां रै मुजब द्रिस्य काव्य रा दोय भेद करीजिया है– नाटक अर अेकांकी। साहित्य री सामयिक जरूरतां रै मुजब इण वरग में रेडियोरूपक, ध्वनिरूपक, फीचर, झलकियां (प्रहसन), नुक्कड नाटक रो ई विकास हुयो है, जिकी नाटक री ई उपविधावां कै सैलियां कैईजी है।

राजस्थानी रा मानीता विद्वान गोवद्धन शर्मा पण साहित्य रै भेदां बाबत बात करी है। वै साहित्य सबद रै व्यापक अरथ में तीन भांत रो साहित्य मानै–1. खबर देणो साहित 2. विवेचन साहत्यि अर 3. सरस साहित्य। वै आगे इणरै रूपां री व्याख्या करतां थकां कैयो क साहित सारू जूनो सबद काव्य है अर इणरा दोय भेद हुवै–स्रवण काव्य अर द्रिस्य काव्य। वै आगै उन रा उपभेद ई दरसावै। स्रवण काव्य में वै कविता, गद्य अर मेळू (चंपू) खास भेद मानैं तथा द्रिस्य काव्य रा रमत, देखाव, राम, नाटक नांव रा भेदां रो उल्लेख करै। इण आखी विगत नै वै तालिका सूं चितरायो है। (सं. चन्द्रसिंह राजस्थानी निबंध संग्रह, पृ. 109)–

1.4.1.2 पास्चात्य विद्वानां री दीठ सूं साहित्यिक विधावां–

साहित्य रै वरगीकरण बाबत पास्चात्य विचारकां भी आप री मानतावां थरपी। प्लेटो काव्य (साहित्य) री तीन विधावां बतळावै– 1. विसुद्ध आख्यान (Pure Narrative) 2. अनुकृति माथै आधारित आख्यान (Narrative by means of immitation) अर 3. मिश्रित आख्यान (Mixed narraative)।

अरस्तू साहित्य री गद्य अर पद्य रो उल्लेख करता थका वां नैं त्रासदी (Tragedy) अर कामदी (Comedy) रूपां में विवेचित करै। आथूणै विद्वानां में हडसन री लूंठी जागा है। म्होटै रूप सूं वै काव्य रा दो भेद करै– विसयीगत (Subjective) अर विसयगत (Objective)।

विसयीगत काव्य रा वै औजू छव भेद बतळावै–

1. दार्सनिक अर विचारात्मक (Meditative and Philosophical lyrics)

2. संबोधनगीत (Ode)

3. दुखात्मक गीत (Eelgy)

4. पत्र गीत (Epistal)

5. व्यंग्य गीत (Satire)

6. वरणात्मक गीत (Desceptive Poetry)।

इणी भांत विसयगत काव्य रा ई वै दोय भेद कथीजै–1. वरणात्मक कविता (Narrative Poetry) अर 2. अभिनयात्मक कविता (Dramatic Poetry)। आगै वै वरणात्मक कविता नैं च्यार उपभेदां में बांटै–

1. वीर गीत (Ballad) 2. महाकाव्य (Epic) 3. छंदोबद्ध रोमांचकारी कथावां (Metrical Romandce), 4. यथार्थवादी काव्य (Realism in Poetry)।

अभिनयात्मक काव्य रा हडसन तीन भेद करै–

1. नाट्य गीत (Dramatic Lyrics)

2. नाट्य–कथावां (Dramatic Story), अर

3. स्वगत नाट्य (Dramatic Monologue of Soliloquy) ।

1.4.2 वरगीकरण रा प्रमुख आधार –

इण विगत पांण जै म्हां साहित्य रै वरगीकरण बाबत् विचार करां तो लखावै क सरूआत में साहित्य रो सिरजण मौखिक परम्परा में ई हुयो। लिपि–विकास सागै उणरो लिखित रूप सामैं आयो। इण भांत साहित्य रो वरगीकरण मौखिक अर लिखित रूपां में इज करीजियो। साहितय रो दूजो वरगीकरण भासा री लय–ताल संबन्धी सबद –योजना रै आधार माथै गद्य अर पद्य रूपां में करीजियो। इणी आधार पाण साहित्य रो वरगीकरण गद्य, पद्य और चम्पू नांव सूं ई प्रचालित हैं। मिनख री भासा में रचियोड़ै इण सिरजण नैं जै म्हां वरगीकृत करणो चावां तो इणरा म्होटा दोय भेद हुवै– 1. पैलो वो जिका रो लक्ष्य म्हांणी हार्दिक वृत्ति हुवै अर जिको खास तोर सूं म्हाणे रंजन करै तथा दूजो वो, जिका रो लक्ष्य म्हांणी बोध वृत्ति हुवै अर जिकी खास तोर सूं म्हांणी ग्यान वृद्धि

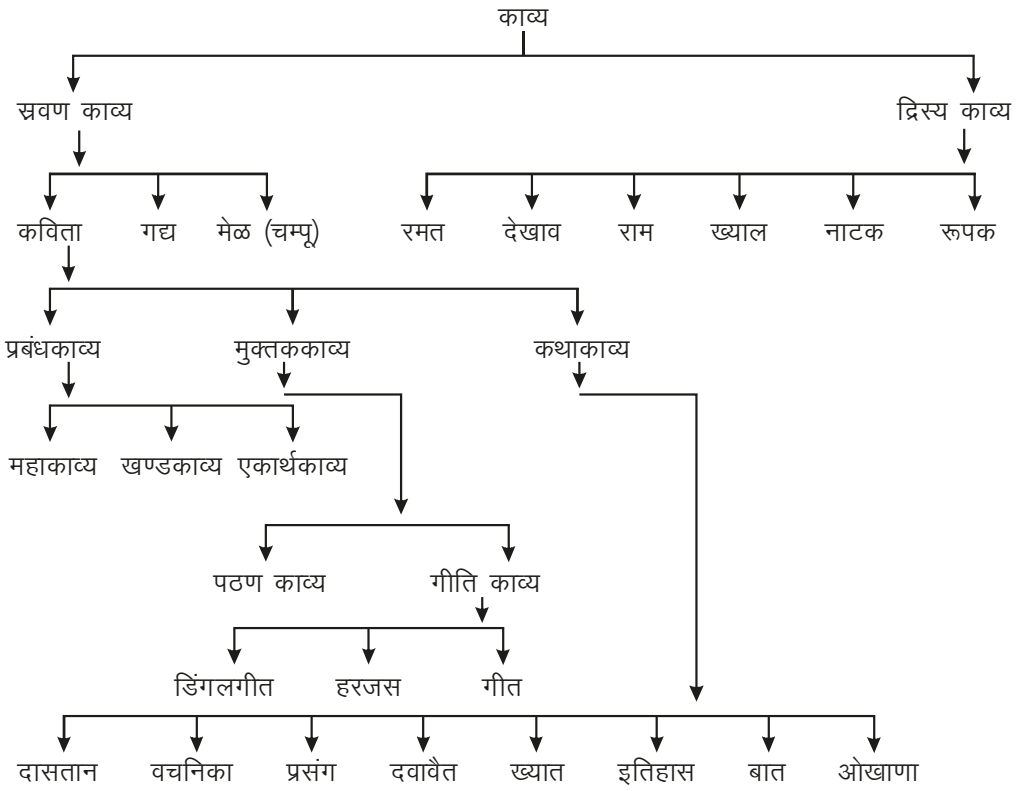

करै। पण आं दोई तरिया रै साहित्य विचै विभाजक रेख खीचंणो धणो दोरो, क्यूंक हार्दिक वृत्ति अर बोधवृत्ति में स्वाभाविक अन्तः सम्बन्ध हुवै। फेर ई इण दीठ सूं साहित्य (वाग्ड़मय) रा जिका भेद करीजिया है वैं हैं–

1. ललित कै सरस साहित्य (Litrature of Power = सक्ति रो साहित्य)।
2. उपयोगी साहित्य कै ग्यान रो साहित्य (Litrature of Knowledge)।

इणनै फेर दो भागां में बांट सकां–1. कल्पनाश्रित कै विचार प्रधान साहित्य, ज्यांन दर्सन अर 2. प्रयोगाश्रित। प्रयोगाश्रित उपयोगी साहित्य रा विद्वान फेर दो भेद करै– (क) अनुमान पर आधारित – शास्त्र अर (ख) निश्चय ग्यान माथै आधारित–विग्यान।

साहित्य जगत री विसैवस्तु ललित साहित्य है, जिण रो खास मरम मानवीय संवेदनावां हुवै। आं रो चितराम ई मिनख नैं रमणीयता प्रदान करै। अतः साहित्यसास्त्र में विद्वान इण री ई विरोळ करी है। इण साहित्य रै वरगीकरण रा आधार निम्नलिखित हुय सकै–

1.4.2.1 सैली री दीठ सूं –

सैली (शैली) वा प्रक्रिया है, जिणमें म्हां किणी वस्तु नैं सैमूचै रूप में जोवा। किणी साहित्यिक रचना री सैली नैं म्हां तद पिछाण सकां जद म्हां इण बात सूं वाकफ हुय जावां क वां प्रक्रियावां नैं मूरत रूप देवण मैं समरथ है अर उण वृत्ति नैं दूजै तरिकै सूं, दूजी सैली में पण मूरत कर्‌यो जा सकै। इण दीठ सूं साहितय रा दो भेद कर्‌या जा सकै– (i) पद्य अर (ii) गद्य। रामकथा पद्य में ई लिखी जा सकै अर गद्य में कहाणी, उपन्यास आद रूपा में ई ढाली जा सकै। इण भांत पद्य री विविध विधावां प्रबध (महाकाव्य, खण्डकाय, एकार्थकाव्य) मुक्तक काव्य है तथा गद्य साहित्य री विधावां–कहानी, उपन्यास, रिपोर्ताज, संस्मरण, डायरी, लघुकथा, आलोचना, निबंधा, ख्यात, बात, नाटक, ख्याल, रमत, रूपक, प्रहसन, झलकी, एंकाकी आद है।

1.4.2.2 माध्यम री दीठ सूं–

माध्यम री दीठ सूं साहित्य रा दोय भेद हुय सकै। विद्वानां रै मुजब अै भेद हैं (i) स्रवण काव्य अर (ii) द्रिस्य काव्य। स्रवण काव्य रो रसास्वादन पाठक स्रवण कर'र तथा खुद भण'र कर सकै। इण दीठ सूं पद्य अर गद्य साहित्य री सगंळी विधावां इणी वरग में गिणिजैला। किणी स्रवण काव्य री विद्या रो रूपान्तर द्रिस्य काव्य में कर्‌यो जा सकै अर किणी द्रिस काव्य विधा री रचनां रो रूपान्तर स्रवण काव्य विधा में हुय सकै। रूपान्तरकार री सामरथ में उणरो रसास्वादन निर्भर है।

जिण काव्य रो आस्वादन आंख्यां सूं परतिख दरसाव रै पांण करीजै, द्रिस्य काव्य कैईजै। इणरो खास खेतर रंगमंच हुवै। रंगमंच माथै ई इणरी सगळी घटनावां रो दरसाव मंडै। द्रिस्य काव्य सागो मूरत अर आंख्यां जोयो वरणाव हुवै जिको नट–नटी अर खास अभिनेतावां रै मारफत प्रस्तुत करीजै। इण में सजीवता अर तन्मयता हुवण सूं साहित्य री सगळी विधावां में सिरै गिणीजै। द्रिस्य विधान, पात्र–योजना, वां री वेसभूसा, हावभाव रा दरसाव अर संवादां रो मेळ ई द्रिस्य काव्य रै सरूप नैं ढाळै।

द्रिस्य काव्य री खास विधा नाटक है जिणरा भारतीय अर आथूणै विद्वान आप–आप री दीठ सूं गिणती कराई है। पण आं उल्लेखित विधावां में सूं खास–खास है–नाटक, रूपक, रेडियो रूपक, ध्वनि नाटक, झलकी (स्किट), नुक्कड–नाटक, प्रहसन आद। राजस्थानी लोकनाट्य सांग, ख्याल, मांच, गवरी, रमत, टूट्यो, तुर्रा कलंगी आद द्रिस्य काव्य री अमोल विधावां हैं।

1.4.2.3 विसै री दीठ सूं–

गद्य कै पद्य सैली में लिखित साहित्य रा विसै भिन्न–भिन्न हुय सकै, ज्यान इतिहास, दर्सन, मनोरंजन, वीरता, सिणगार, भगती, पौराणिक आख्यान, रास्ट्रीयता आदि। विसै री दीठ सूं साहित्य रा निम्नलिखित भेद कैया जा सकै –

1. ऐतिहासिक काव्य, ज्यान–हम्मीर रासो, प्रिथिराज रासो, जायसी कृत पमावत, गोरा–बादिल चरित चौपई आद।

2. लौकिक अर पौराणिक आख्यान–वैताल पच्चीसी, कुतुबन कृत मृगावती, ढोला–मारू रा दूहा, नागदमण, बारहठ ईसरदास कृत हरजस, माधवानल कामकंदला चौपई आद।

3. वीर काव्य–आल्हा खण्ड, रणमल्ल छंद, हालाझाला री कुण्डालिया, कुरूक्षेत्र (हिन्दी कवि रामधारी सिंह दिनकर), वीर सतसई आद।

4. भगती अर सिणगार – सूर कृत भ्रमर गीत, नंददास कृत भंवर गीत, वेलिक्रिसण रूकमणी री, सिव पार्वती री बेल।

5. चेतनावादी काव्य–वीर सतसई (सूर्यमल्ल मिश्रण) प्रियप्रवास (अयोध्यासिंह उपाध्याय) कुरूक्षेत्र, परशुराम की प्रतीक्षा (दिनकर) ग्राम्या (पंत), लीलटांस (कन्हैयालाल सेठिया), राधा (सत्यप्रकाश जोसी) आद।

साहित्यकार आं विसयां नैं द्रिस्य अर स्रवण काव्य री किणी विधा में प्रत्तुत कर सकै।

1.5 इकाई रो सार

सार रूप में कैय सकां क साहित्य बाबत भारतीय अर आथूणै विद्वान खूब मंथन कर्‌यो, जिणरै पांण कैयो जा सकै क साहित्य जीवन सूं जुड़योड़ी रचना हुवै। वो मिनख जमारै रो व्याख्याता पथ प्रदर्सक हुवै। उणरी आत्मा रागात्मक अर सरूप कलात्मक है। साहित्य रो अन्तिम लक्ष लोकजीवन रो अनुरंजन अर हित संपादन हुवै। आपरै उद्देस्य रै आधार माथै वो विद्या भी है अर कला भी। सरूआत में विद्वान साहित्य नैं व़िद्या ई मानता रैया पण होळै–होळै उणमें मानव हित अर सौंदर्य री अनुभूति रो अहसास पांण विद्वान साहित्य नैं अेक कलात्मक विद्या रै रूप में अंगैजी।

आरंभ में साहित्य मौखिक इज हो, पण लिपिरै विकास सागै वो लिखित रूप पण धार लियो। इण भांत साहित्य रो ओ पैलो वरगीकरण हो। 'साहित्य' सबद तद आपरै व्यापक रूप में वाड़ग्मय' कैईजतो हो। अतः साहित्य रा दो भेद तद मानीजिया––ग्यान रो साहित्य अर ललित साहित्य। 'साहित्य' री मानीजे अरथ में साहित्य सबद ललित साहित्य सारू ई रूढ हुयगो। अतः विद्वान इणरै ई भेदोपभेदा मायै विचार कर्‌यो। सैली री दीठ सूं साहित्य रा दो भेद हुवै–पद्य अर गद्य तथा माध्यम री दीठ सूं साहित्य नैं म्हां दो भेदां में बांट सकां – स्रवण काव्य अर द्रिस्य काव्य। स्रवण काव्य में म्हां पद्य अर गद्य री सगळी विधावां नैं सामिळ कर सकां, क्यूंक आं नैं भण्यो अर स्रवण करयो जा सकै। पण द्रिस्य काव्य में रंगमंचीय विधांवा–नाटक, रूपक, ख्याल, रमत, रास, मांच आद ई सामिळ करीजै, क्यूं क आं रो आस्वादन आंख्यां सूं परतिख दरसाव रै पांण करीजै। आ बात दूजी क किणी स्रवण काव्य री विधा रो रूपान्तर द्रिस्य काव्य रूप में कर्‌यो जा सकै अर द्रिस्य काव्य विधावां रा रूपान्तर पण स्रवण काव्य में हुय सकै। इण भांत साहित्य रो वरगीकरण आं तीन आधारां माथै करयो जा सकै–

(अ) सैली री दीठ सूं – पद्य अर गद्य,

(आ) माध्यम री दीठ सूं – स्रवण अर द्रिस्य, अर

(इ) विसै री दीठ सूं – ऐतिहासिक, पौराणिक लौकिक, वीर, भगती–सिणगार, चेतनावादी (रास्ट्रीय) आद।

1.6 अभ्यास रा प्रस्न

(i) 'साहित्य' सबद री उतपत समझावता हुया साहित्य री ठावी परिभासा करो।

(ii) भारतीय अर आथूणै विद्वानां द्वारा साहित्य मुजब दीवी परिभासावां री विरोळ करो।

(iii) साहित्य रो ठावो अरथ बतळावता हुया उणरै सरूप नैं थरपो।

(iv) भारतीय अर आथूणै विद्वानां रा साहित्य रै उद्देस्य बाबत मानतावां री समीक्षा करो।

(v) आपरै विचार में साहित्य कला सारू है कै साहित्य जीवन सारू। पुख्ताऊ प्रमाणां सागै आपरी मानता नैं थरपो।

(vi) आप साहित्य नैं विद्या मानो कै कला? प्रमाणां सागै पुख्ताऊ पडूत्तर दिरावो।

(vii) भारतीय विद्वानां री साहित्य री विधावां मुजब धारणा नैं समझावता हुया साहित्य रै वरगीकरण रै आधारां रो खुलासो करो।

(viii) सैली री दीठ सूं साहित्य रै भेद नैं बतळावता हुया उणरी प्रमुख विधावां माथै टीप लिखो।

(ix) स्रवण काव्य अर द्रिस्य काव्य रै अरथ नैं समझावता थका राजस्थानी द्रिस्य काव्य विधावा रो परिचै दिरावो।

(x) प्रबन्ध काव्य माथै विस्तृत टीप लिखो।

1.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. सं. डॉ. घीरेन्द्र वर्मा–हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1।
2. डॉ. रामप्रकाश–समीक्षा–सिद्धान्त।
3. सं. चंद्रसिंह–राजस्थानी निबन्ध–संग्रह।
4. डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त–पाश्चात्य काव्यसास्त्र।
5. डॉ. भागीरथ मिश्र–काव्यसास्त्र।
6. डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा–भारतीय काव्यसास्त्र।

इकाई – 2

भारतीय साहित्यसास्त्र रा तत्व, मूल प्रेरणा अर प्रयोजन

इकाई रो मंडाण –

2.0 उद्देस्य

2.1 प्रस्तावना : भारतीय साहित्यसास्त्र

2.1.1 साहित्य अर काव्य

2.1.2 साहित्यसास्त्र अर काव्यसास्त्र

2.2 भारतीय साहित्यसास्त्रः तत्व विवेचन

2.2.1 काव्य तत्व : अरथ,

2.2.2 प्रमुख काव्य–तत्वां रो विवेचन

2.3 भारतीय साहित्यसास्त्रः मूल प्रेरणा

2.3.1 भारतीय काव्यसास्त्र मे मूल प्रेरणा कै काव्य हेतु मुजब चिंतन : प्रमुख आचारिजां री मानतावां,

2.3.2 प्रमुख काव्य–प्रेरणावां ।

2.4 भारतीय साहित्यसास्त्र : प्रयोजन

2.4.1 अरथ : आचारिजां री मानतावां

2.4.2 प्रमुख काव्य–प्रयोजन।

2.5 इकाई रो सार

2.6 अभ्यास रा प्रस्न

2.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

2.0 उद्देस्य

प्रस्तुत इकाई री प्रस्तुति रो उद्देस्य विद्यार्थियां नैं भारतीय दीठं सूं साहित्य अर काव्य, रै फरक नैं बतळवणो तथा भारतीय काव्यसास्त्र रै विविध नावां रो उल्लेख करता हुया उणरै वास्तै ठावै नांव कव्यसास्त्र री थरपणा करणो है। आं दोई सबदा रै सांतरै संबन्ध रो खुलासो कर'र म्हां भारतीय काव्यसास्त्र में विवेचित साहित्य रै तत्वां, प्रेरणावां (हेतुवां) अर प्रयोजनां रो विस्तार सागै विद्यार्थियां नैं परिचय देवालां। आ विरोळ विद्यार्थियां में साहित्य कै काव्य मुजब स्वाभाविक जिग्यासावां नैं सान्त करैला।

2.1 प्रस्तावना : भारतीय साहित्यसास्त्र

2.1.1 साहित्य अर काव्य –

सामान्य रूपा सूं साहित्य सबद दो अरथां में बरतीजै। उणरो अेक अरथ तो व्यापक है अर बीजो अरथ साकड़े (सीमित)। साहित्य रै व्यापक अरथ मुजब सगळी लिपिबद्ध रचनावां साहित्य में सामिळ हुवै। संस्क्रत में इण नैं वाड़ग्मय कैइजियो है। पण साहित्य रै सीमित कै सांकड़ै अरथ में सिरफ भावोद्वेलन सूं जूड़योड़ों ललित साहित्य कै रचनावां ई इणमें गिणीजै। साहित्य रै भांत इज विद्वान काव्य रा इज दो अरथ मानै – व्यापक अर सांकड़ो अरथ। पुराणा विद्वानां रै मतै काव्य में रागात्मक, भावनावां सूं संबंधित काव्य री सगळी विधावां री रचनावां आवै। अतः वांणी आ विचारधारा काव्य रै व्यापक अरथ नैं बतळावै। पण लार ला खास तौर सूं 19 वैं सइकै सूं काव्य रो अरथ विद्वान सांकडै अरथ में ई बरतीजण लागा। इण अरथ रै मुजब काव्य रो अरथ सिरफ कविता

(पद्य–रचना) सूं ई है, गद्य–पद्य–चम्पू, नाट्य रचनावां सूं नहीं। पण साहित्य रो प्रयोग भारतीय दीठ सूं अर कुछेक आथूणै विद्वानां री दीठ सूं सगळै रागात्मक कै भावोद्वेलित करणियी रचनावां सारू हुवतो आयो है अतः म्हां अर काव्य अर साहित्य रो अरथ समान रूपा सूं करां। पद्य अथवा कविता (काव्य) उणी रो अेक सैलीगत भेद है।

2.1.2 साहित्यसास्त्र अर काव्यसास्त्र –

इणी मत भेद रै कारण साहित्यसास्त्र अर काव्यसास्त्र बाबत पण विद्वान अेक मत कोनी हुय सक्या। अेक मत रै मुजब काव्यसास्त्र फगत कविता रै मानदंडां री विरोळ करै तो दूजै मत रै मुजब सगळी रागात्मक साहित्य (गद्य अर पद्य रै ललित साहित्य री विधावां) रा मानदण्ड साहित्यसास्त्रं में समाहित है। सांच तो आ है क भारतीय अर आथूणै विद्वान साहित्यिक रचना री ब्योत करण वाळी विधा नै काव्यसास्त्र इज कैवता हा। पण पुनर्जागरण काल रै पूठै आथूणै साहित्य–जगत में लिटरेरी क्रिटेसिज्म रै संदर्भ में साहित्यालोचन त्र साहित्यसास्त्र (Literary Crithicism) अर काव्यसास्त्र (Poetics) दो न्यारी विद्या हुयगी। Poetics अबै सिरफ कविता री साहित्यिक समीक्षा रो माध्यम बणगी। ओई प्रभाव अजै भारतीय साहित्य चिंतकां माथै लखावै।

पण भारतीय दीठ सूं काव्यसास्त्र अर साहित्यसास्त्र न्यारा–न्यारा कोनी, वै समानार्थी सबद इज है। भारत में सरुआती साहित्य सिरजण अर संवाद रो माध्यम पद्य हो। इण वास्तै अठै साहित्यसास्त्र री सिरजणा पण पद्य में ई व्ही अर साहित्यसास्त्र रो रूढ़ नांव काव्यसास्त्र पड़गों म्हांणै अठै साहित्य रै मानदण्डां री विरोळ करण वाळी इण विद्या रा काव्यसास्त्र कै साहित्यसास्त्र रै अलावा अंलकार–सास्त्र, क्रियाकल्प (काव्य क्रियाकल्प), लक्षणसास्त्र, रीतिसास्त्र, ध्वनिसास्त्र, वक्रोक्तिसास्त्र नांव ई प्रचलित रैया, पण आं सगळा उपादानां रो समन्वय काव्यसास्त्र में हुवण सूं काव्य (साहित्य) रचना रै सौंदर्य नैं परखण वाळै सास्त्र रो नांव काव्यसास्त्र इज चावो रैयो जिको अजै ई बरतीजै।

2.2 भारतीय साहित्यसास्त्र : तत्त्व विवेचन

2.2.1 काव्य तत्व : अरथ –

काव्य तत्वा सूं अरथ काव्य रै वां उपकरणां सूं है जिका उणनैं रमणीय बणावै। काव्य नैं रमणीय अर मनभावक बनावण वास्तै इज संस्क्रत रा आचारिज काव्य री आत्मा बाबत छव काव्य–सम्प्रदायां री सिरजना कर डाली। इण भांत संस्क्रत आचारिज काव्यगत आनन्द री व्याख्या रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, गुण, औचित्य अर चमत्कार आद तत्वां माथै करै। आं विचारधारावां सूं सम्बन्धित आचारिज आपरै मत नैं ई सिरै मानता रैया पण रस अर भासा री वकालत अै सगळा ई मत करै। इणी आधार पांण संस्क्रत विद्वानां सूं सहमत हुयर अेक विद्वान कैवै क भाव अर भासा काव्य (साहित्य) रा जरूरी उपकरण हैं। वै इण बाबत लिखै –''स्पृहणीय सुंदर भाव ही काव्य–साहित्य का मूल तत्व है और उसकी अभिव्यक्ति का अनिवार्य माध्यम भाषा–शैली है। रस–भाव या उदात्त भाव काव्य का प्राण तत्व है तो भाषा शैली उसका शरीर तत्व है।''

डॉ. रामरतन भटनागर संस्क्रत रै काव्यसास्त्रियां री काव्य–आत्मा रै आधार पांण मानै क रीति, गुण, औचित्य अर सबदालंकार काव्य रा बारलां अंग है। काव्य रै आन्तरिक अगां (तत्वां) रै रूपा में तो कवि रो भावनागत उणरो हास–परिहास अर चमत्कार इज आवै। उणा री मानता है क काव्य रै अन्तरंग तत्वा रै इन आध ाार माथै ई काव्य प्रबन्ध, गीति, निबन्ध, परिहास या विडम्बना अर सूक्ति आद विविध भेदां में विभाजित हुय सकै। अतः डॉ भटनागर काव्य रै तत्वां में रस, अलंकार रै सागै इज विचार, परिहास अर काव्य वैदगध नैं ई अंगैजै।

डॉ श्यामसुंदर दास रा बतायोड़ा काव्य तत्व आथूणै विद्वानां सूं प्रभावित लखावै। वै काव्य रा खास तीन तत्व (उपकरण) मानै। (1) बुद्धि तत्व अर्थात वै विचार जिका नैं लेखक कै कवि आपरी रचना री बिसै वस्तु बणाय'र अभिव्यक्ति देवै, (2) रागात्मक तत्व अर्थात् वै भाव जिका कवि कै लेखक नैं इण विसै नैं मांडण सारू प्रेरित करै अर वो पाठकां रै हिरदै में संचार करणो चावै। (3) कल्पना तत्व अर्थात् मन में किणी विसै नैं उकेरण री सक्ति जिणनैं कवि कै लेखक आपरी वृति में प्रदर्सित कर'र पाठकां री अन्तरमन–आंख्या रै सामै पण उणी रूपा में मूरत करण री अफळ करै। इण भांत डॉ. दास काव्य (साहित्य) रै तीन तत्वां सूं म्हानै परिचित करावै –

1. बुद्धि तत्व, 2. रागात्मक तत्व, अर 3. कल्पना तत्व।

हिन्दी अर राजस्थानी रा मानीता कवि स्व. कन्हैयालाल सेठिया आपरी काव्य पोथी 'लीलटांस' (राजस्थानी) संग्रै री रचना 'कविता' में म्हांणी निजरां काव्य तत्वां कांनी आकरसित करै –

भासा री खिमता नै
तौलणै री
ताकड़ी है कविता,
सबदां रै भारै में
चन्नण री
लाकड़ी है कविता
× × ×
मिनख रै हिये में
उकळतै भोभर री
सैनाणी है कविता,
गुड़ है गूंगै रो
उठा–पटक रो
अखाड़ो कोनी कविता,
ओखध है आतमां री
माटी री काया रो
भाड़ो कोनी कविता। (पृ. 25)

सेठिया जी री काव्यात्मक कविता री इण परिभासा रै आधार पांण म्हां आं तत्वां नैं मान सकां – 1. भासा सामरथ, 2. भावोद्वेलन 3. लोकहित अर 4. अखूट आनन्दानुभूति।

राजस्थानी निबन्धकार श्री कुंवरकृष्ण कल्ला रै मुजब काव्य रा अै तत्व कैया जा सकै –

1. सुघड़ भासा 2. छंद कै लयकारी
3. रागात्मकता (लोक रूचि) 4. ठिम्मरपणो अर 5. गेयता। (राजस्थानी गद्य संग्रह में संकळित निबन्ध – काव्य री परखं, पृष्ठ संख्या 75 – 85)

2.2.2 **प्रमुख काव्य–तत्त्वां रो विवेचन–**

भारतीय विद्वानां रै काव्य तत्व बाबत इण विस्ळेसण पांण म्हां निम्नलिखित नैं काव्य–तत्व रूपा में अंगैज सकां–

1. रस (भावतत्व कै रागात्मकता)
2. कल्पना तत्व
3. बुद्धितत्व
4. रीति तत्व (सैली तत्व)
5. भासा – सामरथ
6. छंद अर लय (लयात्मकता)

1. **रस (भावतत्व) –**

भारतीय काव्यसास्त्र में साहित्य रै तत्वा री जाणकारी करतै अचारिज काव्य री आत्मा मुजब छव सम्प्रदायां री थरपणा करी। अै छव ई सम्प्रदाय काव्य री आत्मा न्यारी–न्यारी थरप'र उणा रै तत्वा री व्याख्या करी हुवै पण सगळई सम्प्रदाय रा आचारिज रस नैं ई काव्य रै प्रमुख रूप में थरपै। ध्वनि सम्प्रदाय रसध्वनि रै माध्यम सूं रस नैं महत्व दिरावै तो अलंकार–सम्प्रदाय रै मुजब म्हाणीवृतियां अेक रस हुय'र रसानुभूति करै। वक्रोक्ति रा निर्माता वक्रता रै माध्यम सूं रस नैं अंगैजें तो रीति–अचारिज पदलालित में रसानुभूति करै। औचित्य सम्प्रदायं आं संगळा रै समन्वय में रस री उपस्थिति अंगैजै। काव्यसास्त्रियां रै मुजब औ रस इज भावतत्व कै रागात्कता है, जिणनैं साहित्य रै अेक महताऊ अंग रै रूप में मानीजियो है।

आचार्य भरत रै मुजब सहृदय (पाठक कै दर्सक) में इणरी उतपत विभाव, अनुभाव अर संचारी भावां रै मैळ सूं हुवै – ''विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रस– निष्पति।'' इण रूपा में औ भाव ई साहित्य (ललित साहित्य) नैं वाक्ड़ग्मय सूं अळगावै। क्यूं क मिनख रै हिदरै में बाह्य जगत री संवेदनावां रै कारण विकार ऊपडै। अै आपस में मिळ'र भाव कैईजै। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रै सबदां में ''नाना विषयों के बोध विधान होने पर उससे संबंध रखने वाली इच्छा की अनेक रूपता के अनुसार अनुभूति के जो भिन्न–भिन्न योग संगठित होते हैं, वे भाव या मनोविकार कहलाते हैं।'' सुक्लजी रै आं सबदां सूं खुलासो हुवै क कवि कै सिरजक संवेदनात्मक अनुभूतियां ई उणरी सहिरदैता रै रसरंग में रच–पच'र भाव रै रूपा में प्रगटीजै अर वै कैई बार इतरै उतावळै रूपा में अभिव्यक्त हुवै क वा नैं 'अन्तश्चेतना कै मनः लोक री उच्छलना ई केय दीरिजै।'

इण भांत भाव रो सीधो संबन्ध रागात्मकता सूं हुवै। इण वास्तै ई भाव तत्व नैं रागात्मक तत्व पण कैवै। साहित्यिक रचना में रागात्मकता तद इज आ सकै जद उणमें भावना रो औचित्य, खुलासै री खास सक्ति, भावनांवा री थिरता, व्यापकता अर विविधिता रैवैला। अै सगळी बातां सहिरदै नैं जीवन सूं मिळै। इण वास्तै ई साहित्य जीवन रै जुदा–जुदा भावां नैं प्रगटण में सफल हुवै। भारतीय आचारिजां रै मुजब ओई रस है अर काव्य री आत्मा है।

2. **कल्पना – तत्व**

संस्क्रत काव्यसास्त्री कल्पना तत्व रो विवेचन काव्य हेतु वां रस अर अलंकारां सागै करयो है। साहित्य में सुन्दर तत्व री सिरजणा कल्पना ई करै। रचेता री सोच नैं साहित्य में कल्पना ई सागो रूप देवै। इणी प्रक्रिया नैं संस्क्रत आचारिज ''अपूर्ण वस्तु–निर्माण, क्षमा प्रज्ञा प्रतिभा कैयो है।'' मतळब ओ क कवि आपरी प्रतिभा सूं अनुभूतियां नैं साज–संवार'र मूरतिमान करै। अतः प्रज्ञा प्रतिभा ई सागै रूप में कल्पना कैईजे जिणमें स्मृति बिम्बां री पुनर्योजना करण री खिमता हुवै। आचार्य सुक्ल रै सबदां में ''जो वस्तु हमसे अलग है, हम से दूर प्रतीत होती है, उसकी मूर्ति मन में लाकर उसके समीप्य का अनुभव करना उपासना है। साहित्य वाले इसे भावना कहते हैं और आजकल के लोग कल्पना।'' इण परिभासा सूं ओ खुलासो ई हुवैक कल्पना ई जीवन रै विविध बिम्बां नैं अेक उणियारो देय'र,उणरी नैड़ायत दिखाय'र खास रस नैं उपाडै। ओ ई खास रस काव्य कै कला रो आनन्द है। भाव भासा रै अलंकरण, मूरत–विधान, सौंदर्य प्रसाधन रै कारण कल्पना री साहित्य में लूंठी जागा है। भूत, भविस्य अर वर्तमान री अनुभूति पण काव्य में कल्पना ई करावै। संस्क्रत काव्य में कल्पना तत्व री दीठ सूं कवि कालिदास री कुमारसंभव, मेघदूतम् घणी चावी रचनावां है। कल्पना तत्व रो सुन्दर निर्वाह रीतिकालीन रचना 'बिहारी सतसई' नै बेजोड़ बणा दीवी तो चंद्रसिंध री लू अर बादळी में निहित कल्पना तत्व पांण राजस्थानी भासा रै काव्य नैं उजाळयो है। कल्पना अर भासा री समाहार सक्ति पांण बिहारी अर चन्द्रसिंह आपरै व्यापक भावां नैं दूहा–सोरठा जैडै नैनैं–सीक 48 मात्रावां रै छंद में समेट'र पाठकां रै साम्ही प्रस्तुत कर्‌या है–

आड़े कै आले वसन, जाड़े हू की राति।
साहस कैकै नेह बस सखी ढिंग जाति।।
पत्रा ही तिथि पाइये वा घर के चहुं पास।
नित प्रति पूनो ही रहै आनन ओप उजास।।

(बिहारी सतसई)

ठोडी आली ठोड़ में, गोड़ी सामी पाळ।
अब किण बिध पालो फिरै, किण बिध साधै छाळ।।
गयी कठै लाली निकळ, गयो कठै परताप।
आथण आथवंता अरक, पीळो मुख क्यूं आप।।

(लू)

आं ओळियां में कल्पना रो ओपतो नियंत्रित रूप लखावै। पण आदिकालीन अथवा रीतिकालीन कै डिंगल सैली रा राज्याश्रित कवियां री रचनावां में कलपनावां री उड़ान थोड़ी बेसी इज लखावै। उणां री अनियंत्रित कल्पना कविता नैं अतिसयोक्ति रै बैसी नैड़े लाय दिरायी है। इणी वास्तै स्यात वां कविता जग चावी कोनी बण सकी, सिरफ सामन्तां री सोभा बढ़ावण लग ई सीमित रैयी। श्री कुंवरकृष्ण कल्ला इण ठिम्मरपणै नैं काव्य सारू जरूरी मानैं अर आचार्य शुक्ल नियंत्रित कल्पना नैं विधायिनी कल्पना रूप में अंगैजता हुया लिखै'' काव्य विधायिनी कल्पना वही कही जा सकती है, जो या तो किसी भाव द्वारा प्रेरित हो अथवा भाव का प्रवर्तन या संचार करती हो।''

3. बुद्धि–तत्व –

संस्क्रत आचारिज साहित्य रो खास उद्देस्य लोकहित में आनन्द री पावती मानियो। उणां रै मुजब ओ आनन्द ब्रह्मानन्द सहोदर कैइजियो। अतः वै साहित्य में रमणीयता अर आल्हाद नैं ई सिरै मान्यो। पण इणरो अरथ कोनी क वै साहित्य कै काव्य रै अंग रूप में बुद्धितत्व नैं कदै अंगैजियो ई कोनी। विरोध–मूलक अंलकारां री विरोळ, वक्रोक्ति–विवेचन, ध्वनि विवेचन, रीति विवेचन में अै आचारिज–परतिख अर अपरतिख रूप सूं काव्य में बुद्धि तत्व नैं ई महत्व दिरायो है। इण महत्व रो खुलासो करता थका डॉ. त्रिगुणायत निम्नलिखित आधारां पांण बुद्धि नैं काव्य कै साहित्य रो अेक महताऊं अंग थरपै –

1. बुद्धि तत्व भावां नैं आधार भूमि दिरावै।
2. बुद्धि रै माध्यम सूं रचेता आपरै भावां रो खुलासो करण में समरथ हुवै, वो आपरी विसै वस्तु रो अेक खाको (रूप रेखा) सहज रूप में निर्मित कर सकै।
3. भावां नैं वो व्यवस्थित रूप में माण्ड सकै।
4. भावाभिव्यक्ति नैं बैसी चमत्कारीक अर प्रभावू बणाय सकै।

मतळब ओ क बुद्धि तत्व री सहायता सूं कवि कै रचेता कल्पना री खुली उड़ान नैं ठाम सकै। आपरी तर्क बुद्धि सूं वो रचना नैं ओजूं प्रभावी अर लोकमंगलकारी बणाय सकै। इण भांत समै मूजब भारतीय काव्यसास्त्र में पण बुद्धि तत्व रो महत्व बधतो रैयो है, चावै वो भाव तत्व रै बरोबर कोनी मानीजै। साहित्य री परख सारू बुद्धितत्व रै महत्व रो मूल्यांकन करता हुया ई डॉ. गिरिजा कुमार माथुर बुद्धि रस री कल्पना करी। उणां रै मुजब निरन्तर तक्र–बुद्धि रै विकास सागै साहित्य में कोरी कल्पना रो ई लेखन नीं है। आजरो पाठक हर घटना नैं तार्किक दीठ सूं जोवै। नयी कविता, नयी कहानी, अ–कहानी, सचेतन कहानी आदि रै लेखन में आधुनिक बोध रै कारण बुद्धि तत्व जोयो जा सकै।

साहित्य में बुद्धितत्व रै बावजूद इण बात रो पूरो ध्यान राखणो जरूरी है क वो साहित्य री आत्मा नैं दबा नहीं देवै। रचना नैं सिरफ बौद्धिक व्यायाम नहीं बणा देवै। अतः भारतीय काव्यसास्त्र में बुद्धि तत्व अेक सहायक तत्व रै रूप में ई स्वीकारीजियो है।

4. रीति–तत्व (सैली–तत्व) –

रीति नैं काव्य रो तत्व मानणिया सिरै आचार्य वामन है। वै 'रीतिरात्मा काव्यस्य' कैय'र काव्यसास्त्र में रीति तत्व री व्याख्या करी है। उणा रै मुजब 'पद्य री विसिस्ट रचना इज रीति है – ''विशिष्टापदरचना रीतिः।'' वै इण विसिस्ट पद रचनारो आधार गुणां नैं मानै – विशेषोगुणात्मा।'' अै गुण इज काव्य री सोभा रा आघायक तत्व हुवै अर काव्य रा नित्यधर्म कैईजै। रीति माथै ई काव्य रो फूटरापो निरधारित करीजै।

वामन रै पैला आचार्य दण्डी पण इण मत नैं अंगैजियो। वै रीति अर गुणां नैं सागै जोड'र वैदरभी आद रीतियां रा प्राण दस गुणां री चरचा करी – ''वैदर्भभार्गस्य प्राणा दशगुणाः स्मृताः।'' रीति तत्व री व्याख्या करता थका आंनदवर्धन ''वाक्य वाचक चारूत्व हेतु'' अर्थात् रीति सबद अर अरथ में फूटरापो थरपै। इणई भांत आनन्दवर्धन रै मुजब रस अर रीति रो गै'रो संबंध हुवै। इण वास्तै पदरचना माधुर्य गुणा माथै ई आधारित हुवै अर उणरी अभिव्यक्ति में सहायक हुवै – ''गुणानाश्रित्य तिष्ठन्ति माधुर्यादीन व्यनक्ति सा रसान्।''

इण भांत रीति तत्व री चरचा वामन रै पैलां अर पछै रा विद्वान पण करी पण इण रै थरपणा रो सगळो श्रेय वामन नैं मिळयो। अै सगळा ई आचारिज रीति रै न्यारै न्यारै भेदां रो निरूपण करयो है। वामन आदि आचारिजां द्वारा कथीजी रीतियां रै आधार पांण रीति रा खास तीन भेद हुवै– 1. वैदर्भी 2. गौड़ी अर 3. पांचाली। माधुर्य व्यंजक वरणां सूं करीजी समास रहित कै छोटा समासां वाळी रचना वैदरभी रीति री रचना कथीजै। इण रो बीजो नांव ललित ई है। वामन अर मम्मट इण नैं उपनागरिका पण कैवै।

ओज प्रकासक वरणां सू सम्पन्न, बड़ा–बड़ा समाज वाळी, सबदाडम्बारवती रीति गौड़ी कैईजै। ट–वर्ग री प्रधानता इणरी खासियत है। पांचाली रीति रो सबसूं पैला उल्लेख वामन ई करयो। आ माधुर्य अर सुकुमारता सूं सम्पन्न रीति है अर अगठित, भावसिथिळ, कान्ति रहित, मधुर गुणां सू इणरो गै'रो संबंध है।

रीति आचारिज गुणां री ई चरचा करीअर उणा री न्यारी–न्यारी संख्या निरधारित करी। वामन रै मुजब अै दस है। आचार्य दण्डी भरत रा कथीजिया दस गुणां (स्लेस, प्रसाद, समता, समाधि, माधुर्य, ओज, सुकुमारता, अरथ व्यक्ति, उदारता अर कान्ति) नैं ई अंगैजै। आचार्य कुन्तक भलैई रीति सिद्धान्त रो विरोध करयो व्है, पण वै अैचित्य अर सौभाग नांव रा दो साधारण गुणां नैं तथा माधुर्य, प्रसाद, लावण्य नैं अभिजात्य नांव'रा विसेस गुंणा रो वरणांव कर्‌यो है। आं सगळा नैं काव्यसास्त्री तीन गुणां में समाहारित करै – माधुर्य, ओज अर प्रसाद। जिण गुण सूं अन्तस आनन्द सूं सराबोर हुय जावै, माधुर्य गुण कैईजै। 'ट' वर्ग री बोहोळता, वीर, वीभत्स अर रोद्र भाव वाळी कविता में ओज गुण हुवै। इणरै उलट जिण कविता नैं भण'र मन प्रसन्न हुय जाय, उणमें प्रसाद गुण कैईजै। डिंगल सैली री कविता में ओज गुण ई प्रधान है।

5. भासा – सामरथ

भासा साहित्य रै बारलै पख नैं ओपतो बनावण वाळो तत्व है। भारतीय सहित्य– सास्त्र में इण बाबत रीति सम्प्रदाय, वक्रोति सम्प्रदाय, अलंकार–सम्प्रदाय में घणी चरचा करीजी है। पद–लालित्य सूं अरथ भासा–सौस्ठव सूं इज है। इणी भांत अलंकार–सम्प्रदाय रो उक्ति–चमत्कार भासा री सौंदर्य–सक्ति रो ई बखाण करै। भामह रै मुजब 'सबद अर अरथ रो औचित्य इज अलंकार है। भासा भावां री अभिव्यक्ति रो साधन हुवै। सबदां रै सटीक अरथ सूं ई वा प्रेसणीय बणै, अतः

अलंकारां रै पांण भासा नैं औजूं–ओपती अर प्रेसणीय बणाई जा सकै।

साहित्य रै भाव पख अर कला पख रो सागो समन्वय करै – ध्वनि सिद्धान्त। इण सिद्धान्त रै मुजब भासा री सक्तियां रै माध्यम सूं साहित्य (काव्य) में रस री अनुभूति हुवै। भासा री सबद सक्तियां ई उणरी भासा–सामरथ है। ओ सामरथ लक्षणा अर व्यंजना रै माध्यम सू कवि आपरी रचना में उजागर करै। माधुर्य, ओज, प्रसादादि गुण आं सबद साक्तियां री इज देन है।

आज साहित्य में काव्य भासा रै रूप में भासा–तत्व रो घणो महत्व है। आज साहित्य रो अध्ययन अर लेखन गद्य अर पद्य रूपां में हुय रैयो हे। दोया में भावतत्व नैं भाषा ई सपाथित करै। अतः सटीक भासा रै उपयोग सूं ई रचना में भाव–बिम्बां नैं उके'र उण नैं फूटरी अर प्रेसणीय बणाय सकै। गद्य भासा अर काव्य भासा में समानता लाय सकै।

साहित्य (काव्य) में भासा तत्व रै महत्व नैं अंगैजता हुया राजस्थानी चिंतक श्री कुंवरक्रिसण कल्ला भासा नैं काव्य रो डील मानै। वै इण बाबत लिखै ''भासा नैं गैणा–गाबा नहीं माना तो सरै, पण उण नैं काव्य रो डील तो मानणो ही पड़सी। चौखे डील सूं ही सटकै चोखी आत्मा रा दरसण हुवै। अपवाद हो सकै, पण खिंचाव तो सुंदर डील ही करै। आत्मा रा दरसण तो देह नैं भांग्या पछै ही हुवै। ... मस्त भासा में ही मस्त ख्याल औपै।'' मतळब ओ क भासा साहित्य रो अनिवार्य तत्व है। वो ई भावां नैं मूरत रूप देय'र पाठकां नैं रसानुभूति करावै।

6. छंद अर लय

साहित्य रा खास दो भेद कैईजै – पद्य अर गद्य। आं में पद्य में साहित्य सिरजण री घणी जूनी परम्परा लखावै। ज्ञान–परक साहित्य अर ललित साहित्य सरू सू ई पद्य रूप में सिरजियो। इणरो खास कारण रैयो उणरो छंद बद्ध हुवणो अर अेक खास लय में बंध्यों रैवणो। आं गुणां सूं वो सुविधा सागै कंठस्थ करयौ जा सकै हो। छंदा री इण सहजता रै कारण ही वेद अजै लग जीवित है। पण इणरो ओ अरथ कदै ई कोनी क गद्य में लय कोनी हुवै। लय भासा री अनिवार्यता है। इणी वास्तै म्हाणै संवादां में यति रै माध्यम सूं म्हां मौकेसर विराम देवा। इण बात री घणी ई सांतरी व्याख्या अज्ञेयजी आपरै अेक निबंध 'थिर होती पत्ती' में करी है।

इण भांत छंद अर लय सूं कोई साहित्य रचना नैं सहज याद राख्यौ जा सकै। उणरो भासिक सौदंर्य रो बधापो हुवै। सरसता रो संचार हुवै। निराला, कन्हैयालाल सेठिया री कवितावां अर नुई कविता छंद मुगत है, फेर ई उण में अेक ढावी लय सूं आं रचनावां रो रसास्वादन करयो जा सकै। लय रै माध्यम सूं आं में किणी छंद रो निरधारण पण करयो जा सकै। राजस्थानी वाता में लय री रवानगी रा लूंठा उदाहरण हैं। वचनिका छंद आपोआप गद्य निर्मित है। राजस्थानी ख्याल रचनावां में आं लय उण री गेयता अर प्रस्तुति में सुरक्षित है। चाहे पद्य हुवै कै गद्य बे–तुका (तुक रहित) संवाद कै वरण खटकै। रस दोस पैदा करै। क्यूंक उठै लय टूटी है। श्री कुंवरक्रिसण कल्ला रै सबदां में ''लैकारी एक भासा री आतमा सी हुवै। बीजी भासा में उत्थो करती बेळा इण लैकारी नैं पकडणो घणो दोरो। ध्वनि रो फूटरापो, उणरो उठाव–गिराव भासा भासा में बदळै।''

2.3 भारतीय साहित्यसास्त्रः मूल प्रेरणा –

2.3.1 भारतीय काव्यसास्त्र में मूल प्रेरणा कै काव्य हेतु मुजब चिंतन : प्रमुख आचारिजां री मानतावां –

काव्यसास्त्र में काव्य–प्रेरणा, काव्य–हेतु, काव्य प्रयोजन प्रायः समानअर्थी इज मानीजै। भारतीय काव्यसास्त्र में आं माथै विस्तार सागै विचार करीजियो है। आथूणै काव्यसास्त्र में काव्य हेतु रो विवेचन काव्य री प्रेरणा रै संदर्भ में मिळै, जद क भारतीय काव्यसास्त्र में काव्य रा हेतु अर काव्य रा प्रयोजन रूप में संस्क्रत आचारिज काव्य–सिरजण री मूल प्रक्रिया री चरचा करता थका सबसू पैला काव्य रै हेतुवां री विरोळ करी, फेर काव्य

प्रयोजन री। काव्य रो वो गूढ़तम कारण जिणरो अनुमान प्रायः नीं हुवै, प्रेरक कै प्रेरणा कैईजै उणरो थोड़ो ओळखीजतो रूप हेतु हुवै अर अेकदम खुलासो प्रयोजन कैईजै। काव्य रो प्रेरक वो कारण हुवै जिको मनोविस्लेसण सूं जाणीजै काव्य रो साधक हेतु है अर काव्य रो निमित्त अथवा उद्देस्य प्रयोजन।

भारतीय आचारिजां में स्सै सूं पैलां काव्य हेतुवां माथै भामह विचार करियो। वै काव्य सिरजण सारू प्रतिभा नैं ई सिरै मानै। इण रै सैयोगी रूप में बहुग्यता (सास्त्र– ग्यान निपुणता) अर अभ्यास नैं भी वै महत्व दिरावै। इण बाबत वै कैवे क गुरू रै उपदेस सूं ई जड़–बुद्धि ई सास्त्र–ग्यान कर सकै पण काव्य रो सिरजक तो कोई प्रतिभावान मिनख इज हुय सकै।

गुरूपदेशादध्येतु शास्त्रं जड़ाधियोऽप्यलम्।

काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावतः।।

आचार्य दण्डी प्रतिभा रै अलावां सास्त्र–ग्यान (व्युत्पत्ति) अर अभ्यास नैं ई काव्य रा हेतु मानैं। नैसरगिक प्रतिभा, विस्तृत निरदोस सास्त्र रो अध्ययन अर अमन्द काव्य रै अभ्यास नैं काव्य सम्पति रो कारण कैवै –

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम्।

अमन्दश्चामियोगोस्याः कारणं – काव्यसम्पदः।।

आचार्य रूद्रट सक्ति, व्युत्पत्ति अर अभ्यास नैं काव्य रा हेतु मानै। उणा रै मुजब काव्य में असार वस्तु नैं अळगी कर'र सार नैं अंगेज'र, उणमें चारूता लावण सूं व्युत्पत्ति अर अभ्यास काव्य रा कारण हुवै।

आचार्य वामन यूं तो काव्य – हेतुवां रै संदर्भ में प्रतिभा, बहुग्यता अर अभ्यास री चरचा करै, पण वै काव्य हेतु नैं दो भागां (बहुग्यता अर प्रकीरण) में बांटता हुया बहुग्यता नैं सिरै मानै। उणा रै मुजब बहुग्यता ई काव्य रै डील रो निरमाण करै। इणरै पूठै प्रतिभा नैं मानता थकां कैवै क प्रतिभा रै बिना काव्य सिरजण घणों दोरों हुयै।

राजशेखर आपरी पोथी 'काव्य मीमांसा' में स्यायदेव अर मंगल रै मानतावां रो हवालो देवता हुया काव्य हेतुवां बाबत कैवे क काव्य कर्म में कवि री समाधि सिरै साधन हुवै। पण सार रूप में वै सक्ति, प्रतिभा अर व्युत्पत्ति नैं काव्य–हेतु रूप में थरपै। आचार्य मम्मट काव्य हेतु री विरोळ करता हुआ कैवै –

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात।

काव्यज्ञाशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुदभवे।।

अर्थात सक्ति (प्रतिभा) अर लोक व्यवहार तथा सास्त्र अर काव्यादि रै विमर्स सूं नीपज्योड़ी निपुणता (व्युत्पत्ति) अर काव्यग्य री सिक्षा रो अभ्यास–अै काव्य रा तीन हेतु हुवै।

पण्डितराज जगन्नाथ प्रतिभा, अभ्यास, व्युत्पन्नता कांनी इसारो करता थका प्रतिभा नैं सिरै काव्य हेतु कैवै। उणा री मानता मुजब व्युत्पत्ति अर अभ्यास काव्य रा पेसक तत्व नीं हुय'र प्रतिभा रा पोसक है – ''तस्य (कव्यस्प) च कारणं कविगता केवला प्रतिभा तस्याश्य हेतुः कवचिद्देवता महापुरूष प्रसादादिजन्यमदृष्टम्। कवचिच्च विलक्षण व्युत्पत्ति, काव्य करणोभ्यासौ।''

आचार्य हेमचन्द्ररै मुजब 'प्रतिभा काव्य रो हेतु है। व्युत्पत्ति अर अभ्यास प्रतिभा नैं संस्कारित करणिया है। जिण भांत माटी अर जल रै मैळ सूं बीज माला री उतपत में कारण हुवै त्यूं इजा सास्त्र अर उणरै अभ्यास सूं प्रतिभा ई कवि री उतपत रो कारण हुवै। जयदेव पण इण तथ्य रो समर्थन करै।

प्रतिभैवश्रुताभ्यास सहिता कवितां प्रति।

हेतुर्मृदम्बुसम्बद्धः बीजात्पत्तिर्लतामिव।।

संस्क्रत आचारिजां री भांत इज हिन्दी आचारिज पण काव्य–हेतुवां में प्रतिभा, समाधि, अभ्यास अर व्युत्पत्ति च्यार कारणां नैं महताऊ मानैं। आं आचारिजा री मानतां आचार्य मम्मट सूं सैंठी प्रभावित लखावै। फेर ई सुरति मिश्र अर श्रीपति जैड़ा आचारिज हेमचन्द्र अर जयदेव री उपमा ''माटी–जल रै संजों सू बीज बध'र लता रै रूप में प्रगटै नैं बरतीज'र तीन्यू (प्रतिभा, अभ्यास अर व्युत्पति) रै संबंध नैं थरपीजियो है। सैवट, भारतीय

काव्यसास्त्री काव्य हेतु रै रूप में प्रतिभा, व्युत्पत्ति अर अभ्यास नैं महताऊ मान्यौ है। कुछ आचारिज समाधि रो ई भरपूर समर्थन करयो। आं रो म्हां अठै विस्लेसण करा हा –

2.3.2 प्रमुख काव्य–प्रेरणावां (काव्य हेतु)–

1. प्रतिभा –

भारतीय आचारिज काव्य सिरजण रै हेतु रूप में प्रतिभा नैं सिरै महत्व देवै। प्रतिभा रा बीजा पर्याय सक्ति अर संस्कार हैं। जिण व्यक्ति में प्रतिभा हुवै वो सदकाव्य री सिरजणा कर' र कवि कैलावण रो सागो अधिकारी है। भट्टतोत रै मुजब प्रतिभा वा प्रज्ञा है, जिकी नित नुवै रसानुकूल विचार निपजावै – ''प्रज्ञा नवोमेषशालिनी प्रतिभामता।'' वामन प्रतिभा नैं जन्मान्तर सूं मिल्योड़ो कोई संस्कार मानै है जिण रै बिना काव्य–सिरण असंभव है। जै काव्य सिरजण हुवै भी तो वो हास्यास्पद इज हुवैला – ''कवित्व बीजं प्रतिभानं कवित्वस्य बीजं, जन्मान्तरागत संस्कार–विशेषः कश्चित् यस्माद बिना काव्यं न निष्पद्यते, निष्पन्नं वा हास्यायतनं स्यात्।''

रूद्रट प्रतिभा नैं कवि री विसेस सक्ति कैवे –

''मनसि सदा सुसमाधिनी विस्फुरणमनेकधा विधेयस्या।

अक्लिष्टानी पदानि च विभान्ति यस्यामसौ शक्तिः।।''

मतळब मन री अेकाग्रावस्था में जिणमें अभिधेय रा अनेकू रूपा में फूटै अर जिणमें आक्लिस्ट पद सूझै, सक्ति कैईजै। कुन्तक इण सक्ति नैं ई 'प्रतिभा' कैवै। उणा रै मुजब पूरब जळम अर वर्तमान जळम रै संस्कार सूं भरपूर अनेक आद्वितीय दिव्य–सक्ति प्रतिभा कैईजै –

''प्राक्तनाद्यतन संस्कार परिपाक प्रौढ़ा प्रतिभा काचिदेव कविशक्तिः।।

आचार्य मम्मट पण प्रतिभा सारू सक्ति सबद रो प्रयोग करता हुआ कैवैक सक्ति कवि रो बीज–रूप संस्कार–विसेस है। इणरै अभाव में जै कवि रचना कर भी लैवे तो वा हास्यास्पद इज हुवै– ''शक्तिः कवित्व बीजरूपः संस्कार विशेषः यां बिना काव्यं न प्रसेरत् प्रसृतं वा उपहसनीयं स्यात्।।''

प्रतिभा री आं व्याख्या वां रै अलावा अेक महताऊ व्याख्या ओमैजू है, जिकी काव्य रचना रै ज्यादा नैड़ै लखावै। वाग्भट्ट आपरी रचना अलंकारसूत्र में लिखै।

प्रसन्नपद नव्यार्थयुक्त्युदबोध विधायिनी।

स्फुरन्ती सत्कवैः बुद्धिः प्रतिभा सर्वतोमुखी।।

अर्थात् घणी मीठी, नुवै अर्थावाळी, संप्रेसण सामरथ सूं भरपूर सत्कवि री बुद्धि रो रचनात्मक स्फुरण प्रतिभा है। राजसेखर प्रतिभा नैं परिभासित करता हुया कैवै क प्रतिभा सबदां, अरथां, अलंकारां, फूटरी उगतां अर बीजी काव्य रो सामग्री नैं हिरदै में उजाळै, जिका में प्रतिभा नीं हुवै उणां सारू परतिख दीखतां थका ई अलेखू पदारथ परख–सा दीखै अर प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति वास्तै अनेकू अपरतिख पदारथ ई परतिख लखावै –

''या शब्दग्राममर्थ सार्थमलंकार तन्त्रमुक्तिमार्गमन्यदपि तथा विधमधि हदयं प्रतिभासयति सा प्रतिभा। अप्रतिभास्य पदार्थ सार्थः परोक्षइव प्रतिभावतः पुनरपश्यतोऽपिप्रत्यक्ष इव।''

राजशेखर री इन परिभासा सूं प्रतिभा रा दो कारण लखावै – 1. काव्य मरम रो उद्घाटन अर 2. गै ' री अन्तरदीठ। आं दोया रै मैळ सूं काव्याभिव्यक्ति में प्रतिभा स्फुरित हुवै।

प्रतिभा मुजब आं सगळी मानतांवां में अभिनवगुप्त री मानता ई अजै लग मानीती रैयी है। उणां रै मुजब 'साव नुवी, मौलिक, अद्भूत री सिरजना करण वाळी प्रग्या सक्ति इज प्रतिभा हैं –

''प्रतिभा अपूर्व वस्तु निर्माण सक्षमा शक्तिः प्रतिभानं वर्णनीय वस्तु विषय नूतनोल्लेखशालित्वम्।''

2. व्युत्पत्ति –

व्युत्पत्ति से अरथ हुवै पाण्डित्य कै विद्वता। पाण्डित्य कै विद्वता संस्कार अर मार्जन सूं बधै। कवि सारू संस्कार–मार्जन घणौ जरूरी हुवै, क्यूंक सास्त्रादि रै ग्यान रै अभाव में प्रग्य मलिन इज रैवै। आचार्य दण्डी 'निर्मल प्रतिभा', सबद रो प्रयोग इणी अरथ में कर्‌यो है। आचार्य वामन सास्त्रग्यान नैं घणो महताऊ कैयो है। इणरी तुलना में बीजा तत्वां नैं वै प्रकीर्ण में राखै। वै कैवै क सबद स्मृति अभिध्यान, कोश, छंदसास्त्र, चित्रकला, कामसास्त्र अर दण्डनीति सूं हुवै। आं रै अभाव में काव्य रचना संभव कोनी। इणी तरिया रो मत आचार्य रूद्रट रो है। उणा रै मुजब छन्द, व्याकरण, कला, लोकस्थिति अर पदारथ ग्यान सूं नीपजियो उचित अनुचित रो विवेक व्युत्पत्ति है –

छंदोव्याकरणकलालोकस्थितिपदपदार्थविज्ञानाम्।

युक्तायुक्त विवेको व्युत्पत्तिरियं समासेन।।

मम्मट व्युत्पत्ति नैं निपुणता कैवै। आं निपुणता चराचर जगत नैं जोवण अर अध्ययन सूं प्राप्त हुवै – ''शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात्।'' हेमचन्द्र पण सांसारिक अनुभव अर अध्ययन सूं प्राप्त निपुणता नैं व्युत्पत्ति कैवै। आचार्य राजशेखर व्युत्पत्ति नैं परिभासित करता थका लिखै – ''उचितानुचित विवेको व्युत्पत्ति।'' उचित अनुचित विवेक सारू वै बहुग्यता नैं प्रमुख मानै। बहुग्यता रै पांण ई कवि रा विचार प्रामाणिक बणै। पाठक नैं क्रान्तिकारी चेतना देवण में समरथ हुय सकै। इणी आधार माथै वै आचार्य मंगल रै मत मुजब व्युत्पत्ति नैं प्रतिभा सूं श्रेष्ठ मानै।

3. अभ्यास –

'अभ्यास' सूं अरथ है बार–बार प्रयोग अर लगोलग कोसिस करणो। इण वास्तै ई प्रतिभा अर व्युत्पत्ति सूं सम्पन्न कवि अभ्यास सूं कविकर्म में कुसळता पावै। ''अभ्यासो–हि कर्मसु कौशलयावहति।'' इण कथन मुजब भलै ई काव्य रो खास तत्व नीं हुवै पण वो काव्य रो अनिवार्य हेतु जरूर मानीजैला। स्यात इण सारूं ई आचार्य वामन अर दण्डी प्रतिभा नै व्युत्पत्ति नैं अंगैजता थका अभ्यास रै महत्व नैं थरपियो है। दण्डी रै मुजब 'पूर्व–वासना जन्य अद्‌भुत प्रतिभा भलेई नीं हुवै, पण काव्य आदि रै सुनण, अनुसीळण अर लगातार अभ्यास सूं सुरसत री उपासना करण सूं निस्चित रूप सूं वाणी अनुग्रह करै। अतः जिका कीरत चावै वानै आळस नैं तज'र सुरसत री उपासन करणी चाहेजै, क्यूंक कवित्व रै खीण हुवण पै भी अभाससील मिनख विद्वानां री सभा में विहार करण री सामरथ राख सकै है –

न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिभानमद्भुतम।

श्रुतेन यत्नेत च वागुपासिता ध्रुव करोत्येव कमप्यनुग्रहम्।।

तदस्ततन्दैरनिशं सरस्वती क्रमादुपास्या खलु कीर्तिमीप्सुभिः।

कृशे कवित्वेपि जनाः कृतश्रमाः विदग्धागोष्ठीषु विहर्तुमीश्ते।।

(काव्यादर्श – 1/104–105)

आचार्य राजशेखर पण समाधिपूर्वक अभ्यास नैं काव्य रै मूल हेतु रूप में स्वीकारै। उणां मुजब दोई मिल'र सक्ति रै रूप में औळखीजै अर अै काव्य रचना सारू 'कर्तृस्वरूपा' बणै। ओ 'कर्तृस्वरूपा' हेतु ई कर्म रै रूप में प्रतिभा अर व्युत्पन्नता कैईजै। आं आचारिजां रै अलावा वा मह, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्तादि आचारिज ई काव्य हेतु रूप में अभ्यास नैं परतिख कै अपरतिख रूप सूं महताऊ मानै। साच आई है क अभ्यास कविकर्म वास्तै अेक जरूरी तत्व है, उण सूं काव्य में अेक ठावी ओप आवै। जड़ बुद्धि पण 'अभ्यास' सूं काव्य सुजान बण सकै।

4. समाधि –

संस्क्रत काव्यसास्त्र में काव्य हेतु रूप में समाधि री व्याख्या करणिया पैला आचार्य वामन हैं। वै इण सारू 'अवधान' सबद बरतीजियो है। वामन रै मुजब चित्त री थिरता (अेकाग्रता) ई अवधान कैईजै।

इण अवधान प्रक्रिया सूं कवि सबदारथ रो दरसण करै। ओ अरथदरसण वास्तै कवि रो अेक खास तरिया से योगाभ्यस है। आचार्य राजसेखर इण समाधि बाबत आचार्य स्यामदेव रा मानता पांण कैवे क समाधि इज काव्य रचना रो फगत हेतु हुवै। वै समाधि नैं परिभासित करता हुया कैवै – ''मनसि एकाग्रता समाधि'' अर्थात् मन री एकाग्रता ई समाधि है। इणरी व्याख्या सारू वै इण स्लोक नैं प्रस्तुत कर्‌यो है –

सारस्वतं किमपि तत्सुमहारहस्यं,

यद् गोचरे च विदुषां निपुणैक सेव्यं।

तत्सिद्धयं परमयं परमोऽभ्युपायो,

यच्चेतसो विदितनेद्यविधे समाधिः।।

मतळब सरस्वती रो रहस्य महान, गंभीर अर अवर्णनीय हुवै। वो अति निपुण विद्वानां रै ग्यान रो विसै हुवै पण उणरी पावती फगत मन री समाधि कै एकाग्रता सूं ई संभव हुवै।

इण भांत कविकर्म सारू समाधि सिरै साधन है। समाधि मायली प्रक्रिया है, जद क अभ्यास बारली। ''समाधिरान्तरः प्रयत्नो बाह्यस्त्वभ्यासः।'' समाधि वास्तै पण अभ्यास री जरूरत है। फेर ई इण नैं काव्य रो हेतु अंगेजण में कोई भूंडी बात कोनी।

सैवाट, भारतीय काव्यसास्त्र में काव्य हेतु आं माथै भरपूर चरचा व्ही। भारतीय काव्यसास्त्र में अै च्यार हेतुवां री व्याख्या करीजी है – प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास अर समाधि। भारतीय काव्यसास्त्र मुजब आं च्यारां रो समन्वित सैं योग है। किणी अकेला अेक हेतु नैं कविकार्म सारू ठावौ नीं कैय सकां। आं में सूं प्रतिभा, व्युत्पत्ति अर अभ्यास नैं अधिकांस काव्यसास्त्री महताऊ कैयौ है। आचार्य मम्मट आं तीन्यू रै समन्वित रूप नैं स्वीकारता हुया लिख्यौ है क अे तीन्यू ई काव्य–उत्कर्स रा सामिळ हेतु है, न्यारा–न्यारा कोनी – त्रयः न तु व्यस्तास्तस्य काव्यस्योद्‌भवे निर्माणे समुल्लासे च हेलुर्न तु हेतवः।''

2.4 भारतीय साहित्यसास्त्र : प्रयोजन

2.4.1 अरथः आचारिजां री मानतावां

संस्कृत – साहित्य में किणी विसै रै अययन रा च्यार क्रम मानीजै – प्रयोजन, अधिकारी, संबंध अर विसै–वस्तु। ओ च्यार रो क्रम 'अनुबंध–चतुस्टय' नांव सूं ई ओळखीजै। काव्यसास्त्रियां री दीठ सूं इण 'अनुबंध – चतुस्टय' में सबंसूं महताऊ प्रयोजन इज कैईजियो है। इणी वास्तै संस्क्रत काव्यसास्त्र में प्रचलित सिद्धान्त है – ''यावत प्रयोजनं नोक्तं तावत तत्केन गृह्यते'' अर्थात् जद लग प्रयोजन रो खुलासो नीं हुवै तद ताईं किणी काम नैं नहीं अंगैजणो। इण महत्व खातिर इज भारतीय विचारधारा में काव्य प्रयोजन माथै विचार करता थकां सांस्क्रतिक प्रिस्ठभोम नैं ई आदरीजी। धरम, अरथ अर सिक्सा पण काव्य, प्रयोजनां में गिणीजिया।

आचार्य भरत नाट्यसास्त्र में नाटक रै संदर्भ में काव्य प्रयोजनां री व्याख्या करी है। आं व्याख्या भारतीय काव्यसास्त्र में काव्य–प्रयोजनां बाबत सरूआती संकेत हैं। भरत' रै मुजब धरम, अरथ, काम, मोक्ष, लोकोपदेस, विश्राम, बुद्धिविकास, नीति सिक्सा, हित अर विनोद काव्य रा प्रयोजन है। (नाट्य सास्त्र – अध्याय–1, स्लोक 114–120)। वै नाट्य नैं पांचमो वेद केयौ अर उणरो उद्देस्य रो खुलासो करता कैयो क ओ पांचमो वैद वां लोगां सारू है। जिका नैं बीजा वेद वर्जित है। वै अेक जागां ओ पण कैयो है क श्रम अर दुखी तपस्वियां दुख निवारण खातिर पण नाट्य री रचना करीजी है, जदपि धरम–सास्त्र मुजब तपस्वियां नैं अभिनय करणो अर देखणो वर्जित है –

दुःखार्तानां श्रजार्तानां शोकातानां तपस्विनाम्।

विश्रामजननं लोके नाट्यमेतद्‌भवितयति।।

आचार्य भामह काव्य रै प्रयोजन माथै विचारतां लिखै क सत्काव्य रै अनुसीलण कै रचना सूं धरम, अरथ, काम अर मोक्ष रो ग्यान हुवै अर प्रीति (अलौकिक आनंद) सूं कवि नै पाठक दोई लाभ प्राप्त करै –

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

प्रीति करोति कीर्ति च साधु काव्य–निबंधनम्।।

आचार्य वामन काव्य रा दो ई प्रयोजन मानै–प्रीति अर कीर्ति। उणां रै मुजब अै दोई प्रयोजन जीवन काल अर उणरै पूठे लग रैवे। वै आनंदानुभूति नैं काव्य रो द्रिस्य प्रयोजन अर कीर्ति नै अद्रिस्य प्रयोजन कैवै –

''काव्य सद्दृष्टादृष्टार्थप्रीति – कीर्ति हेतुत्वात्।''

आचार्य रूद्रट युगान्त थिर जगतव्यापी यस, धनपावती, विपतिनास, अलौकिक– आंनद, आप्त–कामना, धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष री प्राप्ति आद नैं काव्य रा प्रयोजन बतळावै। आनंदवर्धन काव्य रो खास प्रयोजन प्रीति नैं मानै – ''तेनव्रमः सह्रदयमनसः प्रीतये तत्स्वरूपम।'' अभिनवगुप्त ई प्रीति नैं ई काव्य रो प्रयोजन कैवै, पण आ प्रीति रसानुभूति परक है, आनन्दवर्धन री 'ह्रदयाल्हाद' वाळी कोनी।

आचार्य दण्डी महाकाव्य रैं संदर्भ में काव्य प्रयोजन रो खुलासो करता हुया लिखै–

इतिहासकथेद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम्।

यतुर्वगफलायत्तं चतुरोदात्त नायकम्।।

इण भांत दण्डी रै मुजब धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष री प्राप्ति ई काव्य रो परम लक्ष है। इण बाबत चरचा करता थकां वै आगै राजावां री जस गान री रक्षा करण नैं ई काव्य रो प्रयोजन मानै।

आचार्य कुन्तक रै मतै काव्यं 'धर्मार्थकाममोक्ष – पुरूसारथ चतुस्टय रो साधक हुवै। सह्रदय नैं आल्हाद देवविणयो हुवै। अलौकि आनन्द रो जनक पण हुवै।' आचार्य विस्वनाथ भी भामह री दाई' पुरूसारथ चतुस्टय' नैं काव्य रो खास प्रयोजन बतळावै। पण्डितराज जगनाथ जस, लोकोत्तर आनन्द, गुरू, राजा, देवतावां री प्रसन्नता नैं काव्य रो प्रयोजन मानैं – ''तत्र कीर्ति परमाह्रळाद गुरूराजदेवताप्रसाघानेक प्रयोजनस्य काव्यस्य .. .।'' कुछ इणी तरिया रा प्रयोजन आचार्य राजसेखर बतळावै –

ख्यातानराधिपतयः कवि संश्रेपेण,

राजाश्रयेण च गताः कवयः प्रसिद्धिः।

राजा समोऽस्ति न कवे परमोपकारी,

राजा न चास्ति कविना सदृशः सहाय।।

अर्थात् काव्य कवि री कीरत, लोकोपयोगी विविध विसयां, विविध सास्त्रां, विविध विधावां सूं संस्कारित हुवण सूं वा सगळा सारू उपयोगी अर राजा रिषि, देवता वां रै जस रो विस्तार हुवै।

संस्क्रत काव्यसास्त्र में आचार्य मम्मट रै बतळाया काव्य–प्रयोजनां री बेसी चरचा रैयी है। उणां रै मुजब काव्य रो खास प्रयोजन आनन्द है, पण इण रै अलावा वै जस, धन, व्यवहार–ग्यान, अनिस्ट–निवारण, सद्य–परिनिवृति (आनंद) अर कान्तासम्मित उपदेस नैं ई काव्य प्रयोजन रूप में वर्णित करै –

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

सद्यः परिनिर्वृतये कान्ता–सम्मिततयोउपदेशयुजे।।

आ छंव काव्य प्रयोजनां में सूं जस, अरथ, अर अनिस्ठ–निवारण पूरी तरिया सूं कविनिस्ठ अर व्यवहार ग्यान, कांतासम्मित उपदेस पाठकनिस्ठ तथा आनन्द कवि अर पाठकनिस्ठ प्रयोजन कैया जा सकै।

हिन्दी रा रीतिकालीन आचारिजां सूं अजै लग रा कवि अर विचारकं पण काव्य– प्रयोजनां माथै विचार करयो। रीतिकालीन आचारिज इण बाबत संस्क्रत आचारिजां सूं बेसी प्रभावित रैया। आचार्य कुलपति मिश्र जस, धन, आनंद अर व्यवहारग्यान नैं काव्य रा प्रयोजन मानता हुआ लिख्यो है –

जस सम्पति आनन्द अति दुखिन डारै खोय।

होत कवित तें चतुरई जगत रामबस होई।।

देव आनन्द अर जस नैं काव्य रा प्रयोजन कैवै, जिका वामन रै आनन्द अर कीर्ति रो ई रूपान्तर है–

ऊंच नीच अरू कर्म , बस चलोजात संसार।

रहत भव्य भगवन्त जस, भव्य काव्य सुख सार।।

हिन्दी रा आधुनिक आचारिज खास तौर सूं डॉ. श्यामसुन्दर दास, रामचंदर सुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ नगेन्द्र, डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित आद काव्य प्रयोजन री विरोळ में संस्क्रत काव्यसास्त्रियां री दीठ नैं सामी राखतां आधूणी विचारधारा सूं भी प्रभावित लखावै। इण वास्तै ई अै विद्वान काव्य रै प्रयोजन री व्याख्या में समन्वय–वादी विचारधारा रो परिचै दिरायो अर लोकमंगल, जीवन री आलोचना, चरित्र, सुधार, जस, मनोरंजन, सिक्षा, स्वान्त–सुखाय, समाज रै प्रति विस्वास आदि नैं काव्य प्रयोजन रूप में थरपिया।

राजस्थानी रा विद्वान गोरधन शर्मा अर श्री कुंवरक्रिसण कल्ला ई काव्य रै प्रयोजन बाबत आपरा विचार प्रगट्या है। डॉ. शर्मा साहित्य (काव्य) नैं जीवन सारू उपयोगी मानता हुया इण रो खास उद्देस्य समाज में अेकता री थरपणा नैं मानैं। वै इण बाबत लिखै – '' साहित्य जीवण अर जगत रो मेळ है। महात्मा अर पूगियोडा सिद्ध–योगी जिण एक संत्ता रो अनुभव घणी साधना, नेम अर तप सूं करै है, साहित्य उण एकता रो अनुभव सो' रो '– सो'रो करा देवै। इण जगती में घणो जंजाळ। घणी छोटी–बड़ी भांत री चीजां हैं, पण इण ऊपरी दिखावै, फरक अर आकार भेद रै होता हुया भी एक ऐड़ी सचाई इण सब चीजां में है जिण नैं समझणो रमत कोनी। 'काव्य' कै 'साहित्य' इण एकता नैं संवारै, सामी प्रगट करै।''

श्री कुंवरक्रिसण कल्ला रै मुजब साहित्य कै काव्य रो खास प्रयोजन लोकहित हुवै। अतः कवि नैं उणरै सिरजण में ''जन साधारण रो भी ख्याल करणो पड़ै। बीत्यै जुग रै छायापटल में वर्तमान नैं देखै अर भविस्य रा सुपना संवारै, वो ही सुकवि कहावै।'' आगै वै साहित नैं मिनख सारू जरूरी मानैं, क्यूंक उणरो प्रयोजन तो मिनख नैं संस्कारित करणो हुवै – ''साहित एक जागति जोत सो हुवै। एक जुग सूं दूसरो जुग लण नैं झालै, संभाळै।''

2.4.2 प्रमुख काव्य – प्रयोजन

आं सगळा मतां पांण म्हा काव्य रा निम्नलिखित प्रयोजन कैय सकां–

(अ) जस –

मिनख में जस कमावण री इच्छा सदीव रैवै। जस पावण खातर ई वो आपनैं चोखा कामां में निरत राखै। काव्य रो जस कवि नैं च्यारू कानीं प्रसिद्धि दिरा सकै। इण वास्तै कवि रो लक्ष्य जस पावणो इज हुवै। कवि कालिदास, भवभूति, जायसी, तुलसी, सूर, अज्ञेय, कन्हैयालाल सेठिया, सतप्रकास जोसी सगळा ई कवि आपरी रचनावां सूं अजै लग जस रा धणी है। भर्तृहरि री तो आ मानता हैक भौतिक सरीर नस्ट हुय जावै पण जरा–मरण सूं रहित जस रूपी सरीर सदीव अमर रैवै –

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वराः।

नास्ति येषां यशः काये जरामरणनं–भयम्।।

भारवि पण आपरी सिरजणां जस प्राप्ति सारू ई करी–''यशोधिगन्तुम्ः।''

(आ) अरथ–प्राप्ति –

काव्य रै भौतिक प्रयोजनां में सूं अरथ पावती सिरै प्रयोजन मानणो चाईजै। इण भौतिक जगत में धन रै बिना कई सम्भव कोनी। पीसा रै पांण ई जीवण री गाड़ी धकै। इण वास्तै कवि रै सिरजणं रो खास प्रयोजन अरथ कमावणो प्रमुख हुय सकै। आज बड़ा–बड़ा कवि सम्मेलनां, आयोजन, रायल्टी रै माध्यम सूं कवि मानदेय रूप में घणी म्होटी रकम कमा रैया है। मध्यकाल रा आश्रित

कवि आपरी कवितावां रै माध्यम सूं जागीरां पावता रैया। केसवदास नैं इक्कीस गांवां री जागीर मिळी थकी ही। बिहारी हर दूहे माथै राजा जयसिंह सू अेक मुहर पावता हा। साहनामा रा लेखक फिरदौसी नैं ई अेक से'र माथै अेक असरफी मिळती ही। उपन्याससम्राट प्रेमचंद जी आपरी गरीबी सूं उरिण हुवण खातिर कहानियां लिखता हा तो अंग्रेजी उपन्यासकार स्कॉट आपरै करज नैं चुकावण वास्तै उपन्यास लिख्या।

(इ) व्यवहार–ग्यान –

साहित्य समाज रो दर्पण कैईजै। इण दीठ सूं साहित्य रो समाज सागै सीधो संवाद हुवै। साहित्य में समाज री रीति–नीति, वातावरण रो वरणाव हुवै, जिण नैं सामाजिक भण'र लोक नीति–नीति री ओळखांण कर सकै। इण व्यवहार ग्यान रै महत्व रै कारण इज विद्वान साहित्य कै काव्य रो मूल प्रयोजन लोक हित कै सत्यं–शिवं–सुंदरम् (लोकमंगल) नैं मानै। तुलसी, सूर, हरिऔध, मैथिलीसरण गुप्त, आचार्य रामचन्द्र सुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि इणी विचारधारा रा विद्वान हैं।

(ई) शिवेत्तर क्षति (अनिस्ट–निवारण) –

काव्य सूं अनिस्ट रो निवारण पण हुवै। काव्य स्तुतियां पांण अनेकू कवि आपरै दुखां रो निवारण करयो है। मम्मट काव्य–प्रकास में मयूर कवि रो दाखलों पेस करता हुया कैयो क वै सूरजभगवान री सौ सिलोकां में स्तुति कर 'र आपरी कोढ़ री बीमारी सूं मुगत हुया। बाणभट्ट आप रै दुःख निवारण सारू पार्वती री स्तुति लिखी। महाकवि तुलसीदास आपरी बाहुपीड़ रै निवारण वास्तै 'हनुमान बाहुक' रचना रो सिरजण करयो। जैन कवियां में इण तरिया री स्तुतियां लिखण री खासी परम्परा रैयी है। आधुनिक प्रगतिसील अर रास्ट्रीय भावनावां री कविता में समाज अर देस में पसरियोड़ा कस्टां सूं मुगती पावण अर सैमूचै विकास री विनंती करीजी है।

(उ) सद्यः परिनिर्वृत्ति –

काव्य–रस सूं अनुभूत आनन्द री पावती ई काव्य रो खास प्रयोजन मानीजियो है। इण आनन्द में ग्याता ग्येय अर ग्यान रो भेद अेकदूजै में लुप्त रैवै। आ आनन्दानुभूति कै रसानुभूति विभावादि रै वरणाव अर चर्वण सूं नीपजै। इण वास्तै ई कविता नैं मम्मट 'नवरसरूचिरां' अर 'आल्हादैकमयी' कैयो है। काव्य सूं नीपज्योडै इण आनन्द री अनुभूति कवि अर पाठक दोई करै। आ आनन्दानुभूति जीवन री विसमतावां अर वेदनावां नैं आधी कर'र सान्ति रै मनोराज्य री थरपणा करै। अतः इणनैं ई काव्य रो खास प्रयोजन मान्यो जावणो चाईजै।

(ऊ) कान्ता–सम्मित उपदेस –

धण (पत्नी) रै समान मधुर उपदेस देवणों भी काव्य रो प्रयोजन हुय सकै। सन्त काव्य री उकतां, दुरसा आढ़ा री विरूद छिहोतरी रा दूहा अर कन्हैयालाल सेठिया री कविता 'पाथल अर पीथळ' इण रा सैंठा उदाहरण कैया जा सकै। पंचतंत्र अर हितोपदेस री सिरजणा तो इणी उद्देस्य सूं व्हीं। सास्त्रां में तीन तरियां रै वचनां नैं महत्व दीरिजियो है – प्रभुसम्मित सबदां में आदेस (आग्या) रैवै अर चोखी–भूण्डी बातां रो निर्देस हुवै। वेद–सास्त्रादि रा उपदेस इणी वरग रा है। सुह्रदसम्मित वचनां में आग्या नीं हुय'र भावना रैवै। इतियास–पुराण आद में कथीजिया उपदेस इणी श्रेणी में आवै।

काव्योपदेस खाण्ड में पाग्योड़ी कुनैन री गोली ज्यूं हुवै, जिका स्रोतावां माथै असर तुरन्त करै। बिहारी रो ओ दूहो राजा जयसिघं माथै अैडो असर न्हाकोक वो नवोड़ा नै छोड़'र तुरन्त घमसान सारू तैयार हुयगो

''नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहि विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बिध्यौ, आगै कवन हवाल।।

2.5 इकाई रो सार

सैवट काव्य रो फगत कोई अेक प्रयोजन कोनी हुय सकै। उण खास प्रयोजन सागै बीजा प्रयोजन पण हुय सकै। अतः भारतीय काव्यसास्त्रिया मुजब काव्य रो खास प्रयोजन ब्रह्मनन्द सहोदर काव्य रस री आनन्दानुभूति हुवै। काव्य रो ओ उद्देस्य स्वान्तः सुखाय है। हिन्दी अर राजस्थानी रा भक्त कवि इणरी पूर्ति करै। पण सांसारिकता में फगत स्वान्त सुख कै आत्मीयसुख सूं पार कोनी पड़ै। मिनख री जिजिविसा, उणरै आगै ब्राह्मण री कामना पांण काव्य रा बीजा प्रयोजन ई हुय सकै। जस पावती, धनार्जन जैड़ा व्यक्तिगत प्रयोजन भी हुय सकै। पण साहित्य सदीव जन हिताय लिखिजै। अतः उणरा प्रयोजन लोकहित, लोकमंगल, व्यवहार–ग्यान, उपदेस, मनोरजंन आदि ई हुवै। फगत मनोरंजन करण वाळो साहित्य लोकमंगलकारी हुवण में संका पैदा करै। मैथिलीसरण गुप्त रै सबदा में यदि वही हमने किया तो क्या कहा हो रहा है जो यहां सो हो रहा है। व्यक्त करती है कला ही यह यहां।

इण वास्तै काव्य रो प्रयोजन सदीव महान हुवै। काव्य सदीव जीवन नैं मंगलमय बणावै। अतः अै सगळा प्रयोजन धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष (अनुबंध, चतुस्टय, में समाहित हुयं 'सत्यं–सिवम्–सुंदरम्' री अभिव्यक्ति करै।

प्रयोजन री भांत इज भारतीय आचारिज आप री दीठ सूं काव्य रै तत्वां री व्याख्या करी, ज्यारैं सार–रूप में म्हां रस (भावतत्व कै रागात्मकता), कल्पना, रीति (शैली), भासा सामरथ, छंद अर लय आदि नैं काव्य रा प्रमुख तत्व कैय सका।

काव्य तत्वां री व्याख्या रै सागै ई आचारिज काव्य हेतुवां माथै ई विचार करयो। आं विद्वानां रै विचार रै सार रूप में मुख्य हेतु कै प्रेरणावां प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास अर समाधि है।

2.6 अभ्यास रा प्रस्न

1. भारतीय काव्यसास्त्र में साहित्य अर काव्य रै अरथ नैं समझावता हुया भारतीय आचारिजां मुजब काव्य तत्वां री व्याख्या करो।
2. भारतीय आचारिजां द्वारा बतायोड़ी मूल काव्य प्रेरणावां री व्याख्या करो।
3. काव्य हेतु अर काव्य प्रेरणा रै संबंध रो खुलासो करता हुआ भारतीय आचारिजां द्वारा थरपीजिया काव्य–हेतुवां री विरोळ करो।
4. भारतीय आचारिजां री काव्य–प्रयोजन मुजब विचारधारा री विरोळ करो।
5. साहित्य रै प्रयोजन रो अरथ समझावता हुया प्रमुख काव्य–प्रयोजनां री व्याख्या करो।
6. काव्य हेतु काव्य प्रेरणा अर काव्य प्रयोजन रै संबंधा रो खुलासो करता हुया राजसेखर रा बतायोड़ा काव्य हेतुवां री व्याख्या करो।
7. काव्य प्रयोजन संबंधी मम्मट री विचारधारा रो खुलासो करो।
8. टीपां लिखो –

   साहित्य रा प्रमुख तत्व, समाधि, प्रतिभां, लोकमंगल, काव्य रो भासा–सामरथ, काव्य में व्यवहार ग्यान, कान्तासम्मित उपदेस।

2.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. सं. धीरेन्द्र वर्मा – साहित्य कोश, भाग।
2. डॉ. राम प्रकाश – समीक्षा – सिद्धान्त।
3. डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा–भाषा विज्ञान की भूमिका।
4. डॉ. भागीरथ मिश्र – काव्य शास्त्र।
5. सं. चन्द्रसिंह – राजस्थानी निबन्ध संग्रह।

इकाई – 3

भारतीय काव्यसास्त्र : सामान्य परिचै

इकाई रो मंडाण –

3.0 उद्देस्य

3.1 प्रस्तावना : काव्यसास्त्र सूं अरथ –

3.2 भारतीय काव्यसास्त्र रा विविध नांव अर उणां रो औचित्य

3.3 भारतीय काव्यसास्त्र : उतपत अर विकास

3.3.1 उतपत

3.3.2 विकास

3.4 भारतीय काव्यसास्त्र रा विविध सिद्धान्त –

3.4.1 काव्य–हेतु

3.4.2 काव्य–प्रयोजन

3.4.3 काव्य–लक्षण

3.4.4 काव्यात्मा

3.5 भारतीय काव्यसास्त्र रा खास सम्प्रदाय

3.6 आलोचनासास्त्र में काव्यसास्त्र री ठोड़

3.7 इकाई रो सार

3.8 अभ्यास रा प्रस्न

3.9 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

3.0 उद्देस्य –

इण इकाई रो खास उद्देस्य विद्यार्थियां नैं भारतीय काव्यसास्त्र री ओळखांण करावणो है। काव्यसास्त्र कांई है? इणरो विकसाव किण भांत हुयो? काव्य कै साहित्य अेक ई है क न्यांरा–न्यांरा अर उणां री निरख–परख सारू खास–खास किस्या सम्प्रदाय हैं? आं सम्प्रदायां री आलोचनासास्त्र में कांई ठौड़ है – आं सगळी बातां री जाणकारी म्हां इण इकाई में दिरावांला।

3.1 प्रस्तावनाः काव्यसास्त्र सूं अरथ –

मिनख रो साहित्य अर कला सूं गै'रो संबन्ध है। अै मिनख रै मनोवेगां री रमणीय अभिव्यक्ति हुवै। काव्य पण साहित्य रो अेक अंग अर कला रो अैक भेद है। कवि द्वारा सम्पन्न कारज ई काव्य कैइजै। ओ कारज ललित पदावली सूं संजुक्त गूढ़ सबदारथ हीण, सरव सुगमं, तरक–संगत, निरत में उपयोगी, सरस अर संधि जुक्त हुवै। आं सगळा गुणां सागै सिरज्योड़ी रचना नैं आचार्य विस्वनाथ "वाक्यं रसात्मकं काव्यं" सूं संबोधित करै। आ रसात्मकता इज काव्य नैं रमणीयता देवै। इण वास्ते काव्य री इण रमणीयता कै रसात्मकता नैं परखण वाळी विद्या ई काव्यसास्त्र है। अर्थात् कोई रचना काव्य कै साहित्य री दीठ सूं कठा लग सरस कै नीरस है, रो ग्यान करावण वाळी विद्या काव्यसास्त्र है। इणमें काव्य रै मानदण्डां रो अध्ययन करीजै।

इण दीठ सूं काव्यसास्त्र रै अध्ययन री घणी जरूरत है। मिनख रै जळम सागै ई साहित्य सिरजण री संभावनावां ऊजळण लागै। अतः उणरै सारू मानदंडां री सरुआत पण हुवण लागै। इण रै अलावा आज रै बौद्धिक जुग में काव्य री जरूरत अपरिहार्य है। काव्य कै साहित्य रै मारफत मिनख अर समाज रा जीवन मूल्य थरपीजै।

अतः जीवन मूल्य री थरपणा वाली रचना मंगलदायी है क नी, इण रो मूल्यांकन काव्यसास्त्र री मानतावां सूं ई संभव है।

कुछेक विद्वान काव्यसास्त्र री इण जरूरत सूं सेहमत कोनी। इण वरग रा कुछ विद्वानां रै मुजब काव्य मानसिक मनोभावां री अभिव्यक्ति हुवै, अतः काव्य री उपादेयता अर अनुपादेयता रो सवाल ई कोनी। पण दूजी कांनी विद्वानां रै अेक वरग री मानता है क लगोलग बदळीजता जीवन मूल्यां अर मानतावां रै साथै काव्यालोचना रा जूना मानदंड न्याय नहीं कर सकै। अतः काव्यसास्त्र री उपयोगिता नैं अंगेजण री कोई जरूरत कोनी, क्यूंक ''एक सर्वमान्य एवं सर्वस्थायी मानदण्ड की स्थापना का प्रश्न अव्यवहारिक एवं भ्रमपूर्ण है। कारण, प्रत्येक युग के साहित्य को उस युग का अध्येता और सर्जक अपने ढंग से लिखता–पढ़ता है और उसका आकलन करता है।''

म्हांणी धारणा है क काव्य रै बारला तत्त्वां में तो बदळाव हुवै पण मिनख रै मन री मूल प्रव्रतियां में कोई खास बदळाव कोनी आवै। सुख–दुख, हरख–विसाद अर रीस आद भावानुभूतियां अर संवेदनांवां सास्वत हुवै। अतः वां रै सरूप अर परिवेस में फरक हुय सकै, परिस्थितियां, ठौड़ अर पात्र बदळ सकै पण मूलभूत तत्त्व कोनी बदळै। डॉ. गोवर्धन शर्मा रै सबदां में ''विनास वेळा में साहित सब सूं जरूरी। मिनखपणै री रक्षा तो साहित ही करसी। जद जगत में मिनखपणै रो काळ पड़ै, मिनख आपो गमाय कूड़ी बातां लारै दोड़ै। झूठी बातां सिर्मौर बणै। सांची लाजै, तो साहित म्हांनै सांचो मारग बतावै। ठोकरां सूं बचावै। काम नैं बणावै। मानखां री मरजाद राखै। इण वास्तै आज रै जुग में साहित सबसूं जरूरी।''

अतः काव्य संसार में अराजकता रै निराकरण, क्रमबद्धता आद री सुरक्षा सारू साहित्य–जगत में काव्यसास्त्र री लूंठी जरूरत है।

इण विवेचन सूं ओ खुलासौ ई हुय जावै क काव्य अर साहित्य दोन्यू न्यांरा–न्यांरा कोनी, वै समानार्थी सबद इज है। भारत में सरुआती साहित्य–सिरजण अर संवाद रो माध्यम पद्य हो। इण वास्तै अठै साहित्यसास्त्र री सिरजणा पण पद्य में ई व्ही अर साहित्यसास्त्र रो रुढ़ नांव काव्य सास्त्र पड़गो। आथूणी दुनिया में काव्यसास्त्र अर साहित्यसास्त्र दोई जुदी–जुदी विद्या है। उठै काव्यसास्त्र पोयटिक्स है, जिकी कविता री निरख–परख करण वाळी विद्या है अर साहित्यसास्त्र में समग्र साहित्य–काव्य, नाटक, गद्य, कहानी, उपन्यास आद–री विरोळ करीजै। इण भांत साहित्य संबाद अेक व्यापक अरथ देवण वाळै अंग्रेजी सबद Literature रो उळथो है। इणी वास्ते इणमें सक्ति रौ साहित्य (Literature of Power = ललित साहित्य) अर ग्यान रो साहित्य (Literature of Knowledge - इतियास, भूगोल, विग्यान, भेषज सास्त्र आद) समाहित है।

भारतीय काव्यसास्त्र में पण भामह सूं अजै लग रा विद्वान काव्य सारू साहित्य सबद बरतीजियो है। आचार्य भामह ''सब्दार्थो सहितौ काव्यम्" कैय'र काव्य नैं परिभासित कर्‌यो है। आचार्य राजेशखर काव्यमीमांसा' में चौवदै विद्यावां –च्यार वेद छव वेदांग अर च्यार सास्त्र रै अलावा काव्य नैं ई महत्व दिरायो है। आं में वो साहित्य नैं पांचमी विद्या कैवै–''सकल विद्या स्थानैकयतनो पञ्चदशम काव्यं विद्यास्थानमिति यायावरीयः। ...पंचमी साहित्यविद्या इति यायावदीयः।" आचार्य कुन्तक आल्हादकारी, कविकृत व्यवस्थित सब्दार्थ रचना नैं काव्य बतळावता सबद अर अरथ री अन्यूनातिरेक री मनोहारी स्थिति नैं साहित्य कैवै–''साहित्यमनयोः... अन्यूनानतिरिक्तत्व मनोहारिण्यवास्थितिः।''

हिन्दी रा मानीता काव्यसास्त्री पण काव्य अर साहित्य सबदां नैं समानार्थी कैवता ही काव्य नैं परिभासित कर्‌यौ है–

1. ''काव्य शब्द का वही अर्थ है जो साहित्य शब्द का अर्थ है।'' (डॉ. श्यामसुंदरदास)
2. ''काव्य या साहित्य आत्मा की अनुभूतियों का नित नया रहस्य खोलने में प्रयत्नशील है क्योंकि आत्मा को मनोमय, वाङ्मय और प्राणमय माना जाता है।'' (जयशंकर प्रसाद)
3. ''साहित्य शब्द अपने व्यापक अर्थ में सारे वाङ्मय का द्योतक है। वाणी का जितना प्रसार है, वह सब साहित्य के अन्तर्गत है।'' (डॉ गुलाबराय)

इण सारै विवेचन सूं साफ हुवै क भारतीय काव्यसास्त्र में काव्य अर साहित्य समान चीज ई है। इण वास्तै काव्य बाबत अध्ययन करण वाळी विद्या काव्य सास्त्र कै साहित्य सास्त्र है।

3.2 भारतीय काव्यसास्त्र रा विविध नांव अर उणां रो औचित्य –

'साहित्य' री निरख–परख सारू काव्यसास्त्र सबद रौ प्रयोग घणो जूनो है। इग्यारमें सइकै रा आचार्य भोजदेव आपरी पोथी 'सरस्वती कंठाभरण में इण सबद नैं लोकग्यान करावण वाळा तीन साधनां (काव्य, सास्त्र, अत इतियास) रै संदर्भ में बरतीजियौ है। उणा रै मुजब काव्य + सास्त्र रै मेळ सूं बण्यौड़ै सबद 'काव्यसास्त्र' रो काव्यसौंदर्य री परख रौ ग्यान करावण में घणो महत्त्व है। इण सास्त्र सारू घणाई नांव प्रचलित हैं।

आं में सबसूं जूनो नांव अलंकारसास्त्र मिळै। भामह (छठी शती) रो कारिकात्मक ग्रंथ काव्यालंकार, उद्भट्ट रो काव्यालंकार सार संग्रह, रूद्रट री काव्यालंकार, वामन रो काव्यालांकर सूत्र आद ग्रंथ इणरा प्रमाण हैं। आं रचनावां रै नांव सूं सिद्ध हुवै क तद काव्य में अलंकारां री प्रधानता ही। पण फगत अलंकारां नैं ई काव्य री आत्मा कोनी मानी जा सकै। अलंकार सिरफ काव्य रा भावोत्कर्सक अंग हैं। वै काव्य नैं फूटरौ बणावै। इण आधार पांण काव्यसास्त्र रो सही नांव काव्य सौंदयसास्त्र कै सौंदर्यसास्त्र हुवणो चाईजै।

आचार्य विश्वनाथ रै साहित्यदर्पण सूं काव्यसास्त्र सारू साहित्य सबद ई बरतीजण लागो। ओ नांव साहित्य समीक्षकां नैं इतरौ रास आयो क काव्य–सौंदर्य री विरोळ करणियै इण सास्त्र रो नांव साहित्यसास्त्र ई राख दिरायौ। यूं तो साहित्य सबद रौ प्रयोग काव्य री परिभाषा रै संदर्भ में भामह कर्‌यौ है–"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'' पण सौंदर्यबोध रै संदर्भ में साहित्य सबद रो प्रयोग दसवैं सइकै री रचना "वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक) में ई हुयौ–

''साहित्य मनयोः शोभाशालितां प्रति काव्य सौ।

अन्यूनानतिरिक्तत्वमनोहारिण्यवास्थितिः।।

वात्स्यायन रै 'कामसूत्र' में चौसठ कलावां रै संदर्भ में बरतीजियौ 'क्रियाकल्प' नांव पण काव्यसास्त्र सारू प्रचलित रैयो। ''काव्य–क्रियाकल्प' रो छोटौ रूप ई 'क्रियाकल्प' है। 'क्रियाकल्प' सबद रो प्रयोग बौद्ध ग्रंथ 'ललित विस्तर' में पण मिळै। टीकाकार जयमंगलारक उणरौ अरथ "क्रियाकल्प इति व्याकरणविधिः काव्यालंकार इत्यर्थः'' करै। इण सूं ओ ई खुलासो हुवै क कलावां में बरतीजण वाळो' क्रियाकल्प' सबद काव्यालंकार कै अलंकारसास्त्र वास्तै ई प्रचलित रैयो।

वाल्मीकिक्रत 'रामायण' रै उत्तरकाण्ड में लवकुश रै ग्यान नैं सुनण आयोड़ै विविध विद्यावां रै विसेसग्यां सागै ई 'क्रियाकल्प' अर 'काव्यविद' सबदां रो प्रयोग हुयौ है। अठै 'काव्यविद' सबद रो अरथ सिरफ काव्यरस नैं समझणवाळा मिनख सूं है अर 'क्रियाकल्प विद्' रो अरथ काव्य–सौंदर्य री परख में सक्षम विद्वान सारू।

क्रियाकल्प नांव रै पूठै काव्यसास्त्र वास्तै लक्षण, काव्यलक्षण, काव्यलक्ष्म आद नांवा रो ई उल्लेख मिळै। आचार्य दण्डी आपरी रचना काव्यादर्श में इण सबद नैं इण भांत बरतीजियो ई–

''यथासामर्थ्य अस्माभिः क्रियते काव्यलक्षणम्''

आचार्य भामह पण इणी अरथ में कपव्यलक्ष्म सबद रो उल्लेख करै–

''अवलोद्यमतानि सत्कवीनामवगम्य स्वधिया च काव्य लक्ष्म''

ध्वन्यालोककार आनन्दवर्धन अलंकारसास्त्र रै रचेतावां सारू 'काव्यलक्षण– विद्यायिनः' अर 'काव्यलक्षणकारिनः' जैड़ा पद बरतीजिया है। आं सगळा दाखलावां सूं खुलासो हुवै क काव्यसास्त्र वास्तै संस्क्रत साहित्य में लक्षणसास्त्र सबद रो ई प्रयोग हुवतो हो। 'लक्षण' सारू सबसूं जूनी साख आचार्य भरत री है। वै नाट्यसात्र रै 16 वैं अध्याय में 36 काव्यलक्षणां री पानडी दीवी है'–

''भूषण, अक्षरसंघात, शोभा, उदाहरण, हेतु, संशय, दृष्टान्त, प्राप्ति, अभिप्राय, निदर्शन, निरूक्त, सिद्धि, विशेषण, गुणातिपात, अतिशय, तुल्यतर्क, पदोच्चय, दृष्ट, उपदृष्ट, विचार, तद्विपर्यय, भ्रंश, अनुनय, माला, दाक्षिण्य,

गर्हण, अर्थापत्ति, प्रसिद्धि, पृच्छा, सारूप्य, मनोरथ, लेश, क्षोभ, गुण कीर्तन, अनुक्तसिद्ध, प्रियवचनम्।''

आचार्य राजशेखर 'सब्दार्थ' रै सौहित्य सूं निर्मित साहित्य रै विवेचक सिद्धान्त नैं साहित्य विद्या नांव दिरायो है। वै 'काव्य मीमांसा' रै दूजै अध्याय 'सास्त्र निर्देस' रै मांय वेदांग रो विवेचन करता थकां बतळावै क छह वेदांगां रै पूठै सातवो अलंकारसास्त्र है, क्यूंक ओ वेद रै ग्यान रो साधक है अर अलंकार रै ग्यान बिना वेदां रो अरथग्यान संभव कोनी। परवर्ती काल में इण साहित्य विद्या कै साहित्यसास्त्र संबाद रो प्रयोग काव्यसास्त्र सारू कुन्तक आदि आचारिज पण करै।

रीति लक्षण–ग्रंथा रै विकास पूठै भारतीय काव्यसास्त्र वास्तै रीतिसास्त्र नांव ई प्रचलित रैयो डॉ. नगेन्द्र, डॉ. केसरीनारायण शुक्ल, डॉ. भागीरथ मिश्र आदि विद्वान आपरै काव्यसास्त्रीय ग्रंथां रौ नांव इणी आधार माथै रख्यो। आं नांवा रै अलावा ध्वनिसास्त्र, वक्रोति आद नांव पण भारतीय काव्यसास्त्र सारू प्रचलित रैया, पण आं नांवा में अतिव्याप्ति दोस ई लखीजै। काव्य–सौदंर्य आं सगळा उपादानां (ध्वनि, वक्रोक्ति, अलंकार, रीति, रस) रो समन्वय हुवै। काव्यसास्त्र नांव में आं सगन्य उपादानां रो शमन हुय जावै। अतः काव्य–सौदंर्य री विरोळ करणीयै सास्त्र रौ नांव 'काव्यसास्त्र' इज ठावौ है।

सरुआत में काव्य पद्यात्मक हो, अतः उणरो अध्ययन काव्य नांव सूं इज करीजियो। इण वास्तै ई काव्य–विवेचन सूं जुड्योड़ै सास्त्र रौ नांव काव्यसास्त्र पड्यो। अजै काव्यसास्त्र वास्तै इणरौ समानार्थी संबाद साहित्यसास्त्र रो ई प्रचलन है। वर्तमान में साहित्य गद्य अर पद्य दोई विधावां में लिखीज रैयो है, इण वास्तै आं रचनावां रै 'सौदंर्य–बोध' री परख कराण वाकै सास्त्र नैं साहित्यसास्त्र कैय सकां। पण साहित्य अेक व्यापक सबद है। उणमें मिनख री सगळी ग्यान राशि समायोड़ी है–''ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है।'' वस्तुतः औ सबद अंग्रेजी रै 'लिटरेरी क्रिटिसिज्म' रो उळथौ है।

इण नुवै नांव रै अलावा आजकाल काव्यसास्त्र वास्ते समीक्षासास्त्र, आलोचना सास्त्र, समालोचना आद नांव ई बरतीजण लागा है। आं नांवां री सांच आई है क अै नांव आथूणै समीक्षासास्त्र रै क्रिटिसिज्म (Criticism), एपरिसिएशन (Appreciation) रा पर्याय ई हैं। आथूणै काव्यसास्त्र मुजब पण 'समग्र दीठ सूं काव्य कै साहित्यिक रचना री सौंदर्य विरोळ ई समीक्षा है।'

3.3 भारतीय काव्यसास्त्रः उतपत अर विकास –

3.3.1 उतपत –

भारतीय काव्यसास्त्र (संस्क्रत काव्यसास्त्र) री उतपत कद सूं व्ही, इणरी ठावी कूंत करणो तो मुस्किल है, पण आचार्य भरत विरचित नाट्यसास्त्र रै आधार माथै इण री उतपत रो अनुमान लगायो जा सकै। नाट्यसास्त्र रो समै ईसा री पैली सदी कैईजै। नाट्यसास्त्र में काव्यसास्त्र सूं जुड़्योड़ी रस, भाव, अलंकार, गुण, लक्षण, दोस, सामग्री रो संकळण है। नाट्यसास्त्र रै प्रमाणां रै पांण 'रस अर भाव' संदर्भां रा प्रयोग घणा जूना है। उठै भारत कैवै–

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।

यजुर्वेदानभिनयान् रसानर्थवर्णदपि।

इण कथन रै मुजब रस सामग्री अथर्वण सूं लीरीजी है। इण बाबत् विद्वानां री मानता है क नाट्यसास्त्र रै देवत्व सरूप नैं थरपण री मंसा सूं भरत रस रो संबन्ध अथर्ववेद सूं जोड्यो है। पण अथर्ववेद में अेक जागां हास्य भाव रसादि रो ई उल्लेख हुयो है–

नृप्ताय सूंत, गीताय शैलूषं, नर्मायरेमं (आमोद सारू गतराड़ा–हिंजड़ै) हासाय कारिम., (विदूषक) आसदभ्यो कुब्जः प्रमुदे वामनम्..।

आचार्य भरत नाट्यसास्त्र में रस री संख्यारो निरूपण करता हुया महात्मा द्रुहिण रो ई उल्लेख कर्यो है। भरत मुजब इण परम्परा में आचार्य द्रुहिण रो नांव सबसूं जूनो है। द्रुहिण रो मतळब हुवै बिरमाजी। राजसेखर

'काव्य मीमांसा' में बतळायो है क सिवजी काव्य विद्या नैं बिरमाजी नैं दीवी अर बिरमाजी उण नैं अट्ठारै अधिकरणां में बांट'र न्यारै–न्यारै रिखिसरां नैं सूंपी। अै रिसी इण रो प्रचार कर्‌यौ।

भरत रै मत सूं नाटक रो अधिस्ठाता नंदी (नंदीकेस्वर) है अर रस मुजब अधिकरण रों संबन्ध ई नन्दीकेस्वर सूं है। पौराणिक कल्पना रै मुजब सिवजी रा खास गण नन्दी है, पण ओ भी संभव हुय सकै क इण नांव रो कोई रिसी पण हुयो व्है। नाट्यसास्त्र में ओ उल्लेख पण है क बिरमाजी री विनती माथै सबसूं पैलां सिवजी 'नन्दी' नैं ई नाट्यविधान रो आदेस कर्‌यो अर तद सूं ई नाटक री निरविघन संपूर्ति अर पूरण फल पावती सारू नान्दी पाठ नैं नाटकां में ठोड दीरीजी। 'संगीतरत्नाकर' में पण नंदिकेस्वर रो नांव सरूआती आचारिज में लीरिजियो है। 'काव्यादर्श' री श्रुतिपालिनी टीका में कास्यप, बिरमदत्त अर नन्दिस्वामी नै दण्डी रै पैलै रै आचारिजां री पानड़ी में राख्यो है। आं सगळा प्रमाणां सूं खुलासो हुवै क आचार्य भरत रै पैलां सूं रस–सिद्धान्त थरपीजगो हो।

जै पाणिनी रो समै ई.पू. 5 वीं सदी है तो उणा री रचना 'अष्टाध्यायी' में 'रसिको नटः' भास्य रसभोक्ता नट कांनी ई इसारो करै। इण सूं रस रो अस्तित्व इण कालखण्ड में पण सिद्ध हुवै। कामसूत्र रो ई अस्तित्व भरत सूं पैला कैईजै। खुद आचार्य भरत इणरी साख भरै–

उपचार विधिः कामसूत्र समुत्थितम।

x x x

एतेषां चैव वक्ष्यामि कामतन्त्रमनेकधा।।

आचार्य भरत रो नायक–नायिका भेद प्रारूप कामसूत्र सूं इज प्रभावित है। डॉ. नगेन्द्र पण इण विरोळ नैं पुख्ताऊ मानैं। वै आपरी रचना 'रस सिद्धान्त' में लिखै–''भारतीय सौन्दर्यसास्त्र के दो प्रमुख अंग हैः रसऔर अलंकार। इनमें से अलंकार का मूलाधार है व्याकरण और रस का मूलाधार है, कामसूत्र।" वै रस बाबत अर्थर्वण वेद री मानता नैं ई पुख्ताऊ मानैं। सागै ई बतळावै क रस रो अेक कामसास्त्रीयअरथ ई है–

"रसोरतिः प्रीतिर्भावो रागोवेगः समाप्तिरिति रति पर्यायः"

इण बात नैं वै जनमंगल टीका सूं ओजू पुख्ताऊ करै। जयमंगल टीका रो समै 8 वीं सदी है। नाट्यसास्त्र में रस रै आधार माथै काव्य सास्त्र री उतपत वेदां रै पैला सूं कथीजी जा सकै।

काव्यसास्त्र रै महताऊ अंग अलंकार रा ई सूत्र जूना मिळै। वैदिक साहित्य में 'अरंकृति' सबद रै रूप में 'अलंकार' रो प्रयोग हुयो है। अलंकार रो मूल धातु 'अरम्' सोभा, अलंकरण रै अरथ में ई है। उपनिसद् काल तांई पूगता अरंकृति सबद अलंकृति बणगो। आचार्य भरत द्वारा बरतीजियै इण सबद रो काव्यालंकार अरथ सबसूं जूनो है–

'अलंकारगुणश्चैव बहुभि समलंकृतम्'

अलंकारां रो विकास विगतवार हुयो। सब सूं पैला उपमा फेर रूपक री उतपत व्ही। आचार्य भरत द्वारा निर्दिस्ट यमक अर दीपक बाद में विकसित अलंकार हैं। आं रै पूठै सुबन्धु स्लेस, आखेप, उत्प्रेक्षा अलंकारां रो उल्लेख करै। आचार्य भामह मेधाविन् अर बीजा आलंकारिक आचारिजां रो उल्लेख कर्‌यो है, जिणां में मेधावि जथासंख अलंकार रो निर्देस कर्‌यो तो दूजा आचारिज उत्प्रेक्षा अलंकार रो। आचार्य भरतअर भामह रै बिचै चौथी सदी लगै–टगै लिख्योड़ी रचना 'विस्णु धर्मोतर पुराण' लग अलंकारा री संख्या 18 तांई पूग गी।

भरत द्वारा वर्णित काव्य गुण पण काव्यसास्त्र री उतपत कांनी प्रकास न्हावै। वै 10 गुणां रो उललेख करै। वाल्मीकि रामायण, महाभारत, कौटिल्य रचित अरथसास्त्र आदि ग्रंथां में ई काव्य–गुणां गुणां रो उल्लेख हुयो है। 'रामायण' रे किस्किंधा काण्ड में माधुर्य–गुण रो दरसाव प्रस्तुत है–

''अहो गीतस्य माधुर्यम् अविस्तरम् असंदिग्धम्।''

आचार्य भरत रा महताऊ व्याख्याकार आचार्य अभिनवगुप्त आपरी पोथी 'अभिनवभारती' में पैलां री 10

लक्षण परम्परा रो उल्लेख कर्‌यो है। सरूआती काव्यसास्त्री आचार्य उद्‌भट, भट्टलोलट, शंकुक, भट्टतौत आदि किणी न किणी रूप में आं परम्परावां रो जथा–प्रसंग उल्लेख कर्‌यो है। इण बाबत अभिनवगुप्त बतळायो क अलंकार सिद्धान्त रै बैसी प्रचार सूं अै परम्परावां या तो खीण हुयगी कै वै अेक–दूजै में समायगी।

सेवट, काव्यसास्त्र री उतपत बाबत् भारतीय काव्यसास्त्र (संस्क्रत काव्यसास्त्र) में पुख्ताऊ प्रमाण मिळै, ज्यां रै मुजब संस्क्रत काव्यसास्त्र रिगवेद री सिरजणा रै पैलां सूं अस्तित्व में ही जिण रो विकास समै–मुजब अर आचारिजां री विचारधारानुरूप हुवतो गयो।

3.3.2 विकास

भारतीय काव्यसास्त्र रो विकास अेक विगतवार सैद्धान्तिक परम्परा रै दायरै में हुयो, फेर ई विद्वान इणनैं कालानुरूप बांटण में असमर्थ रैया। कुछ विद्वान इण काम में अजै ई लागोड़ा है।

(i) साहित्य–जगत रा अेक विद्वान ध्वनि नैं आधार मानतां हुया भारतीय काव्यसास्त्रीय चिन्तन विकास नैं इण रूप में प्रस्तुत करै–

1. ध्वनि काल
2. ध्वनि पूर्व काल अर
3. ध्वनि उत्तर काल।

ध्वनि भारतीय काव्यसास्त्रीय चिन्तन रो सिरफ अंग है। उण नैं इणरी धुरी कोनी मान सकां। आचार्य अभिनवगुप्त ई इण री तत्त्वदरसी प्रतिभा नैं ऊजाळी जिकी प्रव्रति अेक फैसन में प्रव्रत हुयगी। विद्वान काव्यसास्त्र री आत्मा इण नैं ई अंगैज ली। अेक बीजै विद्वान इण विकास नैं यूं मांडै–

(ii) 1. प्रारंभ काल
2. विवेचन काल अर
3. व्याख्या काल

(iii) डॉ. एस.के. डे भारतीय काव्यसास्त्र रै विकास नैं आं च्यांर कालां में बांटै–

1. प्रारंभिक काल – अग्यात समै सूं 500 वि. लग (Formative Stage)
2. रचनात्मक काल– वि. 600 सूं 900 लग (Creative Stage)
3. निर्णयात्मक काल – वि 900 सूं 1100 लग (Definitive Stage)
4. व्याख्यात्मक काल–वि.1100 सूं 1650 लग (Scholostic Stage)।

(iv) इण वरगीकरण में कइैई कोई संगत कोनी लखावै। रचना अर निरणै री आ प्रव्रति हर कालखण्ड में जोईजा सकै अर व्याख्यात्मक थिति पण हर जुग में लखावै। सांच तौ आ ई क भारतीय काव्यसास्त्र रो विकास लगोला। आपरी मरजाद में हुवतौ रैयौ है इण वास्ते इण विकास नैं टुकड़ां में बांट'र देखणौ संभव कोनी। भारतीय काव्यसास्त्र रो विकास साम्प्रदायिक रूप में हुयौ है, अतः भारतीय काव्यसास्त्र रै इतियास नैं इणरै विविध सम्प्रदायां रै इतियास रूप में ई जोवणौ चाईजै। इण बाबत आचार्य रूय्यक रै 'अलंकार सर्वस्व' रै टीकाकार समुद्रबंध रा अै विचार उल्लेखजोग है–

''इह विशिष्टौ शब्दार्थौ काव्यम्। तयोश्च वैशिष्ट्यं धर्ममुखेन, व्यापार मुखेन, व्यंग्य मुखेन वेति त्रयः पक्षाः। आद्येऽपि अलंकारतो गुणतो वेति द्वैविध्यम्। द्वितीयेऽपि भणिति वैचिष्येण भोग कृतत्वेन वेति वैद्विध्यम्। इति पञ्च्सु पक्षेसु आद्य उद्‌भटादिभिरग्ङ्गीकृतः, द्वितीय वामनेन, तृतीयो वक्रोक्ति जीवितकारेण चतुर्थौ भट्टनायकेन, पंचम आनन्दवर्धनेन।'' इण कथन नैं म्हां यूं प्रस्तुत कर सकां–

समुद्रबंध रै इण वरगीकरण रा तीन आधार है–

(अ) धर्ममुख अर्थत् जिकौ काव्य रै बारलै अर मायलै सौंदर्य नैं व्यंजित करै।

(आ) व्यापार मुख रै माध्यम सूं अलंकार अर अलंकार्य (वाच्य अर वाचक) अर्थात् काव्य री सागी मायली अर बारली व्याप्ति।

(इ) व्यंग्य मुख सूं अरथ है निष्पन्न बीजो खास अरथ, जठै वाच्य गोण हुय'र सिरफ उणरी सिद्धि वास्तै काम करै।

(v) डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंघ आं मतां री विरोळ उपरांठ भारतीय काव्यसास्त्र रो वरगीकरण आं तीन सीर्सका में बांटै

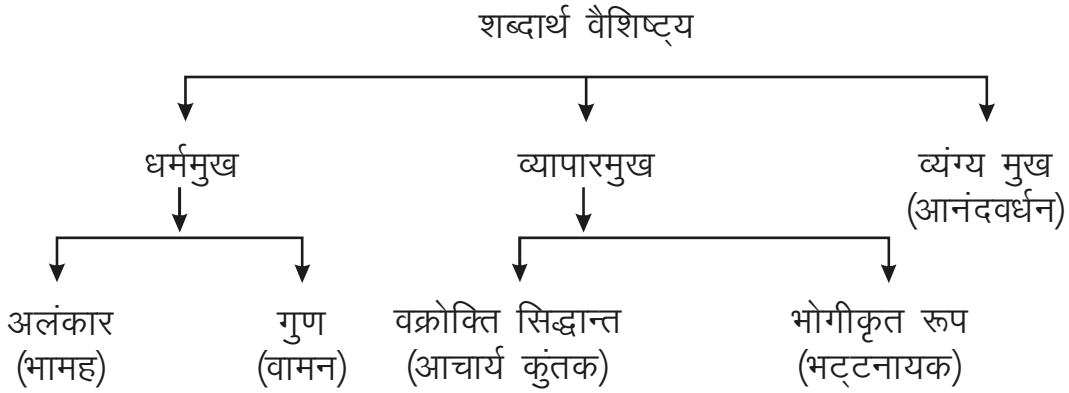

1. शब्द मत – लक्षण, गुण, पाक, शैया, रीति, शबदालंकार।
2. अर्थमत – शब्दशक्ति, ध्वनि, वक्रोक्ति, तात्पर्य, अलंकार (अर्थगत)।
3. भावमत – रस सिद्धान्त।

डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिघं आपरै वरगीकरण री व्याख्या इण ढाल करै–

शब्दमत – डॉ. सिघ रैमु जब सबद मत अरथ अर उण सूं जुड्यौड़ै पदां रै बारलै फूटरापै नैं समरथन देवै। इणरो आधार काव्य सास्त्रियां रो सौस्ठव सिद्धान्त है जिकौ भारतीय काव्यसास्त्र में पहली–दूजी सती में ई वर्तमान हो। गुण अर लक्षणवादी विवेचक इण इण सिद्धान्त री थरपणा सारू घणा सावचेत हा। आचार्य दण्डी, वामन, मंगल, राजशेखर आद इणी परम्परा रा आचारिज कैईजै। आचार्य वामन इण सिद्धान्त नैं 'रीतिरात्माकाव्यस्य' कैय'र उणनैं सिरै पुगावण री कोसिस करी। राजशेखर री काव्यमीमांसा इणी परम्परा री मानीजी रचना है अर भोज रचित सरस्वती कंठाभरण में ई इण री छिब लखावै।

आचार्य दण्डी काव्य रै बारलै सोभाऊ धरम नैं अलंकार कैवै। अठै सोभा सूं अरथ है– सहज प्रतीति अर अनुभूति। इणी संदर्भ में उणा रै सब्दालंकार अर अरथालंकार रै भेद सूं तात्पर्य है– भासिक कै अरथ रै स्तर माथै अनुभूत हुवण वाळी शोभातिसयता। आं आचारिजा मुजब काव्य रै बारलै आस्वादन रौ नतीजो ई काव्यपाक है अर्थात् सबद, पद, अरथ री सरलता सूं जिकी मन नै तृप्ति मिळै, वोई काव्यपाक है। इणरौ क्रम है–

शब्द सोकर्य (सबद गुण + अरथ गुण) झरीति (गौड़ीय, पांचाली, वैदर्भी) झपाक (सबद पाक अर अरथपाक)।

इण भांत सबदमत भासा अर सिल्प रै सोभाधरम रै माध्यम सूं साहित्य सूं स्रवित मधुस्राव रै पान नैं काव्य रौ अन्तिम धरम अंगैजै।

अर्थमत – डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंघ भारतीय काव्यसास्त्र में अरथमत नैं ई जूनौ मानै। उणा रै अनुसार इणरो संबन्ध व्याकरण अर न्यायसास्त्र सूं रैयो। पूठै इणरो अरथालंकारां, लक्षणा अर

व्यंजना सबद शक्तियां रै विकास में योगदान रैयो। चौथे सईकै सूं काव्य में अलंकारां रै विकास सागै इण मत नैं पुख्ताऊ आधार मिळयो। सुबन्धु अर बाणभट्ट री रचनावां में जिण 'वक्रतायुक्त' श्लेष री चरचा करीजै वो अर्थमत रै विकास रो ई पैलौ पाउण्डौ हो। सबसूं पैलां आचार्य भामह काव्यालंकार में सब्दमत रो विरोध करता हुया आपरै प्रबल तरकां सूं इण मत रौ समरथन करै। भामह री मानता है क अर्थगत वक्रता ई अलंकारत्व री खास कसौटी है। आचार्य कुन्तक रो वक्रोक्ति– सम्प्रदाय, आनन्दवर्धन रो ध्वनिसम्प्रदाय, सबदशक्ति मांय लक्षणावाद अर व्यंजनावाद आद सिद्धान्त अर्थमत रै विकास रा ई पड़ाव हैं।

भावमत – डॉ. सिंघ मानै क रस सिद्धान्त रै रूप में इणरी थरपणा आचार्य भरत रै पैलां सूं ई है पण काव्य में इणरी सबसूं पैला विवेचना आचार्य आनन्दवर्धन ध्वनि सिद्धान्त रै रूप में करी। असंलक्ष्य क्रमध्वनि रै रूप में विवेचित इण रै महत्त्व अर काव्यगत अनिवार्यता सूं तो खुलासो हुवै क भावमत परम्परागत मानताकं नै वैसिस्ट्य री संस्थापना है। इण रै उपरांठ तौ आलंकारिकां अर बीजै मतां रा समरथकां रस रै महत्त्व नैं अंगैज'र इणनै काव्य रै खास उपादान रै रूप में विवेचित कर्‌यौ। रसपरम्परा में सिरजित काव्यसास्त्रीय रचनावां–भट्टनायक रो सहृदयदर्पण, अभिनवगुप्त री नाट्यसास्त्र री टीका, भोज रचित श्रृंगारप्रकाश, भानुदत्त कृत रसमंजरी, रसतरंगिणी, शिङ्भूपाल कृत रसार्णव, रंजकोल्लास, रसोल्लास, रूद्रभट्ट रचित श्रृंगारतिलक, पण्डित जगन्नाथ री रसगंगाधर सन्त बडे अकबर शाह रचित श्रृंगारमंजरी, रूप गोस्वामी कृत भक्ति रसामृतासिंधु अर उज्जवलनील मणि आद गिणाया जा सकै।

इण व्याख्या रै उपरांठ डॉ. सिंघ काव्यसास्त्र रै वरगीकरण में कवि सिक्षा री ई बात करै। वै कैवे–''इसके प्रांरभिक संकेत दण्डी, भामह, वामन आदि में भी मिलते हैं। राजशेखर कृत काव्यमीमांसा, क्षेमेन्द्र कृत औचित्य विचार चर्चा, कवि केशव मिश्र कृत अलंकार शेखर आदि अनेक ग्रंथ इस परिपाटी के अन्तर्गत लिखे गये। किन्तु सास्त्रीय क्रम में कवि शिक्षा एवं औचित्य की यह परम्परा अधिक दिनों तक नहीं पनप पाई।''

सैवट, भारतीय काव्यसास्त्र रै इतियास में काल–विभाजन जैड़ी कोई परम्परा कोनी रैयी। पूठै रा विचारक इण संदंर्भ में आपरी बुद्धि मुजब काव्यसास्त्र रो काल विभाजन करयो, पण किणी मत में काई वैग्यानिकता कै संगति कोनी लखाई। डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंघ रो वरगीकरण म्हांणी मानता रै नैड़ै है। म्हां ऊपर कैय चुक्या हा क भारतीय काव्यसास्त्र रो विकास अेक खास मरजादमें हुयो। वो विचारधारावां विसेस री व्याख्यावां में विकसित हुवतो रैयो, जिणरी व्याख्या समुद्रबंध रै कथन रौ दरसाव करावता हुया डॉ. सिंघ आपरै वरगीकरण री व्याख्या में कर्‌यौ है। अतः भारतीय काव्यसास्त्र रै विकास रौ वरगीकरण भारतीय काव्यसास्त्र रै सम्प्रदायां – रस, अलंकार, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति अर औचित्य री प्रिस्ठभोम में ई हुवणौ चावै।

3.4 भारतीय काव्यसास्त्र रा विविध सिद्धान्त –

3.4.1 काव्य–हेतु –

कवि में काव्य–निरमाण री सामरथ निपजावण वाळा साधन काव्य हेतु कैईजै। अै साधन कवि नैं रचना करण री प्रेरणा देवै। इण वास्तै अै हेतु प्रेरणा (काव्य प्रेरणा) नांव सूं ई औळखीजै। आचार्य भामह सिरफ 'प्रतिमा' नैं ई काव्य हेतु मानै। दण्डी प्रतिभा रै अलावा सास्त्रग्यान (व्यत्पत्ति) अर अभ्यास नैं ई काव्य रै हेतु रूप में अंगैजै। आचार्य वामन 'लोक' विद्या अर प्रकीरण नैं काव्यांग कैवै। उणा रै मुजब काव्यांग ई काव्य हेतु है। अठै 'लोक' सू वामन रो अरथ लोकव्यवहार, विद्या सूं सास्त्रग्यान–अभिधान कोश, छंदसास्त्र, कला, कामसास्त्र अर दण्डनीति रै ग्यान सूं है वामन री आ विद्या ई बीजै आचारिजां री दीठ में व्युत्पति मानीजी है। प्रकीरण सूं वामन रो अभिप्रायः काव्य–परिचय, काव्य रचना रौ काम, ब्रिध–सेवा, प्रतिभा अर चित्त री अेकरसता सूं है–

शब्दस्मृत्यभिधानकोशाच्छन्दोविचितकला कामसास्त्र दण्डनीति पूर्वोविद्या।

लक्ष्यज्ञत्वमभियोगो वृद्धसेवा ऽवेक्षणं प्रतिभानमवधानं च प्रकीर्णम्।।

(काव्यालंकार सूत्रवृति)

आचार्य मम्मट सक्ति, व्युत्पत्ति अर अभ्यास नैं अेक सागै मिळा'र काव्य रो हेतु मानै–

शक्तिर्निपुणता लोककाव्यसास्त्राद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाऽभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।

(काव्यप्रकाश 1/3)

पंडितराज जगन्नाथ काव्य रै हेतु रूप में कवि री प्रतिभा नैं मानै। उणां रै मुजब व्युत्पत्ति अर अभ्यास प्रतिभा रा कारण है–

''तस्य च कारणं कविगता केवला प्रतिभा....तस्याश्च (प्रतिभायाश्च) हेतुः क्वचिद्देवता महापुरूष प्रसादादिजनयमट्टष्टम् क्वचिच्च विलक्षण व्युत्पत्ति काव्य कारणाभ्यासौ।'' (रस गंगाधर – प्रथम आनन)।

इण विवरण सूं खुलासो हुवै क भारतीय काव्यसास्त्र में काव्य हेतु रै रूप में प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास अर समाधि हैं। आं रै माध्यम सूं ई कोई कवि आपरी रचना रो सिरजण करै।

3.4.2 काव्य–प्रयोजन–

संस्क्रत साहित्य में किणी विसय रै अध्ययन सारू अनुबन्ध–चतुस्टय (प्रयोजन, अधिकारी, संबन्ध अर विसैवस्तु री कल्पना करीजी है। इणमें सैं सूं महताऊ तत्त्व प्रयोजन नैं मान्यौ है। यावत् प्रयोजन नोक्तं तावत् तत्केन गृह्यते' सूत्र सूं काव्यप्रयोजन नैं काव्यसास्त्र रो अनिवार्य सिद्धान्त मानीजियो है। म्हांणी सांस्क्रतिक प्रिस्ठभोम मुजब ई भारतीय काव्यसास्त्री काव्यप्रयोजनां बाबत विचार कर्‌यो। इण वास्तै अै आचारिज धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि रै संदर्भ में ई उणां री व्याख्या करी।

आचार्य भरत नाट्य रै संदर्भ में विविध रूपां में काव्यप्रयोजन रो उल्लेख करै। उणं रै उल्लेख सूं लखावै क काव्य सिरफ मनोरंजन ई कोनी करै बलकै उणमें धार्मिक, नैतिक अर साहसिक प्रेरणावां ई देवै। वो कायरां नैं साहस दिरावै, सुभटां मे बल भरै, दुखीजन नैं सहनसक्ति दिरावै अर ढुलमुल चित्त नैं थिरता देवै। इण भांत भरत रै मुजब धर्म, यश, आयु, हितोपदेश, जनहित आद नाट्य (काव्य) रा प्रयोजन है। आचार्य भामह काव्य प्रयोजन बाबत लिखै क धरम, अरथ, काम अर मोक्ष रो ग्यान काव्य सूं मिळै। उण सूं कलावां में निपुणता आवै, कीर्ति अर अलौकिक आनन्द री प्राप्ति हुवै–

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च
प्रीतिं करोति कीर्तिं च साधु काव्यनिबन्धनम्।।

(काव्यालांकर 1/2)

महाकाव्य रै संदर्भ में काव्य प्रयोजन री चरचा करता हुया आचार्य दण्डी लिख्यो क वो धरम, अरथ, काम, मोक्ष (पुरूषार्थ चतुस्टय) सारू फलदायक है। इणरै अलावा काव्य प्राचीन राजावां रै जस नैं ई सुरक्षित राखण वाळो हुवै–

इतिहास कथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम्
चतुर्वर्गफलायत्रं चतुरोदात्त नायकम्।
आदिराजयशोबिम्बमादर्श प्राप्य वाङ्मयम्।
तेषामसन्निधानेऽपि न स्वयं पश्यनश्यति।।

भारतीय काव्यसास्त्र में आचार्य मम्मट रा काव्य प्रयोजन मुजब मानता घणी चावी अर ठावी मानीजै। वै मानै क काव्य रो खास प्रयोजन आनन्द प्राप्ति है। ओ प्रयोजन कवि अर सहिरदै संवेद्य हुवै। इण वास्तै वै काव्य रै छव प्रयोजनां रो निरूपण इण कारिका में करै–

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

सद्यः परिनिर्वृतये कान्ता–सम्मिततयोपदेशयुजै।।

(काव्यप्रकाश 1/2)

अर्थात् यश, धन, व्यवहार ग्यान, अनस्ट–निवारण, आनंद अर कान्ता सम्मित उपदेस ई काव्य रो प्रयोजन है। आं छव प्रयोजनां में सूं मम्मट मुजब अरथ, अर अनिस्ट निवारण तीन प्रयोजन कविनिस्ठ हुवै अर बाकी रा तीन व्यवहार गयान आनन्द, कान्ता–सम्मित उपदेस पाठकनिस्ठ हुवै।

3.4.3 काव्यलक्षण –

काव्यसास्त्र में काव्यलक्षण रो अरथ उणरी परिभासा सूं नी होय'र काव्य रै खास तत्त्वां सूं है। आचारिजां रो अै विचार दो वरगा में बांटया जा सकै– 1. कविव्यापार री दीठ सूं अर 2. लक्षण निरदेस रै माध्यम सूं। पैलां वरग में भरत, भामह, आनन्दवर्धन, मम्मट, कुन्तक, राजशेखर, रूद्रट आद है। दूजै वरग में आचार्य विश्वनाथ पंडितराज जगन्नाथ, केशव मिश्र रा नांव लिया जा सकै। पेलौ वरग जठै सबदारथ रै सागै विसेसण लगा'र काव्यलक्षण नैं परिभासित करै उठै ई दूजैड़ौ वरग काव्य में अलंकारां रै फूटरैपण नैं आधार बणा'र काव्यलक्षण नैं बतळावै। आचार्य भरत रै मतै 'मृदु', ललितपद संयोग, कठिन सबदा रो अभाव, हिरदै नैं सुखात्मक अरथ प्रतीति करावण वाळो अर रसान्वित आद काव्य लक्षण है। भरत रा अै लक्षण नाटक रै बाबत है। काव्यसास्त्र में काव्यलक्षण बाबत सबसूं पैलां ठावी चरचा आचार्य भामह करी। उणा रै मुजब सबद अर अरथ रो संजोग (सौहित्य) काव्य है– 'शब्दार्थौ सहितो काव्यम्।'

आचार्य मम्मट सबसूं पैलां सबदारथ रै विसेसणा सूं काव्यलक्षणां री परिभासा देवता लिखै–'तददोषो शब्दार्थौ सगुणावलंकृती पुनः क्वापि।' अर्थात् निर्दुष्ट, गुणां सहित अर कदै–कदै अलंकार हीण सबदारथ 'काव्य लक्षण' कैईजै। प्रायः विद्वान काव्यलक्षण री इणी परिभासा नैं ठावी मानै। पण दूजै वरग री परिभासावां में रसवादी आचार्य विश्वनाथ रै सूत्रवाक्य" वाक्यं 'रसात्मकं काव्यम्' नैं काव्यलक्षण रै रूप में स्वीकारै। काव्य लक्षण री दीठ सूं ओ लक्षण संतुलित अर सारभूत है। पण्डितराज जगन्नाथ काव्य री परिभासा करता कैवै ''रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'' अर्थात् रमणीय अरथ निपजावण वाळा सबद ई काव्य है। अठै रमणीयता रो अरथ सुन्दरता (फुटरैपण) सूं है। इण भांत काव्यलक्षण रो ठावो अरथ मम्मट अर पण्डितराज जगन्नाथ री परिभासावां में ई मिळै।

3.4.4 काव्यात्मा –

काव्य री आत्मा बाबत सबसूं पैला विचार आचार्य वामन प्रगट्या। वै 'रीतिरात्माकाव्यस्य' कैय'र 'रीति' नैं काव्य री आत्मा कैयी। इणी रै पूठै आचार्य दण्डी अलंकार नैं काव्य री आत्मा मानता हुया 'काव्य शोभा विधायक तत्त्व' में स्वाभावोक्ति, गुण, भाव नैं सामिळ करै। आचार्य भामह ई अलंकार नैं काव्य री आत्मा थरपै। इणीज भांत अभिनवगुप्त आदि आचार्य रस नैं काव्य री आत्मा मानैं तो ध्वनिवादी आनन्दवर्धन ध्वनि नैं काव्यात्मा मानता हुया वस्तु–ध्वनि, अलंकार–ध्वनि अर रस–ध्वनि रै रूप में रस री महत्ता नैं स्वीकारै। आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति नैं काव्य री आत्मा मानै तौ आचार्य क्षेमेन्द्र आं सगळा रै उचित समन्वय री वकालत करता थकां काव्य री आत्मा रै रूप में औचित्य सम्प्रदाय री थरपणा करै। विभिन्न विद्वानां री अै विचारधारावां ई काव्यसास्त्र में काव्य सम्प्रदाय नांव सूं प्रसिद्ध व्ही ज्यां रो म्हां अठै विगतवार विवरण प्रस्तुत करा हां।

3.5 भारतीय काव्यसास्त्र रा खास सम्प्रदाय –

काव्यसास्त्र रा जुदा–जुदा नांव काव्य री आत्मा रै आधार पांण ई निरधारित करीजिया। पण विद्वान काव्य री आत्मा रै बाबत अेकमत कोनी हुय सक्या। कुछ विद्वान काव्य री आत्मा रस नैं कैई तो कुछ विद्वान काव्य री आत्मा अंलकार नैं मानी। विद्वानां री अै ई मानतावां समै–समै पै न्यारै–न्यारै सम्प्रदायां अर मतां री थरपणा करी। वर्तमान में भारतीय काव्यसास्त्र रा हैठै लिख्योड़्या सम्प्रदाय प्रचलित हैं–

(क) रस सम्प्रदाय

मौजूद प्रमाणां रै पाण रस–सम्प्रदाय रा संस्थापक आचार्य भरत हा। भरत आपरै नाट्यसास्त्र रै छठै अर सातवैं अध्यायां में रस नैं भाव रो जिका वरणावं कर्‌यौ है, वो साहित्य–जगत में सदीव मानीतो रैवैला। भरत रै मुजब रस री उतपत विभाव, अनुभाव अर व्यभिचारी भावां रै संजोग सूं हुवै–

''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्यत्तिः।

ओ रस–सिद्धान्त अर रस–सम्प्रदाय रो बुनियादी सूत्र बण गयो। भट्टलोलट, शंकुक, भट्टनायक अर अभिनवगुप्त इण सूत्र रा सिरै व्याख्याकार हुया। आं आचारिजां द्वारा विवेचित रस सिद्धान्त रो भारतीय काव्यसास्त्र में लूठौ महत्त्व है। ध्वनिवादी आजारिज वस्तु–ध्वनि, अलंकार–ध्वनि, रसध्वनि रै विवेचन सागै रस रै महत्त्व रैं थरपै। अग्निपुराणकार काव्य में चमत्कार प्रधानता मानता थका ई रस नैं काव्य रो जीवन मानैं–''वाग्वैदग्ध्य प्रधानेऽपि रसएवात्रजीवितम्।'' राजशेखर पण काव्य री आत्मा रै रूप में रस नैं अंगैजै। मतळब ओ क काव्य सारू रस महताऊ तत्त्व है। अलंकारवादी, रीतिवादी, ध्वनिवादी अर ध्वनि विरोधी सगळा ई किणी न किणी रूप में रस री सत्ता नैं अंगैजी है।

रस सिद्धान्त रै च्यार व्याख्याकारां रै पूठै किणी न किणी रूप में आनन्दवर्धन (ध्वन्यालोक), धनंजय (दशरूपक), विश्वनाथ (साहित्यदर्पण) जगन्नाथ (रसगंगाधर), मम्मट (काव्यप्रकाश), भोज (श्रृंगारप्रकाश) रस री व्याख्या करी है। आं संस्क्रत आचारिजां रै पछै हिन्दी रा आचारिज ई रससिद्धान्त (भरतसूत्र) री व्याख्या करी। आं आचारिजां में उल्लेख जोग नांव हैं– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, रामदहीन मिश्र, डॉ. श्यामसुंदर व्यास, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित, डॉ. निर्मला जैन आद। डॉ. गोर्धन शर्मा, कुंवरकृष्ण कल्ला जैड़ा राजस्थानी रा आधुनिक विचारकां ई रस नैं काव्य री आत्मा मानैं।

रस संप्रदाय रै आं आचारिजां मुजब रस सूं ई सामाजिक किणी काव्य रचना रो रसास्वादन करै। काव्यसास्त्र में आं री संख्या नव कैईजी है–सिणगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स अदभूत अर सान्त। आं नवरसां रै अलावा समै मुजब वात्सल्य, भगती अर बौद्धिक रस री मानतावां ई साहित्य–जगत में अंगैजी। लगौलग बधतै औद्योगिकरण सूं वैचारिकता नैं बधायो मिळ्यो जिणसूं साहित्य सिरफ हिरदै री ई नीं बुद्धि री वस्तु ई बणग्यौ है। इण दीठ सूं कवि अर विचारक गिरिजाकुमार माथुर बौद्धिकरस री अवधारणा थरपी। नुयी कविता अर जैनेन्द्र जैड़ा साहित्यकारां री रचनावां रो रसास्वादन बौद्धिकरस सूं ई हुय सकै।

वात्सल्य अर भगती रस रो स्थायी भाव 'रति' है। फरक ओ ई है क वात्सल्य रति ममतामयी अर भगती–रति वेरागपूरण हुवै। सिणगार–रति में वासना रो सै'योग हुवै। इण वास्तै भगती नैं शान्त रस में ई अन्तरभूत मानणो चाईजै।

(ख) अलंकार–सम्प्रदाय –

अलंकार–सम्प्रदाय सूं मतळब वां काव्यसास्त्रियां री परम्परा सूं है, जिका रस, ध्वनि सिद्धान्तां रै थरपीजण रै पैलां कै पूठै 'अलंकार' नैं ई काव्य रै सिरै अंग–रूप में मान्यो। इण सम्प्रदाय रा पैला आचार्य भामह (सातमी सदी ईसवी) है। उद्‌भट्ट, मम्मट, रूद्रट, वामन, दण्डी, जयदेव, अप्पय दीक्षित आद आचारिज इण मत रा व्याख्याकार हैं। हिन्दी में इण सम्प्रदाय रा व्याख्याता केसव, महाराजा जसवंतसिघं, भूसण, दूलह, चितांमणि, मतिराम, कुलपति मिश्र, देव, दास आद हैं। राजस्थानी आचारिजां में कुशललाम अर मंसाराम मंछ काव्य में अलंकारां रै महत्त्व री व्याख्या करी है। आं अलंकारवादी आचारिजां री मानता है क अलंकार–बिहूणी रचना काव्य होई नी सकै। जयदेव रै सबदां में –

अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्ठामनलं कृती। (चंद्रालोक, 1–8)।

अलंकारवादी आचारिजां रै विवेचन सूं निम्नलिखित बातां रो खुलासो हुवै–

1. काव्य रो सांगोपांग फुटरापो।
2. वक्र अरथ – रचना, अर

3. रस नैं उद्दीप्त करण वाळा संबाद अर अरथ रो अस्थिर धरम।

काव्य रै 'समग्र सौदंर्य री सरूआती चरचा आचार्य दण्डी रै 'काव्यादर्श' में मिळै अर चरम विकास वामन री पोथी 'काव्याालंकार सूत्र' में। आचार्य दण्डी काव्य–गुण, रस, महाकाव्य री कथावस्तु री खासियतां, रचनाकार री धारणा, नाटकीय–संधि, वृत्ति, बीजा लक्षण अर दोसां नैं अलंकार री सीमा में समेटण री खैंचळ करी है। इणी धारणा नैं वामन सौंदर्यमलंकारः' रै माध्यम सूं पुनर्विवेचित करता हुया लिखै –

काव्य शोभायाः कर्त्तारो धर्मा गुणाः।

तदतिशय हेतस्वस्तेऽलंकाराः।।

अर्थात् 'काव्यसोभा' रा विधायक धरम गुण हैं अर गुण नैं 'उत्कर्स' देवण वाळै तत्त्व रो नांव अलंकार है।

अलंकार – सम्प्रदाय रै मुजब अलंकारां रो विकास होळै–होलै हुयो। भरत रै नाट्यसास्त्र में सिरफ चार अंलकारां – यमक, उपमा, रूपक अर दीपक – रो उल्लेख मिळै। समै री जरूरत माफिक अै च्यार अलंकार ई 'कुवलयानंद' में 125 हुयगा। अै आचारिज अलंकारां रो वरगीकरण पण कर्‌यो। अलंकारा रो वैग्यानिक–वरगीकरण करणवाळो लूंठो ग्रंथ रूद्रट रो 'काव्यालंकार' है। अलंकारसास्त्री रस नैं ई अलंकार इज मानै।

(ग) रीति–सम्प्रदाय

काव्य री आत्मा रूप में रीति नैं मानणिया आचारिजां री परम्परा रीति–सम्प्रदाय नांव सूं ओळखीजै। इण परम्परा रा संस्थापक आचार्य वामन हैं, जिका ''रीतिरात्मा काव्यस्य'' कैय'र काव्य में रीति रै महत्व रौ प्रतिपादन कर्‌यो। आचार्य वामन रै मुजब रीति, विशिष्ट पद रचना है अर्थात् रचना में माधुर्यादि गुणां रो समावेस ई उणरी खासियत हुवै अर आ खासियत ई 'रीति' है। इण भांत रीति रो गुणां सूं गै'रो संबन्ध है। इणी आधार पांण इणनैं गुणा–सम्प्रदाय नांव सूं ई औळखीजै। अलंकारां री अपेक्षा गुण ई काव्य–सोभा रा उत्पादक हुवै। वामन रै अलावा प्रसंगवस रीति री चरचा राजेशखर (9–10वीं शती ई.), मम्मट (11वी शती ई.), विश्वनाथ (14वीं शती) पण करी है।

रीतिवादी आचारिज रीति रा भेद ई बतळाया है। आचार्य वामन वैदर्भी, गौडी अर पांचाली नांव री तीन रीतियां मानैं। उणा रै मुजब विदर्भ देस रै कवियां द्वारा बरतीजण सूं इणरो नांव वैदर्भी पड्‌यौ। आचार्य विश्वनाथ इणरी विसेसतावां बलळावता हुया कैवै–

माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका।

अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते।। (साहित्य–दर्पण 9/12–3)

अर्थात् माधुर्य व्यंजक वरणां वाळी समास रहित कै छोटा समासां सूं भरयोडी मनोहर रचना नैं वैदर्भी कैवै। इणरौ दूजौ नांव ललिता ई है।

गौड़ी रीति सूं वामन रो अरथ ओजपूरण सैली सूं है। वै इणरो परिचै करावतां लिखै–

समस्तात्युद्‌भटपदाभोजः कान्ति गुणान्वितम्।

गौड़ीमिति गायन्ति रीति विचक्षणाः ।।

अर्थात् इणमें औज अर कान्ति गुणां रै सागै ई समास री बोहाळता हुवै। मधुरता अर सुकुमारता रो इणमें अभाव हुवै।

पांचाली रीति रो उल्लेख भामह अर दण्डी कोनी करै। वामन री मानता है क आ माधुर्य अर सुकुमारता सूं समरिद्ध अर अगठित, भाव सिथिल, कान्तिरहित (छाया युक्त) गुणां सूं भर्‌योडी हुवै।

आं तीन रीतियां रै सागै ई रूद्रट अेक लाटीय नांव री रीति रो ई उल्लेख करै। इणी भांत राजशेखर 'मागधी रीति ई बतळावै। भोज आं तीन रीतियां रै अलावा 'अवन्तिका' नांव री रीति रौ वरणाव कर्‌यौ है। पण रीति–सम्प्रदाय में वामन री बतायोड़ी तीन रीतियां – वैदर्भी, गौड़ी अर पांचाली री ई मानता रैयी।

(घ) वक्रोक्ति–सम्प्रदाय –

इण संप्रदाय रा प्रवरतक आचार्य कुन्तक (10–11 वीं शती ई.) हा। अै आपरी पोथी 'वक्रोक्तिजीवितं' में वक्रोक्ति नैं व्यापक धरातल माथै काव्य री आत्मा सिद्ध करी है। आचार्य कुन्तक आपरै समै रा मानीता सगळा काव्य–सिद्धान्तां नैं समेटतां वक्रोक्ति सिद्धान्त री थापणा करी। वै वरण–चमत्कार, सबद–सौदर्य, विसै–वस्तु री रमणीयता (फुटरापो), अप्रस्तुत–विधान, प्रबन्ध–कल्पना आद नैं ठावी ठौड देवता हुया कयो क वक्रोक्ति फगत वाक्–चतराई कै उकत–चतराई कोनी है। वो कवि–व्यापार कै कवि कौसल है। इण सिद्धान्त नैं मानण काळा रो वरग ई वक्रोक्ति–सम्प्रदाय कैलायो।

भामह री अतिसयोक्ति चरचा कुन्तक रै सिद्धान्त री भोमका है। भामह रै मुजब वक्र अरथ वाळा सबदां रो प्रयोग काव्य में अलंकार उपाड़ै। इणी मानता नैं दण्डी अंगैजी अर कुन्तक उणरी व्याख्या आपरै तरिकै सूं करी। कुन्तक रै मुजब वक्रोक्ति पांच तरिया री हुवै– वरण–वक्रता, पद–वक्रता, वाक्य–वक्रता, अरथ–वक्रता अर प्रबन्ध– वक्रता। इण भांत कुन्तक रो वक्रोक्तिवाद कलाप्रधान है। व्यापक अर समन्वयात्मक है। ओ सिद्धान्त सगळै काव्य नैं स्वीकृति देवण वाळो है। रस कै भाव रै उद्दीप्त हुवण पै वक्रता मतै ई ऊजळै–इण कथन सूं वक्रोक्ति–सम्प्रदाय काव्य में भावपख रो ई समरथक है। वस्तुतः काव्य में वक्रोक्ति–सम्प्रदाय भावपख अर कला–पख रो फूटरो सामरस करै।

(ङ) ध्वनि–सम्प्रदाय –

रस–सम्प्रदाय सूं जुड़्योड़ै आचारिजां रै मतां री व्याख्या ई ध्वनि–आचारिजां री विसैवस्तु है। आनन्दवर्धन रचित 'ध्वन्यालोक' इण सम्प्रदाय रो खास विवेचक ग्रंथ है। ध्वनि–सम्प्रदाय रै मुजब 'ध्वनि ई काव्य री आत्मा है।' इण कथन रोखास आधार वैयाकरणां रो 'स्फोटवाद' है। आनन्दवर्धन रै अनुसार रस कदै ई वाच्य नीं हुवै, वो व्यंग्य हुवै। अतः व्यंग इज काव्य कैईजै। काव्य में औ व्यंग इज ध्वनि हुवै। आनन्दवर्धन इणसूं नीपज्योड़ै अरथ नैं 'प्रतीयमान' अरथ कैवै। व्यंग्यारथ देवण वाळौ काव्य ई उत्तम कोटि रो काव्य मानीजै अर वाच्यार्थ देवणवाळी काव्य–रचना अधम कोटि री कैईजै। इण भांत आनन्दवर्धन व्यंग्य–ध्वनि (व्यंजना सबद सक्ति) नैं आधार मानता हुया काव्य रा तीन भेद बतळावै–

1. उत्तम काव्य
2. मध्यम काव्य अर
3. अधम काव्य

ध्वनिवादी आचारिज सबद सक्तियां रौ विस्तार सागै विवेचन करयो है। इण विवेचन में ध्वनि रा दो भेद खास तौर सूं सांमी आवै–अविवक्षित वाच्य ध्वनि अर विवक्षित तान्य परवाच्य ध्वनि। पण इण रै अवान्तर भेदां रै आधार पांण अै आचारिज ध्वनि रै 18 भेदां रो वरणांव कर्‌यो है।

आनंदवर्धन रै इण सिद्धान्त री व्याख्या 'अभिनवगुप्त ध्वन्यालोक लोचन टीका' नांव सूं करी। इणमें वै व्यावहारिकता री दीठ सूं ध्वनि रा च्यार भेद करै – 1. शब्द रूप ध्वनि 2. अरथ–रूप ध्वनि 3. व्यापार रूप ध्वनि 4. व्यंग्य–रूप ध्वनि। ध्वनिवादी आचारिजां मुजब उत्तम काव्य (ध्वनि) रा तीन भेद हुवै–

1. रस ध्वनि
2. वस्तुध्वनि अर
3. अलंकार ध्वनि

इण भांत ध्वनिवादी आचारिजां रै मुजब संपूर्ण काव्य ध्वनि में समाहित है।

अभिनवगुप्त रै अलावा ध्वनि री व्याख्या मम्मट, विश्वनाथ, पंडितराज जगन्नाथ आद संस्क्रत रा आचाारिज ई करी। हिन्दी रा उल्लेखजोग ध्वनि विवेचक आचारिज हैं–कुलपति मिश्र (रस रहस्य–1670 ई.), कुमारमणि मिश्र (रसिक रसाल1716 ई.) श्रीपति (काव्य–सरोज 1720 ई.), सोमनाथ (रस पीयूष 1737 ई,) देवदत्त (काव्य–रसायन, 1743 ई. रै लगैटगै), भिखारीदास (काव्य निर्णय, 1750 ई.) सूरतिमिश्र (काव्य सिद्धान्त, 18 वीं शती ई.), प्रतापसिंह

(व्यंग्यार्थ कौमुदी, 19 वीं शती ई.)

(च) औचित्य–सम्प्रदाय –

औचित्य–सिद्धान्त रो आधार रस, ध्वनि, अलंकार रीति आद काव्य तत्त्व ई है। इण विचारधारा री सबसू पैलां व्याख्या आचार्य क्षेमेन्द्र आपरी पुस्तक 'औचित्य–विचार चर्चा' में करी। उणां रै मुजब 'जिको जिणरै समान हुवै, जिणरौ जिण सूं मैळ मिळै, वो ई 'उचित' है अर उचित रौ भाव ई औचित्य है। औ ई औचित्य रस रो जीवनभूत प्राण है। वै इणरो आगै खुलासो कर्‌यो क 'अलंकार अलंकार है अर्थात् बारला सोभाऊ तत्त्व हैं अर गुण ई गुण है (साचां सील आद री दाई) पण रससिद्ध काव्य रो थिर जीवन कै आत्मा तो औचित्य ई हुवै–

अलंकारास्त्वलंकारा गुणा एव गुणाः सदा।

औचित्यं रससिद्धस्य स्थिर काव्यस्य जीवितम्।।

(औचित्य–विचार चर्चा, 5)

इण भांत क्षेमेन्द्र औचित्य रै विविध 27 तरिया रै भेदां (काव्य तत्त्वां) रो विधान करता हुया ओ प्रमाणित कर्‌यो क इणनैं (औचित्य) अंगैजै बिना काव्य अर नाटक दोन्यूं में रमणीयता कोनी आय सकै।

अठै म्हां इण बात रो ई खुलासो करदां क औचित्य कोई न्यारो सिद्धान्त नीं होय'र जुदा–जुदा काव्यांगा (रस, ध्वनि, रीति, गुण, वक्रोक्ति) नैं परिस्कृत अर उपादेय वणावण रो हेतु मात्र है। इण आधार पांण क्षेमेन्द औचित्य नैं काव्य रो 'जीवित' कैवै पण 'जीवित' सबद आत्मा रो पर्याय नीं हुय'र किणी काव्यांग नैं उपादेय बणावण रो हेतु है। अतः औचित्य नैं काव्य री आत्मा मानणो ठावो कोनी।

क्षेमेन्द्र रै पैलां ई औचित्य मुजब धारणा प्रचलित रैयी। भरत नाट्यसास्त्र में आपरै पात्रां सारू देस अर औस्था रै अनुरूप वेस–विन्यास री व्यवस्था में औचित्य नैं अंगैजै। भरत री परम्परा में रूद्रट, भट्टलोलट, दण्डी, भामह आद आचारिजां ई नाटक में औचित्य नैं स्वीकार कर्‌यौ। फैर आनन्दवर्धन रस थिति री व्यवस्था में औचित्य नैं महताऊ ठौड़ दीवी।

3.6 आलोचनासास्त्र में काव्य सास्त्र री ठौड़ –

किणी वस्तु कै रचना री सागी व्याख्या, उणरी परख (मूल्यांकन) करणो ई आलोचना कैयीजै। अंग्रेजी में इण सारू क्रिटिसिज्म (Criticism) सबद रूढ़ है। भारतीय काव्यसास्त्र में ई साहित्यिक सातरी अर ठावी बातां री ओळखांण करणै अर उण जाणकारी नैं सांतरै रूप में समाज लग पुगावणौ ई आलोचना रौ उद्देस्य हुवै। इण भांत वर्तमान परिपेख में किणी रचना रै साहित्यिक मूल्यांकन सारू आचोलना कै लिटरेरी क्रिटिसिज्म' सबद रूढ है। आ रचना गद्य कै पद्य री किणी विद्या सूं जुड्‌यौडी हुय सकै।

भारतीय आलोचनासास्त्र वास्तै पैला काव्यसास्त्र सबद इज बरतीजतो हो। काव्यसास्त्र रै मानदण्डां माथै ई किणी काव्य कै साहित्यिक रचना री समीक्षा करीजती ही। अजै काव्यसास्त्र रै माध्यम सूं किणी क्रिती रो सागो साहित्यिक मूल्यांकन कर्‌यो जा सकै। अजै आलोचनासास्त्र ई इणी काम नै पूरौ करै। काव्यसास्त्र रै नेम पांण समीक्षक किणी रचना सारू अेक सुसंस्क्रत अर निस्पख पाठकां नैं संगठित कर सकै। काव्यसास्त्रीय मूल्यांकन सूं किण रचना रौ कलात्मक ओप रिखरै अर वा रचना सामाजिक नैं आनंद दैवै।

इण भांत आलोचनासास्त्र में काव्यसास्त्र सबद आपरै सैद्धान्तिक रूप नै थरपै। आ दीठ उणनैं विग्यान रै नैडै, लावै। आलोचक–दीठ रै अभाव में समीक्षक काव्यसास्त्र री अवधारणावां नैं ठावै रूप में नीं अंगैजै तौ उणमें वैग्यानिकता कोनी आ सकै। अतः आलोचनासास्त्र अर काव्यसास्त्र रो आपसी संबन्ध घणै नैड़ै रो अर गै'रो है। अै दोई अेक–दूजै पर आश्रित है।

3.7 इकाई रो सार

काव्य (साहित्य) मिनख रै मनोवेगां री रमणीय अभियक्ति हुवै। इण रमणीयता कै रसात्मकता नैं परखण वाली विद्या ई काव्यसास्त्र कैईजै। काव्यसास्त्र नैं सरूपोत अलंकारसास्त्र कैवता हा। अै विचारक काव्य री विरोळ

अलंकार नैं काव्य री आतमा मान'र करता हा। आचार्य विश्नाथ इणनैं साहित्यसास्त्र नांव ई दिरायौ। पण ओ नांव घणां दिनां ताई नीं चाल सक्यो। इणी तरिया काव्यसास्त्र वास्तै क्रियाकल्प, काव्यक्रियाकल्प, काव्य–लक्षण, काव्यविद, साहित्यविद्या, वक्रोक्ति, रीतिसास्त्र, आद नांव ई प्रचलित रैया। पण मानीतौ नांव काव्यसास्त्र ई रैयौ, क्यूंक इणमें काव्य–सौंदर्य रै सगळै उपादानां रौ समन्वय है। अजै अंग्रेजी रै क्रिटिसिज्म री तरज पर काव्यसास्त्र नै समीक्षासास्त्र, आलोचनासास्त्र, साहित्यसास्त्र ई कैवै।

भारतीय (संस्क्रत) काव्यसास्त्र री उतपत कद सूं व्ही, इण बाबत कोई ठावी कूंत करणी मुस्किल है, पण भरत रै नाट्यसास्त्र, अस्टाध्यायी (पंतजली), कामसूत्र (वात्सायन) रसादि आचारिजां री रचनावां रै आधार माथै ओ निस्कर्स काढयो जा सकै क संस्क्रत काव्यसास्त्र री सरूआत रिगवेद री सिरजणां रै पैलां सूं अस्तित्व में ही, जिणरो विकास समैय मुजब अर काव्यसास्त्रियां री विचारधारानुरूप हुवतौ रैयो।

भारतीय काव्यसास्त्र रै विकास रो काल–विभाजन करणो घणो दोरौ। इण बाबत डॉ. एस. के डे, डॉ. योगेन्द्रप्रतापसिंघ आद विद्वानां कोसिस करी। डॉ. सिघं इण वरगीकरण नैं सबदमत, अरथमत अर भावमत सीर्सकां में प्रस्तुत कर्‌यौ है। पण म्हांणै विचार सूं भारतीय काव्यसास्त्र रै विकास नैं भारतीय काव्यसास्त्र रै संप्रदायां रस, अलंकार,ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति अर औचित्य में ई जोयो जा सकै।

भारतीय काव्यसास्त्र री ओळखाण सारू काव्यहेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य लक्षण अर काव्यात्मा री जाणकारी जरूरी है। विद्वान आं नैं भारतीय काव्यसास्त्र रै सिद्धान्त रूप में अंगैजै। कवि में काव्य–सिरजण री सामरथ निपजावण वाळा साधन काव्य हेतु कैईजै। विद्वानां मुजब अै च्यार है–प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास अर समाधि। काव्य सिरजण रो कोई न कोई प्रयोजन (लक्ष्य) जरूर हुवै। आचार्य मम्मट रै मुजब अै प्रयोजन छव हुवै– यश–प्राप्ति, धन–प्राप्ति, व्यवहार–ग्यान, अनिष्ट–निवारण, आनन्द अर कान्ता सम्मित उपदेस।

काव्यलक्षण सूं तात्पर्य उणरै खास तत्त्वां सूं हुवै। इण संदर्भ में आचार्य मम्मट अर पण्डितराज जगन्नाथ री परिभासावां घणी महताऊ मानीजी है। काव्यात्मा सूं अरथ है–रस, अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति अर औचित्य संप्रदायां सूं। आं में ई भारतीय काव्यसास्त्र री आत्मा री विरोळ मिळै। इण भांत आजकाल काव्य–सौदंर्य री परख सारू आलोचना सबद बरतीजै। इण आलोचनासास्त्र में भारतीय काव्यसास्त्र री घणी ठावी ठोड़ है।

3.8 अभ्यास रा प्रस्न

1. काव्यसास्त्र रै अरथ नैं समझावता हुया भारतीय काव्यसास्त्र रै खास–खास सम्प्रदायां री ओळखांण करावो।
2. भारतीय काव्यसास्त्र सारू प्रचलित नावां रो उल्लेख करता हुया भारतीय काव्यसास्त्र रै विकास बाबत आपरा विचार बलळावो।
3. भारतीय काव्यसास्त्र री उतपत बतावता हुया उणरै विकास माथै ठावी टीप लिखो।
4. भारतीय (संस्क्रत) काव्यसास्त्र सारू प्रचलित नावां रो उल्लेख करता हुया इणरी उतपत रो खुलासो करो।
5. काव्यसास्त्र वास्ते ठावौ नांव बतळावता हुया आलोचनासास्त्र में उणरी ठोड़ थरपो।
6. भारतीय काव्यसास्त्र रै प्रमुख सिद्धान्तां री ओळखांण करावो।
7. किणी दोय माथै सारगरभित टीपां लिखो –

काव्य – प्रयोजन, काव्य–हेतु, रस–सम्प्रदाय, भारतीय काव्य री आत्मा, काव्यसास्त्र री उतपत अर काव्य–लक्षण।

3.9 संदर्भ–ग्रंथां री पानड़ी –

I. सं. धीरेन्द्र वर्मा–हिन्दी साहित्य कोश, भाग-I ।
II. डॉ. भागीरथ मिश्र – काव्यशास्त्र।
III. डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह– भारतीय काव्यशास्त्र।
IV. डॉ बलदेव उपाध्याय – साहित्यशास्त्र।
V. डॉ. रामप्रकाश –समीक्षा सिद्धान्त।
VI. डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा – भारतीय काव्यशास्त्र।

इकाई – 4

भारतीय काव्यसास्त्र : ध्वनि सम्प्रदाय

इकाई रो मंडाण–

4.0 उद्देस्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 ध्वनि सम्प्रदाय रो इतिहास

4.3 ध्वनि रो अरथाव अर सरूप

4.4 ध्वनि री परिभासा

4.5 प्रतीयमान अरथाब काव्य

4.6 सबद सगतीयाँ

4.7 ध्वनि रो महत्त्व

4.8 ध्वनि रो भेद

4.9 ध्वनि रै आधार पर काव्य भेद

4.10 ध्वनि सम्प्रदाय री थापना अर विकास

4.11 वाच्यार्थ अर व्यंग्याथै मांय सूं काव्यत्व किण में ?

4.12 ध्वनि अर बीजा सिधान्त

4.13 साहित्य में ध्वनि सम्प्रदाय रो महत्त्व

4.14 इकाई रो सार

4.15 अभ्यास रा प्रस्न

4.16 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

4.0 उद्देस्य –

इण इकाई में भारतीय काव्य स्रास्त्र रो नामचीन सम्प्रदाय 'ध्वनि सम्प्रदाय' रो सांगो पांग अध्ययन करणो आपणो उद्देस्य है। ध्वनि सम्प्रदाय नै काव्य री आत्मा बतांवतां थकां आचार्य आनन्दवर्धन रस अलंकार आद सब रो समावेस इण में बतायो। भारतीय काव्य स्रास्त्र घणो जूनो है। बखत–बखत पर इण में बदळाव हुयो। अेक बखत 'रस सम्प्रदाय' नै काव्य री आत्मा घोषित कर्‌यो गयो तो आगै रै विद्वानां धवनि, अलंकार, वक्रोक्ति, औचित्य, रीति आद नै भी काव्य री आत्मा बताई। सगळै विद्वानां आप–आप रै मत री पुस्टी करी। सगळै विद्वानां आप–आपरै मत री पुस्टी करी। इण सम्प्रदायां में ध्वनि सम्प्रदाय कठै खड्‌यो है अर कितरों प्रभावित कर्‌यो ओईज जाणणो इण इकाई रो उद्देस्य है।

4.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में ध्वनि सम्प्रदाय रो घणो महत्त्व है। हालांकि भारतीय साहित्य में रस सम्प्रदाय, वक्रोक्ति सम्प्रदाय, अलंकार सम्प्रदाय, औचित्य सम्प्रदाय अैड़ा सम्प्रदाय है जिण रै प्रतिष्ठापळां उणां नै काव्य री आत्मा घोसित कर्‌या पण इण मांय सूं वक्रोक्ति तो सिर्फ अलंकार तांई सीमित रैगी अर 'अलंकार' काव्य रा बाह्‌रला उपकरण। जद कै ध्वनि सम्प्रदाय काव्य रै बाह्‌रला उपकरण। जद कै धवनि रो अटूट सम्बन्ध बता'र रस रै साथै–साथै ध्वनि नै भी काव्य री आत्मा बताणै री सफल कोसीस करी। इण इकाई में आप ध्वनि सम्प्रदाय री विसेसतावां साथै उणरा बीजै सम्प्रदायां साथै कांई सम्बंध है अर ध्वनि सम्प्रदाय उण नै कठै तांई प्रभावित करै

आप भणोला।

4.2 ध्वनि संप्रदाय रो इतिहास

ध्वनि संप्रदाय रा प्रवर्त्तक आचार्य आनन्दवर्धन मान्या जावै। अै नवैं सईकै रै उत्तरार्ध में हुया। ईस्वी सन् 875 रै लगैटगै उणां आप रै ग्रंथ 'ध्वन्यालोक' रो प्रणयन कर्‌यो अर 'ध्वनि सम्प्रदाय री थापना करीअर ध्वनि नै काव्यरी आत्मा घोसित करी। 'ध्वन्यालोक' मुजब विद्वानां रा आपस में कीं मतभेद है। केई विद्वानां रो कैवणो है कै आचार्य आनन्दवर्धन पूरै 'ध्वन्यालोक' रा रचनाकार कोनी। 'ध्वन्या लोक' रा तीनहिस्सा है – (1) कारिका (2) वृत्ति (3) उदारण। केई विद्वानां मुजब आनन्दवर्धन तो इणरा 'वृत्ति' अर 'उदारण' आद हिस्सां री रचना करी। 'कारिका' रो रचनाकार कोई और ई अज्ञात नांव रो विद्वान है जिकै तांई 'ध्वनिकार' सबद रो प्रयोग हुयो है। इण बात रा कोई सबूत नीं मिलणै रै कारण जादातर विद्वान आनन्दवर्धन नै ई ध्वनि सम्प्रदाय रा प्रतिस्ठाता मानै। अध्ययन सूं बेरो चालै कै आनन्दवर्धन सूं पैली कोई भी विद्वान इण सम्प्रदाय में पैली सूं कोनी हुया। पण 'ध्वनि सम्प्रदाय' रो जिण भांत 'ध्वन्यालोक' में विवेचन हुयो है उण नै देखतां लागै कोनी कै ओ विवेचन पैली बर हुयो है। इण विवेचन में जितरीं गैराई अर विस्तार है इण नै देख'र ई विद्वान ओ कैवण पर मजबूर हुया। 'ध्वन्यालोक' री पैली कारिका में कैयो गयो है, ''काव्य री आत्मा ध्वनि है। इण बात नै बुधीमान लोग पैली सूं कैंवता आया है।'' ओईज कथन या वाक्य इण बात रो सबूत है कै इण सूं पैली भी ध्वनि री अेक पुस्ट परम्परा रैयी है पण किणी पूर्ववर्ती ग्रन्थ रै अभाव में 'ध्वन्यालोक' नै 'ध्वनिसम्प्रदाय' रो आदि ग्रंथ मानणो पड़ैलो। ध्वनिसम्प्रदाय संस्कृत रो प्रौढ़ अर घणो महताऊ संप्रदाय है।

4.3 ध्वनि रो अरथाव अर सरूप

ध्वनि सबद रो सामान्य अरथाव है – आवाज। व्युत्पत्ति परक अरथाव री ट्रिस्टी सूं 'ध्वन्यते अनेन इति ध्वनिः, अर्थात् जिण सूं ध्वनि पैदा हुवै, उण नै ध्वनि कैयो जावै। दूसरो 'ध्वननम् ध्वनिः' अर्थात् ध्वनित होणो ई ध्वनि है। रस, अलंकार, वस्तु आद काव्यार्थ ध्वनित हुवै इण कारण अै सगळा ध्वनि है। ध्वनित होणो ध्वनि रो काम या सिधी रूप है अर ध्वनित करणो उण री तागत, रूप गुण या सामर्थ है।

व्याकरण में वर्णा रै स्फोट नै ध्वनि कैयो गयो है पछै सबदां अर वाक्यां री 'अर्थ व्यंजना' नै ध्वनि कैयो जाण लाग्यो। वैयाकरणां रै 'स्फोट' रो सम्बन्ध सिर्फ भासा री अभिधा सगती सूं हो, पण काव्य स्रास्त्र री ध्वनि व्यंजना पर आधारित है। ध्वनि री व्याख्या करतां थकां ध्वनिकार कैयो –

''यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनी कृत स्वार्थो
व्यंक्तः काव्य विशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।''

अर्थात् जठै अरथाव या सबद आप रै अभिधात्मक अरथाव नै छोड'र दूसरै अरथाव नै ध्वनित करै, उण विसेस प्रकार रै काव्य नै विद्वान लोग ध्वनि कैवै। ध्वनि कार प्रतीयमान अरथाव (व्यंगयार्थ) नै ध्वनि कैयो है। ध्वनि मुजब आनन्द वर्धन कैयो कै महाकवियां री वाणी में वाच्यार्थ सूं अळगो प्रतीयमान कीं और ई वस्तु है जैड़ा प्रसिध अलंकारां या बेरो लागणाळै बीजै गुणादि तत्त्वां सूं अळगो, सुन्दरियां रै भांत (अलंकार आद सूं अळगो) प्रकासित हुवै। जिण भांत सुन्दरियां रो सौन्दर्य सगळै अंगां सूं अळगो दीसै अर सहृदय रै नैणां तांई अम्रित जैड़ो कीं और ई हुवै, इणीज भांत प्रतीयमान अरथाव भी कीं और ई हुवै।

4.4 ध्वनि री परिभासा

काव्य सिधांत रै रूप में 'ध्वनि' सबद रो स्सै सूं पैली प्रयोग 'ध्वन्यालोक' में कर्‌यो गयो। उणा ध्वनि री परिभासा इण भांत दी, ''जहाँ अर्थ अपने को अथवा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत करके उस (प्रतीयमान) को अभिव्यक्त करते हैं, उस काव्य विशेष को विद्वान ध्वनि (काव्य) कहते हैं। ध्वनि सबद री 'हिन्दी साहित्य कोष' में इण भांत व्याख्या करी गई है, ''सामान्य व्यवहार में कानों में सुनाई पड़ने वाले नाद को ध्वनि कहते हैं।'' पारिभासिक सबद रै रूप में 'ध्वनि' रो अरथाव ध्वनि आचार्यां इण रूपां में कर्‌यो है –

(1) अैड़ो व्यंजक सबद जैड़ो ध्वनित करै या करावै।

(2) अैड़ो व्यंजक अरथाव जैड़ो ध्वनित करै या करावै।

(3) अैड़ो (अर्थात् रस, वस्तु अर अलंकार) जिण री व्यंजना कराई जावै।

(4) अैड़ो (अर्थात् सबद सगती व्यंजना) जिण री व्यंजना कराई जावै।

(5) अैड़ो काव्य जिण में रस, वस्तु, अलंकार ध्वनित हुवै।

इण भांत ध्वनि सबद – व्यंजक सबद, व्यंजक अरथाव, व्यंजना व्यापार अर व्यंग्य काव्य रै अरथां में प्रयोग करीज्यै। स्पस्ट रूप सूं अै पांचूं अरथावं अेक–दूसरै सूं गै'रो सम्बन्ध राखै अर अेक संस्लिस्ट प्रक्रिया रै अळगै रूपां नै दरसावै। सामान्य काव्य स्यास्त्रीय भासा में ध्वनि रो प्रयोग व्यंग्यार्थ रै रूप में कर्‌यो जावै।

4.5 प्रतीयमान अरथाव काव्य

सबद री तीन सगतीयाँ हुवै – (1) अमिधा (2) लक्षणा (3) व्यंजना। ध्वनिवादी इण मांय सूं तीसरी अर्थात् व्यंजना नै ई वास्तविक अर उत्कृस्ट काव्य री मूळ आधार मानै। व्यंजना सगती ई काव्य में निहित, अकथित अर्थात् लुकेड़ै अरथाव नै स्पस्ट करणै में सामर्थवान हुवै अमिधा अर लक्षणा नईं। ध्वनि सिधान्त वैयाकरणां रै 'स्फोट सिधांत' पर आस्रित। स्फोटवाद रै मुजब सबद रा दो रूप हुवै –

(1) सबद रो स्थूल अर उच्चरित रूप जैड़ो उच्चारण भेद मुजब बदळतो रैवै इण कारण ओ सबद रो विकृत अर अनित्य रूप है।

(2) सबद रो सूक्ष्म प्रतिरूप हुवै जैड़ो मिनख रै मन में सदीव विद्यमान रैवै बो ई अरथाव नित्य अर अविभाज्य हुवै। सबद रो ओईज अरथाव प्रातीयमान या व्यंग्यार्थ कैईजै।

स्फोट में सबद री अळगी ध्वनियां री सुतंतर सत्ता कोनी हुवै बल्कै उण रै अेक मिल्यै–जुल्यै रूप रो भाग हुवै। सबद री आखरी ध्वनि रै उच्चरित होयां पछै स्फोट अरथाव री प्रतीति करावै।

काव्य स्यास्त्रियां इणी स्फोट रै आधार पर ध्वनि सिधांत री थापना करी है। ध्वनिवादियों रो कैवणो है कै जिण भांत स्फोट सूं असली अरथाव री अभिव्यक्ति हुवै उणीज भांत काव्य रो असल अरथाव सिर्फ व्यंग्य सूं ई उद्‌घाटित हुवै वाच्यार्थ सूं नईं। इण रो ज्ञान व्यंजना ई करा सकै। व्यंजना काव्य रै निहित अरथाव रो बोध करावै जिण में असली सौन्दर्य हुवै। इण विवेचन में ध्वनिवादियां अभिधा अर लक्षणा री तुलना में व्यंजना नै सबसूं महताऊ बताई है।

4.6 सबद सगतीयाँ

(क) अभिधा सबद सगती अर वाचक सबद :

भासा रै मूळ प्रचलिता सबदां नै वाचक सबद कैया जावै। आखी वस्तुआं प्राणियां, जग्यां आद रा नांव, सगळी मूळ क्रियांवां अर गुण वाचक सबद, सबद कैईजै। इण नै वाचक सबद इण कारण कैया जावै क्यूंकै 'वाचा' अर्थात् बोलतां ई इण रा मूळ अरथाव बोधगम्य हो जावै। जियाँ–घोड़ो, बळद, बकरी, गंगा, डूंगर, धोरा, खाणो, पीणो आणो, जाणो, मीठो, खारो, काळो, पीळो आद। इण सबदां रै अरथाव रो बोध क्यूं कै अभिधा अर्थात् नांव या सूचना मात्र सूं मिल जावै इण कारण इणरा वाच्यार्थ रा द्योतक व्यापार या सबद सगती ने अभिधा सबद सगती कैयी जावै – घोड़ो घास चरै। अै सबद बोलतां ई समझ में आ ज्यावै इण कारण अठै अभिधा सबद सगती है।

(ख) लक्षणा सबद सगती

जद सबदां रो वाच्यार्थ रूप में प्रयोग नीं कर उण सूं सम्बन्ध राखणाळै किणी लक्ष्यार्थ रै रूप में प्रयोग कर्‌यो जावै तो उण नै लक्षक सबद कैया जावै। इण लक्षक सबदां रो लक्ष्यार्थ लक्षणा सबद ब्यौपार या सबद सगती सूं प्रापत हुवै। इण कारण मुख अरथाव रो बोध होणै सूं उण सूं सम्बन्धित बीजै अरथाव रो बोध होणै सूं उण सूं सम्बन्धित बीजै अरथाव रो बोध कराणाळै सबद ब्यौपार नै लक्षणा सबद सगती कैवै। लक्षणा में च्यार बातां मुख हुवै। –

(1) सबदां रै मुख अरथाव रो बोध अर्थात् मुख अरथाव ग्रैण करणै में रुकावट आवै क्यूं कै बो असंगत लागै।

(2) मुख अरथाव सूं अळगै अरथाव री प्रतीति।

(3) अळगो अरथाव मुख अरथाव सूं सम्बन्धित होणो।

(4) अळगो अरथाव अर्थात् लक्ष्यार्थ रै मूळ में रूढ़ी या प्रयोजन।

जिण भांत वाचक सबद सुणतां ई वाच्यार्थ रो बेरो लाग जावै, उण भांत लक्ष्यार्थ रो बेरो कोनी लागै। बो तो ऊपर बताएड़ी च्यार बातां सूं प्रगट हुवै।

(ग) व्यंजना सबद सगती :

व्यंजना में अरथाव सूच्छम सूं सूच्छम (सूक्ष्मातिसूक्ष्म) हो ज्यावै अर मूळ वाच्यार्थ सूं उण रो कोई सम्बन्ध कोनी रैवै। इण कारण मुख अरथाव अर लक्ष्य अरथाव सूं अळगै अरथाव री प्रतीति जिण व्योपार सूं हुवै उण नै व्यंजना कैवै। व्यंजना सबद सगती सूं मतलब है व्यंग्यार्थ या प्रतीयमान अरथाव ध्वनित करणाळी सगती। ओ अरथाव ना तो वाच्यार्थ सूं अर ना ई लक्ष्यार्थ सूं प्रापत हुवै बल्कै ध्वनित हुवै–

सीता हरण तात ! जनि कहियेड पिता सन जाय।

जो मैं राम तो कुल सहित, कहहि दसानन आय।।

आचार्य मम्मट व्यंग्यार्थ री प्रापती तांईं वक्ता, ग्राहक, ध्वनि विकार, वाक्यान्वय, वाच्य सान्निध्य, प्रकरण, देसकाल आद री विसिस्टता रो ध्यान राखणो जरूरी बतायो है। इणीज विसिस्टता रै कारण प्रतिभावान सामाजिक नै वाच्यार्थ अर लक्ष्यार्थ सूं अळगै व्यंग्यार्थ री संप्रापती हुवै।

ध्वनि सिधांत व्यंजना पर आधारित है। व्यंजना सूं जैड़ी अरथाव ध्वनि प्रापत हुवै उण नै ई ध्वनि वादियां काव्य रा प्राण मान्या है। काव्य में रस, वस्तु आद ध्वनित हुवै। कैया कोनी जावै। इण कारण सगळा ध्व्वनि ई है।

4.7 ध्वनि रो महत्त्व

आनन्दवर्धन ध्वनि नै दो रूपां में ग्रैण करी –

(1) समग्र काव्यार्थ या काव्य ध्वनि रै रूप में।

(2) अभिव्यंजना रै विसिस्ट प्रकार अर्थात् व्यंजना रै रूप में।

इण भांत ध्वनि संप्रदाय काव्य रै रस–भाव विसय पक्ष अर सैली पक्ष दोनुआं नै समाहित करणाळो पूर्ण सिधांत है। कवि कथ्य ध्वनि या काव्य ध्वनि में आनन्द वर्धन विच्यार, भाव, वस्तु तथ्य बोध आद सगळी तरां रा कवि कथ्य स्थामिल करतां थकां रस नै ई काव्य री आत्मा घोसित कर दियो। अभिनव गुप्त साफ सबदां में कैयो कै ध्वनि नै काव्य री आत्मा कैवणो तो सामान्य कथन मात्र है, प्रधानता रै कारण असल में तो रस ई काव्य री आत्मा है। वस्तुध्वनि अर अलंकार ध्वनि तो अखीर में रस ध्वनि में ई पर्यवसित हो ज्यावै –

''तेन रस एव वस्तुतः आत्मा। वस्त्वलंकार ध्वनि तु सर्वथा रसं प्रति पर्यवस्येते इति वाच्यात् उत्कृष्टौ तौ इस्याभिप्रायेण ध्वनिः काव्यस्यात्मा इति सामान्येन उक्तम्।''

इण भांत आगै रा सगळै आचार्यां (मम्मट विश्वनाथ, पंडितराज जगन्नाथ आद) ध्वनि रै महत्त्व नै पूरी तरां स्वीकार करतां थकां रस ध्वनि नै काव्य री आत्मा मान ली।

4.8 ध्वनि रा भेद :

आनन्द वर्धन मुजब 'काव्य में ध्वनि' रो अभिप्राय है कै काव्य में 'कवि–कथ्य' अर कथन रो ढंग 'अभिव्यंजना' विवरण या वाच्य रूप में नईं बल्कै गूढ़ार्थ या व्यंजना में प्रस्तुत करणै सूं है। ध्वनि काव्य में ध्वनित होणाळो काव्यार्थ जिनगी रै किणी मार्मिक तथ्य या संवेदना री अनुभूति करवावै। आनन्दवर्धन ध्वनि रा तीन भेद

कर्‌या – (1) रस ध्वनि (2) अलंकार ध्वनि (3) वस्तु ध्वनि

(1) रस ध्वनि :

रस ध्वनि में विभावाद सूं रस री अभिव्यंजना हुवै। रस परितोस रो नांव ई रस ध्वनि है। जठै भी काव्य में रसरी प्रधानता हुवै आनन्द वर्धन उठै रस ध्वनि मानै। रस ध्वनि तीन्यूं भांत री ध्वनियां सूं स्रेस्ठ है।

(2) अलंकार ध्वनि :

अलंकार ध्वनि उठै हुवै जठै प्रतीयमान रस भावाद अलंकार रूप में इण भांत प्रगट हुवै कै आलंकारिक चमत्कार जादा ध्वनि प्रगट करै –

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।

उहि खाए बौराय जग, इहि पाए बौराय।।

ओ दूहो रस हीण है पण कवि इण नै व्यक्त करणै रो जैड़ो विसेस ढंग (अलंकार) अपणायो है, उणीज कारण सूं आ उक्ति या सूक्ति ग्राह्यता रो गुण राखै। इण कारण अठै अलंकार ध्वनि है।

(3) वस्तु ध्वनि :

वस्तु ध्वनि उण जग्यां हुवै जठै किणी वस्तु रो असल चितरांम करणो हुवै जियां प्रकृति आद रो आलम्बनगत मनोरम चितरांम।

4.9 ध्वनि रै आधार पर काव्य भेद :

ध्वनिवादियां व्यंग्यार्थ रै आधार पर काव्य रा तीन भेद कर्‌या –

(1) ध्वनि काव्य या उत्तम काव्य

(2) गुणीभूत व्यंग्य काव्य

(3) चित्र काव्य या अधम काव्य

(1) ध्वनि काव्य या उत्तम काव्य :

जैड़ै काव्य में प्रतीयमान अरथाव प्रधान हुवै अर सबद व अरथाव खुद नै गौण बणा'र किणी चमत्कार पूर्ण व्यंग्यार्थ ने अभिव्यक्त करै उठै ध्वनि काव्य हुवै। ध्वनि वादियां अैड़ै काव्य नै स्रेष्ठ बतायो है। इण में भी रसध्वनि अर्थात् रस व्यंजना पूर्ण काव्य उत्तम हुवै –

देखन मिस मृग विहग तरु, फिरै बहोरि–बहोरि।

निरखि–निरखि रघुवीर छवि, बाढ़ी प्रीति न थोरि।।

अठै राम–सीता रै पैलै मिलण पछै सीता रै पूर्वानुराग रो सोवणो वर्णन है। सिणगार रस री व्यंग्य ध्वनि प्रगट करै।

(2) गुणीभूत व्यंग्य काव्य या मध्यम काव्य :

जैड़ै काव्य में व्यंग्यार्थ चमत्कार भी हुवै, पण देखणै में वाच्यार्थ रो चमत्कार प्रधान हुवै, उठै गुणीभूत व्यंग्य काव्य या मध्यम काव्य हुवै। इण में व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ मुजब गुणीभूत (गौण) रैवै–

रघुवर विरहानल तपे, सह्य सैल के अंत।

सुख सों सोय शिशिर में, कपि कोपें हनुमंत।।

अठै व्यंग्यार्थ है। हड़मान जद सीता रो समाचार राम तांई पूगतो कर दियो तो राम री विरहाग्नि कीं स्यांत होगी। अठै वाच्यार्थ है – भगवान राम री विरहाग्नि सूं गर्म होयेड़ा सह्य डूंगर री चोटियां पर सरदी री रुत में भी सुख सूं सोयेड़ा बांदरा हड़मान जी पर गुस्सो करै। अठै वाच्यार्थ भी

व्यंग्यार्थ सूं सिध हुवै। इण कारण व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ रो बोधक होणै सूं गौण होग्यो। वाच्यार्थ में चमत्कार प्रधान होग्यो पण व्यंग्यार्थ सोवणो है अर चमत्कार युक्त है।

(3) चित्र काव्य या अधम काव्य :

जठै सिर्फ सबदार्थ चमत्कार अर्थात् वाच्यार्थ में चमत्कार हुवै, प्रतीयमान अरथाव री कमी हुवै उण नै चित्र काव्य कैयो गयो है। इण नै अधम काव्य भी कैवै –

पतवारि माला पकरि, और न कछु उपाड।

तरि संसार पयोधि कों, हरि नामैं करि नाउ।।

अठै सांगरूपक अलंकार रै माध्यम सूं वाच्यार्थ में चमत्कार पैदा कर्‌यो गयो है। रसादि री व्यंग्य ध्वनि री अठै कमी है। इण कारण ओ चित्र काव्य है।

4.10 ध्वनि सम्प्रदाय री थापना अर विकास :

'ध्वन्यालोक' री रचना कर आनन्द वर्धन ध्वनि सम्प्रदाय रो प्रवर्त्तन कर्‌यो। आनन्द वर्धन पछै 'ध्वनि सम्प्रदाय' रै काफिलै नै आगै बधाणै में अभिनव गुप्त रो पूरो योगदान है। अभिनव गुप्त 'ध्वन्यालोक' री टीका लिखी जैड़ी 'लोचन' नांव सूं मसहूर हुई। इण ग्रंथ रै माध्यम सूं अभिनव गुप्त ओ सिध कर्‌यो कै ध्वनिवादियां री व्यंजना सगती ई रस री अभिव्यक्ति रै रहस्य नै स्पस्ट रूप सूं समझाणै में सामर्थवान है क्यूं कै रस आद भावां रो बोध व्यंग्य रै रूप में ई हुया करै। इण विवेचन सूं अभिनव गुप्त ध्वनि अर रस सिधांतां नै अेक–दूसरै सूं गैराई तक जोड़ दिया। ध्वनि रै तीन भेदां रस, अलंकार अर वस्तु रै विवेचन में उण आपरी थापना करतां बतायो कै काव्य रस रै कारण ई जींवतो रैवै। रस रै अभाव में काव्य, काव्य कोनी रैवै। अलंकार, ध्वनि अर रस अखीर में तीन्यूं ई रस री प्रतीति करावै। अभिनव गुप्त बतायो कै रस अर ध्वनि रो आपस में कोई विरोध कोनी बल्कै रसात्मक सौन्दर्य सूं अभिहित ध्वनि ई काव्य री आत्मा है।

भट्‌ट नायक ध्वनि सिधांत रो विरोध करतां थकां 'भावकत्व' अर 'भोजकत्व' आद दो तागतां रो प्रतिपादन कर 'रस चर्वणा'नै काव्य री आत्मा मानी। कुंतक ध्वनि सिधांत रो विरोध करतां थकां रस ध्वनि रै पूरै चमत्कार नै प्रबन्ध वक्रता में मानै। ध्वनि सिधांत रो विरोध कश्मीरी आचार्य राजानक महिम भट्‌ट भी कर्‌यो। बै व्यंजना सगती नै मानै ई कोनी। महिम भट्‌ट काव्य रा वाच्य अर अनुमेय दो ई अरथाव मानै। पण महिम भट्‌ट री इण थापनावां नै आगै चाल'र मानता कोनी मिली।

4.11 वाच्यार्थ अर व्यंग्यार्थ मांय सूं काव्यत्व किण में ?

ध्वनि सिधांत रै विवेचन में ओ विवाद भी उठ खड्‌यो हुयो कै काव्यत्व, वाच्यार्थ में हुवै या व्यंग्यार्थ में। आधुनिक युग रा प्रखर आलोचक आचार्य रामचन्द्र सुक्ल जवाब देवै, ''वाच्यार्थ के अयोग्य और अनुत्पन्न होने पर योग्य और उत्पन्न अर्थ प्राप्त करने के लिए लक्षणा और व्यंजना का सहारा लिया जाता है।'' अठै सवाल ओ है कै काव्य री रमणीयता किण मे हुवै ? – वाच्यार्थ में या लक्ष्यार्थ में या व्यंग्यार्थ में ? तो इण रो बेधड़क उत्तर ओईज है कै – वाच्यार्थ में ! चाये बो योग्य हुवै या उत्पन्न या अनुत्पन्न। इण रै विपरीत डॉ. नगेन्द्र अर राम दहिन मिस्र रो कैवणो है कै व्यंग्यार्थ में ई काव्य रो अधिवास हुवै। अठै म्हांरी विनम्र राय मे तो काव्यत्व दोनुवां में ई रैवै अर्थात् जद तांई वाच्यार्थ व्यंग्यार्थ सूं समन्वित रैवै या व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ सूं आवृत्त रैवै जद तांई ई काव्यत्व री स्थिति रैवै। व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ रै अभाव में जींवतो ई कोनी रै सकै। अर वाच्यार्थ व्यंग्यार्थ सूं ई मनोरम अर भव्य रूप धारण करै। इण कारण व्यंग्यार्थ समन्वित वाच्यार्थ नै ई ध्वनिवादी ध्वनि कैवै। अेक रै अभाव में दूसरै री सत्ता कोनी रै जावै। हालांकि वाच्यार्थ अर व्यंग्यार्थ में घणो ई अन्तर हुवै पण उच्च कोटि री काव्य रचना तांई इण दोनुवां रो सहयोग जरूरी है। जद ई कोई उत्कृष्ट रचना संभव हो सकै।

4.12 ध्वनि अर बीजा सिधांत :

(क) रस सिधांत अर ध्वनि :

आनन्द वर्धन रस ध्वनि नै महत्त्व देंता थकां रस अर ध्वनि रो गैरो सम्बन्ध बतायो है। उण रस भाव आद री विविक्षा सूं युक्त काव्य नै ई सर्वोत्तम बतायो है। आनन्द वर्धन स्पस्ट सबदां में कैयो कै भांत–भांत रा सबद, अरथाव अर संघटना रै प्रपंच सूं मनोहर काव्य रो सारभूत बोई'ज प्रतीयमान रसरूप अरथाव है। आनन्द वर्धन रस आद नै कवि तात्पर्य मान्यो अर कैयो है सुकवियाँ रै व्यौपार रो मुख विसय रस आद है। वस्तु ध्वनि अर अलंकार ध्वनि रो तो पूरै रूप में रस में ईज पर्यावसन हो ज्यावै –

''तेन रस एव वस्तुतः आत्मा वस्त्वलंकार ध्वनितु सर्वथा रसं प्रति पर्यवस्येते इति वाच्यात् उत्कृष्टौ तौ इत्यभि प्रायेण ध्वनिः कावस्यात्मा इति सामान्येन उक्तम्।''

इण विवेचन सूं स्पस्ट हुवै कै ध्वनि नै काव्य रो आत्मरूप मान'र भी आनन्दवर्धन रस या रस ध्वनि नै स्यै सूं जादा महताऊ अर स्रेस्ठ बतायी है।

(ख) ध्वनि, रीति अर गुण :

ध्वनि अर रीति रो सम्बन्ध स्थिर या नित रो है। ओ बोईज अटूट सम्बन्ध है जैड़ो रीति है प्रकरण में रस अर रीति रो है। रीति सूं मतलब है अभिव्यंजना सैली। इण कारण बिना रीति ध्वनि रो वजूद ई संभव कोनी हो सकै। बियां भी रस आद बिना ध्वनि रै रीति बेजान अर बेमतलब हुवैली। ओ सरीर अर आत्मा रो अटूट रिस्तो है। रीति या सैली नै अगर कवि रो व्यक्तित्व मान्यो जावै तो ओ व्यक्तित्व रीति रै माध्यम सूं रचना में ध्वनित हुवै। ध्वनि आत्मरूप है अर रीति सरीर रूप – दोनुवां रो नित सह अस्तित्व रैवै।

गुण भी रस या ध्वनि धर्मा है। सौर्य, माधुर्य आद मिनख रा गुण जिकां रो सम्बन्ध उण री आत्मा सूं है उणी'ज भांत रीति या काव्य गुणां रो सम्बन्ध रस या ध्वनि सूं है। काव्य में गुण भी कैयेड़ा (कथित) कोनी हुवै बल्कै व्यंजित या ध्वनित हुवै। इणीज कारण गुण अर ध्वनि रा सम्बन्ध अंतरंग है।

(ग) ध्वनि अर वक्रोक्ति :

आप रै छोटै रूप में वक्रोक्ति अेक अलंकार ई है। इण कारण उण रो ध्वनि साथै सम्बन्ध अेक अनित सौन्दर्य प्रसाधन रो ई'ज है। आचार्य कुंतक वक्रोक्ति है जिण व्यापाक रूप री कल्पना करी बो आमतौर पर पूरी रचना प्रक्रिया नै छूणाळो व्योपार है। कुंतक हालांकि रस ध्वनि आद आत्म तत्त्वां नै भी वक्रोक्ति में समाहित करणै री कोसीस करी पण आखी कोसीसां रै बावजूद उण रो वक्रोक्ति सिधांत काव्य री आत्मा रो सिधांत कोनी बण सक्यो। उण रो जादातर रूप–सरूप सरीरवादी ई रैयो। उक्ति अर्थात् अभिव्यक्ति री वक्रता अर काव्य रचना री विसिस्टता पर ई कुंतक रो प्रतख लक्ष्य रैयो। इण भांत खुद रै रूप–सरूप में वक्रोक्ति रो ध्वनि सूं बोईज सम्बन्ध है जैड़ो सरीर सूं आत्मा रो। अलंकार, गुण, रीति, कल्पना आद प्रसाधन दोनुवां रा अेक सा है। दोनुवां रा साध्य अळगा है। वक्रोक्ति रो लक्ष्य रमणीयता सूं सहृदयां नै आह्लादित करणो है। ध्वनि रो लक्ष्य सहृदयां नै भाव अर रस में मगन करणो है। कुंतक री वक्रोक्ति में भासा ध्वनि या व्यंजना रा घणकरा'क तत्व मिलै। कुंतक री वक्रोक्ति रीति रै व्यापक रूप सूं बरोबरी राखै। इण कारण ध्वनि रो वक्रोक्ति साथै बोईज सम्बन्ध है जैड़ो ध्वनि रो रीति साथै है।

(घ) ध्वनि अर औचित्य :

औचित्य रो सम्बन्ध अक्सर काव्य रै सगळै तत्त्वां सूं है। रस, ध्वनि, अलंकार, रीति, विसय आद सगळै तत्त्वां रो उचित निबंधन ई औचित्य है। इण कारण ध्वनि अर औचित्य रो अटूट सम्बन्ध है। आनन्द वर्धन स्पस्ट कैयो कै अनौचित्य रै सिवा रसभंग रो और कोई कारण कोनी हुवै। विभावाद रस सामग्री रै ठीक नियोजन सूं ई रस री स्रिस्टी हुवै। विसय प्रतिपादन, रस संयोजन आद में औचित्य रो ध्यान राखणै सूं ई स्रेस्ठ रस ध्वनि री सिधी हुवै। थोड़ो भी औचित्य भंग रसाभास या भावाभास रा हालात पैदा कर देवै। इण भांत ध्वनिवादी आचार्यां ध्वनि अर औचित्य रो ना टूटणाळौ सम्बन्ध दिखायो है।

4.13 साहित्य में ध्वनि सम्प्रदाय रो महत्त्व :

ध्वनि सम्प्रदाय रो मूल लक्ष्य प्रतीयमान अरथाव है। ध्वनिवादी प्रतीयमान अरथाव नै ई ध्वनि री संज्ञा दे'र

काव्य री आत्मा मानै। पण बै उत्तम काव्य उण नै ई मानै जिण में रस ध्वनि हुवै। इण भांत ध्वनिवादी आचार्य रस नै स्सै सूं ऊपर मानै। साथै ई बै अलंकार ध्वनि रो अस्तित्व महताऊ मान अलंकार सम्प्रदाय सूं भी समझौतो कर लेवै। इणीज भांत रीति संप्रदाय सूं भी कीं तत्त्व लिया है। अठै तक तो ध्वनि संप्रदाय ने स्सै सूं जादा महत्त्व दियो जा सकै क्यूंकै उण में रस अलंकार अर रीति सम्प्रदाय रै प्रमुख तत्त्वां रो समन्वय करणै री नूंई कोसीस मिलै। पण विरोध जद हुवै जद बै साधन नै ई साध्य सिध करणै री कोसीस करै। काव्य में रस साध्य हुवै अर रसानुभूति कराणाळी सगळी प्रक्रियावां साधन मानी जावै। ध्वनि भी रसानुभूति कराणाळी अेक प्रक्रिया है। इण कारण उण नै भी साधन कैयो जावैलो साध्य नईं। पण ध्वनिवादी प्रतीयमान अरथाव नै ई काव्य री आत्मा घोसि कर उण नै ई साध्य सिध करणै री कोसीस करै। असल में ध्वनि रसानुभूति तांई सब सूं उत्तम अर प्रभावसाली साधन है। रस ध्वनि नै सब सूं जादा महत्त्व अर अलंकार अर वस्तु नै अपेक्षाकृत कम महत्त्व दे'र ध्वनिवादियां भाव पक्ष अर कलापक्ष रो समन्वय करतां थकां काव्य में रस अर भाव नै ई जादा महत्त्व दियो। ध्वनि वादियों रो मुख उद्देस्य – काव्य सौन्दर्य है, अर ध्वनि उण काव्य सौन्दर्य रो उद्घाटन करण में अलंकार रीत आद री अपेक्षा जादा सच्छम है।

4.14 इकाई रो सार

'ध्वन्यालोक' रा रचनाकार आनन्दवर्धन ध्वनि नै काव्य री आत्मा घोषित कर ध्वनि नै संप्रदाय रो दरजो दिरवायो। उणां सबद री तीन सगतियां अभिधा, लक्षणा अर व्यंजना मांय सूं व्यंजना नै स्रेस्ठ बता'र काव्य रै प्रतीयमान या व्यंग्यार्थ नै प्रधान बतायो। इणीज आधार पर ध्वनि वादियां काव्य नै 'उत्तम', 'मध्यम' अर अधम तीन स्रेणियां में विभाजित कर्‌यो अर रस ध्वनि नै स्रेस्ठ बता'र ध्वनि अर रस रो आपसी सम्बन्ध दरसायो। ध्वनि सम्प्रदाय औचित्य, वक्रोक्ति, अलंकार रीति आद सम्प्रदायां सूं समन्वय री थापना कर इण नै व्यापकता देणै री कोसीस करी।

4.15 अभ्यास रा प्रस्न

(1) ध्वनि सम्प्रदाय रो सांगोपांग विवेचन करो।
(2) प्रतीयमान अरथाव या व्यंग्यार्थ सूं कांई मतलब है ?
(3) सबद सगतीयाँ री पूर्ण रूप सूं व्याख्या करो।
(4) ध्वनि सम्प्रदाय री रीति, अलंकार, रस, औचित्य आद सम्प्रदायां सूं कांई सम्बन्ध है ? व्याख्या करो।
(5) ध्वनि रै आधार पर काव्य रा भेद करो ?
(6) ध्वनि रा कितरां भेद है अर कैड़ा ? व्याख्या करो।
(7) ध्वनि री परिभासा देंतां थकां उण रै सरूप री व्याख्या करो।

4.16 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. भामह – काव्यालंकार।
2. आनन्द वर्धन – ध्वन्यालोक।
3. डॉ. नगेन्द्र – रस सिद्धांत।
4. मम्मट – काव्य प्रकाश।
5. कुंतक – वक्रोक्ति जीवितम्।
6. जयदेव – चन्द्रा लोक।
7. विश्वनाथ – साहित्य दर्पण।
8. आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी – आधुनिक साहित्य।
9. भागीरथ दीक्षित – समीक्षा लोक।
10. रुय्यक – अलंकार सर्वस्व।
11. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – साहित्यिक निबंध।

इकाई – 5

भारतीय काव्यसास्त्र : वक्रोक्ति सम्प्रदाय

इकाई रो मडाण –

5.0 उद्देस्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 सामान्य परिचै

5.3 वक्रोक्ति रो मतलब

5.4 कुन्तक रा काव्य सिधांत

5.5 वक्रोक्ति रा भेद

5.6 वक्रोक्ति रो विकास

5.7 कुंतक पछै वक्रोक्ति रो रूप

5.8 आलोचना स्यास्त्र में वक्रोक्ति रो स्थान

5.9 वक्रोक्ति अर अभिव्यंजनावाद

5.10 वक्रोक्ति अर रीति सिधांत

5.11 वक्रोक्ति अर ध्वनि सिधांत

5.12 वक्रोक्ति अर रस सिधांत

5.13 वक्रोक्ति अर औचित्य

5.14 इकाई रो सार

5.15 अभ्यास रा प्रस्न

5.16 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

5.0 उद्देस्य –

साहित्य में किणी विचार या वाद रो उदै उण बखत री मांग रै मुजब हुवै। साहित्य में वक्रोक्ति सम्प्रदाय भी आप रै समै री उपज हो। इण सूं पैली भारतीय काव्य स्यास्त्र में रस, अलंकार अर ध्वनि सम्प्रदाय प्रतिष्ठित हो चुक्या हा। इण इकाई में वक्रोक्ति सम्प्रदाय रो सूक्ष्म विवेचन आपणो उद्देस्य है। अठै ओ जाणणो भी जरूरी है कै जद साहित्य में पैली सूं प्रचलित सम्प्रदाय हा तो वक्रोक्ति री कांई दरकार हुई अर इण सम्प्रदाय रै परिप्रेक्ष्य में बीजै सम्प्रदायां में कांई विसेसतावां अर न्यूनतावां रैयी इण रो अध्ययन भी इण इकाई में कर्‌यो जावैलो।

5.1 प्रस्तावना

साहित्य रै सांगोपांग विवेचन तांईं साहित्य रै सिधांत पक्ष रो अध्ययन जरूरी है। संस्कृत साहित्य में रस सिधांत, ध्वनि सिधांत, औचित्य सिधांत, अलंकार सिधांत आद सिधांतां पर समै–समै पर खूब बहस हुई। उणांरी थापनां करणाळै विद्वानां सिर्फ खुद रै सिधांत नै ई काव्य री आत्मा बताणै री कोसीस करी। इण सब सूं साहित्य रो सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन भी हुयो। इणी'ज कड़ी में वक्रोक्ति जैड़ो सिर्फ अलंकार हो पण आप री प्रतिभा री तागत सूं कुंतक इण नै सिधांत रै आसण पर बिठा दियो। इण इकाई में वक्रोक्ति सिधांत रो अध्ययन अर बीजै सिधांतां साथै बो कितरों चालै ओई'ज देखणो आपणो उद्देस्य है।

5.2 सामान्य परिचै :

'वक्रोक्ति जीवितम्' नांव रै ग्रंथ रा रचयिता आचार्य कुन्तक 'वक्रोक्ति सम्प्रदाय' रा प्रवर्त्तक मान्या जावै। कुन्तक सूं पैली रस, अलंकार रीति अर ध्वनि आद सम्प्रदाय प्रतिष्ठित हो चुक्या हा। उण जुग में 'ध्वनि सम्प्रदाय' रो बोलबालो हो। नूंवै साहित्यिक समीक्षकां अर विद्वानां तांईं ओ जरूरी हो कै बै या तो इण रो वर्चस्व स्वीकार करै या उण री कमियां अर दोसां रो स्पस्ट वर्णन कर आप री थापनावां कर कोई नूंवै सम्प्रदाय रो प्रवर्त्तन करै जैड़ो ध्वनि सम्प्रदाय री अपेक्षा स्रेस्ठ हुवै। असल में अलंकार, रीति अर वक्रोक्ति सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक मूळ रूप सूं रस सम्प्रदाय रा विरोधी अर ध्वनि सम्प्रदाय रस सम्प्रदाय रो पोसक। इण कारण कुन्तक प्रकारान्तर में ध्वनि सम्प्रदाय रो विरोध करतां रस सम्प्रदाय रो विरोध कर्‌यो। वास्तव में कुन्तक कलावादी आचार्य हो।

5.3 वक्रोक्ति रो मतलब :

वक्रोक्ति रो मतलब है लोक नै अतिक्रान्त करती कोई उक्ति, विलक्षण बात। इण सूं मतलब है कथन री भंगिमा। साधारण उक्तियाँ, जिण रो प्रयोग आम बातचीत में कर्‌यो जावै उण सूं सामाजिक रै मन में रसोद्रेक कोनी हुवै। कवि आप रै काव्य में जैड़ो लोकात्तर वर्णन करै। बोईज सामाजिकां रै मन में रसोद्रेक करण में समरथ हुवै। वक्रोक्ति रो मूल मतलब है कै सीधै–सादै ढंग सूं बात कैवणै में ना तो सरसता पैदा हुवै अर ना उण रो उतरों असर हुवै। इण कारण किणी बात नै चमत्कारिक ढंग सूं कैवणो वक्रोक्ति है।

वक्रोक्ति सबद री संधि करां तो वक्र + उक्ति, दो सबदां रो मेळ लखावै। अठै वक्र रो अरथाव है टेढी (टेढ़ो) कुटिल, बांको या विलक्षण। इण भांत वक्रोक्ति रो अरथाव हुयो – बांकपण या विलक्षणता सूं भरेड़ो कोई कथन या कैवण रो ढंग। कुन्तक इण री व्याख्या में ''वैदग्ध्य भंगी भणिति'' पढ़ रो प्रयोग कर्‌यो है। कुन्तक मुजब ओईज असामान्य कथन काव्य रो मूळ तत्व है। लोक ब्यौहार में वक्रोक्ति सबद रो प्रयोग वाक्छल, क्रीड़ाकलाप या परिहास कथन रै अरथाव में भी होंवतो रैयो है। बाणभट्ट री कादम्बरी में इण अरथां रै अलावा वक्रोक्ति रो प्रयोग 'वचन वैचित्र्य' या चमत्कार पूर्ण सैली रै साहित्यिक अरथाव में भी मिलै। कुन्तक मुजब असामान्य कथन ई काव्य रो मूळ तत्व है। बीजा सहकारी उपादान उण रा सहायक है। वक्रता या विलक्षणता रै अभाव में काव्य रो कोई मोल कोनी रै जावै। आ विलक्षणता सबदरूपी भी हो सकै अर अरथाव रूपी भी। कुंतक काव्य में इण दोनुवां रो स्थान मानतां थकां वक्रोक्ति नै काव्य री आत्मा सिध करै।

इण विवेचन रो ओईज सारांस है कै स्यास्त्रीय अर ब्यौहारिक विचारां अर भावां री अभिव्यक्ति करणै तांईं सामान्य मिनखां रै अपणायेड़ै मार्ग सूं अळगो विलक्षणता या वक्रता रो आस्रय लेवै। अभिव्यक्ति रै नूंवै–नूंवै रास्तां री तलास करै। वक्रोक्ति रा अठै दो उदारण प्रस्तुत है। आम मिनख जियां किणी सूं पूछैलो – ''आप कठै सूं पध ाार्‌या हो ?'' पण सकुन्तला री सखी अनुसूइया राजा दुस्यन्त सूं इण भांत नीं पूछ'र सवाल करैली, ''किण देस री प्रजा नै आप आप रै विरह सूं व्याकुल कर्‌या है ?'' इणीज भांत अेक आम मिनख पूछैलो, ''आप कठै तांई पधारोला ?'' पण दमयंती दौत्य कर्म तांई हाजर राजा सूं पूछै, ''महाराज ! निवेदन करूं कै म्हां रो मन ओ जाणणो चावै कैं सरेस रै फूल रै कंवळै पण नै मात देणाळा आप रा पगल्या कठै तांई जाणै री कोसीस करैला ?'' इण भांत वक्रोक्ति में बात तो ठीक बा सागण कैयी जावै पण कैवण रै ढंग में अेक विसेसता अर वाग्विदग्ध ाता हुवै जिण सूं सुणण अर भणणाळो चमत्कृत हुय जावै। वक्रोक्तिवादी इणी चमत्कृत करण नै काव्य रो मूल अभिप्राय या उद्देस्य मानै। इण भांत कुंतक आद वक्रोक्ति वादियां रैयो है। अै कथन री विसिस्टता नै ई उत्तम काव्य रो मूळाधार अर स्सों कीं मानै। फेर भी उण रो द्रिस्टीकोण आधुनिक कलावादियां री भांत अेक तरफो, अनुदार अर संकीर्ण कोनी हो। आधुनिक कलावादी सिर्फ खुद रै मनप्रसादन नै ई काव्य रो आखरी लक्ष्य मानै। जद कै कुंतक सहिरदै पाठकां री अनुभूति नै आखरी प्रमाण्य मानै। कै सकां कै कुन्तक अठै स्वान्तः सुखाय अर परजन हिताय दोन्यूं सिधांतां रो समन्वय करणै री कोसीस करी है।

कुंतक काव्य में सामाजिक सिवत्व रो होणो जरूरी मानै। उण प्रबन्ध वक्रता मुजब स्पस्ट करतां कैयो मिनख नै राम मुजब ब्यौहार करणो चायजै, रावण री भांत नंई। ओईज प्रबन्ध काव्य रो वक्रतागत सौन्दर्य है। उणां स्पस्ट मान्यो कै ना तो सुन्दर वस्तु रै अभाव में कोरो सबद या वक्रोक्ति चमत्कार काव्य बण सकै अर ना

चमत्कारी असरदार कथन रै अभाव में सुन्दर वस्तु काव्य रो रूप धारण कर सकै। कुंतक हालांकि जादा महत्त्व अभिव्यक्ति नै ई देवै पण उण रो जोर अनुभूति अर अभिव्यक्ति रै समन्वय पर रैवै।

5.4 कुंतक रा काव्य सिधांत :

कुंतक सबद अर अरथाव दोनुवां नै ई बरोबर महताऊ मानै। काव्य में वस्तु अर उण री अभिव्यक्ति दोनुवां में तादात्म्य होणो चायजै। काव्य री विसय वस्तु मामूली नीं होयर विसिष्ट अर खास होणी चायजै। उण विसय वस्तु नै अभिव्यक्त करणाळी अभिव्यंजना सैली रो असाधारण अर लोकागीत होणो निहायत जरूरी है। अलंकार काव्य रै मूळ तत्वां मांय सूं अेक है। बै सिर्फ बाहरी आभूसण कोनी। काव्य रो काव्यत्व कवि–कौसल पर आस्रित हुवै। काव्य बोईज स्रेष्ठ मान्यो जावैलो जैड़ो काव्य रसिकां नै आणंद प्रदान करणाळी सुन्दर (वक्र) कवि व्यापार युक्त रचना में जद वैवस्थित सबद अर अरथाव आपस में अेकरस हो जावै (तादात्म्य स्थापित कर लेवै) जद ई उण नै काव्य कैयो जावैलो। अैड़ो काव्य आह्लाद कारक कैयो जावै। इण भांत कुंतक रो काव्य मुजब द्रिस्टीकोण कलावादी या सौन्दर्यवादी है। कुंतक काव्य रै मूळ तत्व रसनै खास महत्व नीं देय'र कवि कौसल नै ई सब सूं जादा महत्त्व प्रदान कर उण नै ई काव्य री सफलता रो आधार मानै।

5.5 वक्रोक्ति रा भेद :

कुंतक वक्रोक्ति रो विस्तार साथै विवेचन करतां थकां उण रा छः भेद मानै –

(क) वर्ण विन्यास वक्रता

(ख) पद पूर्वार्ध वक्रता

(ग) प्रत्यय वक्रता

(घ) वाक्य वक्रता

(च) प्रकरण वक्रता

(छ) प्रबन्ध वक्रता

(क) वर्ण विन्यास वक्रता :

साधारण तरीकै री बजाय आखरां (व्यंजनां) रो खास तरीकै सूं वैचित्र्यपूर्ण विन्यास जैड़ो सह्रदयां नै आह्लादकारक लागै, वर्ण विन्यास वक्रता है। ओ अनुकूल वर्ण–विन्यास अनुप्रास अलंकार ई है। विषय रसानुकूलता, सुभाविकता, प्रसादत्व, स्रुतिपेसलता, आद उण रा गुण है।

(ख) पदपूर्वार्ध वक्रता :

सुबंत या तिड़न्त रूप पद रा जैड़ा पूर्वार्ध सबद व धातु रूप हुवै उण में विन्यास रा वैचित्र्य ई पद पूर्वार्ध वक्रता कैयी जावै। इण रा कुंतक विसेसण वक्रता (जठै विसेसण रै महात्म्य सूं सह्रदय पाठक रै मन में वैचित्र्य पैदा हुवै) उपचार वक्रता (जठै अमूर्त वस्तु रो मूर्त वैचित्र्य विधान हुवै) लिंग वैचित्र्य, क्रिया वैचित्र्य आद नौ भेद गिणवाया है।

(ग) प्रत्यय वक्रता :

सुप, तिङ् आद प्रत्ययां रा वैचित्र्य विन्यास प्रत्यय वक्रता कैयी गयी है। उण रै वचन वैचित्र्य, कारण वैचित्र्य (जठै अचेतन पदार्थ में चेतना रो आरोप सूचक कारण हुवै) पुरुस वैचित्र्य वक्रता (जठै प्रथम पुरुस रा मध्यम या उत्तम रूप रै साथै विपर्यास रो प्रयोग हुवै) आद भेदां री कल्पना करी गई है।

(घ) वाक्य वक्रता :

पद समुदाय री वक्रता नै वाक्य वक्रता कैयी गयी है। कुंतक मुजब इण रा हजार भेद हो सकै। उपमा आद सगळा अलंकार इणी रै अन्तर्गत मान्या गया है। कुंतक वस्तु वक्रता अर विसय पक्ष पर भी इणी संदर्भ में विचार कर्‌यो है।

(च) प्रकरण वक्रता :

वाक्य समुदायात्मक वक्रता रो मतलब है किणी प्रसंग रै विन्यास में वैचित्र्य पैदा करणो। इण रा भी कुंतक केई रूप भेद कर्‌या है। कठै ई तो कवि किणी छिनेक (क्षणिक) भावपूर्ण स्थिति री अैड़ी उद्‌भावना करै जिण सूं प्रबन्ध (कथा) में या किणी पात्र रै चरित्र चितरांम में उत्कर्स पैदा हुय जावै। दूजो भेद है इतिहास रै इतिवृत्त मांय सूं किणी अैड़ै प्रसंग री उद्‌भावना, जैड़ो प्रसंग कथा में और उत्कर्स पैदा कर देवै। सिर्फ इतिहास रै इतिवृत्त रो निर्वाह करणै सूं ई काव्य रो प्रयोजन सिध कोनी हुवै बल्कै कवि काव्य रो प्रयोजन सिध कोनी हुवै बल्कै कवि नै भावनापूर्ण सरस प्रसंगां री कल्पना करणी चायजै। इणी नै कुंतक प्रकरण वक्रता बतायो है।

(छ) प्रबन्ध वक्रता :

कुंवक प्रबंध वक्रता री व्याख्या करतां थकां इण रै छह भेदां रो निरूपण कर्‌यो है। मूळ रस में बदळाव, इतिहास में मसहूर कथानक नै अैड़ै रूप में चित्रित करणो जिकै सूं नायक रै चरित्र रो उत्कर्स हुवै। बिचाळे नीरस हो ज्याणाळी कथा में अचाण चक्क प्रसंग री अवतारणा आद। इण भांत कुंतक प्रबंध वक्रता रै अन्तर्गत भाव, रस आद रो विवेचन करतां थकां उण नै विस्तृत आयाम देणै री कोसीस करी।

इण भेदां अर उपभेदां सूं ओ स्पस्ट हो ज्यावै कै कुंतक वक्रोक्ति नै व्यापक सरूप प्रदान कर्‌यो। उण वक्रोक्ति नै काव्य रै सगळै अंगां अर क्षेत्रां सूं जोड़ दी। कुंतक रै सगळै अंगां अर क्षेत्रां सूं जोड़ दी। कुंतक सूं पैली वक्रोक्ति सिर्फ अलंकार रै रूप में समादृत ही अर पछै भी विद्वानां उण नै अेक अलंकार ई मान्यो पण कुंतक उण नै विस्तार देय'र सिधांत रूप में थापना करणै में कोई कसर कोनी छोड़ी।

5.6 वक्रोक्ति रो विकास :

कुन्तक वक्रोक्ति नै काव्य री आत्मा अर मूळ आधार बताई इण कारण उण नै इण रो प्रवर्त्तक मान्यो जावै पण असल में वक्रोक्ति रो इतिहास इण सूं भी घणो जूनो है। कुन्तक सूं लगैटगै च्यार सौ बरस पैली छठै सईकै में भामह वक्रोक्ति रो प्रयोग कुंतक री भांत खूब व्यापक रूप में कर्‌यो। भामह वक्रोक्ति नै अलंकार मानतां थकां सगळै अलंकारां रो बिगसाव वक्रोक्ति सूं मान्यो है। इण भांत वक्रोक्ति रो इतिहास भी अलंकार सम्प्रदाय रै बरोबर पुराणो है। भामह वक्रोक्ति में सबद अर अरथाव दोनुवां रो अन्तरभाव मान्यो है। उण वक्रोक्ति अर अतिशयोक्ति नै अेक ई मानतां थकां उण नै 'लोकातिक्रान्त गोचरता' कैयो अर्थात् जिण रो लोक में प्रचलित सामान्य अर्थ सूं अळगो अर विचित्र अर्थ हुवै। भामह अलंकारवादी हा इण कारण अतिशयोक्ति नै सगळै अलंकारां री जननी बता'र अेक तरां वक्रोक्ति नै ई काव्य रो मूळ आधार मान लियो। भामह रो तो कैवणो है कै वक्रोक्ति रहित वाक्य काव्य ई कोनी रै जावै अर बो वार्ता ई बण जावै।

भामह पछै दण्डी भी वक्रोक्ति नै उतरों ई महत्त्व प्रदान कर्‌यो पण काव्य रा दो भेद भी बताया –

(1) स्वभावोक्ति (2) वक्रोक्ति

जद कै भामह स्वभावोक्ति नै काव्य कोनी मानता। उण स्वभावोक्ति नै भी वक्रोक्ति रै दायरै में बता'र उण रो सुतंतर महत्त्व स्वीकार करणै सूं इन्कार कर्‌यो। नौवैं सईकै में आंवतां तक वक्रोक्ति सिर्फ अर्थालंकार ई रैग्यो। रुद्रट वक्रोक्ति नै अलंकार ई मानतो जैड़ी वाक्छल पर आस्रित हुवै। इण भांत भामह सूं लेय'र रुद्रट तांई वक्रोक्ति रो महत्त्व होळै–होळै घटतो गयो।

आगै चाल'र ध्वनि सम्प्रदाय रा प्रवर्तक आचार्य आनन्द वर्धन वक्रोक्ति नै दुबारा महत्त्व प्रदान कर्‌यो। हालांकि आनन्द वर्धन वक्रोक्ति री कोई सुतंतर व्याख्या तो कोनी करी पण उण नै अेक विसिस्ट अलंकार मान'र उण रो सामान्य अर व्यापक रूप स्वीकार कर्‌यो। आनन्द वर्धन रो कैवणो हो कै इण सूं काव्य रै अरथाव में अेक अनोखी, अणूंती चमक पैदा हुवै इण कारण कवियां इण तांईं खास कोसीस करणी चायजै। आनन्द वर्धन, भामह री भांत अतिशयोक्ति नै वक्रोक्ति री पर्याय मानी अर सगळा अलंकार इण रै अन्तर निहित मान्या है। इण भांत आनन्द वर्धन वक्रोक्ति रो पुनरुधार कर उण नै ओजूं साहित्यिक प्रतिष्ठा दिखाई। इण सूं प्रभावित हो'र कुंतक वक्रोक्ति नै व्यापकता प्रदान करी अर उण नै काव्य री आत्मा घोसित करी। विद्वानां री मानता है कै कुंतक री

'वक्रोक्ति जीवितम्' पर आनन्दवर्धन रै 'ध्वन्यालोक' री मानतावां रो गै'रो असर है। डॉ. धर्मवीर भारती मुजब, ''इसके अनेक प्रसंगों के विस्तार में ध्वनि विस्तार की छाया है। वक्रोक्ति का विस्तार ध्वनि के समान ही वर्ण, प्रत्यय, विभक्ति आदि से प्रारम्भ कर प्रबन्ध तथा पाठ्यकाव्यों तक माना गया है। अनेक चमतकार–भेद दोनों में समान हैं, कई उदाहरण भी समान है।''

5.7 कुंतक पछै वक्रोक्ति रो रूप :

कुंतक पछै अभिनव गुप्त वक्रोक्ति नै सामान्य रूप में स्वीकार करी। उण सबद अर अरथाव री विलक्षणता (वक्रता) रो अरथाव 'लोकोत्तर स्थिति' मान्यो। इण लोकात्तर रो अरथाव 'अतिसयता' घोसित कर्‌यो। आगै चाल'र भोजराज अर मम्मट वक्रोक्ति री सामान्य मानतावां स्वीकार कर उण नै सबदालंकार अर अर्थालंकार है विसेस रूप में मानता दी। रूद्रट 'काकुवक्रोक्ति' अर 'भंग स्लेस वक्रोक्ति' दो भेद कर दिया। 12वैं सईकै में रुय्यक इण ने अर्थालंकार रो दर्जो दियो अर विस्वनाथ सिर्फ सबदालंकार ई मान'र रैग्या।

इण विवेचन सूं ओ स्पस्ट हो चुक्यो ई कै अलंकारवादी भामह इण नै घणो महत्त्व देंता थकां सगळै अलंकारां रो मूळ बतायो पण भामह पछै लगो लग इण रो महत्त्व कम हों तो गयो। कुंतक आप री प्रतिभा सूं इण नै सम्प्रदाय रै पद पर प्रतिस्ठित तो करी पण कुंतक पछै दुबारा इण रो महत्त्व घटतो गयो अर वक्रोक्ति सिर्फ अलंकार रै'गी। इण भांत संस्कृत काव्य स्यास्त्रीय समीक्षा में वक्रोक्ति नै जादा आदर कोनी मिल्यो।

5.8 आलोचना स्यास्त्र में वक्रोक्ति रो स्थान :

कुंतक रै परवर्ती विद्वानां वक्रोक्ति नै उतरों महत्त्व कोनी दियो। इणीज भांत हिन्दी रै रीतिकालीन आचार्यां अर कवियां भी वक्रोक्ति नै खास तवज्जह कोनी दी। अलंकारवादी केसव इण नै 'वक्रीकृता उक्ति रूप' सबदालंकार नीं मान 'विदग्ध उक्ति रूप' अरथालंकार ई मान्यौ। अठै आ बात भी गौर करणै लायक है कै रीतिकालीन कवियाँ वक्रोक्ति नै अेक सिधांत नीं मान'र सिर्फ अलंकार रूप में ई मानता दी। हालांकि घनानन्द बिहारी आद कवियां वक्रोक्ति रो व्यापक रूप में प्रयोग कर्‌यो है। आधुनिक काल में पद्म सिंह सरमा, जगन्नाथ दास 'रत्नाकार', हरिऔध आद विद्वानां वक्रोक्ति नै मानता भी प्रदान करी। महावीर प्रसाद द्विवेदी कला चमत्कार रो समर्थन कर वक्रोक्ति सम्प्रदाय नै ई मानता दी। छायाादी कवियाँ तो वक्रोक्ति रो खास महत्त्व स्वीकार कर्‌यो। प्रसाद जी इण मुजब कैयो, ''इस लावण्य को संस्कृत साहित्य में छाया और विच्छति के द्वारा कुछ लोगों ने निरूपित किया था।'' इणीज भांत डॉ. नगेन्द्र छायावादी काव्य में वक्रोक्ति री प्रधानता बतांवता कैवै, ''छायावाद में वक्रता के दोनों रूपों विदग्धता तथा चारूता का ही वैभव मिलता है। प्रसाद तथा पंत में जहाँ चारुता का उत्कर्ष है, वहाँ निराला में विदग्धता का। महादेवी के प्रणय काव्य में भाव प्रेरित वक्रता का सुन्दर विकास है।''

पण आचार्य रामचन्द्र सुक्ल रस सिधांत रो पक्ष लेय'र उक्ति चमत्कार रो विरोध कर्‌यो। सुक्ल जी मुजब 'उक्ति वैचित्र्य' रो मतलब मनोरंजन हुवै जद कै काव्य रा सरोकार मुख रूप सूं मिनख अर समाज सूं जुड़ेड़ा हुवै। सुक्ल जी अभिव्यंजनावाद रा विरोध करतां थकां उण नै भारतीय वक्रोक्ति वाद रो विलायती उत्थान बतायो। सुक्ल जी पछै लक्ष्मी नारायण सिंह सुधांसु, डॉ. गुलाब राय, डॉ. नगेन्द्र आद समीक्षकां वक्रोक्ति रो वैवस्थित रूप सूं विवेचन कर उण री तुलना अभिव्यंजना वाद सूं करी है।

5.9 वक्रोक्ति अर अभिव्यंजनावाद :

वक्रोक्ति भारतीय काव्य परम्परा रो अैड़ो चमत्कारिक सिधांत है जिण में कर्ता या कृति पर खास नजर राखतां थकां काव्य रै आखै उपादानां रो विवेचन कर्‌यो जावै। अभिव्यंजनावाद यूरोपीय सौन्दर्य स्यास्त्र रो महताऊ कलात्मक पक्ष है। इण रा प्रवर्त्तक बैंडेट क्रोचे है। उण कला नै वस्तुजगत सूं हटा'र बिलकुल मानस व्यापार में बदळ दी अर उण नै सिर्फ अभिव्यंजना मानी। दूसरै कानी कुंतक अैड़ी कृति नै काव्य कैवण में ई संकोच करै जिण में सिर्फ अभिव्यंजना स्सों कीं हुवै अर अभिव्यंग्य कीं ना हुवै। कुंतक मुजब जैड़ै व्यापार में सबद अर अरथाव, अभिव्यंजना अर अभिव्यंग्य मिल'र अेकरूप हौ ज्यावै बो ई काव्य है। पण क्रोचे काव्य में सिर्फ सबद नै प्रमुखता देवै क्यूं उण मुजब काव्य री अभिव्यंजना साबदी ई हो सकै। इण भांत क्रोचे अभिव्यंजना नै पूरो महत्त्व

दे'र अभिव्यंग्य या वस्तु नै जादा महत्त्व कोनी देवै। उण मुजब अभिव्यंग्य सिर्फ साधन है, साध्य अभिव्यंजना है। वक्रोक्ति में हालांकि अभिव्यक्ति नै घणी महताऊ बतायो गयो है पण भाव पक्ष री भी उपेक्षा कोनी करी गई उण नै भी पूरो गौरव प्रदान कर्‌यो गयो है जद कै क्रोचे कला में भाव पक्ष या अनुभूति पक्ष नै नगण्य मानै। क्रोचे मुजब अनुभूति री कमी होंतां थकां भी सिर्फ अभिव्यक्ति रै बूतै काव्य रचना करी जा सकै। इण भांत क्रोचे कला में जिनगी अर जगत री बातां रो महताऊ स्थान कोनी मानै। बो 'बेबात री बात' कैवण में बिसास करै। इण भांत अभिव्यंजना वाद 'कला खातर' सिधांत रो सब सूं बड़ो समर्थक है।

इण रै अलावा कुंतक अर क्रोचे अर क्रोचे री मानतावां में घणो अन्तर है। क्रोचे कला रो सम्बन्ध आपी–आप प्रकासित ज्ञान (Intution) सूं मानै। कुंतक स्यास्त्रीय ज्ञान नै भी कला सिरजना तांईं जरूरी मानै। क्रोचे अभिव्यंजना री सहज–सुभाविकता में काव्य सौन्दर्य मानै पण कुंतक उक्ति री वक्रता नै ई सुन्दरता रो मूळ आधार बतावै। क्रोचे बाहरी अभिव्यक्ति नै अभिव्यंजना नीं मान सिर्फ मानसिक अभिव्यक्ति नै ई मानै। क्रोचे अभिव्यंजना नै सौन्दर्य अर सौन्दर्य नै अभिव्यंजना स्वीकार करै। उण तांईं बाहरी अभिव्यक्ति गौण है जद कै कुंतक बाहरी अभिव्यक्ति गौण है जद कै कुंतक बाहरी अभिव्यक्ति नै स्सो कीं मान मानसिक अभिव्यक्ति रो नांव भी कोनी लेवै। क्रोचे कला नै अखंड अर अविभाज्य मानै जद कै कुंतक उण रो विस्तृत विवेचन तय करै। क्रोचे कला नै कलाकार री आत्मतुस्टी रो ई लक्ष्य मानै। बा किणी में क्रोध या आणंद कांई पैदा करै इण सूं कलाकार नै कोई सरोकार कोनी। कुंतक मुजब सहृदय लोगां रै मन में प्रसन्नता प्रदान करणो कला रो लक्ष्य हुवै। इण भांत कै सकांकै वक्रोक्ति अर अभिव्यंजना में मूळ रूप सूं कीं समानता कोनी। दो सिधांतां रा दो अळगा आधार है।

5.10 वक्रोक्ति अर रीति सिधांत :

दोन्यूं सिधांतां में सैली नै ई प्रमुख महत्त्व दियो गयो है। वामन पद रचना नै काव्य री आत्मा बताई अर कुंतक पद रचना साथै आखै रूप विधान या रचना सैली नै 'काव्य जीवित' कैयो। इण नजरियै सूं देखतां कुंतक क्षेत्र जादा व्यापक है। वामन री रीति कुंतक री वक्रोक्ति रो ई अेक हिस्सो है।

5.11 वक्रोक्ति अर ध्वनि सिधांत :

ध्वनि सिधांत आत्मावादी सिधांत है जिणमें कवि द्वारा वर्ण्य नै घणो महताऊ मान्यो गयो है। ध्वनि सिधांत में वर्णन सैली वर्ण्य री सहायक मानी जावै। वक्रोक्ति सिधांत इण रै विपरीत सरीरवादी सिधांत है। दोनुवां रो प्रस्थान बिंदु तो अेक ई पण गंतव्य या लक्ष्य अळगो–अळगो है। आनन्द वर्धन भी साधारण अभिधात्मक सबद अर अरथाव रै बजाय व्यंग्यार्थ पर जोर देवै। कुंतक भी लोक ब्योहार या स्यास्त्र रै अभिधा कथन सूं अळगो वक्रोक्ति नै प्रमुखता देवै। पण जठै आनन्द वर्धन व्यंग्यार्थ में वर्ण्यार्थ में प्रमुख मान'र वर्णन सैली या लक्षणा, व्यंजना सबद सगतियां नै सहायक सौन्दर्य प्रसाधन मान'र चाल्या बठै कुंतक उक्ति या कथन प्रणाली नै लक्ष्य बतावै। ओई'ज दोनुवां में मूळ अंतर है।

5.12 वक्रोक्ति अर रस सिधांत :

जिण भांत रा आपसी सम्बन्ध रस अर ध्वनि रा है उणीज भांत रा सम्बन्ध वक्रोक्ति अर रस रा है। कुंतक मुजब रस वक्रोक्ति री परम विभूती है अर उण री अभिव्यंजना वक्रता विहीन कोनी हो सकै। रस रै बिना तो काव्य जींवतो रै सकै पण वक्रोक्ति रै बिना नईं, कुंतक री आई'ज मानता हो।

5.13 वक्रोक्ति अर औचित्य :

कुंतक वक्रोक्ति रै विवेचन में सगळै रचना तत्वां में औचित्य री जरूरत अनुभव करी। कुंतक री मानता ही कै औचित्य री थोड़ी सी भी कमी सूं सहृदय रै आह्लाद में कमी या ज्यावै। इणीज कारण औचित्य अर वक्रोक्ति रो सम्बन्ध घणो गै'रो है।

5.14 इकाई रो सार

वास्तव में 'वक्रोक्ति सिधांत' मान्यो तो कलावादी सिधांत जावै पण इण में रस अलंकार रीति, ध्वनि आद पैली सूं चाल्या आंवता सगळा सिधांतां रो अंस रूपमें समाहार कर कुंतक आप री प्रतिभा अर मौलिकता रै बलबूतै पर अेक नूंवै सिधांत री थापना री कोसीस करी है। पण साथै ई कुंतक रस अर ध्वनि सिधांतां रै प्रभावां सूं मुगत कोनी हो सक्यो। मूळ रूप सूं कुंतक ध्वनि अर रस सम्प्रदायां रो महत्त्व स्वीकार करतां थकां भी वक्रोक्ति नै जबरन काव्य री आत्मा सिध करणै री कोसीस करी। कुंतक सूं च्यार सईकां पैली भी भामह वक्रोक्ति रो महत्त्व स्वीकार कर उण री विस्तृत व्याख्या करी। कुंतक री अणथक कोसीस रै बावजूद उण रै बाद ओजूं अेक अलंकार रै रूप में ई महत्त्व अर मानता प्रापत कर सकी। सांच बात तोआ है कै कुंतक रै इण सिधांत में मौलिकता होंवतां थकां भी असर डालणै री अद्‌भुत तागत कोनी ही जैड़ी रस अर ध्वनि सिधांत में ही। इण रो अेक कारण तो ओई'ज हो कै कुंतक मूलतः काव्य रै सैली पक्ष पर बो इतरों जोर कोनी दे सक्यो जद कै रस अर ध्वनि सिधांतां में भाव पक्ष नै ई प्रमुखता दिरीजी। इणी'ज कारण कुंतक रै इण कलावादी सिधांत रो उतरों प्रचार–प्रसार कोनी हो सक्यो। जैड़ो काव्या सिधांत काव्य में जिनगी अर जगत री उपेक्षा करै या उणां नै कम महताऊ मानै बो जादा दिन कोनी चाल सकै। ओई'ज हस्त कुंतक रै वक्रोक्तिवाद रो हुयो। आज ओजूं साहित्य में उणरो विरोध हुवै।

5.15 अभ्यास रा प्रस्न

1. कुंतक रै वक्रोक्तिवाद पर अेक लेख लिखो।
2. काव्य सिधांतां मुजब कुंतक रा विचार लिखो।
3. कुंतक वक्रोक्ति रो कांई मतलब बतायो है ? कुंतक सूं पैली भामह रा वक्रोक्ति मुजब कांई विच्यार हा? विस्तार सूं लिखो।
4. वक्रोक्ति रा कितरां भेद बताया गया है ?
5. वक्रोक्ति रै विकास पर अेक टिप्पणी लिखो ।
6. वक्रोक्ति अर अभिव्यंजना वाद में कितरीं समानतावां अर असमान तावां हैं ? लिखो।
7. कुंतक 'वक्रोक्ति' नै अेकर तो सिधांत रै रूप में थापित कर दियो पण आगै चाल'र उण नै विद्वानां अलंकार रूप में ई स्वीकार कर्‌यो। क्यूं ? सिधांत रै रूप में इण में जैड़ी कमियां हैं उण री व्याख्या करो।

5.16 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. आचार्य रामचन्द शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. सं. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
3. भागीरथ दीक्षित – समीक्षा लोक।
4. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – साहित्यिक निबन्ध।
5. डॉ. नगेन्द्र – रस सिद्धान्त।
6. डॉ. राजनाथ शर्मा – साहित्यिक निबंध।
7. डॉ. नन्द दुलारे वाजपेयी – आधुनिक साहित्य।
8. भामह – काव्यालंकार।
9. मम्मट – काव्य प्रकाश।
10. कुंतक – 'वक्रोक्ति जीवितम्'।
11. रुय्यक – अलंकार सर्वस्व।
12. जयदेव – चन्द्रा लोक।
13. विश्वनाथ – साहित्य दर्पण।

इकाई – 6

भारतीय काव्यसास्त्र : अलंकार सम्प्रदाय

इकाई रो मंडाण –

6.0 उद्देस्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 अलंकार सम्प्रदाय

6.3 अलंकार सम्प्रदाय री परम्परा

6.4 अलंकार रो अरथाव

6.5 अलंकारवादी मत

6.6 अलंकारवादी आचार्यां रै मत रो सार

6.7 अलंकार सम्प्रदाय रो विवेचन

6.8 अलंकारां रो वर्गीकरण

6.9 रस अर अलंकार

6.10 अलंकारां रो काव्य में स्थान अर महत्त्व

6.11 काव्य में प्रतीयमान अरथाव री महत्ता

6.12 अलंकार अर अलंकार्र रो अन्तर

6.13 मनोवैज्ञानिक द्रिस्टी सूं अलंकारां रो महत्त्व

6.14 इकाई रो सार

6.15 अभ्यास रा प्रस्न

6.16 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

6.0 उद्देस्य –

किणी भी देस अर काल रै साहित्य नै गैराई सूं समझणै तांईं पैली उण देस रै साहित्य–स्यास्त्र नै भी समझणो जरूरी हुवै। इण सूं बखत–बखत पर साहित्य जिण धारावां नै अपणाई या विच्यारां सूं प्रभावित रैयो उण बात रो भी बेरो चालै। आदि कवि वाल्मीकि सूं ले'र आधुनिक उत्तरी भारतीय भासावां में विपुल साहित्य री रचना हुयी है। साथै ई काव्य री आत्मा अर प्रयोजन आद नै ले'र भी घणो विच्यार–विमर्स हुयो है। भारतीय काव्य स्यास्त्र में रस सम्प्रदाय, ध्वनि सम्प्रदाय आद रो प्रणयन हुयो। इण रै माध्यम सूं साहित्य रो सांगोपांग विवेचन कर्‌यो गयो। अेक बखत भामह, दण्डी, उद्‌भट जैड़ै विद्वानां अलंकार नै काव्य री आत्मा बता'र इण बात पर जोर दियो कै बीजा आखा गुण जैड़ा साहित्य रचना तांईं जरूरी है अलंकारां साथै आ जावै। इण इकाई में आपणो उद्देस्य अैड़ै महताऊ सम्प्रदाय (अलंकार सम्प्रदाय) रो सूक्ष्म विवेचन करणो है जिण सूं समझ्‌यो जा सकै कै अलंकार सम्प्रदाय साहित्य नै कितरों प्रभावित कर्‌यो।

6.1 प्रस्तावना

अलंकार सम्प्रदाय रो साहित्य में घणो वर्चस्व रैयो है। अलंकार नै काव्य री आत्मा बतायो गयो। इण विद्वानां 'अलंकार' री विस्तृत व्याख्या कर उण नै सम्प्रदाय रो दर्जो दिखायो। मध्यकाल (रीतिकाल) में तो केसव जैड़ा आचार्यां अलंकार तांईं कैयो –

''जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुवरन सरस सुवृत्त।

भूषण बिनु न विराज हिं कविता वनिता मित्त।।''

इण भांत अैड़ै महताऊ सम्प्रदाय रो विवेचन इण इकाई में कर्‌यो जावैलो जिण सूं विद्यार्थी अलंकारां रै साहित्यिक महत्त्व साथै–साथै अेतिहासिक महत्त्व भी समझ सकै।

6.2 अलंकार सम्प्रदाय :

प्राचीनता री नजर सूं देखां तो रस सिधांत पछै अलंकार सम्प्रदाय रो नांव आवै। इण काव्य सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक भामह है। इण रो काल ईसा रो छठो सईको मान्यो जावै। भामह ई स्सै सूं पैली 'काव्यालंकार' री रचना कर अलंकारां नै काव्य री 'आत्मा' घोसित कर 'अलंकार सम्प्रदाय' री थापना करी। भामह सूं पैली भरत मुनी भी उपमा, दीपक, रूपक, यमक अलंकारां नै मानता दे चुक्या है। इण रै अलावा राम सरमा, मेधाविन, राजमित्र आद विद्वानां भी अलंकारां री चर्चा करी पण इण रा कोई ग्रंथ कोनी मिलै। भामह भी इण रो आप रै ग्रंथ में सिर्फ जिक्र ई कर्‌यो है। सब सूं पैली भामह प्रयोजन, काव्य भेद, रीति, गुण वक्रोक्ति दोस आद रो खूब लाम्बो चवड़ो विसलेसण कर इण सगळां नै अलंकारां में समेटतां थकां कैयो – 'शब्दार्थौ सहित काव्यं।' उणां सबदालंकार अर अर्थालंकार, अलंकारां रा दो भेद भी कर्‌या। उणां सबद अर दोनुवां पर जोर दे'र साध्य–साधन सम्बन्ध स्वीकार कर्‌यो पण उण रो खास आग्रह तो अलंकारां रो विवेचन ई रैयो। आगै आवणाळै विद्वानां अर रचनाकारां पर इण रो ओईज असर पड्‌यो कै काव्य में 'वस्तु' री जाबक उपेक्षा करी गई अर अलंकार नै ई महत्त्व दियो गयो। अलंकार नै ई काव्य रो सगळो कीं मानतां थकां अलंकारवादियां उण नै काव्य री आत्मा घोसित कर दियो।

6.3 अलंकार सम्प्रदाय री परम्परा :

भामह 'वक्रोक्ति' नै सगळै अलंकारां रै मूळ में मान'र अलंकारां री तादाद 38 बताई। जद कै भामह रै मत में संसोधन करतां थकां दंडी 'काव्यादर्श' में अलंकारां री तादाद 35 मानी नौवें सईकै में उद्‌भट 'काव्यालंकार सार संग्रह' नांव रै ग्रंथ री रचना कर इण परम्परा नै आगै बधाई। रुद्रट अलंकारां रो वर्गीकरण तो कर्‌यो पण उणां भाव अर रस नै अलंकार कोनी मान्या। रुद्रट पछ अणगिण आचार्यां अलंकार सम्प्रदाय नै आगै बधावंतां थकां काव्य वस्तु री पूर्ण रूप सूं उपेक्षा करदी। इण में कीं प्रमुख विद्वान अर उण रा ग्रंथ इण भांत है –

आचार्य	ग्रंथ	काल
मम्मट	काव्य प्रकाश	11वों सईको
रुय्यक	अलंकार सर्वस्य	12वों सईको
जयदेव	चन्द्रालोक	13वों सईको
विस्वनाथ	साहित्य दर्पण	14वों सईको
जगन्नाथ	रस गंगाधर	17वों सईको

इण आचार्यां में मम्मट ध्वनिवादी अर जगन्नाथ रसवादी आचार्य हा बाकी सगळा अलंकार वादी हा। इण आचार्यां रै अलावा और भी घणा विद्वान हुया है जिणां अलंकार री परम्परा नै आगै बधाई।

6.4 अलंकार रो अरथाव :

अलंकार सबद रो अरथाव है सोभा–प्रसाधन या सोभा–उपकरण अर्थात् आभूसण या जेवर है। जिण भांत अलंकार (आभूसण) सौन्दर्य प्रसाधन मान्या जावै उणीज भांत अलंकार कवि री वाणी नै भी सुसोभित करै–

(1) अलंकारोतीति अलंकार

(2) अलंक्रियते अनेन इति अलंकार

संस्कृत रै काव्य स्यास्त्रियाँ अलंकारां री घणी ई परिभासावां दी है। संस्कृत काव्य स्यास्त्र में, 'अलंकार काव्य रा प्रवर्त्तक या जनक हैं या सौन्दर्य रा कारक या उपकारक है। अलंकार विधान कवि तांई साधन है या

साध्य।' आद बातां नै ले'र भी खूब विच्यार विमर्स हुयो।

भामह, दंडी आद आचार्यां अलंकारां नै, ''काव्य री सोभा, सोभा कारक, सहज धर्म अर प्राण मान्या है।'' जद कै रसवादी आचार्यां अलंकार नै रस भावादि अलंकार्य रा उपकारक, सोभा बधावणै रा साधन अर सबद–अरथाव रा अनित्य धर्म स्वीकार कर्‌या है। रीतिवादी वामन अर वक्रोक्तिवादी कुंतक अलंकार नै काव्य री आत्मा कोनी मानै बल्कै अलंकार नै काव्य री सोभा नै उत्पन्न करणाळा गुण अर सोभा जादा बधाणाळा हेतु या कारण मानै –

''सौन्दर्यं अलंकारः । काव्य शोभायाकर्तारो धर्मा गुणाः। तदतिशय हेतवो अलंकाराः।''

6.5 अलंकारवादी मतः

कवि आप री अनुभूतियां री असरदार अभिव्यक्ति करणै तांई अलंकारां नै आधार बणावै। अलंकारां सूं कवि रै कथन में तागत अर प्रभविस्णुता पैदा हो ज्यावै। अलंकार वादी आचार्य अलंकार नै सबद–अरथाव या काव्य रा सौन्दर्य स्थानिक अन्तरंग तत्त्व मानता। चन्द्रालोक रा रचनाकार (जयदेव) अलंकारां री बड़ाई करतां थकां कैयो कै जैड़ा लोग काव्य नै अलंकार रै बिना (रहित) मानै बै लोग आग नै गरमी रहित क्यूं कोनी मानै ? इणीज भांत अग्नि पुराण में अलंकार रहित वाणी नैं विधवा रै बरोबर बताई गई है–

अंगोकरोति यः काव्यं शब्दार्थवमलंकृती।

असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती।।

(चन्द्रालोक)

अलंकार रहिता विधवैव सरस्वती। (अग्नि पुराण)

अलंकारवादी सबद–अरथाव री सोभा रो मूल कारण अलंकार नै मानै। उणां मुजब अलंकार बिना सबद–अरथाव सरस हुय सकै, इण बात नै कल्पना सूं भी बारै मानै। अलंकार सम्प्रदाय रा प्रतिस्ठापक आचार्य भामह स्पस्ट सबदां में कैवै, ''लुगाई रो सोवणो मूंडो बिना आभूसण रै ओपै कोनी।''

'न कान्तामपि निभूषं विभाति वनिता मुखं।' (काव्यालंकार)

भामह बतायो कै अलंकार रो मूळ वक्रोक्ति है। उणां मुजब सामान्य लोक प्रचलन रो अतिक्रमण करणाळो वचन ई वक्रोक्ति है –

''लोकातिक्रांतांगोचरं वचनं वक्रोक्ति।''

उण रो कैवणो है कै वक्र सबद अर वक्र अरथाव ई काव्य बण सकै। अरथाव वक्रता रै अभाव में कानां नै मधुरी लागणाळी रचना नै भामह काव्यकोनी मानै। काव्य में बै गुणां री बजाय अरथाव री वक्रता पर जोर देवै।

आचार्य दण्डी काव्य री सोभा बधाणआळै धर्म नै अलंकार बतायो –

काव्य शोभा करान् धर्मान् अलंकरान प्रचक्षते (काव्यादर्श)

दंडी रस, भाव आद नै अलंकार रै मांय नै ई मानै। उणां इण नै 'रसवत् अलंकार', 'प्रेय अलंकार', 'ऊर्जस्वि अलंकार' आद नांव दिया। काव्य में बखाणेड़ा आठ्यूं रसां नै दंडी 'रसवत् अलंकार' कैवै। सोभा बधावणै रा जितरां भी उपकरण है उण सगळां नै दंडी अलंकार में समेटणै री कोसीस करी है। दण्डी अलंकारां नै काव्य रो सरीर मानै, कारण ओईज है कै आत्मा कानी उणां रो ध्यान ई कोनी गयो।

आचार्य वामन गुण नै काव्य रो 'नित धर्म' अर अलंकार नै उण रो सहायक तत्त्व मानै। अलंकार सौन्दर्य री थापना करणाळो (प्रतिष्ठापक) हुवै अर उणी रै कारण काव्य ग्राह्य हुवै –

'काव्यंग्राह्यंलंकारात्'

इण भांत काव्य री परिभासा करता आचार्य वामन गुण अर अलंकार, दोनुवां सूं संस्कृत सबद–अरथाव नै काव्य मानै –

''काव्य शब्दोअयं गुणालंकार संस्कृतयोः शब्दार्थयोः वर्तते।''

आचार्य उद्‌भट भी भामह रा समर्थक मान्या जावै। उणां भामह रै सिधांतां री व्याख्या करी है। अलंकार सम्प्रदाय नै उणरी कोई खास देन कोनी।

इण नजर सूं आचार्य रुद्रट घणा महताऊ है। उणां रस नै अलंकार रो आस्रय होणै रै मत रो खंडन कर्‌यो है। रुद्रट रस रो सुतंतर महत्त्व स्वीकार करै। बै कवियां नै जतन सूं रस रै चित्रण करणै पर जोर देवै–

''तस्मात् कर्तव्यं यत्नेन महीयसा रसैर्युक्तम्''

रुद्रट रो अलंकार निरूपण काफी हद तांई मौलिक है। उणां पैली बर अलंकारां रो वर्गीकरण कर्‌यो अर सूच्छम भेद, उपभेद कर उणां रो निरूपण कर्‌यो।

इण आचार्यां रै अलावा प्रतिहारेन्दु राज, रुय्यक, जयदेव, विद्याधर, अप्पय दीक्षित आद अलंकारवादी आचार्य हुया है जैड़ां काव्य में अलंकारां नै महताऊ अर मुख स्थान दियो पण बै रसवादी आचार्यां सामी कोनी टिक सक्या।

6.6 अलंकारवादी आचार्यां रै मत रो सार :

- सबद अरथाव में चमत्कार अर्थात् उक्ति चमत्कार ई अलंकार है।
- अलंकार काव्य शोभा रा मूल कारण है। अलंकार युक्त सबद–अरथाव ई काव्य है। बिना अलंकार रै काव्य सोभा री कल्पना ई कोनी करी जा सकै। अलंकार रहित वस्तु, कथन या उक्ति काव्य हो ई कोनी सकै।
- काव्य रो आखो सौन्दर्य अलंका पर आधारित है। गुण, रस, रीति आद सगळा सौन्दर्य तत्त्व अलंकारां रै आसरै है। इण कारण अलंकारवादियां सिर्फ सैली पक्ष ई नईं भाव, रस आद मांयलै तत्त्वां नै भी अलंकारां रै आसरै बताय'र सब सूं बड़ी भूल करी।
- रुद्रट रै अलावा किणी भी अलंकारवादी आचार्य रस नै महत्त्व कोनी दियो। दंडी, उद्‌भट आद आचार्यां रसवत् अलंकार कैय'र रसअर भावां नै भी अलंकार रा भेद मान लिया।
- अलंकार वादी आचार्यां री द्रिस्टी अभिव्यक्ति पक्ष या सैली पक्ष तक ई सीमित रैयी। उणां काव्य रै भीतर अलंकार्य रो अनुसंधान कोनी कर्‌यो। रस अर भाव रा जाणकार होतां थकां भी बै रस रै मर्म तांईं कोनी पूग सक्या। काव्य रै मानसिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक आद पक्षां रो विवेचन कोनी कर सक्या। काव्य साहित्य अर जिनगी रो सहभाव अर सम्बन्धां री थापना भी कोनी कर सक्या। इण कारण अलंकार सम्प्रदाय काव्य रो वैज्ञानिक सिधांत कोनी बण सक्यो।

6.7 अलंकार सम्प्रदाय रो विवेचन :

अलंकार सम्प्रदाय उण वर्ग रै आचार्यां रो है जैड़ा अलंकार नै ई काव्य रो प्रमुख आकर्सण अर आत्मा स्वीकार करता। संस्कृत में इण सम्प्रदाय रा संस्थापक भामह हा अर उद्‌भट, दण्डी, रुद्रट, जयदेव, प्रतिहारेन्दुराज आचार्य उण रै मत रा समर्थक हा। आगै चाल'र चिन्तामणि, केसव, मति राम कुलपति, भिखारीदास आद भी कवि आचार्यं हुया। इण आचार्य कवियाँ अलंकारां नै रस आद साथै स्वीकार कर्‌या है।

भामह अलंकार नै काव्य रो प्राण तत्त्व मान्यो है अर दण्डी मुजब काव्य रा सगळा पोसक अंग अलंकार कैइजै। सरुआत में अलंकारां री तादाद कम ही पण जियां विवेचन होंतो गयो संख्या बधती गई। अलंकारवादी आचार्यां वक्रोक्ति री विधायिका सबद–सगती नै भी अलंकार मान्यो। इणां 'स्वभावोक्ति' नै भी अलंकार बतायो। इण भांत देख्यो जा सकै कै जादातार आचार्यां अलंकारां री संख्या बधावणै अर परिभासा री कोसीस ई करी। इण बात रो विवेचन किणी कोनी कर्‌यो कै अलंकारां रो काव्य पर किण भांत अर कैड़ो प्रभाव पड़ै।

6.8 अलंकारां रो वर्गीकरण :

अलंकार सम्प्रदाय रै आचार्यां अलंकारां रो वर्गीकरण करतां थकां उणां रै मूल तत्त्वां रो विवेचन भी कर्‌यो है। ओ वर्गीकरण करती बर उणां कीं सिधांत भी निर्धारित कर्‌या है। आचार्य रुद्रट स्सै सूं पैली अलंकारा रो वर्गीकरण च्यार भांत सूं कर्‌यो –

(1) वास्तव (2) औपम्य (3) अतिसय (4) स्लेस

रुद्रट पछै रुय्यक अर विद्याधर बड़ै जुगती–संगत मौलिक अर वैज्ञानिक तरीकै सूं अलंकारा रो वर्गीकरण कर्‌यो। रुय्यक अलंकारां नै सात हिस्सां में बांट्‌या। बै इण भांत है – सादृस्य गर्भ, विरोधमूलक, स्रिंखलाबध, तर्क न्यायमूल, वाक्य न्याय मूल, लोक न्याय मूल अर गूढ़ार्थ प्रतीति मूल। इणां पछै जैड़ा आचार्य हुया है आमतौर पर उणां इणी वर्गीकरण नै मानता दी है। डॉ. नगेन्द्र इण वर्गीकरण नै असंगत बतांवता कैवै, ''कोई भी वर्गीकरण सर्वथा संगत नहीं है। साधर्म्य और अतिशय का आधार यदि मनौवैज्ञानिक है तो वाक्य न्याय आदि में स्वयं अलंकारों का स्वरूप निर्धारण ही किसी निश्चित आधार को लेकर नहीं चला है। उसका आधार शैली की सीमा को लांघकर वस्तु तक ही नहीं – वरन् न्याय दर्शन, वाणी और क्रिया तक फैल गया है.... स्वभावतः ही मनोविज्ञान के प्रकाश में साहित्य का अध्ययन करने वाले आज के आलोचक का इनमे परितोष होना कठिन है।''

मूलरूप सूं अलंकार रा दो भेद ई मान्या जावै –

(1) सबदालंकार (2) अर्थालंकार

सबदालंकारां में किणी सबद विसेस री ध्वनी अर अरथाव पर ई अलंकार रो सौन्दर्य आस्रित हुवै जद अर्थालंकारां रो सम्बन्ध पूरै वाक्य रै अरथाव सूं रैवै। जैड़ो अलंकार सबद–अरथाव में जिण रै आस्रित रैवै बो उण रो ई अलंकार हुवै।

6.9 रस अर अलंकार :

रस अर ध्वनिवादी आचार्य अलंकार नै रस भाव अर विसय वस्तु रै उत्कर्स में सहायक तत्त्व मानै। मम्मटाचार्य अलंकार नै काव्य रो अनिवार्य तत्त्व कोनी मानै। अलंकार काव्य रै 'नित्य–धर्म' रो तत्त्व कोनी बल्कै रस आद रो उपकारक सहायक तत्त्व है जिण भांत आभूसण सौन्दर्य रा उप कारक तत्त्व हुवै–

उप कुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित।
हारादिवलंकारास्तेऽनु प्रासोपमादयः।।

मम्मटाचार्य रो स्पस्ट कैवणो है कै जठै काव्य में रस नीं हुवै बठै अलंकार सिर्फ 'उक्ति वैचित्र्य' ई प्रगट करै। काव्य सरूप रो निरूपण करता थकां मम्मटाचार्य कैवै – काव्य निरदोस सबद अर अरथाव अर गुणां सूं युक्त होणो चायजै चाये फेर कदे–कदे अलंकार सूं रहित हुवै। अठै आचार्य 'कदे–कदे' सबद लगा'र अलंकार री अनिवार्यता खतम कर दी।

आचार्य विस्वनाथ रस नै ई काव्य री आत्मा स्वीकार करै अर अलंकार आद नै रस रा उपकारक सहायक तत्त्व मानै।

आचार्य आनन्दवर्धन अलंकार नै अेक अभिव्यक्ति सैली विसेस अर रसादि अंतरंग तत्त्वां रा प्रकासक तत्त्व मानै –

ततो रस प्रकासिनो वाच्य विशेषा एव रूपकादयोऽलंकाराः आचार्य अभिनव गुप्त रस रै अभाव में अलंकारां नै मुरदै सरीर पर जेवर पैरावणो मानै।

रस अर ध्वनिवादी आचार्यां री अळगी–अळगी परिभासावां रै आधार पर आपां इण निस्करसां पर पूगां–

(क) अलंकार काव्य रूप में साधन रूप है, साध्य कोनी।

(ख) अै ना सिर्फ सबद अर अरथाव रै बल्कै रस भाव आद अलंकार्य रा भी उपकारक या प्रकासक या उत्कर्स में सहायक हुवै।

(ग) अै (अलंकार) सबद अर अरथाव रा अनित्य धर्म है अर काव्य में इण री स्थिति अक्सर रैवै ई रैवै पण कदे कठै ई अै ना भी हुवै तो सिर्फ इणीज बातरै आधार पर काव्यत्व रो नुक्सान कोनी हुवै।

(घ) अलंकार वाणी या अभिव्यक्ति रो खास तरीको है।

(ड़) रस भाव रै बिना सिर्फ अलंकार 'उचित वैचित्र्य' ई बण'र रै ज्यावै।

(च) ठीक स्थान पर ठीक वर्ण्य तांई अलंकारां रो रो प्रयोग सोभा नै जादा बधावणाळो हुवै अन्यथा नईं।

6.10 अलंकारां रो काव्य मे स्थान अर महत्त्व :

कवि जद भावावेग में अभिव्यक्ति करै तो उण बखत उण रा सबद साधारण अभिव्यक्ति सूं अळगा हुवै। सबद अर अरथाव रो ओ ईज अळगोपण अलंकारां नै जनम देवै। इण सूं काव्य रै सौन्दर्य में बधेपो हुवै पण जद कोई कवि या लेखक चमत्कार पैदा करणै रै उद्देस्य सूं अलंकारां रो प्रयोग करै तो भासा में बणावटी पण अर असुभाविकता आणो सुभाविक बात है। इणीज कारण विद्वान विचारक साहित्य में अलंकारां रै सुभाविक प्रयोग नै ई ठीक समझै। इण विवेचन रै आधार पर अलंकारां मुजब कैयो जा सकै–

(अ) अलंकार काव्य सौन्दर्य रा कारक भी है अर काव्य सौन्दर्य बधावणै में सहायक तत्त्व भी।

(आ) अलंकार काव्य रा ना तो अंतरंग तत्त्व है अर ना ई सिर्फ बाहरी। बै अंतरंग तत्त्वां रा अंतरंग साधन ई है साध्य कोनी।

(इ) अलंकारां रो सम्बन्ध काव्य रै कला पक्ष सूं है पण बै भासा–सैली अर भाव पक्ष दोनुवां नै उत्कर्ष प्रदान करै। अलंकार अभिव्यक्ति रो अेक खास तरीको है।

(ई) हालांकि सांचै अर ऊँचै दर्जै रै काव्य में अलंकार अलंकार्य साथै संस्लिस्ट अर घुळ्यो–मिल्यो हुवै। उण नै अळगो कोनी कर्‌यो जा सकै। पण ब्यौहार री नजर सूं अलंकार अर अलंकार्य अळगा–अळगा तत्त्व है।

(उ) हरेक औचित्यपूर्ण अलंकार विधान काव्यत्व है।

(ऊ) हालांकि काव्य अक्सर अलंकारयुक्त हुवै पण अलंकार काव्य रा अनिवार्य तत्त्व कोनी। इण नै आवश्यक तत्त्व कैवणा जादा ठीक है।

(ए) एवि प्रतिभा सूं आपै आप अपजेड़ा अलंकार ई उत्तम हुवै।

(ऐ) अलंकार कवि री प्रतिभा तांई बाधक तत्त्व कोनी हुवै बल्कै साधक ई हुवै।

(ओ) अलंकार रो काम रस, भाव विच्यार, रूप, वस्तु गुण, जिनगी–तथ्य, रमणीयता, ग्राह्यता आद नै स्पृहणीय भव्यता प्रदान करणो है।

6.11 काव्य में प्रतीयमान अरथाव री महत्ता :

अलंकार वादी आचार्यां प्रतीयमान अरथाव री सुतंतर सत्ता कोनी मानी। उणां अलंकार विसेस में ई उण रो समाहार कर दियो। इण मुजब डॉ. विजयेन्द्र स्नातक रो कैवणो है कै, ''अलंकारवादी आचार्यों ने प्रतीयमान (व्यंग्य) अर्थ रो वाच्य का पोषक मानकर उसे अलंकार के भीतर ही अन्तर्भुक्त मान लिया है। इन आचार्यों ने ही ध्वनि और प्रतीयमान अर्थ को काव्य का मूल तत्त्व नहीं माना है और न ध्वनि अथवा गुणीभूत व्यंग्य जैसे पदों का ही अपने अलंकार ग्रन्थों में प्रयोग किया है।'' अलंकारवादी आचार्यां समासोक्ति, अप्रस्तुत प्रसंसा, आक्षेप रै भीतर प्रतीयमान अर्थ रै अनेक प्रकारां रो समाहार कर दियो।

6.12 अलंकार अर अलंकार्य रो अन्तर :

अलंकार्य वर्ण्य वस्तु नै अर अलंकार वर्णन री सैली या सैलीगत विसेसतावां नै कैयो जावै। संस्कृत रा पुराणां अलंकारवादी आचार्यां अलंकार्य अर अलंकार में अभेद री थापना कर आखो सौन्दर्य अलंकार नै ई काव्य सौन्दर्य रो कारण या पर्याय मानता। अै लोग चमत्कार सूं रहित काव्य रै प्रस्तुत पक्ष नै काव्य स्वीकार ई कोनी

करता। काव्य रो प्रस्तुत पक्ष जद चमत्कार पैदा करणै में सामर्थवान हुय जावै तो अलंकार बण जावै। जद कै ध्वनिवादी अर रसवादी आचार्य रस नै मूल रूप सूं अलंकार्य मान उपमा, रूपक आद नै अलंकार मानता थकां उण नै रस रै उत्कर्स रा विधायक मानै। बीजै सबदां में कैयो जा सकै अलंकार रस–रूप अलंकार्य नै अलंकृत करै। आचार्य कुंतक सुभाय रै वर्णन नै अलंकार्य मानै। उण मुजब, ''शब्द औ अर्थ अलंकार्य होते हैं तथा चतुरतापूर्ण शैली से कथन रूप वक्रोक्ति ही उन दोनों (शब्द और अर्थ) का अलंकार होती है।'' आचार्य रामचन्द्र सुक्ल भी काव्य रै प्रस्तुत अरथा नै अलंकार्य मानै। पुराणा यूरोपियन काव्य स्यास्त्रियां में अरस्तू सूं लेय'र मैथ्यू आर्नोल्ड तांई सगळा आचार्य अलंकार अर अलंकार्य में स्पस्ट भेद मानता आया है। पण क्रोचे आद पच्छम रा आध ुनिक विद्वान अलंकार अर अलंकार्य में कोई भेद कोनी करै अर दोनुवां नै अेकईज मानै। क्रोचे रै अभिव्यंजनावाद रो मूल आधार ओईज सिधांत है। क्रोचे अनुभूति (अलंकार्य) अर अभिव्यक्ति (अलंकार) में कोई भेद कोनी बतावै। उण मुजब अनुभूति ई अभिव्यक्ति में बदळै फेर फर्क कांई ? हिन्दी रा जादातर रीतिकालीन कवि भी अलंकारां नै काव्य में स्सो कीं मानै। आचार्य श्रीपति लिख्यो –

जदपि दोष बिनु गुन रहित, सब तन परम अनूप।
तदपि न भूषन बिनु लसै, बनिता कविता रूप।।

6.13 मनोवैज्ञानिक द्रिस्टी सूं अलंकारां रो महत्व :

अलंकार सम्प्रदाय रै विवेचन पछै अेक बात आ जाणणी भी जरूरी है कै काव्य में आयेड़ै अलंकारां रो मनोवैज्ञानिक ट्रिस्टी सूं कांई महत्त्व है। आज रो मिनख जद तांईं किणी बात नै कसौटी पर नीं कस लेवै, मानै कोनी !

अलंकारां रो विवेचन करतां थकां आपां देख्यो कै विद्वानां इण नै काव्य री सोभा बधावणाळो धर्म बतायो। अठै ओ विचारणीय विसय है कै अलंकार सिर्फ सोभा ई बधावै या इण री कोई और भी भूमिका है। दर असल कोई भी कवि या रचनाकार जद भावावेग रै कारण कोई बात कैवै या अभिव्यक्त करै उण बखत उण रा सबद आम मौकै पर बीलीजणाळै सबदां सूं अळगा हुवै अर उण रो अरथाव भी कीं अळगो अर चमत्कार पूर्ण हुवै जिण सूं सुणणाळो या भणणाळो रोमांचित हुय जावै। सबद अर अरथाव रो ओ अळगो पण ई अलंकारां नै जनम देवै। ओईज कारण है कै सिध कवि जद भाववेग रै मौकै पर जैड़ो कीं अभिव्यक्ति करै अलंकार सुभाविक रूप सूं आ ज्यावै। इण अलंकारां री उपस्थिति सूं कथन में वक्रता आ जावै अर काव्य सौन्दर्य मं आपी आप बढ़ोतरी हो ज्यावै। पण इण रै विपरीत जद कोई कविं कोसीस कर आप री वाणी रो सिणगार अलंकारां सूं करणो चावै तो उण में बणावटीपण आ जावै। अलंकार अर विसय वस्तु रो मेळ दूध–पाणी री भांत होणे चायजै ना कै तेल अर पाणी री भांत कै दोन्यूं अळगा नजर आवै। इणीज कारण रसिकगण अर विद्वान लोग अलंकारां रै सुभाविक प्रयोग नै तरजीह देवै। अलंकारां रो जबरन प्रयोग काव्य नै उबाऊ अर जटिल बणा सकै। स्यात इणीज कारण केसव सिरखै चोखै–भलै कवि नै आलोचक 'कठिन काव्य रो प्रेत' अर 'रामचन्द्रिका' नै छन्दां रो 'अजायबघर कैवण सूं कोनी चूक्या। इण रो ओ मतलब कतई कोनी कै अलंकार काव्य तांईं अनावश्यक है। कवि नै अलंकारां रो गूढ़ ज्ञान होणो चायजै। अलंकारां रो ज्ञान उण री भासा नै सबळ अर अभिव्यक्ति ने असरदार बणा देवै। आ बात तो अपणै आप में सिध है कै अलंकारां रै माध्यम सूं कैयो गयो कथन, उक्ति या बात जादा सोवणी अर असरदार हुवै।'

पुराणै आचार्यां आवृत्ति, सादृस्य, वक्रोक्ति अतिस्योक्ति, क्रम आद नै ई अलंकारां रा आधार मान्या। ध्वनि री आवृत्ति कानां नै घणी चोखी लागै। अनुप्रास अलंकार में ध्वनि री आवृत्ति रै माध्यम सूं ई चमत्कार पैदा हुवै। सबदालंकारां में अक्सर आवृत्ति रो ओईज सौन्दर्य समाहित हुवै। अर्थालंकारां में उपमा, रूपक आद सादृस्यमूलक अलंकार है। इण अलंकारां में आमतौर पर हीण या सामान्य वस्तु रो उण सूं जादा महताऊ अर विसिस्ट वस्तु सूं सादृस्य सिध कर, उण रै महत्त्व बधारे, चमत्कार पैदा कर्‌यो जावै। ओईज काम अतिस्योक्ति रो है। क्रम रो भी आप रो महत्त्व हुवै। ठीक विगत (क्रम) अर ठीक ढंग सूं सजेड़ी वस्तु रो आप रो अळगो ई सौन्दर्य हुवै। पुराणै आचार्यां इणी'ज कारण मनोवैज्ञानिक द्रिस्टी सूं इण विवेचन नै घणो महताऊ कैयो जा सकै।

6.14 इकाई रो सार

भारतीय काव्य स्यास्त्र में 'अलंकार संप्रदाय रो घणो महत्व है। इण रा प्रवर्त्तक आचार्य भामह है। भामह 'शब्दार्थो सहित काव्यं' कैय'र प्रयोजन, काव्य भेद, रीति, गुण वक्रोक्ति दोस आद सगळां नै अलंकार सम्प्रदाय में समेट लिया। आगै चाल'र अलंकार रा केई भेद भी हुया पण 'सबदालंकार' अर 'अर्थालंकार' नै ई मानता मिली। अै भेद आज भी है। 'रसवत् अलंकार' 'ध्वनिवत्' आद कैय'र अलंकार सम्प्रदाय में रस अर ध्वनि नै समेटणै री कोसीस भी हुयी। अलंकार नै काव्य री आत्मा घोसित कर्‌यो गयो।

वास्तव में अलंकार काव्य री आत्मा नीं होय'र सैली है। अलंकारवादी आचार्यं प्रतीयमान अरथाव री सुतंतर सत्ता नीं मान'र उण रो अलंकार विसेस में समाहार कर्‌यो। अलंकार वादी आचार्य अनुभूति अर अभिव्यक्ति में भेद कोनी करता। आधुनिक पच्छमी दार्सनिक क्रोचे भी इण में भेद कोनी करै। अलंकार सम्प्रदाय री भांत 'अभिव्यंजना वाद' भी कला आन्दोलन हो।

6.15 अभ्यास रा प्रस्न

1. अलंकार सम्प्रदाय री विस्तृत व्याख्या करो।
2. अलंकार अर अलंकार्य में कांई अन्तर है ? स्पस्ट करो।
3. मनोवैज्ञानिक द्रिस्टी सूं अलंकारां रो कांई महत्त्व है ?
4. अलंकार अर रस सम्प्रदाय रा आपस में कांई सम्बन्ध है ?
5. अलंकार सम्प्रदाय रै विकास अर निबन्ध लिखो।

6.16 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. आचार्य राम चन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. सं. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
3. डॉ. नगेन्द्र – रस सिद्धान्त।
4. भागीरथ दीक्षित – समीक्षा लोक।
5. डॉ. राजनाथ शर्मा – साहित्यिक निबन्ध।
6. डॉ. राजनाथ शर्मा – साहित्यिक निबन्ध।
7. डॉ. नन्द दुलारे वाजपेयी – आधुनिक साहित्य।
8. भामह – काव्यालंकार।
9. मम्मट – काव्य प्रकाश।
10. रुय्यक – अलंकार सर्वस्व।
11. जयदेव – चन्द्रालोक।
12. विश्वनाथ – साहित्य दर्पण।

इकाई – 7

रस सिद्धान्त काव्य सास्त्र : सामान्य जाणकारी

इकाई री रूपरेखा –

7.0 उद्देस्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 उपयोगिता

7.3 भूमिका

7.4 पाश्चात्य काव्य रो जूनो रूप

7.5 होमर अर हेसिऑड रा काव्य सिद्धान्त

7.6 होमर रै सिद्धान्त री आलोचना

7.7 होमर रै पछै रा समीक्षक

7.8 प्लेटो सूं पैली काव्य समीक्षा रा निष्कर्ष

7.9 पाश्चात्य काव्य समीक्ष रो प्रवर्तक : प्लेटो

- 7.9.1 काव्य में नैतिकता
- 7.9.2 काव्य सांच रो मूल्य अर सरूप
- 7.9.3 काव्य–झूठो, घटिया अर नुक्सानदायक
- 7.9.4 भाव विरेचन रो मूळ उद्‌गम
- 7.9.5 आदर्श अल असल कविता
- 7.9.6 कला अर मुजब मत
- 7.9.7 काव्य हेतु, सैली भासा अर कवि सगती
- 7.9.8 समीक्षक रा गुण अर काव्य रो प्रयोजन

7.10 अरस्तु

- 7.10.1 अरस्तु रा काव्य सिद्धान्त
  - 7.10.1.1 अनुकृति सिद्धान्त
  - 7.10.1.2 भाव विरेचन रो सिद्धान्त
- 7.10.2 अरस्तु रो काव्य रूपां रो विवेचन

7.11 लोंजायनेस

- 7.11.1 लोंजायनेस रो सिद्धान्त
- 7.11.2 उदात्तता री कसौटी
- 7.11.3 काव्य समीक्षा मुजब विचार

7.12 लैटिन समीक्षा

7.13 अंग्रेजी समीक्षा

- 7.13.1 पुनर्जागरण काळ
- 7.13.2 नूवों क्लासिक वाद

7.14 समीक्षा रो बहुमुखी विकास
7.14.1 प्राचीनतावादी
7.14.2 सुच्छन्दता वादी
7.14.3 प्रकृतिवाद
7.14.4 जर्मन दार्शिकां रो प्रभाव
7.15 सुच्छन्दतावाद
7.16 नूवीं विकासशील परिस्थितियाँ रो असर
7.17 आधुनिक मनोविज्ञान अर जथार्थ
7.18 बीसवीं सदी रा प्रमुख समीक्षक
7.18.1 बैंडेट क्रोचे
7.18.2 आई.ए. रिचर्ड्स
7.18.3 टी. अेस. इलियट
7.19 इकाई रो सार
7.20 अभ्यास रा प्रस्न
7.21 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

7.0 उद्देस्य –

पास्चातय काव्य रो शास्त्र रो इतिहास लगैटगै ढाई हजार बरस जूनो है। पश्चिम रै कलां साधकां साहित रौ अळगै–अळगै अंगां पर सूक्ष्मता सूं विच्यार कर्‌यो है। इणीज भांत भारतीय काव्य शस्त्र भी कम जूनो कोनी। अेम. अे. राजस्थानी भासा रा विद्यार्थी पाश्चात्य अर भारतीय काव्य शास्त्र रो अध्ययन कर साहित मुजब आपरी गैरी पैठ बणावैला। बै पाश्चात्य काव्य शास्त्र भण्या पछै इण बातां मुजब जाण सकैला –

1. पाश्चात्य काव्य समीक्षा रो पुराणो रूप कैड़ौ'क है ?
2. प्लेटा सूं पैली कैड़ा काव्य समीक्षक हुया है ?
3. पाश्चात्य काव्य समीक्षा में प्लेटो रो कांई योगदान है ?
4. प्लेटो पिछै कैड़ा काव्य समीक्षक अर सिद्धान्तां मुजब जाण सकैला।
5. आधुनिक काव्य सिद्धान्तां मुजब जाण सकैला।

7.1 प्रस्तावना :

अेम. अे. राजस्थानी रै इण प्रश्न पत्र में पाश्चात्य काव्य शास्त्र मुजब भणयो जावैलो। बिण रो प्राचीनतम रूप कैड़ो हो अर वर्तमाण में कांई है ? पाश्चात्य समीक्षा रै अळगा–अळगा पड़ाव मुजब इण इकाई में अध्ययन कर्‌यो जावैलो ?

7.2 उपयोगिता :

साहित नै समझणै, तांई समीक्षक पाठक इा रचना बिचाळै पुळ रो काम करै। जद–जद साहित में बदळाव आवै साहित्य नै परखणै रा मानदंड भी बदळै। पाश्चात्य साहित नै ठीक तरां समझणै तांई पाश्चात्य काव्य शास्त्र रो अध्ययन जरूरी है। अण इकाई में पाश्चात्य काव्य सिद्धान्तां मुजब भण्यो जावैलो जिणसूं विद्यार्थी आगै चाल'र पाश्चात्य साहित नै भली भांत समझणै में सक्षम हुवैला।

7.3 भूमिका :

साहित पैली रच्यो जावै, पछै विद्वान समीक्षक बिण नै भण'र समीक्षा रा मानदंड बणावै। सरूआत में अै

मानदण्ड बिखरेड़ा हुवै। रचनाकार री रचनावां में ई उनै मिलै, जिण नै विगतवार भळा कर समीक्षक आवणाळै आगै बधै। पाश्चात्य काव्य शास्त्र भी इण रौ अपवाद कोनी। बठै पैली रचनावां लिखी गई पछै काव्य शास्त्र री रचना हुई।

7.4 पाश्चात्य काव्य रो जूनो रूप :

पाश्चात्य काव्य रो इतिहास लगैटगै ढाई हजार बरस पुराणो है। ईसा सूं च्यार सदी पैली प्लेटो सिरखै विद्वानां अठै साहित शास्त्र मुजब आपरा घणमोला विच्यार प्रकट कर्‌या जैड़ा किणी ना किणी रूप में आज भी चालै। पाश्चात्य साहित में प्लेटों सूं पैली भी साहित समीक्षा रा अैनाल – सैनाल मिलै पण बै आप रै बिखरेड़ै रूप में है सिलसिलैवार कोनी। इण कारण आज रा विद्वान प्लेटो नै ई पेलो पाश्चात्य साहित सुवैवास्थित रूप पैली बारी देखण नै मिलै। पाश्चात्य काव्य शास्त्र रो अध्ययन करतां ओ भी बेरो चालै के होमर सूं पैली भी कीं साहितक मान्यतावां साहित में चाल्यां आवै ही जिण नै **होमर अर हेसिऑड** अपणायी। होमर आपरै दोन्यूं प्रसिद्ध ग्रथां 'इलियड' और 'ऑडिसी' में सब सूं पैली देवी म्यूज (Muse) सूं प्रार्थना करी है कै बा बिण (होमर) नै वस्तुगत सांच नै प्रकट करणै री प्रेरण देवै। हेसिऑड भी आपरी रचना में अैड़ी ई प्रार्थना करी। भारतीय ग्रथां में भी इण सूं सिद्ध हूवै के बिण जुग री कथावां या काव्य में सगळा ई मानै हा। बिण जुग री कथावां या काव्य में मिनख नै सभ्य बणावणै पर जोर दियो जांवतां। बिण जिणगाणी नै सभ्य अर उदान्त बणावणै री कोसीस लगोलग जारी राखणी चायजै। बीजै शब्दां में कै सकां कै बिण जुग में काव्य अर समाज रो गैरो रिश्तो हो अण कारण साहित रो मूल्यांकन बिण री सामाजिक उपयोगिता नै देख'र ई कर्‌यो जांवतो।

7.5 होमर अर हेसियाड रा काव्य सिद्धान्त :

होमर काव्य रो प्रयोजन आणंद देणो मानतो। ओ आणंद चतम्कार सूं पैदा कर्‌यो जांवतो। बिण गुजब कलात्मक भरम ई चमत्कार हुवै अर बिण सूं ई आणद री सिस्टी हुवै। जद कै हेसिऑड मुजब काव्य रो प्रयोजन 'शिक्षा देणो या दैवी सनेसै नै वहन करणो' हो। होमर रै 'कलात्मक भरम' रो मतलब है कै माल्पनिक नै इण भांत प्रस्तुत करणो जिण सूं वो असल या जथार्थ परक लागै। इणी सूं चमत्कार पैदा हुवै जिण सूं बो आणंद प्राप्त हुवै। आगै चाल'र होमर रै इण सिद्धान्त रो गैरो असर पड्‌या। कई लोगां तो काव्य में चमत्कार या कलात्मक भ्रम नै ई काव्य रो प्रयोजन मान लियो।

7.6 होमर रै सिद्धान्तां री अलोचनां :

होमर आपरै काव्य ग्रन्थां में पुराणी कथावां रै आधार पर देवतावां री ईर्ष्यालुअर घटिया, अनैतिकता सूं भरेड़ी प्रवृत्तियाँ रो खुलर चित्रण कर्‌यो। इण कारण आगै चाल'र दार्शनिकां बिणां रै काव्य रो घोर विरोध कर्‌यो। सेनोफेसिस, पाइथागोरस, हेराक्लीट्स आद दार्शनिकां तो होमर काव्य रो बहिष्कार करणै री आवाज तक उठाई। होमर रा कीं समर्थका बिण रै काव्य नै अन्योक्तिपरक अर प्रतीकात्मक बताय'र आ सिद्ध करणै री कोसीस करी कै होमर देवतावां अर नायकां री प्रकृत तागत अर गुण रै रूप में चित्रित कर्‌या है। बिणां रो जुद्ध वास्तव में गुणां अर अवगुणां या प्रकृत रै अळगै–अळगै विरोधी तत्वां रो आपस में संघर्ष है।

7.7 होमर रै पछै रा समीक्षक :

होमर पछै अर प्लेटो सूं पैली की अैड़ा विद्वान हुया है जिकां समीक्षा मुजब हुई। मानवतावां री थापना कोनी करी पण पिडांर गर्जियस अरिस्टोफनिस आद उल्लेख जोग है। पिडांद काव्य में प्रेरण अर कला रै सापैक्षिक महत्व रो रो विवेचन कर 'प्रेरणा' नै घणी महताऊ बताई। अठै प्रेरणा सूं मतलब कवि री कुदरती तागत सूं है अर्थात् बिण रै मुजब कवि बा श्रेष्ठ हुवै जैड़ै नै प्रकृति सूं ज्ञान प्रापत हुवै। विण दूसरी बात आ भी कैयी कै कम शब्दां में जादा अर्थ प्रकट करणो ऊँचे दर्जे री कला री निशानी है। पिंडार रै समकालीन विद्वान सीमोनीडोज मुजब, ''काव्य शब्दां रो चितरांम हुवै अर चितरांम – मून कविता हुवै।''

गार्जियस भासा री तागत रो बखाण कैयो, ''आपणा शब्द सशक्त शासक है। बै डर नै रोक सकै, दुःख

दूर कर सकै, आणंद दै सकै, अर आपणै में विसास पैदा कर सकै।'' साथै ही बिण 'त्रासदी' रै मनौवैज्ञानिक प्रतिक मुजब कैया, '' बो श्रोतावां में सहानुभूति पैदा करै।'' आगै चाल'र त्रासदी मुजब अरस्तु भी अैड़ा विच्यार प्रकट कर्‌या। गार्जियस आगै लिखै, ''त्रासदी काव्य, कथावां अर अळगै–अळगै भावां रै प्रदर्शन सूं मिनख नै रिझावै। जिको त्रासदी कवि इण भांत आप री माया सूं मिनख नै छळ सकै बो बिण त्रासदी कवियां सूं जादा सही है जिको छळ कोनी सकै। इणीज भांत जैड़ा श्रोता या दर्शक छळया जावै बै बिण श्रोतावां अर दर्शका सूं बेहतर है जिका कोनी छळया जावै। इण भांत गार्जियस होमर रै 'कलात्मक भ्रम' वाळै सिद्धान्त नै समर्थन नै समर्थन करतो दीसै।''

राजनीतिक असर रै कारण भाषण कला रो प्रभाव भी बाध्यो। जिण मुजब 'केवण री कला' पर जार दियो गयो 'कांई कैयौ जावै', अणपर नई। अैड़ै लोगां नै तर्क वादी कैयो गयो। **अरिस्टाफनिस** आप रै ग्रथां में इण प्रवृति रो विरोध कर्‌यो। बो 'आणंद अर शिक्षा' दोनुवां नै ई काव्य रा प्रयोजन मानतो। साथे ई बिण 'वस्तु' अर बिण री 'अभिव्यक्ति' नै अळगा नीं होवणाळा तत्व बताया। बिण बतायक कै जैड़ो साहित लोक जीवण रै जितरों नेड़ै हुवै, श्रेष्ठ हुवै। इण भांत बिण काव्य में जर्थाथवाद रो समर्थन कर्‌यो।

7.8 प्लेटो सूं पैली काव्य समीक्षा रा निष्कर्ष :

प्लेटो सूं पैली पाश्चात्य काव्य में जैड़ा विद्वान हुया बिणां रा निष्कर्ष इण बिन्दुआं मुजब है।

1. इण जुग में प्रेरणा रै सिद्धान्त नै सगळा ई मानता। कला री देवी म्यूज री प्रेरणा सूं कवि काव्य रचना करता। कवि सिर्फ माध्यम है जैड़ो देवी ईच्छा व्यक्त करै। इण कारण कावय वस्तु अर काव्य विधान दोन्यूं ई कवि रा नीं होय'र दैवी हुवै।
2. काव्य रो प्रयोजन आणंद अर शिक्ष देणो हुवै।
3. वर्ण्य वस्तु पुराणै शूरवीरां मुलब होणी चायजै।
4. कवि री आत्मा संवेदनशील अर निदोर्ष हुवै। अैड़ै कवि नै ई देवी प्रेरण रो वरदान मिलै।

इण भांत काव्य मुलब अै मानतावां आज भी कमोबेश रूप में मानी जावै।

7.9 पाश्चात्य काव्य समीक्षा रो प्रवर्तक : प्लेटो

प्लेटो सूं पैली पाश्चात्य काव्य समीक्षा रो रूप वैवास्थित कोनी हो। सबसूं पैली प्लेटो इण नै अेक व्यवस्था दी अर कावय मूजब मानवता री विवेचना करी अर आपरै सठीक मतां री थापना करी। इणीज कारण प्लेटो ने पाश्चात्य काव्य समीक्ष रो आदि आचार्य कैयो जावै। प्लेटो जैड़ो थापनावां करी बै इण भांत है–

7.9.1 काव्य में नैतिकता :

प्लेटो कावय री बेथाग तागत नै जाणै हो। बिण नै बेरो हो कै काव्य में जण–जण रै मन पर असर डालणै री घणी तागत हुवै अगर बिण नै सामाजिक शिक्षा रो आधार बणायो जावै तो बिण सूं कल्याण – अकल्याण दोनुवां री सभांवना हुवै। इण कारण बिणां कैयो कै काव्य रो आधार नैतिकता होणी चायजै जिण सूं बो समाज में नैतिकता मुजब आकर्षण पैदा कर सके। अगर कतवा रा प्रशंसक आ बात कैवै कै कविता अणंद देवणाळी अर मिनख जात तांई उपयोगिता सूं जोड़'र 'कलावादिया रो' विरोध भी कर दियो। होमर 'कलात्मक भरम' सूं चमत्कार पैदा कर समाज में काव्य सूं आणंद पैदा करणै री बात कैवी। होमर कावय में दैवी शक्तियां रै कामा रो विरोध प्लेटो इणी कारण कर्‌यो कै इण सूं समाज में अनैतिकता फैलणो रो खतरो है। इण भांत प्लेटो काव्य समीक्षा रो आधार नैतिकता अर सामाजिक उपयोगिता पर टिकेड़ो है।

7.9.2 काव्य सांच रो मूल्य अर स्वरूप :

प्लेटो नैतिकता, उदारता अर सामाजिक उपयोगिता नै ई काव्य सांच रो मूळ उद्देस्य मानै। बिणां मुजब सांच बो ई है जिण सूं समाज रै जीवण नै नैतिक अर आध्यात्मिक तागत मिलै। प्लेटो इण बात पर जोर दियो कै टाबरां नै नैतिक आदर्स सूं भरेड़ी अर चरित्र निर्माण री कथवां सुणाई ज्यावै। टाबरां बर कच्चै दिमाग रै मिनखां

नै देवतावां, राकसां आद री कहाणियां नीं सुणावी चायजै। बिणा होमर रै काव्य रो इणीज कारण विरोध कर्‌यो। विणां रो कैवणो हो कै आम मिनख रचना रै अनयोक्ति परख अर्थ नै कम ई समझै। इण सूं समाज में अनाचार फैलणो रो डर रैवै। इणीज कारण प्लेटो अभिधात्मक काव्य पर जोर दियो क्यूं कै व्यंजनात्मक कावय आम मिनख समझ कोनी सकै। अन्योक्तिपरक या प्रतीकात्मक काव्य समझ में नीं आणै कारण जादा अनर्थकारी हो सकै। प्लेटो कावय में विशिष्ट सांच रै बजाय आम सांच री अभिव्यक्ति पर जोर दियो क्यूं कै आम सांच आम मिनख सूं जुड़ेड़ो हुवै। इण भांत प्लेटो कजावादियां रै 'कलात्मक भरम' सूं चमत्कार पैदा कर्‌यो।

7.9.3 काव्य झूठो, घटिया अर नुक्सानदायक :

आप रै बणायेड़ै सिद्धान्तां मुजब प्लेटो अद आंप सूं पैली रचेड़ै कावय री समीक्षा करी तो बिण री कसौटी पर खरो कोनी उतर्‌यो। बिण काव्य में जीवण मुजब उदान्त अर वांछनीय तत्व कोनी हा। बिण रो सांच ब्योहारिक अर सामान्य सांच कानी हो। अण कारण प्लेटो इण निष्कर्ष पर पूग्यो कै काव्य रो सांच अव्योहारिक अर जीवण रै सांच सूं अळगो हुवै। वो झूठो हुवै, इण कारण काव्य भी झूठो हुवै। प्लेटो रो मानणों हो कै काव्य अज्ञान सूं नैदा हुवै इण कारण घटिया हुवै। बिणारी मानता ही कै काव्य में अनुकरण री प्रधानता हुवै अर अनुकरण प्रधान कला घटिया हुवै, इण कारण घटियापणै नै जनम देवैअर काव्य मिनख तांई नुक्सान दायक हुवै।

7.9.4 भाव विरेचन रो मूळ उद्‌गम :

उदस्तु जड़ै भाव विरेचन रै सिद्धान्त री थापना करी बिण रो मूळ उद्‌गम प्लेटो रै विच्यारां में है। प्लैटो कैयो किणी खतरै या दुःख रै बखत मिनख रोय'र अपणै आप नै हळको मैसूस करै। आ बिण प्राकृत मांग हुवै पण व्योहारिक जीवण में आमतौर मिनख इण अनुभूति नै संयमित राखै। कवियां रै काव्य रै माध्यम सूं मिनख री इण अनुभूति नै गत कर देवै। अर मिनख पात्रां रै दुःख में दुःख प्रकट करणै में खुद नै अपमानित मैसूस कोनी करै। प्लेटो रो इणी सिद्धान्त पर अरस्तु भाव विरेचन रै सिद्धान्त री इमारत खड़ी करी।

7.9.5 आदर्श अर असल कविता :

प्लेटा ट्रेजेडी काव्य रचियतावां में होमर नै सिरै मानता पण होमर री कवितावां रै बिणी अंशां नै मानता जिण में देवतावां री प्रार्थनावां या महापुरखारीं बड़ाईयाँ करेड़ी की क्यूं कै इणां रै माध्यम सूं समाज नै राह दिखायो जा सकै।

7.9.6 कला मुजब मत :

प्लेटो कलानै दो मुख भागां में बांटी। पैलै वर्ग में ललित कला अर्थात् संगीत कला, चित्रकला आद। इण रो उद्देस्य मनोरंजन हुवै। दूजो वर्ग उपयोगी कलावां रो है। प्लेटो मुजब इण कलावां री विशिषतावां अण भांत है –

1. हरेक भांत री कलां अनुकरण हुवै। प्लेटो मुजब कवि अर कलाकार अनुकरण करता हुवै। अनुकरण अैड़ी प्रक्रिया हुवै जैड़ी वस्तु नै बिण रै जथार्थ रूप में प्रस्तुत नीं कर आदर्श रूप में प्रस्तुत करै।
2. कला में 'एन्द्रिय एक्य' जरूरी हुवै।
3. कवि ने आपरे विषय रो पूरो अर स्पष्ट ज्ञान होणो चायजै अर बिण री अभिव्यक्ति संगीतपूर्ण होणी चायजै।

इण भांत प्लेटो कलावां रो वर्गीकरण करणियो पैलो पाश्चात्य समीक्षक है।

7.9.7 काव्य हेतु, शैली, भाषा अर कवि सगती :

1. प्लेटो काव्य मुजब तीन बातां जरूरी मानै – प्रतिमा अर्थात् कावय सगती, काव्य मुजब जरूरी नियमां रो ज्ञान अर अभ्यास। इण साथै कवि नै मिनख रै मनोविज्ञान रो जाणकार भी होणो चायजै।
2. शैली ने प्लेटो कवि रै व्यक्तित्व रो प्रतिबिंब मानै। बिणां मुजब जैड़ो कवि चरित्र हुवैलो, कवि री शैली भी बिण सिरखी हुवैलो।

3. प्लेटो भाषा रा तीन गुण मानै – कठोर, मुधरी अर कंचळी।

इण भात पैली बारी प्लेटो पाश्चात्य काव्य शास्त्र में भाषा अर शैली रै गुणा रो विश्लेषण कर्‌यो। बिणां मुजब काव्य री शैली अर भाषा सरल अर सुगम होणी चायजै जिण सूं लोग काव्य नै समझ'र बिण रो फायदो उठा सकै। काव्य री वस्तु अर शैली प्लेटो रो कैवणी हों बा अेक ई हुवै अर इळगी – अळगी तरां री रचनावां प्रस्तुत करणै में सामरथवान हो सकै।

7.9.8 समीक्षक रा गुण अर काव्य रो प्रयोजन :

प्लेटो समीक्षक रो तीन गुण – सिक्षा, गुण अर हिम्मत, होणा जरूरी है। काव्य री समीक्षा तांई समीक्षक में काव्य अर काव्य कला रै सिद्धान्ता रो ज्ञान होणो जरूरी है। बिण नै 'नीर क्षीर विवेकी' रो गुण होणो चायजै साथै ई इतरी हिम्मत भी होणी चायजै को 'जनमत' सूं प्रभावित नीं हुवै अर्थात् कृति री समीक्षा बो आप रै विवेक सूं करै। जनमत रै दबाव सूं नईं, क्यूं कै जनमत नै काव्य री कसौटी माण लेणै सूं काव्य रै स्तार में गिरावट रो खतरो पैदा हो ज्यावै। काव्य रै प्रयोजन मुजब प्लेटो रो विच्यार हो के काव्य नै जनता रो मार्ग प्रसस्त कर बिण नै प्रबद्ध करणै री कोसीस करणी चायजै। कावय रा उपदेस 'कांता सम्मित' होणा चायजै।

7.10 अरस्तु :

अरस्तु प्लेटो रो सिस्य हो पण बिणां रै विच्यारां में घणो मतभेद है। बिण प्लेटो री उठाई समस्यावां रा जवाब दिया। महाकाव्य, त्रासदी, कॉमेडी, गीति कावय आद मुजब खूब विवेचन कर्‌यो। 'अनुकृति रो सिद्धान्त' अर 'मानव विरेचन रो सिद्धान्त' री थापना भी करी। प्लेटो साहित पर तीन आरोप लगाया–

1. साहित सांच री छियां रो अनुकरण करै इण कारण अज्ञानता पैदा करै।
2. साहित सांच सूं दूर हुवै इण कारण झूठो हुवै।
3. साहित घटिया मानवीय वासनावां सूं पैदा दोय'र घटिया वासनावां उभारै इण करण मिनख तांई नुक्सान है।
    1. अरस्तु इण तीनुवां तर्का रो खण्डन करतां कैयो –
    2. साहित नकल कोनी, नवीं स्रिस्टी है।
    3. साहित सांच सूं दूर कोनी हुवै।

साहित ने तो वासनावां उभारै अर ना बिणां रो पोषण करै बल्कि विरेचन रै माध्यम सूं सुद्धि करै अण कारण फायदे मंद हुवै।

अरस्तु सामी बिण बखत दो सवाल प्रमुख हा – पैलो काव्य री प्रकृति कांई है अर्थात् विण रो अस्तित्व किण रूप में है ? दूजो काव्य रो मूल्य या प्रयोजन कांई है ? बरस्तु री सास्त्रीय विवेचना इणी सवालां रै च्यारूं मेर घूमै। अरस्तु अैड़ै सामान्य काव्य नियमां रो प्रतिपादन कर्‌यो जैड़ा ऊंचे दर्जे रै काव्य तांइ भी उपयोगी हा।

7.10.1 अरस्तु रा काव्य सिद्धान्त :

अरस्तु काव्य रो उद्‌भव मिनख री दो प्रवृतियाँ रै फलस्वरूप मानै। पैली है – मिनख प्रकृत री सहज अनुकरण री प्रवृत्ति, अर दूसरी है – मिनख री संगीत अर लय री प्रवत्ति। दूसरै सबदां में कैयो जा सकै कै काव्य रो मूल अनुकरण अर संगीत में है। अनुकरण सूं असल जिनगाणी में डर अर दुःख री अनुभूति प्रदान करणाळी वस्तु नै इण भांत प्रस्तुत करी ज्यावै कै आयणै डर अर, दुःख रो निराकरण होय'र सिर्फ आणंद री अनुभूति रो उद्रेक हुवै। इण भांत काव्य अर संगीत में गैरो सम्बन्ध है। आणंद री अनुभूति सूं मिनख रै भावां रो विरेचन हुवै। इण भांत अरस्तु दो सिद्धान्ता री थापना करी –

1. अनुकृति सिद्धान्त
2. भाव विरोचन रो सिद्धान्त

7.10.1.1 अनुकृति सिद्धान्त :

अरस्तु रै अनुकृति सिद्धान्त री खूब आलोचना हुई अर ओ विवाद ग्रस्त भी रैयो है। प्लेटा 'अनुकरण' सब्द रो मतलब 'हू ब हू' नकल मान्यो अर अरसतु इण रो अेक 'निश्चित अर सीमित' अर्थ मान्यो है। अरस्तु रो कैवणो है कै कलाकार बाहरली दुनिया री गोचर वस्तु री नईं प्रकृत री सृजन प्रक्रिया री नकल करै। इण भातं अरस्तु गोचर वस्तुआं रै अस्तित्व में आधार भूत रूप में छिनेड़ा प्राकृत नियमां नै अनुकरण रो विसय मानै।

कलावां रो वर्गीकरण : अरस्तु 'उपयोगी कलावां' नै श्रेस्ठ मानतों क्यूं कै अणमें अनुकरण री प्रक्रिया पूरी तरां हुवै। अरस्तु मुजब ललित कलावां कर्मसील मिनख रो अनुकरण करै बै बिण रै विच्चरां, भावां अर कामां नै प्रस्तुत करै। मिनख रै लवण रा अळगा–अळगा रूप ई इण रा विसय है। अरस्तु सिर्फ काव्य, संगीत अर न्रित नै ललित कला मानै क्यूं कै अै कलावां गतिसील भावा भिव्यक्ति में सक्षम कलावां है। स्थापत्य, मूर्ती अर चित्रकलां नै अरस्त ललित कलावां कोनी मानै क्यूं कै अै स्थिर अर भावभिव्यक्ति में कम कलावां है।

काव्य रो सांच अर जथार्थ रो सांच : अरस्तु रो मानणौ हो कै कविया कलाकार नै मिनख री जिनणी रो इण तीन रूपां मांय सूं कोई अेक रूप ग्रैण करणो चायजै –

जीवण जैड़ो हो या है।

बो जीवण जिण रै मुजब कैयो या सोच्यो जावै कै बो अेड़ौ हुवै।

जीवण रो जैड़ो रूप होणो चायजै।

अरस्तु रो कैवणो हो, ''आपां मिनख रै जथार्थ जहवण सूं आछै, बुरै या जिण असल रूप में है, बिणरूप नै प्रस्तुत करणौ चायजै। 'जिको हो चुक्यो' णि नै कैवणै कवि कर्म कोनी बल्कि 'जिको हो सकै' बिण नै कैवणौ रो मतलब हो कै मिनख रै जीवण रो चितरांम करती बारी बिण री विसिस्टतावां तो बणाई राखणी चायजै पण बिणा नै उदात्त बणा देवैं इण भांत अरसतु जथार्थ सांच री जग्यां संभाव्य सांच नै तरहीज देवै। आईज बिण री मौलिकता है।

7.10.1.2भाव विरेचन रो सिद्धान्त :

'विरेचन' चिकित्सा सास्त्र सूं लियेड़ो सब्द है। प्लेटो कैयौ कै 'काव्य मिनख री दूसित वासनावां नै उभारै इण खातर नुक्सान दायक है।' बिण रै जवाब में अरस्तु कैयो के काव्य या कलां सूं मिनख रै मनो विकारां रो विरेचन हुवै। बिण बतायो कै जिण भांत पेट रै विरेचन पछै मिनख स्वस्थ हुय जावै बिण भांत भावां रै विरेचन पछै मिनख नै आंणद री प्रापती हुवै। अरस्तु उदाहरण देय'र समझावै कै संगीत सुण'र भावुक मिनख अेक तनमयता री दसा में पूग ज्यावै। त्रासदी नै बो विरेचन तांई उत्तम मानै। अरस्तु ओ विरेचन सिद्धान्त दुखान्त रचनावां पर तो पूरी तरां लागू हुवै, दूजै भांत री रचनावां पर कोनी हुवै। इण भांत ओ सिद्धान्त अेकांगी द्रिस्टी कोण प्रस्तुत करै।

7.10.2 अरस्तु रो काव्य रूपां रो विवेचन :

अरस्तु मुख रूप सूं पांच काव्य रूप मानै – 1. महाकाव्य 2. ट्रेजडी 3. कॉमेडी 4. रोद्र स्त्रोत 5. गीति काव्य। इण में अरस्तु महाकाव्य नै श्रैस्ठ मानै। इण पण बिण विसर साथै चर्चा करी है। नाटक रा भी दो रूप मान्या है – ट्रेजडी अर कॉमेडी। इण में भी बो ट्रेजडी नै उच्चकोटि री रचना मानै।

निस्कर्स : इण भांत अरस्तू पास्चातय काव्य सास्त्र री रीढ़ मानी जावै। बिण आप रै जुग मुजब जिण सिद्धान्तां री थापना करी वै आज चाये स्वीकार कोनी कर्या जा सकै पण लारलै ढ़ाई हजार बरस सूं बै किणी का किणी रूप में पास्चात्य काव्य सास्त्र नै प्रभावित करता रैया है।

7.11 लोंजायनेस :

प्लेटो अर अरस्तू पिछै समीक्षा सास्त्र में लोंजयनेस री नांव बड़ो आदर सूं लियो जावै। बिण नै पास्चात्य जगत में पैलो सान्दर्यवादी समीक्षक मान्यौ जावै। बिण रै मत मुजब काव्य रो चरम लक्ष्य श्रोता या पाठक नै, कवि

'अपूर्व समाधी' में डबो देणो हुवै। बिण कवि, कृति अर पाठक तीनुवां रै गुणां रो विवेचन कर्‌यो। 18वीं सदी रै साहितकारां पर बिण रो चोखो प्रभाव है।

7.11.1 लोंतायनो रो सिद्धान्त :

लोंजायनेस 'उदात्तता' नै काव्य री आत्मा मानतो। बिणकैयौ कजा उदात्त है। बिण रो मानणौ हो के उदात्ता रै कारण ई काव्य आनन्द प्रदान करै। बिण लिख्यो, ''साहित पाठकां नै आवेग पूर्ण अनुभूति री नूई ऊँचाईयों तक जैड़व गुण रै कारण लेय'र जावै। बै ई बिण रो जीवण है, साहित री आ 'उदात्तता' बिण रै सगळै गुणां सूं महान है। औ बोगुण है जैड़ो बिजी छोटी–छोटी गळतियां रै बावजूद साहित नै असल अर असरदार बणावै।''

7.11.2 उदात्तता री कसौटी :

लोंजायनेस बिण काव्य नै श्रैष्ठ मानै जिण रा भीतरी अर बारी दोन्यूं परव उदात्त हुवै अर बिण में हियै नै छू लेणै री ख्मिता हुवै। मन पर पड़णवाळै सहज प्रभाव नै बो काव्य री कसौठी मानै। बिण मुजब अगर पाठक या श्रोता काव्य री धारा में प्रवाहित हो ज्यावै, इण दुनियां सूं ऊपर उठ काव्य जगत में रम ज्यावै, तन्मयता री दसा में पूग ज्यावै तो अैड़ो काव्य बिना सक उत्कृष्ट काव्य है। बिण उत्कृस्टता तांई पाँच गंण जरूरी मान्या –

1. विच्यारा री भव्यता
2. भाव री उत्कृस्टता अर गैराई
3. अलकारां रो उचित प्रयोग
4. सब्द सिल्प री उत्कृस्टता
5. सब्द व्यवस्थारी उत्कृस्टता

7.11.3 काव्य समीक्षा मुजब विचार :

समीक्षा रै क्षेत्र में लोंजायनेस रा विच्यार घणा महताऊ अर मौलिक है। बिण रो मानणो हो कै भविख री पीढ़ी ही किण कृति रो असल मूल्यांकन कर सकै क्यूंके बिण में ईर्स्या कोनी हुवै। बा पीढ़ी निरपेक्ष भाव सूं निस्पक्ष होय'र बिण कृति साथै न्याय करैली। बो उत्कृस्ट प्रतिभा री रचेड़ी कीं दोसां साथै भी हुवै तो बिण कृति साथै न्याय करैली। बो उत्कृस्ट प्रतिभा री रचेड़ी कीं दोसां साथै भी हुवै तो बिण कृति नै उत्कृस्ट मानै। साधारण प्रतिभा री निर्दोस कृति बिण री बराबरी नीं कर सकै क्यूंकै अैड़ी कृति कलां निमयमां रै पालन रो परिणाम हुवै। प्रतिभा सम्पन्न रचनाकांर बणया – बणाया दायरां नै तोड़'र अगर कीं नियमां रो उल्लंघण भी करै तो कृति नै और ज्यादा मार्मिक बणा देवै। बिणरो कैवणो हो, ''साहित री उत्कृटता अनिवार्य रूप सूं मिनख नै जठै तांई ने प्रभावित करै बठै तांई अदोस्ता प्रभावित कोनी कर सकै।

इण भंत प्लेटो, अरस्तू, लोंजायनेस पास्चातय समीक्षा रा आधार थंम है। इणां रै विच्चारां पर ई आगै चाल'र पास्चात्य समीक्षा में नवां–नवां विच्चार पर ई आगै चाल'र पास्चात्य समीक्षा में नवां–नवां विच्चार अर धरावां फूटी। अै अब प्राचीन ग्रीक भासा रा विद्वान हा। आधुनिक अनेक काव्य सास्त्रीय मान्यतावां री जड़ां इणा री विच्चार धारा सूं फूटती दीसै।

7.12 लैटिन समीक्षा :

लैटिन साहित में यूनानी साहित रै विद्वानां सिखो अेक भी समीक्षा सास्त्री कोनी मिलै। लैटिन में सिसरो, होरेस अर क्विन्टीलियन तीन विद्वान मिलै। इण में सिसरो रो महत्व तो भासण कला में मान्यो जावै पण काव्य समीक्षा में उण रो कोई योगदान कोनी हो।

होरेस : पास्चात्य काव्य समीक्षा में होरेस रो इतरों ई महत्व मान्यो जा सकै कै बिण आप रै जुग रै मार्ग दर्सन तांई कोसीस तो करी पण किणी नवैं मत री थापना कोनी करी। बिण पुराणै यूनानी काव्य सास्त्र री व्याख्या करातां थकां अनुकरण रो सरूप, काव्य रो प्रयोजन काव्य हेतु, कला सिद्धान्त, साहितक अदोसता, काव्य सिल्प

आद पर गैराई सूं विचार कर्‌यो। ओईज होरेस रो अेतिहासिक महत्व है।

क्विन्टीलियन : क्विन्टीलियन काव्य सैली मुजब घणो महताऊ काम कर्‌यो। उण कला अर प्रकृति, सैली, सब्द रो चुणाव, संघटना, अलंकरण, मूर्त विधान, उपमा, वस्तु अर सली, सैली अर औचित्य, सैली अर लोक रूचि अर भासा री तागत, सैली भेद आद विसयां रो गैरो विवेचन कर्‌यो। सैली मुजब उण री विवेचन सरू सूं अखीर तक बुद्धि सम्मत अर मनोवैज्ञानिक ळै। उण री सैली मुजब थापानावां री आज भी मानता है। उण गद्य सैली रै क्षैत्र में उल्लेख जोग काम कर्‌यो।

7.13 अंग्रेजी समीक्षा :

7.13.1 पुनर्जागरण काळ :

लैटिन समीक्षा पछै लगैटगै डेढ़ हजार, बरसां तक यूरोपीय साहित्य जगत में अंधेरो दीसै। पन्द्रहवीं सदी में इटली में मानववाद सूं प्रभावित होय'र पुराणै यूनानी अर लैटिन साहित्य अर समीक्षा री परम्परागत प्रवृत्तियां सूं प्रेरणा ग्रैण करी। अंग्रेजी समीक्षा सरूआती काल में जॉन कॉलेट, इरास्मस अर जुआन लुई विवस मान'र इरास्मस अर विवेस 'अंधानुकरण' री निदां करी। आ लोगांजुग री परिस्थितियां मुजब नवीं थापनावां करणै री कोसीस करी। इणनै पूनर्जागरण काळ कैयो गयो। रास्मय अरविवेस 'वस्तु अर सैली' दोनुवां नै महाताऊ बतावंता कैयो कै अेक उत्कृस्ट रचना मं दोनुआं रो संतुलन जरूरी है। सोलवीं सदी पूर्वार्द्ध में बिसप ज्वेल, थॉमस विल्सन अर रोजर वेसम आद विद्वानां मानववादी द्रस्टीकोण सूं अलंकारा रै क्षेत्र में नूवैं ढंग री विवेचना करी सरू करदी। आ समीक्षा भले ई नवी कोनी ही पण नूंवां अंकुर फूटणा सरू हो चुक्या हा।

सोलवीं सदी रै उत्तरार्द्ध में साहित्य अर कला री गैरी व्याख्या होणी सरू होगी। धार्मिक सुधारवादियां साहित्य पर अनैतिकता रो प्रचार करणै रा आरोप लगाणा सरू कर दिया। इण आरोपां रो जवाब देतां थकां रिचार्ड विलिस कैयो, ''साहितय मिनख री वासनावां नै उत्तेजित करानी करै बल्कि वासनावां नै उदात्त बणवै।'' बिण बतायो कै काव्य अैड़ी वस्तुआं नै प्रस्तुत करै जिण रो दुनियां में कोई अस्तित्व कोनी हुवै पण इण रूप में प्रस्तुत करै जिण में बै हो सकै ही या होणी चायजै। विलिस साहित्य नै अेक नूंई सिस्टी बतायो। थॉमस, लॉज अर सर फिलिप सिडनी भी सुधारवादियां नै पडुत्तर देता काव्य नै महान अर स्पृहा जोग बतायो। सिडनी सोळवीं सदी रा प्रमुख समीक्षक हो। उण काव्य नै समाज तांई उपयोगी बतायो अर काव्य नै नैतिक उत्थान रो साधन बतायो। इणी जुग मं पटेह्नम मनोवैज्ञानिक पद्धति सूं समीक्षा करर्ण री सरूआत करी। उण मिनखरी प्रवृत्ति रै सास्वत रूपां रै आधार पर साहित्य रो अध्ययन कर्‌यो अर दैवी प्रेरणा, प्राकृतिक सगती, लोक जीवण रा अनुभव तीनूवां नै काव्य रो हेतु स्वीकार कर्‌या साथै ई काव्य में बिम्ब रचावणावी सगती नै घणी महताऊ मानी। इण जुग रै समीक्षक फ्रांसिस जीवण सूं कोई मेळ कोनी हुवै। मिनखकाव्य सूं बिण आणंद नै प्रापत करै जिको उण नै प्रकृति कोनी देवै। बेन जॉनसन सब सूं पैली सेक्सपीयर री व्योहारिक समीक्षा कर व्यौहारिक समीक्षा रै क्षेत्र में ऐतिहासिक काम कर्‌यो। जॉनसन स्वस्थ विचार अर उचित सैनी नै काव्य तांई ठीक मानतो। उण प्रतिभा, अभ्यास, श्रैस्ठ कवियां रो अनुकरण अर व्यापक अध्ययन नै काव्य हेतु बताया।

सत्रवीं सदी रै पूवार्द्ध में अग्रेजी काव्य में रहस्यवादी प्रवृत्ति उभरी। डॉ. जान उन इवा प्रवृति रा प्रतिनिधि कवि हा। ओ रहस्यवादी काव्य आम जणा री समझ सूं दूर हो। इण बखत समीक्षकां रा दो दळ बण्ग्या। अेक तो जैड़ो इण रो विरोध करतो दूजा समर्थन। हेनरी रेनॉल्डस आपरै ग्रंथ में 'मिथोमिस्टिस' में अण कविया'रा समर्थन करतां कैयो कै कवि सांसारिक सौन्दर्य रै माध्मय सूं कवि दैवी सौन्दर्य तांई पूगणै री कोसीस करै। बेन जॉनसन जैड़ै समीक्षकां उन रै काव्य री प्रंससा तो करी पण ओ भ कैयो कै आ कविता इाम मिनख री समझ दूं देर है। जॉनसन कठोर अर खंडित सैली नै काव्य तांई घातक मानतो। इणी भांत दूसरै समीक्षका भी इणरी सैली उस्पस्टता क्लिस्ट व्यंजना, स्वच्छन्द, कल्पना आद रो विरोध कर्‌यो। डॉ. सौम्युअस जॉनसन जैड़ै समीक्षकां भी इण री काव्यगत अस्पस्टता अर अनिस्चित व्यंजनात्मकता री खुब निदां करी।

7.13.2 नूवोंक्लासिक वाद :

सत्रवीं सदी रै उतरार्द्ध में अग्रेजी साहित्य पर फ्रांस री नवीं चेना रो असर पड़णं सरू होग्या। साहित्य में स्वच्छन्द कल्पना री जग्यां बुद्धि पर जोर दियो गयो। समीक्षक गण साहित्य में वैवस्था करणै तांई नियम वणवणै तांई प्रवृत्त हुया। ब्वालो साहित्यकारां तांई अेक आचार संहिता बणई जिण में काव्य रो उद्देस्य, काव्य सैली, काव्य प्रकृति अर काव्य रूपां मुजब नियम बणाया गया। काव्य रो लक्ष्य सिक्षा देणो निधारित कर्‌यो गयो। आनन्द ने गौण बतायो। औ कैयो गयो के कवियां नै काव्य नियमां रो पालण करणो चायजै। इण भांत नूंवै क्लासिकवाद रै प्रभाव रै कारण साहित्य री गति रूकगी बो पुराणै ढरै पर चालण लागग्यो। जमानै रै साथै–साथै चालणै री खिमता कोनी रैयी अर बिणरी आत्मा रो दम घुटण लागयो।

साहित्य नै नियमां में ज्यादा जकड़णै रै कारण सच्छंदता री प्रवृत्ति उभरण लागगी। मांतेन रै सिस्य संत अवेरमांड रूढ़िवाद री नकल रो घोर विरोध कर्‌यो। बिण मिनख री आत्मा री महत्ता नै ई काव्य वस्तु स्वीकार करणै रो आग्रह कर्‌यो। बिण अरस्तु रै विरेचन सिद्धान्त गळत ठैरांवतां कैयो कै दर्सक 'अति प्राकृतिक तत्वां री उपस्थिति सूं आप री कमजोरी नै चुपचाप स्वीकार कर कस्ट सहणै री भावना सूं जादा ग्रसित हो ज्यावै।' आर्ग चाल'र डॉ. जॉनसन अर मैथ्यू आर्नल्ड सिरखै सामरथवान समीक्षकां अेवर मांड रै इण सिद्धान्त रो समर्थन कर्‌यो।

अंग्रेजी समीक्षका पर नूवैं क्लासिक वाद अर सुच्छन्द प्रवृत्ति रो चोखो प्रभाव है। सत्रवीं सदी में ड्राइडन आप री समीक्षा सूं प्रभावित कर्‌यो।

7.14 समीक्षा रो बहुमुखी विकास :

आठारवीं सदी री समीक्षा नै घणी महताऊ मानी ज्यावै। अण जुग री समीक्षा में दो प्रवृत्तियां खास तौरपर उभरी। इण काल रै समीक्षकां प्राचीन अर समकालीन काव्य सिद्धान्तां नै लेय'र आप रै जुग रै सन्दर्भ में गैरी समीक्षा करी।

इण जुग री समीक्षा अळगा – अळगा द्रिस्टीकोण लेय'र आगै बधी। इण जुग री समीक्षा में हेठां लिखेड़ी प्रवृत्तियाँ उभरी।

7.14.1 प्राचीनता वादी :

पोप अर डॉ. सैम्यूल डॉ. जॉनसन जैड़ै समीक्षकां प्राचीन साहित्य सिद्धान्तां नै नूंवै रूप में प्रस्तुत कर्‌या। बिणां बुद्धि नै कल्पना सूं घणो महत्व दियो अर सुबोधता, सरलता, स्पस्टता काव्य तांई जरूरी बताया। इणां पूराणै नियमां नै ज्यूं री त्यू नीं स्वीकार कर सामान्य मिनख री प्रकृति रै आधार पर ग्रैण कर्‌या जैड़ा हरेक जुग में अक्सर अेक सा रैवै। इण भांत इण समीक्षकां समीक्षा नै अेक सुवैवस्थित अर वैज्ञानिक आधार दियो।

7.14.2 सुच्छन्दतावादी :

इण दिसा में एडीसन अर समीक्षका घणो महताऊ काम कर्‌यो। इणां पर लोंजायनेस रै कल्पना सिद्धान्त रो चोखो प्रभाव हो अणकारण अै बुद्धि री जग्यां कल्पना नै कहत्व देता। एडीसन काव्य रो लक्ष्य आणंद अर सिक्षा देण रै बजाय कल्पना नै प्रभावित करणो मानयो। साहित्य ने नवां–नवां द्रिस्टीकोण विकसित हुवै हा। रिचर्डसन आद उपन्यासकारां भावुकता अर नैतिकता रो समर्थन कर्‌यो फील्डिंग आद बौद्धिक नैतिकता रै चित्रण में लोगड़ा हा। जैन ऑस्टिन सिरखा जीवण रै निरपेक्ष चित्रण पर 'प्रकृतिवाद' थापना करै हा।

7.14.3 प्रकृतिवाद :

फ्रांसीसी विचारक रूसो कैयो कै मिनख लगोलग प्रकृति सूं दूर हटतो जावै अण कारण बो दुःखी है। उण पाछो प्रकृति री साण में जाणौ चायजै। प्रेम रै सिवाय किसी भांत रो दबाव मिनख तांई नुक्सान दायक हुवै। इण कारण आपां नै राजनीतिक संस्थावां रो बहिस्कार कर विवके, बुद्धि सूं नूंवै समाज री थापना करणी चायजै।

7.14.4 जर्मन दार्सनिका रो प्रभाव :

इण काल री समीक्षा पर जर्मन दार्सनिकां री विचारधरा रो प्रभाव भी पड्‌यो। युंग रै विचार मुजब हरेक साहित्यकार आप–आप रै द्रिस्टीकोण नै महत्व देवण लागग्यो। लेंसिग, सीलर, गेट, कांट आद री दार्सनिक

विचारधारा धरावां सूं साहित्य मुजब पुराणी धरणावां बदळगी। कांअ रै सौन्दर्य सास्त्रीय सिद्धान्तां सौन्दर्य अर स्वच्छन्ता में समन्वय कर दियो। कुंजे सौन्दर्य प्रियता पर जोर दियो। काव्य सैली रै क्षेत्र में ही क्रान्तिकारी बदळाव हुया। ओ युग बुद्धि अर विवेक रो हो। समीक्षा साहित्यक विधावां री नवीं मानवतावां मुजब, रूप मुजब सुवैवास्थिक अर सावचेत रैय'र दिसा–निर्देस करै ही।

7.15 सुच्छन्दतावाद :

उगणीसवीं सदीं में अंग्रेजी काव्य में सुच्छन्दतावादी प्रवृत्ति रो उभार दिखाई दवै। कई कव पुराणी काव्य मानतावां नै छोड़'र काव्य में साहित्यकार रै व्यक्तित्व अर मौलिकता रो समर्थन करै हा। अंग्रेजी साहित्य में वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, सैली, कीट्स आद कवियाँ आप रैक काव्य में 'संच्छन्दतावाद' नै अेक 'वद' रै रूप में थापित कर्यो। बिणां काव्य रो लक्ष्य आणंद बतायो अर पुराणी रूढ़ियां सूं मुगत होवणै रो आह्वान कर्यो। समीक्षक वाल्टर पेटर ओ सिद्ध कर्यो कै सुच्छन्तावाद में 'सौन्दर्य प्रेम' अर सौन्दर्य अर सौन्दर्य मुजब जिज्ञासा दोन्यूं जरूरी तन्त है। इण रै अलावा सुच्छन्दतावाद में गैरी रहस्य रहस्य भावना, जादा बौद्धिक जिज्ञासा, जीवण री मूलभूत सरलता मुजब अेक कारण कई समीक्षकां अणरी रचनावां में, 'बुद्धि रै खिलाफ कल्पना रो विद्राह' मान्यो। इणां पर पलायनवादी होणै रो आरोप भी लगायो। सिल्न रै क्षेत्र में इण कवियां पुराणै अर परम्परागत सिल्प विध ाान री उपेक्षा कर नवीं सैली अपणाई जिण में भासा, छनद, अलंकी आद सगळा नवें रूप में सामी आया। इण काळ रै समीक्षका में वाल्टर पेटर, कॉलरिज अर मैथ्यू आनेलिड् रो नावं खास तौर सूं लियो जावै।

7.16 नूंवी विकाससील परिस्थितियाँ रो असर :

उगणींसवीं सदी राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, वैज्ञानिक उथल–पुथल रौ जुग हो। इण सदी पैलै आधे हिस्सै में अंग्रेजी साहित्य पर सुच्छन्दता वादियां रो असर रैयो पण जियां–जियां विकास होतो गयो साहित्य में जर्थाथ रो असर बधतो गयो। साहित्य अब कल्पना रै आभै उतर आम मिनख रै नेड़ै आवण लाग्यो पण साथै ही उण में आध्यात्मिक प्रवृत्ति भी बराबर चालै ही। इणी सदीमें में डार्विन रै 'विकासवाद' बुद्धि जीवियां में उथल–पुथल मचादी। डार्विन ईस्वर नै चुनौति देंतां थका प्रकृति नै ई मिनख रै विकास रो मूळ अएधार मान्यो। डार्विन रै साथै – साथै जेरेमी बैंथम, जॉन स्टूअर्ट मिल, हक्सले, हर्बट स्पेंसर आद समाज सास्त्रियों रै विच्यारां रो भी साहित्य पर गैरो असर पड्यो। इणी जुग में मैकाले जैड़ै विचारकां औद्योगिक क्रान्ति सूं प्रभावित होय'र भौतिक उन्नति पर जोर देतां मिनख री वैयक्तिक सुतंरता रो विच्चार उठायो। उण उदान्त मूल्यां री उपेक्षा कर भौतिक उन्नति पर जोर दियो। इणां रो विरोध करतां कर्लाइल जैड़ै आदर्सवादी समीक्षकां भौतिकता नै त्यागणै आध्यात्मिकता अपणावणै पर जोर दियो। आदर्सवादी समीक्षक रस्किन कलां नै 'अेक आत्मा री दूसरी आत्मा सामी करी गई अभिव्यंजना' बताई। कार्लाइल अर रस्किन रै विच्यारां रो भी तत्कालीन साहित्य पर गैरो असर पड्यो। मैथ्यू आर्नोल्ड अर टेनीसन रै आदर्सवादी विचारां रो प्रभाव इण जुग रै साहित्य पर देख्यो जा सकै। इण आदर्सवादी आलोचकां रो मानणो हो कै 'यांत्रिक भौतिकवाद सोसण अर अन्याव' पर आधारित रैवै इण कारण इणां कवि नै समाज सुधारक अर भविख द्रस्टा वणणै पर जोर दियो।

उगणीसवीं सदी रै उत्तरार्द्ध में कलावादियां साहित्य में आदर्सवाद अर नैतिकता रो घोर विरोध कर्यो। अंग्रेजी कवि स्विनबर्न इन्द्रियता रै बोध सूं भरेड़ी भावपूर्ण कवितावां सूं जण–जण नै प्रभावित करणै री कोसीस करी। इण जुग में 'खाओ पिओ अर मौज मारो' प्रवृत्ति उभरी। 'कला, कला खातर' सिद्धान्त ओजूं उभर'र आयो। ऑस्कर वाइल्ड जैड़ै उपन्यासकारां इन्द्रियानुभूति नै ई सबसूं ऊँची मान'र इण कलावादी प्रवृत्ति रो विक्रितधघिनावणो उर उत्तेजक रूप प्रदर्सित कर्यो। इण सूं कला जगत में अेक अराजकता पैदा होगी। साहित्य री हरेक विधा में नूंई–नूंई प्रवृत्तियाँ उभरण लागगी। इण जुग री समीक्षा में, 'टी.अेस. इलियट' सब सूं जादा प्रभावित करै।

7.17 आधुनिक मनोविज्ञान अर जथार्थ :

बीसवीं सदी रै साहित्य पर फ्रायड, अडेलर, जुंग आद वैज्ञानिकां रो घणो प्रभाव है। आधुनिक मनोविज्ञान मुजब मिनख रो दिमागा चेतना रै अस्तित्व रै कारण ई कीं अनुभव करै। इण अनुभवां में 'कारण–कार्य री सम्बन्ध सूत्रता कोनी हुवै। मिनख री हरेक मनःस्थिति साथै चेतना हुवै अर मनः स्थितियां बदळती रैवै। मिनख रै अवचेतन में दबेड़ी कुंठावां कलां रूपां में अभिव्यक्त होणै री कोसीस करती रैवै। फ्रायड काम भावना नै जीवण री मुख अर प्रेरक सगती कैंवतो। पण अडेलर मिनख री 'ट्रीन ग्रंथी' सगळै कामां री प्रेरक सगती बतांवतो। इण रो प्रभाव दुनियां रै साहित्य पर पड्यो। जेम्स ज्यावस, वर्जीनिया वुल्फ आद लेखकां आप रै उपन्यासां में इण रो चोखी तरां चितरांम कर्यो है। बीसवीं सदी रै बुद्धिजीवियाँ नै प्रभावित करण वाळो दूसरो विचारक 'मार्क्स' हुयो है। उण रै विचारां रो गैरो प्रभाव बीसवीं सदी रै साहित्य पर देख्यो जा सकै। मनौवैज्ञानिक रहस्यवाद री प्रवृत्ति भी इण जुग रै साहित्य में उबरती दीसै। अंग्रेजी रा कवि यीट्स नै इण रो प्रणेता मान्यो जावै। नूवां प्रतीक, अस्पस्टता, उळझेड़ी भासा इण काव्य रा प्रधान गुण मान्या जावै। इलियट भी इण रो समर्थक हो। पाठक रो ध्यान आकर्सित करणो भी इण कविता रो मुख उद्देस्य हो। इण तांई बै कविता में भासा, प्रतीक, अलंकार या अर्थ रै स्तर पर कविता में कोई ना कोई चमत्कार पैदा कर आप रै पाठक नै आप कानी खींचणै री कोसीस करता।

बीसवीं सदी रै साहित्य में जथार्थ रो अेक अळगो रूप है। इण में मिनख नै उण रै परिवेस सूं जोड़'र देख्यो जावै। फलॉवर्ट रो 'मिनख बावरी' जथार्थवाद रो पैलो उपन्यास मान्यो जावै। एमिल जोला प्रकृतिवाद नै जथार्थवादी रूप दियो। मोयांसा जथार्थवाद नै रै रूप में चित्रित कर्यो। सामरसेट मॉम इण नै 'जीवण अळगै रूपां में साहित्य रो मूळ आधार है।'

7.18 बीसवीं सदी रा प्रमुख समीक्षक :

पास्चात्य समीक्षा में बीसवीं सदी रो घणा महत्व है। इण काळ में यूरोप में घणां ई नामी–गिरामी समीक्षक हुया है। जिकां री थापनावां सूं साहित्य घणो प्रभावित हुयो है। इण समीक्षकां में तीन समीक्षक अैड़ा है जिकां रो आधुनिक समीक्षा पर घणो प्रभाव है। बै है –

1. इटलीरा बैंडेट क्रोचे 2. इंगलैण्ड रा आई. अे. रिचर्डस 3. आर. टी. अेस. इलियट। इण तीनूवां रै समीक्षा सिद्धान्तां पर अगली इकाईयां में खुल'र विचार कर्यो जावैला।

7.18.1 बैंडट क्रोचे :

इटली रो रैवणियौ बैंडेट क्रोचे मूलतः समीक्षक नीं दार्सनिक हो। उण सौन्दर्य सास्त्र नावं रै ग्रंथ री रचना करी बिण में काव्य सास्त्र मुजब आय रा विचार प्रकट कर्या। क्रोचे रो विचार हो कै सहज अनुभूति ही काव्य हुवैजैड़ी मिनख रै मन में ई हुवै। बिणरी बारै अभिव्यक्ति होंवतां ई कला आप रै विसुद्ध दर्जे सूं हेठां आ ज्यावै। क्रोचे ज्ञान नै दो हिस्सा 1. प्रातिम ज्ञान अर 2. प्रमेय ज्ञान में बाट्यो। क्रोचे रो विचार हो कै कला एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। बा जद अन्तर मन में घटित हुय जावैतो बिणरी अभिव्यक्ति री जरूरत कोनी। क्रोचे आत्मवादी दार्सनिक हो इण कारण उण री मानता ही कला रो आणंद हुवै। आलोचकां अभिव्यंजनवाद पर घणां ई आरोप लगाया पण सुच्छन्दता वादी समीक्षा इण वाद सूं चोखी प्रभावित हुई।

7.18.2 आई. अे. रिचर्ड्स :

आई. अे. रिचर्ड्स समीक्षा में मनोवैज्ञानिक विवेचन नै आगे बधायों अर आप रै ग्रंथ 'प्रेक्टिकल क्रिटिसिज्म' रै माध्यम सूं समीक्षा रै व्यौहारिक क्षेत्र में योगदान दियो। रिचर्ड्स बतायो कै साहित्य रो मूल्याकंन जथार्थ सूं नई। बल्कि भाव र अन्तवैगां नै जगावणाळी खिमतां सूं कर्यो जावै अर किणी रचना री गैराई नै समझणै तांई कल्पनात्म बुद्धि री दरकार हुवै। काव्य री सफलता तांई बो सफल संप्रेसण नै जरूरी मानै अण खातर भी उण आपरा विचार प्रकट कर्या है। उण रै मुजब कला रो प्रयोजन सिर्फ भाव पैदा करणो कोनी हो। किणी अनुभव सूं पैदा हुयेड़ी प्रवृत्तियाँ रो महत्व हुवै। रिचर्ड्स रां कैवणो हो कै कलां आप रै रचियता नै संस्कारित करै। 'कला, कलाखातर' सिद्धान्त नै खारिज कर उण कला नै उपयोगिता सूं जोड़ी।

7.18.3 टी. अेस. इलियट :

टी. अेस. इलियट पास्चात्य समीक्षा नै सब सूं जादा प्रभावित करी है। उण आप सूं पैली विचारकां, समीक्षकां रै मतां नै मानतां थकां आप री नूंई। थापनावां करी। उण कैयो कै साहित्य पाठकां पर भी आप रो प्रभाव छोड़ै इण खातर बिणरो मूल्यांकन इण प्रभाव नै लेय'र होणो चायजै। इलियट बतायो कै अेक समीक्षक नै पूर्वाग्रहं सूं मुगत होणो चायजै जद इै बो किणी रचना साथै न्याव कर सकैलो। बिण समीक्षक रो काम काव्य री व्याख्या कर उण रै पाठक नै आणन्द दिराणो बतायो। कवितारी भासा मुजब इलियट रो कैवणो हो कै कविता री भासा साधारण भासा कोनी हुवै पण कवि नै आम बोल चाल री भासा प्रयोग करणै चायजै। कव नै भासा री तागत री पराकास्ठा रो ज्ञान होणो चायजै। इलियट रै मुजब साहित्य रो संस्कृति रै निर्माण में संयोग हुवै इण कारण साहित्यकार नै आप री परम्परा रो ज्ञान जरूरी है। इण भांत इलियट साहित्य अर जीवण रो गैरो अर नैतिकतापूर्ण सम्बन्ध मानै।

7.19 इकाई रो सार

पास्चातय काव्य सास्त्र रो इतिहास लगैटगै ढाई हजार बरस पुराणो है। अठै होमर अर हैसिऑड सूं पैली भी काव्य सास्त्र री अेक सिमरध काव्य परम्परा रैयी है। इणां सूं पछै प्लेटो अर अरस्तु जैड़ा दार्सनिक अर काव्य सास्त्र मुजब सिद्धान्तां री थापना करणियां विचारक हुया। प्लेटो नै पास्चात्य काव्य सास्त्र रो प्रवर्तक कैयो जावै। प्लेटो पछै अरस्तु हुयो। जिण काव्य सास्त्र नै अनुकृति सिद्धान्त अर विरेचन सिद्धान्त दिया। कलावां रो वर्गीकरण करण कर्‌यो अर लाभदायक बतायो। अरसतु पिछै लोंजायनास भी प्रभावसाली भी समीक्षक हुयो है बिण काव्य तांई 'उदान्त' तन्त जरूरी बतायो। यूनानी विचारकां पछै काव्य सास्त्र में लैटिन समीक्षारो उद्‌य हुयो पण उण रो जादातर सिद्धान्त यूनानी काव्य सास्त्र सिरखा ई हा। हारेस, क्विटीलियन सिरखा समीक्षक लैटिन भासा में हुया। इण पिछै डेढ़ हजार बरस अंधारै रो काळ है। पुनर्जागरण काळ में अंग्रेजी भासा रै समीक्षकां रो उदय हुयो। उण री नवीं सोच साथै जमानै मुजब समीक्षा रै विकास तांई सिद्धान्तां री रचना करी। सत्रवीं सदी सूं लेय'र बीसवीं सदी तक जियां–जियां सामाजिक अर राजनीतिक परिवर्तन हुया समीक्षकां रो सोच अर समीक्षा रा मानदंड भी बदळता गया। आज री समीक्षा मनोविज्ञान आधारित समीक्षा है अर साहित्य दैवी नीं होय'र मिनख री रचना मानी जावै।

7.20 अभ्यास रा प्रस्न

1. प्लेटो सूं पैली पास्चात्य समीक्षा पर अेक निबंध लिखों।
2. पास्चात्य समीक्षा रै बिगसाव में प्लेटो रो कांई योगदान है।
3. अरस्तु रै अनुकृति सिद्धान्त अर विरेचन सिद्धान्त री समीक्षा करो।
4. लोंजायनेय रै ''उदात्तता'' रै सिद्धान्त री समीक्षा करो।
5. 'पुनर्जागरण काळ' पर अेक निबन्ध लिखो।
6. आधुनिक पास्चात्य समीक्षा पर मनोविज्ञान रो कांई प्रभाव है ?

7.21 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी – आधुनिक साहित्य।
2. डॉ. नगेन्द्र – भारतीय काव्य सास्त्र।
3. डॉ. सान्ति स्वरूप गुप्त – भारतीय काव्य सास्त्र।
4. डॉ. सान्ति स्वरूप गुप्त – पास्चातय काव्य सास्त्र।
5. प्रो. बृज भूसण सर्मा – पास्चातय काव्य समीक्षा।
6. प्रो. भागीरथ दीक्षित – समीक्षा लोक।
7. डॉ. सान्ति स्वरूप गुप्त – साहित्यिक निबन्ध।

इकाई – 8

पास्चात्य मतानुसार साहित रा तत्त्व, मूल प्रेरणा अर प्रयोजन

इकाई रो मंडाण –

8.0 उद्देस्य

8.1 प्रस्तावना – साहित्य : अरथ अर सरूप

8.2 पास्चात्य काव्यसास्त्र में साहित्य रा तत्त्व –

8.2.1 अरथ : विद्वानां रा मत

8.2.2 प्रमुख तत्त्व

8.3 प्रमुख प्रेरणावां –

8.4 काव्य–प्रयोजन –

8.4.1 अरथ : विद्वानां रा मत,

8.4.2 प्रमुख प्रयोजन : कला सारू कै कला जीवन सारू

8.5 इकाई रो सार

8.6 अभ्यास रा प्रस्न

8.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

8.0 उद्देस्य –

इण इकाई रो उद्देस्य विद्यार्थियां नैं आथूणै साहित्य सास्त्र–मुजब साहित्य रै तत्त्वां, मूल प्रेरणावां अर प्रयोजनां सू परिचित करावणौ है। पास्चात्प विचारकां रै मुजब साहित्य रै अरथ अर सरूप नैं थरपता हुया पास्चात्य साहित्य रै तत्त्वां, उणरी मूल प्रेरणावां अर प्रयोजनां री उदाहरणां सागै म्हां अठै व्याख्या करालां।

8.1 प्रस्तावना : साहित्य : अरथ अर सरूप –

साहित्य सबद रो आथूणो उन्थो लिटरेचर (Literature) है, जिका नैं उठै व्यापक अरथ में बरतीजै। कोई प्रकासित पोथी कै प्रचारित किताब या छापो इण दीठ सूं उठै साहित्य री गिणती में आवै। इण व्यापक, अरथ में सनिमा, ओखद, भूगोल, तकनीक मुजब साहित्य पण 'लिटरेचर' कैईजै। पण राजसेखर रै वाड्.मय रै भेदां (सास्त्र अर काव्य) री दांईं आथूणै विद्वान भी नॉन क्रिओटिव लिटरेचर अर क्रिअेटिव लिटरेचर नांव सू लिटरेचर रा दो भेद मानै हैं। अंग्रेजी विद्वान डी.क्वीन्स इण नैं लिटरेचर ऑफ पॉवर (सक्ति रो साहित्य) अर लिटरेचर ऑफ नॉलेज (ग्यान रो साहित्य) कैवै। सक्ति रो साहित्य मानखै रै हिरदै में चिर स्थायी मावां नैं उपाड़ै अर आनन्द री स्रिस्टी करै। ग्यान रो साहित्य मानखै रो ग्यान बधावै। ग्यान रै साहित्य (Literature of knowledge) में गणित, विग्यान, धरम सास्त्र, अभियांत्रिकी, राजनीतिसास्त्र, समाजसास्त्र, दर्सन, इतियास, कानून आद सामिळ है, जद क सक्ति रै साहित्य में कविता, नाटक, उपन्यास, कहाणी, समालोचना, संस्मरण, रेखाचित्र आद रचनांवां जिकी मिनख री रागात्मक वृत्ति सूं जुड़्योड़ी रचनावां नैं सामिळ करीजै। अै रचनाकं मिनख री सूत्योड़ी भावनावां नैं जगावै अर उणनैं सांच, सिव अर सुन्दर कांनी बधावै।

आथूणै विद्वानां रै मतै ओ सत्यं–सिवम्–सुन्दरम् सूं समन्वित रागात्मक साहित्य कै लिटरेचर ऑफ पावर कै क्रिअटिव लिटरेचर रा दो भेद हुय सकै – गद्य (Prose) अर पद्य (Poetry)। अरस्तू आं भेदां रो विवेचन त्रासदी (Tragedy) अर कॉमेडी रै रूपां में करै। हडसन साहित्य नैं दो वरगाां में बांटै – विषयीगत (Subjective) अर विसयगत (Objective) म्होटै रूप में आथूणै विद्वानां रै साहित्य रै सरूप मुजब ओ कैयो जा सकै क वै

लिटरेचर रा दो रूप मानै – द्रिस्य अर स्रव्य। द्रिस्य साहित्य में नाटक अर स्रव्य साहित्य में कहाणी, उपन्यास, आलोचना, निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, डायरी आद हुय सकै। आ विधावां री प्रस्तुति काव्य अर गद्य रैं माध्यम सूं हुय सकै। आथूणै विद्वान कविता रा ई घणा ई भेद कर्‌या है, ज्यान – महाकाव्य (Epic), दार्सनिक अर विचारात्मक गीत (Meditative and philosophical lyrics), दुखात्मक गीत (Elegy), पत्र–गीत (Epistle), व्यंग्य गीत (Satire), संबोधन गीत (Ode) वर्णनात्मक गीत (Descriptive poetry), अभिनयात्मक कविता (Dramatic poetry) आद ।

8.2 पास्चात्य काव्यसास्त्र में साहित्य रा तत्त्व –

8.2.1 अरथ : विद्वानां रा मत –

साहित्य अनन्त मानवीय भावनावां री भेळप हुवै, अतः किणी खास तत्वां सागै बांध'र राखणो घणो दोरो है। फेर ई विद्वान कुछ अेड़ा तत्त्वां रो संयोजन कर्‌यो है, जिण सूं साहित्य में समरूपता अर ऑकरखण बण्यो रैय सकै। इण तरियां रै तत्त्वां री व्याख्या भारतीय अर पास्चात्य दोई जागां रा विद्वान करी है। पास्चात्य विचारकां में वर्ड्सवर्थ, सेक्सपीयर, कॉलारिज, विंचेस्टर, हड़सन, कार्लाइल आद हैं जिका में सूं कोई भावतत्त्व नैं साहित्य सारू जरूरी मानैं तो कोई बुद्धि तत्त्व नैं। पण विंचेस्टर अेक अैड़ा आथूणां विचारक हैं जिका साहित्य रै तत्त्वा रै रूप में भाव, कल्पना, बुद्धि अर शैली नैं अेक सागै महताऊ कैवै। भारतीय विद्वानां री दाईं इज अै विद्वान पण आं तत्त्वां री व्याख्या कविता रै संदर्भ में ई करी है।

8.2.2 प्रमुख तत्त्व

अतः अठै म्हां आं विद्वानां रा थरपीजिया आं काव्य तत्त्वां रो करणांव करां –

(अ) भाव–तत्त्व –

आथूणै विचारकां री दीठ सूं भाव तत्त्व साहित्य सारू सिरै मानीजियो है। उणां रै मुजब भाव तत्त्व सैमूचै सिरजनात्मक साहित्य री आत्मा हुवै। भाव ई वो तत्त्व है जिको ग्यान रै साहित्य नैं सक्ति रै साहित्य (ललित साहित्य) सूं अळगी ओळख थरपै। भाव री संवेदनात्मक अनुभूति अर संप्रेसणीयता ई वास्तव में सिरजनात्मक कैईजै, क्यूंक मिनख रै हिरदै में बारलै जगत री संवेदनावां रै कारण जिका विकार ऊपड़ै, वै आपस में मिळ'र भाव री संग्या पावै। इण वास्तै भाव रो सीधो संबंध सहिरदैय अर संवेदनात्मक अनुभूति सूं है। उणरी रागात्मकता सूं है।

साहित्य (काव्य) में रागात्मकता तद इज आ सकै जद उणमें भावना रो ओचित्य, विसेस खुलासै री सक्ति, भावनावां री थिरता, व्यापकता अर विविधता रैवैला। अै सगळी बातां सहिरदैय नैं जीवन सूं मिलै। इण वास्तै इज साहित्य जीवन रै विविध भावां नैं प्रगट करणियो मानीजै। भाव री आ परिपक्वता ई भारतीय आचारिजां मुजब रस है अर आथूणै विद्वानां मुजब 'सैंटिमेंट'। वर्ड्सवर्थ इण परिपक्व अनुभूति नैं ई कविता कैवै – "Poetry is the spontaneous over flow of powerful feelings. It takes its origin from emotions recollected in tranquility."

(आ) कल्पना–तत्त्व

सौंदर्यवादी आथूणै आचारिजां, कविसरां में शैली, कॉलरिज, हन्ट, अेडगर अेलन पो खास है। अै सगळा साहित्य सारू कल्पना तत्त्व नैं घणो महताऊ मानै। आं री मानता है क साहित्य में सुन्दर तत्त्व री सिरजणा कल्पना सूं ई हुवै। उण नैं मूरत रूप कल्पना ई दिरावै। कल्पना सूं सून्य भाव सुन्दर री बजाय नीरस ई कैईजैला। इण बात री साख महान् नाटककार सैक्सपीयर पण भरै। वै कैयो क कल्पना अग्यात वस्तुवां नैं भी रूप दिरावै, सून्य नैं भी सत्ता अर आकार देवै।

कॉलरिज आद विद्वानां मुजब साहित्यकार किणी चीज नैं (अनुभूति नैं) ज्यूं री त्यूं प्रस्तुत कोनी करै बल्कै अनुभूतियां री कल्पनावां पांण उणरी पुनरचना करै। वो उण नैं सजावै–संवारै, तद प्रगट करै।

कल्पना रा दो भेद करीजिया है – नियंत्रित अर अनियंत्रित। अनियंत्रित कल्पना काव्य रो विसय नहीं

बण–सकै। नियंत्रित कल्पना इज भाव नैं सजा–संवार'र प्रगट करण री खिमता राखै। इण वास्तै ई वा काव्य – निरमात्री कैईजै जिकी साहित्यकारां अर कलाकारां में मिळै। कॉलारिज इणनैं गौण कल्पना (Secondary imagination) कैवै। उणा रै मुजब मुख कल्पना कै आद्य कल्पना (Primary imagination) कवियां री तुलना में ब्रह्मवादियां में बेसी मिळै। ब्रह्मवादी इणी कल्पना पांण स्रिस्टी रो निरमाण मानै। वै आत्मा अर जगत् री न्यारी–न्यारी अनुभूति रो कारण माया नैं। बतळावै।

(इ) बुद्धि–तत्त्व –

घणकरा आथूणां काव्यसास्त्री साहित्य में बुद्धि तत्त्व नैं खासो महत्व देवै। पण–सांच आई है क भाव अर कल्पना रै पूठै ई बुद्धि रो महत्व अंगेजियों जा सकै। इणी वास्तै ई मेरी नांव रा आथूणै विद्वान री मानता है क साहित्य में बुद्धि कदै ई आपरै सुद्ध रूप में कोनी रैवै। वा सदीव भावना री अनुगामिनी दासी रै रूप में आवै – "In literature there is, no such thing as pure thought Thought is always the hand maid of emotion."

वस्तुतः साहित्य में बुद्धि तत्त्व रो काम भावनात्मक संवेगां रै उछाळ अर कल्पना री उड़ान नैं संयमित करणो हुवै। ओ ई कारण है जिण पांण बुद्धि तत्त्व नैं साहित्य सारू जरूरी कैयो जा सकै। बुद्धि भावना नैं आधार भोम दिरावै अर कल्पना नैं जीवन सीमा। वर्ण्य विसैय रो ठावौ संयोजन अर संविधान पण बुद्धि तत्त्व रो ई काम है। भावनावां अर संवेगा रो खुलासो अर तर्क – संगत रूप विधान भी बुद्धि तत्त्व सूं ई संभव हुय सकै। काव्य अर साहित्य रै विचारपख रै प्रतिपादन नैं अभिव्यंजना करणो भी बुद्धि तत्व रो अेक महाताऊ काम है। सावचेत, सजीव अर सामाजिक प्राणी हुवण सूं साहित्यकार कै कवि मानव बुद्धि सम्मत विचारां री उपेक्षा नहीं कर सकै। इण भांत बुद्धि ही काव्य में भासा नैं आचित्य रो परिवेस अर आयाम प्रदान करै। आं सगळी बाता रो होरेस सदकाव्य अर औचित्य मुजब आपरै विचारां में घणी सांतरी चरचा करी है। वै नाट्य रचना रै विसैयचयन रै संदर्भ में लिखैक नाटककार नैं परम्परात्मक कथावां नैं अंगैज' र वांमें नुवी उद्भवनावां (original treatment) करणी चाईज अर अैड़ो विसैय चुनणो चाईजै जिको उणरी सामरथ रै माय हुवै। आ सामरथ ई बुद्धि तत्त्व है – "You act more wisely by dramatizing the Iliad than by Introducting a subject unknown and hithen to unsung".

आधुनिक आथूणा समीक्षक मेरी जोजफ पण लेखक सारू सद्वृत्ति कै विवेक (बुद्धि) नैं खास गुण मानैं। उणा रै मुजब इण विवेक सूं उण नैं स्सैं गुण–साधुता, प्रतिभा, अन्तः सक्ति, मेधा अर सुरूचि – मिळ जावै – "It is good sense, reason which does all, virtue, genuis, soul, talen and taste what is virtue ? Reason put in practice talent ? Reason expressed with brilliance ....."

साहित्य में बुद्धि तत्त्व रै इण महत्व रै बावजूद इण बात रो ध्यान राखणो जरूरी है क वा साहित्य री आत्मा 'भावना' नैं दबा नहीं देवै।

(ई) सैली–तत्त्व –

इण नैं अभिव्यक्ति तत्त्व पण कैवै। पास्चात्य काव्य–सास्त्र में लौंजाइनस रै काव्य में उदात्त तत्त्व क्रौंचे रै अभियंजनावाद, डॉ. जॉनसन रै सैली–भासा मुजब विचारां तथा मैथ्यू अर्नाल्ड रै सैली मुजब विचारा री व्याख्या में आथूणै काव्यसास्त्रियां रै सैली तत्त्व बाबत मानतावां रो सागो खुलासो मिळै। लौंजाइनस साहित्य री सैली सारू उदात्तता नैं महत्व देवै। वै इण करते 5 बातां नैं जरूरी मानै – विसय गरिमा, भावावेस री तीव्रता, समुचित अलंकार–योजना, उत्कृस्ट भासा अर गरिमामय रचना विधान डॉ. जानसन पण साहित्य सारू भासा – सैली नैं ज्यादा सूं ज्यादा गरिमामयी, अलंकारिक अर ओपती बनावण रै पख में है – "The auther must recomended them by the superaddition of elegance and imagery to display the colors of varied diction and pour forth the music of modulated periods."

मैथ्यू अर्नाल्ड गद्य अर पद्य री सैली नैं अेक सरीखी कोनी अंगैजै। उणरै मुजब "Prose cannot have the power of verse." अर्थात् गद्य में पद्य री ओप आई नी सकै। इण बाबत उणां रो तर्क है क कविता रां सिरजण आत्मा में हुवै जद क गद्य मस्तिस्क री उपज हुवै। इण वास्तै दोया री सैली अर भासा में फरक हुवणो

सहज है। अर्नाल्ड उक्ति में कसावट, सुद्धता, खुलासों, संगीत नैं काव्य–सैली रा खास गुण मानैं। गद्य सैली बाबत उणा री मानता रैयी क उण में नियमितता (regularity), अेकरूपता (Uniformity), सटीकता (Preeision) अर संतुलण (balance) हुवणो चाईजै ।

आं विद्वानां रै विचारां सूं खुलासो हुवैक अमूर्त भावां नैं मूर्तता कै अभिव्यक्ति री सामरथ सैली इज दिरावैं। इण वास्तै जै भावतत्व काव्य रो प्राण तत्व है तो सैली उणरौ सरीर तत्व। आत्मा रो अस्तित्व सरीर धारण करबा पै ई सार्थक हुवै। अतः भाव, कल्पना आदि रो अस्तित्व सैली रूप में ई अभिव्यक्ति हुय र सार्थक हुयै। सैली साहित्य रो बारलो तत्व हुवै पण उण नैं कलाकार कै कवि रै व्यक्ति सूं न्यारो कर' र नहीं जोयो जा सकै। प्रत्येक कवि रै व्यक्तितव मुजब ही उणरी साहित्य (काव्य) सैली हुवै। इण वास्तै ई सैली इज व्यक्ति कैईजै (Style is the man)। ओई कारण है क घणी बार किणी रचना री कोई ओळी सुणता इज उण रै रचेता रै बाबत श्रोता बात करण ढूक जावै। अतः सैली ही वो काव्य तत्त्व है जिको अेक कवि कै सिरजक नैं दूजै कवि अर सिरजक सूं अळगो करै। सिरजक री भावना अर संप्रेसणीयता अेक ई हुय सकै पण उणरी अभिव्यक्ति रो माध्यम (सैली) कदै ई अेक कोनी हुय सकै। उणमें पूजै सूं कोई निरवाळोपण कै मौलिकतता जरूर हूसी।

हर लेखक री सैली में खास तौर सूं दोय तत्त्व हुवै – 1. अतियासिक तत्त्व–इण में कवि री भासा अर साहित्य रो मूल्यांकन अैतियासिक संदर्भ में करीजै अर 2. व्यक्तित्व – इण में लेखक रै व्यक्तित्व अर स्वभाव री झलक साफ लखीजै।

आथूणैं काव्यसास्त्री सैली रै गुण–दोसां रै पांण सैली रा कैई रूप अर अंग गिणावै। आं में सूं खास – खास हैं – 1. सरल (Plain) 2. उदात्त (Statety) 3. मसृण (Polished) 4. ओजस्वी (Powerful) ।

8.3 प्रमुख प्रेरणावां (हेतु) –

भारतीय काव्य सास्त्रियां दांईं ई पास्चात्य समीक्षक पण काव्य (साहित्य) सिरजण रै कारणां बाबत अेकमत कोनी लखावै। भारतीय काव्यसास्त्री आं कारणां नैं हेतु नांव दिरावै पण आथूणै समीक्षक आं नैं काव्य–प्रेरणा (Poetic inspiration) नावं सूं विवेचन कर्‌यो है। पास्चात्य काव्यसास्त्र में इण माथै प्लेटो सूं ई विवेचन हुवतो आयो है। प्लेटो रै मुजब कवि विक्षिप्त प्राणी अर उण री रचीजी कविता विक्षिप्त खिणां में रचीजी वाणी है। वो कवि री विक्षिप्तता (पागलपन) नैं साधारण बावळैपण (Physical) सूं न्यारो मानै । इण आधार पांण वो ओ अंग्रेजै क कवि काव्य–प्रेरणां रै खिणां में काव्य सिरजण करै। उणरै इण सोच सूं सिद्ध हुवै क कवि आं खिणां में वां बातां नैं सोच लैवै जिकी तर्क सूं घणी आघ हुवै। प्लेटो री इण सोच नैं सिरजण रै संदर्भ में म्हां 'प्रतिभा' कैय सकां। प्लेटो काव्य–प्रेरणा रै रूप में प्रतिभा रै अलावा चिन्तन, कलासिल्प सूं परिचय जिको अभ्यास अर सिक्षण सूं संभव है नैं कवि सारू जरूरी मानैं।

अरस्तु काव्य प्रेरणा रै रूप में कल्पना, स्वतंत्र चिंतन अर प्रतिभा नैं जरूरी मानै। वो कविसरां नैं सावचेन रैवण रो ई मसविरो दिरायौ। इण दीठ सूं अरस्तू री पीठ में सजगता, प्रतिभा, अभ्यास, चिंतन, कला चमत्कार अर अध्ययन कवि वास्तै जरूरी गुण है। हौरेस पण अरस्तू री दांईं कला (साहित्य=काव्य) नैं अनुकरण मानता हुया कैवै क कुसल अनुकर्ता सूं उणां रो अनुरोध है क वो सांचै प्रतिमानां सारू जीवन अर नीति रो अध्ययन करै अर उठै सूं इज जीवन री सहज भासा अंगैजै – "I shall bid the clever imitator to look to life and morals for his real model and draw thence Language true to life." हौरेस रै काव्य हेतु (प्रेरणावां) मुजब विवेचना सूं खुलासों हुवै क वै काव्य प्रेरणावां रै रूप में निरीक्षण, अध्ययन, रचनात्मकता (Invention) नवीन उद्‌भावनावां अर प्रतिभा नैं अंगैजै। आं रै समन्वय बाबत वै लिख्यो है "For my part I fail to see the use of study without wit, or of wit without training. So true is it that requeres the other's aid is helpful union."

लौंजाइनस प्रतिभा अर अभ्यास नैं सिरै काव्य हेतु मानता हा। वै उदात रै विवेचन में पांच बातां नैं महत्व दिरायो है – महान धरणाकं री खिमता, विसैय री गरिमा, भावावेस री तीव्रता, समुचित अलंकार योजना अर गरिमामय रचना विधान । इण भांत पास्चात्य नुई सास्त्रवादी आलोचना में यूं तो प्रतिभा, अभ्यास अर अध्ययन नैं महत्व दीरिजियो पण प्रतिभा सूं बेसी महत्व आं री दीठ में अध्ययन अर अभ्यास रो ई रैयो। डॉ. जानसन

नव्यसास्त्रवाद युग रा समीक्षक हा। पण वै काव्य प्रेरणावां बाबत आपरा मौलिक विचार प्रगट्या । वै प्रतिभा नैं नियम पालन सूं बेसी महत्व दिरायो अर कवि सारू मौलिकता, आविस्कार सक्ति, कल्पना नै सदविवेक नैं जरूरी मान्यौ।

स्वच्छन्द काव्यधरा (Romantic poetry) रा सिरै कवि वर्ड्सवर्थ रै आं सबदां "It takes its origin from emotions recollected intranquality" सूं खुलासो हुवैक वै चिन्तन अर मननसीलता नैं कवि रा जरूरी गुण मानै अर वै भावना री सांच नैं पण घणो मान दिरावै – "It the unction of a duout heart be wanting, everything else is of no avaik" इण भांत वर्ड्सवर्थ काव्य री प्रेरणा (हेतुवां) रै यप में प्रतिभा, चिन्तन–मनन, अध्ययन अर भावना रै प्रति ईमानदारी नै अंगैजै।

कॉलारिज कवि री प्रमुख प्रेरणा प्रतिभा नैं मानै। उण रै मुजब प्रतिभा रै पांण ई भावुकता , विवेक, कल्पना अर मानवीयता नैं अंगैजै। कॉलारिज कवि सारू तत्त्व वेता अर चिन्तन–मनन करणो पण जरूरी मानैं। आं नैं पावण सारू उणनैं अध्ययन करणो जरूरी है । इणी अध्ययन पांण वो निरपेख हुय – र सिरजण करण में सफल हुवैला, संसार रै सुख–दुख नैं समझण में सफल बणैला। कॉलारिज रै इण बाबत विचारां सूं खुलासों हुवै क वो प्रतिभा, सहिरदैयता, विवेक,अर अध्ययन नैं ई काव्य–प्रेरणा (हेतु) मानैं – "To have a genius is to live is the universal to knwo no self but hat which is reflected not only from the faces of all around us... but reflected from the flowers, the trees, the beasts, Yea from the very surface of the waters and sands desert."

हीगेल रै मुजब कविता 'सौंदर्यानुभूति रै खिणा में म्हाणी आत्मा में आविर्भूत आनन्द रो उछाळ हुवै। इण दीठ सूं हीगेल सौंदर्य–प्रेम, आत्म प्रदर्सन अर अनुकरण री प्रकृत्ति नै साहित्य री मूल प्रेरणा मानैं। कलावादी समीक्षक क्रौंचे री काव्य प्रेरणा बाबत मानता है क 'मानव मन में जगत रा भांत–भांत रै पदारथा री पडाक्रिया रूप मे अनेकू पडबिम्ब घूमैं। अनुभूति रै खास खिणा में वां नै अभिव्यक्त करणो उणरे मानसिक स्वास्थ्य सारू जरूरी है। जगत रै क्रिया–कलापां सूं मानव मन माथै उणां री प्रतिक्रिया वां हुवैं अनेकू अरूप झंकार उणमें नीपजै। कवि कै कलाकार वां अरूप झंकारा नैं मूरत करण री कोसिस करै। इण रूप देवण री आफर में साहित्य कै कला रो जळम हुवैं। क्रौंचे री इण मानता सूं खुलासो हुवै क वो आत्माभिव्यक्ति ने काव्य सिरजण री खास प्रेरणा मानैं।

मनोवैग्यानिक समीक्षण पण साहित्य कै कला–सिरजण बाबत प्रेरणवां री चरचा करी है। आं में फ्रायड घणा मनीता है। वो कला कै साहित्य रै पूठ अमुक्त काम नैं प्रेरक वृत्ति थरपै। उणरै मुजब जद बारते जगत में, सामाजिक जीवन में, म्हां नीति–नेमा कै समाज रै भय सूं आप काम–वासना नैं तिरपत नी कर सकां, तद वा वासना अन्तर्मन में परी जावै अर फेर उण अवस्था में जद म्हाणों चेतन मन नी जागै, वो आपरी वासना नै भोगण रा घणाई जतन करै, ज्यां में जंजाळ अर काव्य सिरजण खास उपाय हुवै। मन री अचेतनावस्था में वो सुपणै रै माध्यम सूं तिरपत हुवै अर अरध चेतनावस्था में काव्य सिरजण सूं। इण आधार पाणं फ्रायड काव्य री प्रेरणा वासना रै दमन री स्वस्थ प्रवृत्ति नैं अंगैजै।

मनौवैग्यानिक एडलर फ्रायड रो सिस्य हो। पण वो फ्रायड री दांईं वासना रै दमन री स्वस्थ प्रवृत्ति ने काव्य सिस्जण री प्रेरणा नी मान' र हीनता री भावना री मूल प्रेरणा मानैं उणां री मानता है क मानव जीवन अभावा सूं भरयोडा हुवैं। मिनख री कोसिसां रै पूठै ईं कोई न कोइ कमी जरूर बणी रैवै। इण वास्तै जिको म्हानै जीवन में कोनी मिळै, म्हां उण नैं कल्पना में पावण री कोसिस करां। इण भांत सहित्य सूं म्हाणै जीवन कमियां री पूर्ति हुवै। म्हां म्हाणी कमियां नैं मेटण वास्तै (भलै ई कल्पना जगत में) साहित्य रो सिरजण करां। अेडलर री इण व्याख्या सूं साहित्य सिरजण री प्रेरणा जीवन रै अभावां नै आघो (दूर) करण री इच्छा में निहित है।

जुंग फ्रायड अर अेडलर री मानतावां रो समन्वय करता थका जीवनेच्छा नैं साहित्य सिरजण (जीवन री मूल प्रेरणा) री मूल प्रेरणा मानैं। वो लिखे मिनख रे सगळा काम करण री कोसिसां जीवनेच्छा सू जडयोडी हुवै। उण रा सगळा काम आपनैं जीवित राखण री इच्छावा मुजब हुवै। इण कस्तै उण री हर अभिव्यक्ति रै पाछै भी

उण रै जीवन री इच्छा री प्रेरणा ई वर्तमान रैवै। साहित्य ई तरियां री अभिव्यक्ति हुवै, फरक ओईज है क वो साधारण अर सामान्य नीं हुय' र खास बेसी कलात्मक, सुखम अर आन्तरिक हुवै। अतः जुग रै मुजब साहित्य री प्रेरणा सक्ति अभिव्यक्ति री अदम्य कामना हुवै जिकी जीवनेच्छा सूं घनिस्ट रूप सूं जुड़्योड़ी रैवै।

पास्चात्य समीक्षाकां रै विचारां पांण हेतुवां (प्रेरणावां) रो विस्लेसण आं तीन कारणां सागै रीजो है – (अ) प्रेरक कारण (आ) निमित कारण अर (इ) उपादान कारण। प्रेरक कारणां में कवि कै लिखारा री सामाजिक, पारिवारिक या निजू परिस्थितियां अर उण री प्रक्रति नै गिणिजै ज्यां सूं उणनैं साहित्य सिरजण री प्रेरणा मिळै। निमित्त कारणा में कवि री प्रतिभा आवै। आ प्रतिभा कवि री उर्वर कल्पना, दार्सनिक चिन्तन, सूखम सौन्दर्यनुभूति, संवेदनसीलता, कलात्मक अभिव्यक्ति, उन्मेस अर खतः अभिव्यंजनसीळता आद रै रूप में जोई जा सकै। उपादान कारणां में लोकसास्त्र रोलूंठो ग्यान, सत्संग, मनन अर अभ्यास सामिळ हुवै। उपादान कारण पैला दो कारणां रा घणा सहयोगी हुवै। इण भांत पास्चात्य काव्यसास्त्री पण भारतीय काव्यसास्त्रियां रै बतखया प्रतिभा, अभ्यास, व्युत्पत्ति आद रै घणा नैडै लखावै। सार रूप में पास्चात्य काव्यसस्त्रियां द्वारा बतन्मया काव्य हेतु (प्रेरणावां) नैं यूं गिणा सकां –

1. विवेक
2. सास्त्र ग्यान
3. सौंदर्यानुभूति
4. संवदेनसीळता (सहिरदैता),
5. कलात्मक–अभिव्यक्ति।

8.4 काव्य–प्रयोजन –

काव्य रै प्रयोजन सूं अरथ है काव्य सिजण रै उद्देस्य सूं। मानखो सरू सूं इण धरम भीरू रैयो है, अतः वो बीजै कारजां रै भात इज काव्य रै प्रयोज नै ई धरम प्रचार अर मानव कल्याण सूं जोड़ दिरायो। पण हौळै–हौळै उण रो उद्देस्य नीति, उपदेस, धरम–प्रचार, मानव कल्याण सागै इज आनन्द भी मान्यों जावण लागो। कुछेक आथूणां आलोचक आं दोया रो समन्वय पण करयो। इण भांत पास्चात्य काव्य सास्त्रियां री दीठ सूं काव्य रै प्रयोजन मुजब तीन धारणावां रैयी –

1. लोकमंगलकारी नीतिवादी विचारधारा (प्लेटो),
2. आनन्दवादी कै सौंदर्यवादी विचाराधारा (वर्डसवर्थ, शैले)
3. नीति सापेख आनन्द री पावती कै समन्वयवादी विचाराधारा (निओतालमेस ड्राइडन आद)।

8.4.1 अरथ : विद्वानां रा मत,

प्राचीन यूनानी विचारक हैसिओड रै मुजब काव्य रो प्रयोजन उपदेस देवणो है पण होमर काव्य रो प्रयोजन आनन्द प्राप्ति मान्यो। स्ट्रेबो ई.पू. पैली सदी मे आं दोन्यू मतां कांनी संकेत कर चुक्या हां। प्लेटो सुध ाारवादी अर आदर्सवादी राजनीतिग्य हां, अतः वै लोकमंगल नैं काव्य रो सबसूं महताऊ प्रयोजन मान्यों। इणरै अभाव में वै होमर रै उत्कृस्ट काव्य री ई निंदा करी– "It would be wrong to honour a man at the expense of Truth. इणी वास्तै वै कवि नैं हुकम करै – "No poet is to compase any verses which offened the views of law and tastice."

प्लेटो रै आं विचारां सूं लखावै क वै कविता नै उणी सीवं लग अंगैजे जिकी राज अर मानवजीवन सारू उपयोगी हुवै। उणा री कविता मुजब धारणा साफ रैयी क काव्य धार्मिक अर नैतिक हुवणो चाहिजै, उणमें मानवसुभाव में जिको महान अर उदात्त मागीजै, रो ई उद्धाटन अर संवर्धन हुवणो चाहिणै – " The right function of art is to put before the soul the images of what is intrinsically great and beautiful."

प्लेटो रै पूठै उणा रा सिस्य अरस्तू काव्य रा खास दो प्रयोजन बतळाया – 1. ग्यानार्जन अर 2. आनंद।

वै इण संदर्भ में प्लेटो रै आखेपां रो पडूत्तर देवता हुया कह्यो–'कला रो खास उद्देस्य आनंद है पण ओ आनंद नीति सापेख हुवै–वो अनैतिक नहीं हुय सकै। इण कथन सूं खुलासो हुवै क अरस्तू रै आनन्द रो सरूप न तो आध्यात्मिक है अर न ही मनोविनोद, न अेन्द्रिय है अर न ही बौद्धिक। वास्तव में वो प्रत्यभ्सिग्यान रो आनन्द है, कल्पना रो आनन्द है अर बीजै अेन्द्रिय आनन्द सूं न्यारो है।

लौसाइनस घणै ई चिन्तन रै पछै काव्य–प्रयोजन बाबत निस्कर्स दिरायो क काव्य रो चरम उद्देस्य चरमोल्लास देवणो है, तर्क सूं आपरी बात मानवाणो नहीं – ".....for a work of genius does not aim at persuasion, but ecstasy, or lifting the reader out of himself." इण भांत लौजाइनस री दीठ में भी मम्मट री दाई विगलित वेद्यान्तर आनन्द प्रादुर्भूत करणो ई काव्य रो खास प्रयोजन है।

निओतालमेस नीति अर आनन्द रो समन्वय करता थका कयो क 'काव्य रो प्रयोजन नीति–सिक्षा अर आनद रो समन्वय करणो है' होरेस पण काव्य रो प्रयोजन इणी तरिया सूं रेखांकित करै। उणरै मुजब – कवि रो उद्देस्य कै तो उपयोगिता हुवै, कै आल्हाद कै फेर वो उपयोगी अर आल्हाददायी भावना रो अेक ई में समन्वय कर दिरावै। जो कवि उपयोगी अर मधुर रो मेळ कर सकै वो ई सफल कवि हुवै क्यूं क वो पाठक नै आल्हादित पण करै अर सिक्षित भी। वो कवि ने उपदेस देवै क वो धन लिप्सा सूंआघो रैवै। अरथ प्राप्ति सूं करीजी काव्य साधना कदै ई सफल कोनी कैयी जा सकै –

"The poet's aim is to profit or to please, or to blend in one the delightful and the useful..... the man who mingles the useful with the sweet carries the day by charming his reader and at the same time instructing him ..... once this canker of avarice, this mony -grubbing has tainted the soul, can we hope that poems will be wirtten worthy of cedar oil and to be treasured is polished cases."

नुवै सास्त्रवादी (Neo classic) जुग तांईं साहित्य (काव्य) रै प्रयोजना सारू आथूणै विद्वानां री दीठ नीतिवादी ई रैयी। वै आनंद रै सागै नीति नैं ई महत्तव देवता रैया। इण दीठ सूं लॉ बोस्यू रो काव्य प्रयोजन मुजब ओ कथन उल्लेख जोग है– "The aim of the epic is morel instruction disguished under the allegory of action." अर्थात् महाकाव्य रो लक्ष्य रूपक रै रूप में नीति युक्त ही हुवै। ड्राइडन री मानता वण इणी तरिया री है "To teach delight fully is the function of poetry" अर्थात् कविता से प्रयोजन मधुर नीति सूं सिक्षा देवणो हुवणो चाहिजै। पण आगै वो सिरफ आनन्द नैं ई सिरै प्रयोजन मानैं, सिक्षा नैं गौण –"Delight is the Chief, if not the only end of poesy; instruction can be admitted but in the second place; for poesy only instructs as it delights."

इण भांत ड्राइडन रै मुजब काव्य री सफलता आत्मा नैं प्रभावित करता हुया पाठक रै मनोभावां नैं उद्वेलित कारणो है। इणी वास्तै वो आप रै वास्तै लिख्यो है – "My chief endeavours are to delight the age in which I live" इण कथन सूं साफ जाहिर है क ड्राइडन रो खास काव्य प्रयोजन 'आनन्द' इज है।

18वैं सइकै सूं पास्चात्य विद्वानां री इण नीतिवादी दीठ में बदळाव आयो। इण सइकैरा जर्मन विद्वान शिलर काव्य अर कलावां रो खास उद्देस्य 'आनंद' देवणों बतन्खयो। 19वीं सदी में आ धारणा ओजू पुख्ताऊ व्ही। वर्ड़सवर्थ, कॉलारिज, शैले जैड़ा स्वच्छन्दतावादी (Romantic) कविसर काव्य रों प्रयोजन आल्हाद नैं इज मान्यो। आं कवियां री दीठ में सौंदर्याभिव्यक्ति इज काव्य–प्रयोजन मानीजियो। कॉलरिज रै सबदां में कवि आपरै पाठकां नैं नीति रो उपदेस देवै पण इण उद्देस्य रो बुनियादी माध्यम हुवै आनंद। आगै चाल'र वो सुद्ध रूप सूं काव्य रो प्रयोजन आनंद नैं ई थरपै– 'काव्य रो मूल प्रयोजन आनंद ई है अर वो आनन्द सौंदर्य रै माध्यम सूं ई मिळणो चाहिजै।' उणा री मानता है क जठै फूटरापो हुवैला उठै इज आनंद हुवैला।

इणी भांत री बदळीजती मानता वड्सवर्य री है। वै काव्य रो अेक मात्र प्रयोजन आनन्द नैं ई मानैं पण ओ आनंद उणां री दीढ में भी लोकहितकारी हुवै। वै कैयो क 'काव्य री उपयोगिता आई है क या तो वो पाठकां रै हिरदै माय सद्प्रभाव न्हाकै, उणा रो ग्यान बधावै कै उणां री मानसिक अर नैतिक स्वास्थ्य अर सुख सारू उपयोगी हुवै। आं विचारां रै सागै ई वै बतळावै, साचै कवि रो कर्त्तव्य पाठकां री भावनांवा रो परिस्कार करणा

है, वांणी भावनांवा – नैं ओजू संतुळित सुद्ध, अर प्रकृति–अनुरूप बनावणा है – "Readers must be humbled and humanised, in order that they may be purified and exalted. "

रोमांटिक कवि शैले काव्य अर जीवन रो अटूट संबन्ध मानता हुया कैवै जिण कविता में जीवन जगत रै सांच री अभिव्यक्ति कोनी हुवै, वा कविता कैलावण जोग नहीं।' इण रै सागै ई वै आनन्द नैं काव्य रो प्रयोजन मानता थका कैवै – "A poem is the very image of life expressed in its eternal truth..... poetry is even accompanied by pleasure all spirits on which it falls open themselves to receive the wisdom which is mingled with delfight."

रोमांटिक विचारधारा रै जुगरै उपरांठ यूरोप में लोकमंगल नैं काव्य रो प्रयोजन मानणवाळा री संख्या बधी। रस्किन साहित्य रो उद्धेश्य greatest good of the greatest number अर्थात् अधिकाधिक जनसमुदाय रो ज्यादा सूं ज्यादा सुख मान्यो। टॉलस्टाय कला (काव्य) नैं मानव–अेकता रो साधन मानैं हा – 'सैवट, आ (कला) आनन्द कोनी, बल्कै मानव–अेकता रो साधन है जिकी मानव मानव नैं सहअनुभूति सूं आपस में बधावै।' मैथ्यू अर्नाल्ड पण इणी मानता रा पखधर हा। उणांरी दीठ में साहित्य रो आदर्स अर कसौटी लोकमंगल हुवणो चाहिजै, काव्य रो प्रयोजन आनन्द नीं हुयर मिनख रो आतम विकास अर समाज रो उत्थान हुवणो चाहिजै। वै मानता हा क कवि री महानता इण बात में कोनी क वो कला री दीठ सूं कित्ती फूटरी काव्य रचना करी, बल्कै इण बात में है क उण रो साहित्य जुग री साहित्यिक अर सामाजिक जरूरतां नैं किण सींव लग पूरी करै। आपरी इण मानता मुजब उमर खैयाम री भोगवादी नीति रो ई विरोध करै। इण भांत अर्नाल्ड काव्य रै प्रयोजन रूप में आनंद री बजाय लोकमंगल (नीति) नैं महत्व दिरावो।

8.4.1 प्रमुख प्रयोजन : कला कला सारू कै कला जीवन सारू

19 वैं सड़कै रै आखिर में यूरोप में इण मानता रो प्रचार बध्यो क कला (काव्य कै साहित्य) अर नीति में कोई सम्बन्ध नहीं हुवै। वै अेक–दूजै सूं अेकदम न्यारी है अर उणा रो क्षेत्र पण जुदा है। इणी दीठ सूं स्विनबर्न कैयो क 'कला रो मूल्यांकन करण सारू नैतिक मूल्यां रो आधार उचित नहीं – ओ अनावस्यक है। अतः काव्य कै कला रै मूल्यांकन री कसोटी नीति री बजाय सौंदर्य हुवणो चाहिजै।' इण रै पूठै वाल्टर पेंटर, व्हिसलर आद विचारक कला कला रै वास्तै (Art for the sack of art) सिद्धान्त री सरूआत करी। ऑस्करवाइल्ड अर डॉ. ब्रेडले इण नैं पूरो समर्थन दिरायो। करी मानता रैयी क' कवि कै कलाकार कविता या कला–कृति री रचना करती दांण कोई ठावै प्रचारवादी उद्देस्य नैं लेय'र रचना कोनी करै। कवि कै कलाकार री प्रतिभा माथै कोई बंधण नी हुवणो चाहिजै। उणरो स्वच्छन्द प्रस्फुटण हुवणो चाहिजै। कलाकार रो उद्देस्य काव्य कै कला रो सिरजण करणो हुवै, अतः उणनैं किणी प्रयोजन रो सिकार नीं हुवणो चाहिजै।' इण बाबत ब्रडले आगै कैवै – "First this experience is an end itself, is worth having on its own account" अर्थात् काव्यावस्वाद्य खुद ई आपरो लक्ष्य हुवै। उणरी निजू अहामियत है। जीवन री दूजी मानतावां रै सागै उणरो कोई मेळ कोनी।

दूजी कांनी अेक ओजू मत थरपीजियो, जिणरी मानता ही क 'कला कला सारू' मत रा समर्थक जै कला रै नांव माथै भूण्डी, अस्लील, दूसित अर वीभत्स साहित्य री रचना करैला तो बीनै समाज – कींकर अंगैजेला। इणी मत रा प्रबल समर्थक आई.ए. रिचार्ड हा। वै नैतिकता रेा सही अरथ में (रूढ़िवादिता रै अरथ में नहीं) व्याख्या करता हुया लोकमंगल नैं काव्य रो खास उद्देस्य बतळायो अर, वी नैं जीवन सारू जरूरी मान्यो –"Calture, religion, instructions in some special senses, softening of the passions and furtherence of good senses may be directly concerned in our judgements of the poetic values of experiences" अर्थात् अनुभूतियां नैं काव्यगत मूल्यां रै ठावै करण वास्तै संस्कृति, धरम, सिक्षा आद आपरै खास अरथां में अर भावनावां रो परिस्करण नैं सद्भावां रो प्रसार पण आधार बणाया जा सकै।

इण भांत पास्चात्य काव्यसास्त्र में काव्य प्रयोजन बाबत अबै दो सिद्धान्तां री सरूआत हुयगी –

1. कला कला रै वास्तै, अर
2. कला जीवन रै वास्तै।

अजै आथूणै विद्वानां सामै कला कै साहित्य (काव्य) री व्याख्या इणी दीठ सूं हुवै।

1. कला कला रै वास्तै (Art for the sack of art) -

पास्चात्य काव्यसास्त्र में काव्यप्रयोजन मुजब ओ मत वाल्टर पेंटर री सोच है। उणां रै मुजब कलाकार रो कर्तव्य 'थूळ फूटरापै (सौंदर्य) रै माध्यम सूं सूखम सौंदर्य री आराधना करणो है। वै मानैक सौंदर्य – साधना सारू नीतिवाद नैं काव्य रो अंग नीं बनण देवणो चाहिजै। इण वरग रा विचारकां ऑस्करवाइल्ड आद विद्वान आ थरपणा करी क कला री उपयागिता सामाजिक नीं हुय' र फगत निजू आनंद है। वास्तव में कला रो मनोहारी फूटरापो ई इणरो अन्तिम प्रयोजन है। इण भांत कला आपोआप में स्वतंत्र, सूंपरण अर स्वच्छन्द हुवै।

जे.ई. स्पिनगार्न अर ब्रॉडले जैड़ा विद्वान इण सिद्धान्त नैं सिरै पुगायो। इण बाबत वै कैयो' समैय रै परै अर किणी बारली बस्तु नैं प्रयोजन रूप सूं कला रो नियामक मानणो कला री सत्ता में अविस्वास प्रगट करणो है। उणनैं पराधीन बणा देषणो है।' स्पिनगार्न तो अठै ताई कैय दिरायो क 'सुद्ध काव्य माय सदाचार–दुराचार सोदणो अेडो है, ज्यांन रेखागणित रै समत्रिकोण त्रिभुज नैं सदाचारपूर्ण कैवणो अर सम द्विबाहु त्रिभुज नैं दुराचारपूर्ण सिद्ध करणो।

कला रै इण सिद्धान्त रै विकास में फ्रायड रै दमितवासना अर स्वप्न सिद्धान्त रो ई आणूथो सै 'योग रैयो। पास्चात्य विद्वानां री यथारथवादी सोच पण इण नैं बधायो। यथारथवादियां री सोच मुजब' मूल रूप में मानव भी पसुव्रति सूं बेसी कोनी। अतः सदाचार अर नीति उणरो सुभाव नीं बण सकै।

दार्सनिक साहित्यकार क्रौंचे भी आपरै अभिव्यंजनावाद में कलावादी विवेचन सूं इण सिद्धान्त री सरावणा कीधी। वै कलात्मक सिरजण नैं सहजानुभूति री क्रिया मानता हा। उणां री आ मानता पण ही क कलाकार कला–साधना कांनी आतम सुख वास्तै बधै। इण भांत क्रौंचे रै मुजब कला अर सहजानुभूति रो अटूट संबन्ध हुवै। कलाकार आपरी सहजानुभूति नैं पूरी तरियां सूं अभिव्यक्ति देवण सारू प्रयत्नसीळ रैवै। आ अभिव्यंजना आन्तरिक हुवै अर उणी में सौंदर्य तत्त्व रो वास हुवै – "The aesthetic fact is altogether completed in the expressive ela boration of the impressions". स्कॉट–जेम्स क्रौंचे री इण धारणा रो आं ओळियां में खुलासो करै – "In Croce's philosophy art is nothing but intution or the expression (within the mind) of impressions. The mind is always forming or half forming intutions...."

इण भांत कलावादियां री दीठ में विसैय कोई भी हो – नैतिक – अनैतिक, जै कलाकार उणमें सौंदर्य री अनुभूति करा देवै तो आ उण री सिद्धि है, अर वो दरसाव सरावणजोग है। इण सूं साफ जाहिर हुवै क कला रो उद्देस्य कै प्रयोजन बाह्य नहीं, आपरै मायनै नीपज्योड़ी सौंदर्यानुभूति इज हुवै। अतः वो अनैतिक नैं भी सुन्दर मानै तो, उणरै वास्तै कला रो ओ इज प्रयोजन है।

2. कला जीवन वास्तै –

पास्चात्य काव्यसास्त्र में काव्य कै साहित्य अथवा कला रै प्रयोजन मुजब इण सिद्धान्त नैं मानणवाळा पूर्व स्वच्छन्दतावादी विद्वान हैं। भारतीय विद्वान पण इणी सिद्धान्त रा समर्थक हैं। आं विद्वानां रै अलावा आधुनिक आथूणै विचारकां इज इण सिद्धान्त नैं खास महत्व दिरायो। रास्किन तो खुली घोसणा करी क मिनख री भावनां नैं हित – साधनार्थ दूजां तांई पूगावणो ई कला रो काम हुवै – "In art is the expression of one sout talking to another" मैथ्यूअर्नाल्ड तो साफ कैवै "Poetry is at bottom a Critisism of life" अर्थात् कविता मूलतः जीवन री आलोचना हुवै। कविता नैं जीवन सारू जरूरी मानण रै कारण ही वो शैले, बायरन, कॉलरीज आदि कवियां री निंदा करी है। शैली बाबत वो लिख्यो – "beautiful and ineffectual angel beating in the void his luminous wing in vain" अर्थात् व अेक सुन्दर पण प्रभावहीण देवदूत है, जिको बिरथा ई सून्य में आपरा चमकीला पंखां नैं फड़फड़ा रैयो है। इणी भांत कॉलरिज मुजब उणरी धारणां है "Poet and Philosopher wrecked in a mist of opium" अर्थात् वो अेक अैड़ो कवि अर दार्सनिक है जिको अफीम री कालिख में गमगो है।

बेन जोनसन पण मानै क काव्य रो बुनियादी उद्देस जीवन जीबा रै आदर्स नेमां रो निरूपण है – वस्तु रो सिरजण ई काव्य री आत्मा है। इस सिद्धान्त नैं हेमिल्टन री मानता पण पुख्ताऊ बणावै 'कलाकार वो है जिको आपरी कल्पना – मिश्रित अनुभूतियां नैं आनन्द अर दूजै रै हित–साधन सारू अेक उणियारो दिरावै।

8.5 इकाई रो सार

सैवट, पास्चात्य विचारक साहित्य सबद नैं व्यापक रूप में बरतीजियो, पण कला रै संदर्भ में सक्ति रै साहित्य नैं ई महत्व दिरायो। इणी संदर्भ में वै उणरै तत्वां, हेतुवां (प्रेरणावां) अर प्रयोजन माथै विचार करयो। आथूणै विद्वानां मुजब ओ साहित्य गद्य अर पद्य रूपां अर उणरी आन्तरिक विधावां में लिखिजियो। इण साहित्य री समीक्षा सारू अै विद्वान भाव, कल्पना बुद्धि अरं सैली तत्वां नैं महताऊ मानैं।

साहित्य तत्त्वां री दाई इज पास्चात्य विचारक काव्य कै साहित्य सिरजण रै कारणां माथै ई विचार करयो। प्लेटो सूं अजैलग रा विद्वान भारतीय काव्यसास्त्रियां री भांत इज प्रतिभा, अभ्यास अर व्युत्पत्ति नैं काव्य हेतुवां रै रूप में अंगैजियां। अै विद्वान आं रो विस्लेसण आं तीन कारण सागै करै – प्रेरककारण, निमित्त कारण अर उपादान कारण, ज्यां नैं म्हां खुलासै रूप में यूं पेसकर सकां – 1 विवेक 2. सास्त्रग्यान 3. सौंदर्यानुभूति 4. संवेदनसीळता 5. कलात्मक अभिव्यक्ति।

पास्चात्य काव्यसास्त्र में काव्य – प्रयोजन मुजब तीन मत रैया –

1. अेक मत रै मुजब काव्य रो प्रयोजन सिरफ लोकमंगल है। प्लेटो, रस्किन, टॉलस्टाय आद इणरा समर्थक हैं।
2. दूजै मत मुजब काव्य रो सम्बन्ध फगत आनन्द पावती है। इण मानता मुजब नीति रो साहित्य सूं कोई सम्बन्ध कोनी। इणरा अनुयायी स्वछन्दतावादी आलोचक शिलर, पेंटर, शैलैआद है।
3. तीजै मत मुजब काव्य रो प्रयोजन नीति सापेख आनन्द री पावती है। इणनैं म्हां समन्वयवादी विचारधारा पण कैय सकां। अरस्तू निओतालमेस, ड्राइडन, मैथ्यू अर्नाल्ड आद विचारक इण मत रा समर्थक हैं। अै विद्वान आनन्द नैं अंगैजता हुया ई नीति नैं काव्य सारू जरूरी मानै।

19वै सइकै रै आखिर सूं यूरोप में काव्य रै प्रयोजन मुजब दो सिद्धान्त मानीता हुयगा। 1. कला कला सारू अर 2. कला जीवन सारू। पैलै सिद्धान्त रा अनुयायी वाल्टर पेंटर, जे.ई. स्पिनगार्न, वर्डसवर्थ, शैले, फ्रायड, क्रौंचे आद रै मुजब कला सिरफ सौंदर्य री अभिव्यंजना करै। इणरा सुन्दरता अर विरूपता कवि कै कलाकार री दीठ माथै आधारित है।

पण ओ सिद्धान्त ज्यादा समै लग नीं ठैहर सक्यो। प्लेटो आद री मानता नैं मानणवाख आधुनिक विचारक रस्किन, मैथ्यूअर्नाल्ड, बेनजानसन आद साहित्य में लोकमंगलकारी भावना नैं जरूरी मानता थका उण नै जीवन सारू अनिवार्य रूप में अंगैजियो अर काव्य जीवन सारू सिद्धान्त री थरपणा व्ही।

वस्तुतः काव्य (साहित्य) कै कला जीवन सूं अळगी हुय नीं सकै। उणरो जीवन सूं घणो नैड़ै रो सम्बन्ध हुवै। साहित्य समाज रो दरपण हुवै। समाज रो पड़बिम्ब हुवै। उणमें समाज में प्रचलित भूण्डी, फूटरी भावनावां रो समाहार हुवै। अतः साहित्य कै कला सिरफ भूण्डै आनन्द री अनुभूति कोनी। वो तो लोकहितकारी सौंदर्यानुभूति करावण वाळो बिरमानंद सहोदर रूपी रस रो आनन्द कराय' र समाज री सुख–सान्ति में बिस्वास करणवाळो हुवै। इणी वास्तै साहित्य कै कला सत्यं – सिवं–सुन्दरम् नैं कथीजै।

8.6 अभ्यास रा प्रस्न

1. साहित्य रै अरथ अर सरूप रो खुलासो करता हुया पास्चात्य काव्यसास्त्रियां द्वारा थरपीजिया साहित्य – तत्त्वां री विवेचना करो।
2. पास्चात्य दीठ सूं सैली तत्त्व री व्याख्या करतां थकां साहित्य रै जीवन सारू महतव नैं थरपो।
3. पास्चात्य विचारकां रा काव्य–हेतुवां बाबत विचारधारा री समीक्षा करो।

4. पास्चात्य विचारकां रा काव्य हेतुवां बाबत दरसाया कारणां रो वरणांव करो।
5. पास्चात्य विचारकां री नीतिवादी विचारधारा नैं समझावो।
6. पास्चात्य काव्यसास्त्र में काव्य–प्रयोजन बाबत विचारधारा रो खुलासो करो।
7. 19वैं सइकै पूठै पास्चात्य विद्वानां रै काव्य – प्रयोजन बाबत मानतावां री समीक्षा करो।
8. कांई काव्य रो मूल उद्देस्य सिरफ आनन्द री पावती इज हुवणी चाहिजै कै उण री उपयोगिता जीवन वास्तै भी जरूरी है ?
9. कला कला सारू कै कला जीवन सारू' आप आं विचारधारां में सूं किण विचाराधरा नैं ठीक मानो? तरक सहित पडूत्तर लिखो।
10. पास्चात्य काव्यसास्त्र में काव्य प्रयोजन सीर्सक सूं अेक सारगर्भित निबन्ध लिखो।
11. भारतीय अर पास्चात्य दीठ सूं काव्य–प्रयोजन री समीक्षा करो।

8.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. नगेन्द्र – पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा।
2. डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा – पाश्चात्य काव्यशास्त्र।
3. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्ता – पाश्चात्य काव्यशास्त्र।
4. सं. धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोश, भाग अेक।
5. डॉ. रामप्रकाश – समीक्षा – सिद्धान्त।
6. डॉ. भागीरथ मिश्र – काव्यशास्त्र।

इकाई – 9

प्रमुख चिंतक– डॉ. आई. अे. रिचर्डस अर वांरा सिद्धान्त

इकाई रो मंडाण –

9.0 उद्देस्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 उपयोगिता

9.3 काव्य सिद्धान्त

9.3.1 भूमिका

9.3.2 विज्ञान अर साहित्य में अन्तर

9.3.3 मानसिक अनुभव रा स्त्रोत

9.3.4 काव्य अर समर्पण

9.3.5 काव्य री भासा

9.3.6 कला रो प्रयोजन

9.3.7 काव्य रा मूल्य

9.3.8 काव्य अनुभूति अर कला

9.3.9 कला मुजब विचार

9.3.10 कला अर नीति

9.3.11 कलात्मक समीक्षा रा काम

9.3.11.1 आसय

9.3.11.2 भाव

9.3.11.3 ध्वनि

9.3.11.4 उद्देस्य

9.3.12 व्याख्याता अर आलोचक में भेद

9.3.13 व्याख्या अर व्याख्याकार तांई जरूरी सरतां

9.4 इकाई रो सार

9.5 अभ्यास रा प्रस्न

9.6 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

9.0 उद्देस्य –

पास्चातय काव्य सास्त्र रै अळगै–अळगै विद्वानां सूं परिचै करवाणो अर उणां रै कृतित्व मुजब राज स्थायी भासा रै विद्यार्थियाँ नै गैराई सूं समझावणो आपणो उद्देस्य है। पस्चिम रै विद्वानां जिका साहित्य रै अलावा दूजै क्षेत्रां सूं साहित्य में आया उणां आप रा घणमोला विचार साहित्य नै दिया। इण में अेक नांव रिचर्ड्स रो भी है। इण इकाई में आप भणस्यो –

1. साहित्य अर विज्ञान में कांई फर्क हुवै ? ओ जाणस्यो ?
2. कवि आप री बात श्रोता तक कींकर संप्रेसित करै।

3. साहित्य मुजब व्याख्याता अर आलोचक री कांई भूमिका हुवै ? आद।

4. डॉ. आई. अे. रिचर्ड्स रा साहित्य अर आलोचना मुजब कांई विचार हा।

9.1 प्रस्तावना :

अेम. अे. राजस्थानी रै इण प्रसन–पत्र में आप पास्चात्य साहित्य समीक्षक आई. अे. रिचर्ड्स रै विचारां मुजब अध्ययन करोला। आई. अे. रिचर्ड्स मनोविज्ञान सूं साहितय में आया इण खातर साहित्यिक समीक्षा मुजब विचारां पर मनोविज्ञान रो घणो प्रभाव देख्यो जा सकै। उणां साहित्य समीक्षा नै मनौविज्ञानिक द्रिस्टी दी। इण इकाई में आई. अे. रिचर्ड्स रै विचारां रो अध्ययन कर्‌यो जावैलो।

9.2 उपयोगिता :

साहित्य नै समझणे तांई उण रै गहन अध्ययन अर आत्मा तक पूगणै तांई समीक्षक, रचनाकार अर पाठक रै विचाळै पुळ रो काम करै। समीक्ष्कर रचना ने समझणै तांई या उण रो मूल्यांकन करणै तांई आप रा विचार पाठक नै देवै जिण सूं पाठक भी रचना रो रसास्वादन कर सकै। आई. अे. रिचर्ड्स री मनो वैज्ञानिक द्रिस्टी पाठकां में साहित्य नै समझणै री अेक नवीं सूझ अर बूझ देवैली।

9.3 काव्य सिद्धान्त :

9.3.1 भूमिका :

आई. अे. रिचर्ड्स रै नूंवैं समीक्षा सिद्धान्तु रो पास्चात्य समीक्षा में घणो आदर है। उणां 'प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेटी क्रिटिसिज्म' अर 'साइंस अेण्ड पोयट्री' नांव रा समीक्षा ग्रंथ लिख'र साहित्य रै मनोविज्ञान विवेचन नै आगै बधायो अर 'प्रेक्टिकल क्रिटिसिज्म' जैड़ौ ग्रंथ लिख'र समीक्षा रै व्यौहारिक क्षेत्र में आप रो उल्लेख जोग जोगदान दियो।

9.3.2 विज्ञान अर साहित्य में अन्तर :

विज्ञान अर ललित कलावां रे आपसी सम्बन्ध अर भेद मुजब कावय सास्त्र में सरू सूं लेय'र आज तक विद्वान आलोचक गण खूब चर्चा करता रैया है। रिचर्ड्स भी आपरी पोथियां अर में इण सवाल पर गैराई सूं विचार कर्‌यो है। उणां रै म मुजब हर अेक वक्तव्य में वस्तु रो निर्देस कर्‌यो जावै। जद वस्तुआं सांच हुवै अर उणा विचाळै निर्दिरूठ सम्बन्ध भी सांच हुवै उण वक्तव्य नै वैज्ञानिक कथन कैयो जावै। जिण भांत समन्दर में पाणी जद भाप बण ज्यावै तो हळको होणै रै कारण ऊपर उठ ज्यावै पण ऊपर जाय'र ठण्डी हवा रै कारण फैरूं ठंडी होय'र भाप पाणी बण जावै अर मेह रै यप में बरसै। अठै दो सांच वस्तुआं अर उणां रै सम्बन्धां कानी इसारो कर्‌यो गयो है। इण खातर ओ कथन वैज्ञानिक कैयो जावैलो। इण भांत किणी कथन मे बतायेड़ी दा वसतुआं रो सांच अर झूठ होणो महताऊ हुवै पण उणां रै माध्यम सूं जद मिनख रा भाव (Feelings) इर अन्तर्वेग (Emotions) जाग ज्यावै तो अैड़ै कथन नै साहित्य कैयौ जावैलो। इण ने आपां साहित्य री वैज्ञानिक परिभासा अर पृस्ठभूमि कै सकां।

9.3.3 मानसिक अनुभव रा स्त्रोत :

रिचर्ड्स रै मुजब मिनख रै मानसिक अनुभव रा दो स्त्रोत है।

1. बाहरी जगत
2. सारीरिक अवस्था

1. बाहरी जगत :

विज्ञान रो सम्बन्ध बाहरी दुनिया सूं हुवै। विज्ञान रै सगळै निर्देसां रो आधार वास्तविकता पर टिकेड़ो हुवै। उणां रा परिणाम हरेक देस अर काल में अेक जैड़ा हुवै। किणी विज्ञानिक रचना नै समझणै तांई न्यायत्मक बुधी री जरूरत हुवै।

2. सारीरिक अवस्था :

साहित्य तांई ओ कतई जरूरी नीं हुवै कै उणा रै निर्देसा रो आधार वास्तविक हुवै। मानल्यो उण रो आधार वास्तविक ळो हुवै तो फेर भ उण रो मोल वास्तविकता सूं नईं बल्कि भाव अर अन्तर्वेगां नै जगावणाळी खिमता सूं आंक्यो जावै। कला रा निर्देस वास्तविक भस हुवै तो भी उणां रो सम्बन्ध अन्तर्वेगीय हुवै। इण नै आप इण उदाहरण सूं समझ सकौ कै अेक कविता या कहाणी में वर्णित घटनावां या पात्र वास्तविक ळे फेर भ उण रचना रो मूल्यांकन करती बखत उणां री वास्तविकता रो ध्यान नीं राख'र ओ देख्यो जावै कै उण में भाव या अन्तर्वेग जगावणै री कितरीं खिमता है। इण सूं उण री श्रेस्ठता रो अंकन कर्‌यो जावैलो। किणी रचना नै समझणै तांई कल्पनात्मक बुद्धि री दरकार हुवै। कलाकार रो तर्क अन्तर्वेगीय हुवै अर अन्तर्वेग मन री अेक भावनात्मक वृत्ति है अर भाव कल्पना नै जगावै। इणी कारण आलोचक किणी कृति नै समझणै तांई पैली कल्पना रा घोड़ा भजावै। जिकै भाव सूं कवि या कलाकार आन्दोलित हुयो है उण जैड़ी विसिस्ठ स्थिति रो चित्र अंकित कर्‌यो है बठै तक पूगणै तांई कल्पना रो आसरो लेणौ पड़ै। इण भांत कैयो जा सकै कै रिचर्ड्स रा अै विचार सुभाविक अर वैज्ञानिक है।

9.3.4 काव्य अर समर्पण :

रिचर्ड्स रै मुजब कवारो महत्व उण रै मन नै प्रभावित करणै री खिमता पर निर्भर करै। उणां रौ कैवणो है –

"Arts are the supreme from of the Communicative activity"

मिनख समाज में रैवणियों प्राणी है। हजारा बरसां सूं बो आप री भावनावां अर विचारां रो संप्रेसण (Communication) दूसरां ताई करणै में अभ्यस्त है। आप रै अनुभवां, भवनावां नै दूसरां तक पूगाणै री रूचि उण में सदा सूं रई है। मिनख रै मन में भाव या अनुभव सम्प्रेसण री क्रिया सूं पैली पैदा हुवै अर्थात् मिनख रै मन में जद कोई भाव या अनुभव पैदा हो ज्यावै तो बो उण नै किण भांत या कैड़ी भासा में दूसरै तक पूगावै औ निरणै करै। मिनख आप री प्रगति रै साथै–साथै सम्प्रेसण रा जैड़ा साधन आज तक प्रापत कर्‌या है उणां मं कलावां सूं श्रेस्ठ है। इण कारण कला री सफलता उण रै साधनां री सफलता पर निर्भर करै। रिचर्ड्स रो कैवणो है कै कलाकार नै सम्प्रेसक या समर्पक (Communication) मानणो सब सूं आछी बात है पण कलाकार खुद इण बात नै कोनी मानै। इणरो कारण ओईज है कै जिण बखत कलाकार रचना करणै में लीन हुवै उण बखत बो सम्प्रेसण कानी कोसीस कर अर सावचते होय'र पृवृत्त कोनी हुवै। दूसरा लोग उण री रचना नै आ बात जाबक गौण लागै। पण कलाकार चाये कीं कैवै इण बात सूं संप्रेसण रो महत्व कम कोनी हुवै। क्यूं कै कलाकार रे मन में ओ पख (संप्रेसण रो) बराबर बणयो रेवै। बो इण बात नै भली भांती जाणै कै जैड़ी कविता पाठक या श्रोता रै मन रै जितरीं जादा प्रभावित करैली या बा स्थिति जिकी उण रै मन में पैदा हुयी है उण सिरखी स्थिति पैदा करणै में सक्षम हुवैली तो बो सम्प्रेसण उतरों ही सफल हवैलो अर्थात् कविता उतरीं ई उत्कृस्ट या श्रैरूठ हुवैली।

अठै अेक सवाल ओ भी उठै कै बै केड़ा गुण है जैड़ा अेक कलाकार री सफल संप्रेसण में सहायता करै। इण मुजब रिचर्ड्स रो कैवणो है, ''साधारण मिनख अर कलाकार में सब सूं घणो फर्क अनुभव रै विस्तार, उण रै कंवळैपण अर सुंतरता में निहित हुवै।'' इण रो ओ मतलब हुयौ कै कलाकार रो अनुभव साधारण मिनखा री अपेक्षा ज्यादा विस्तार लिया हुयां अर कंवळो हुवै। कलाकार आपरै अनुभवां रो अळगै–अळगै तत्त्वां सूं सम्बन्धां री थापना करणै में भी साधारण मिनख री अपेक्षा जादा सुतंरता रो उपयोग करै। रिचर्ड्स रै मुजब भूजकाळ रै किणी अनुभव री उपलब्धी कलाकार तांई घणी जरूरी हुवै। अण रो ओ भी मतलब कोनी कै बो भूत या अतीत नै उण रे पूरै विवरण साथै याद राखै बल्कि ओ जरूरी है कै बो आप रे मन नें उण अतीत नै सुतंतर रूप सूं पुनर्प्रस्तुत (Reproduce) करै। इण खातर सिर्फ मन री उण अपूर्व दसा री प्राप्ती काफी है।

मन री इण अपूर्व दसा नै दुबारा प्रापत करणो अनुभवां रै पलां में पैदा होवणाहै आवेगां रै आसरै हुवै। जद तांई पुराणै आवेगां जैड़ा आवेग पैदा नीं हुवै, भूतकाल सिरखी बा मनोदसा दुबारा प्रापत कोनी हो सकै। इण बात नै आपां भली भांत जाणां ही हां कै जैड़ी मनोदसा में दूसरां री अपेक्षा जादा मनावेग हुवै उणा रै दुबारा प्रस्तुत

करणै री संभावना भी जादा हुवै। दूसरै सब्दां में इण भांत कै सकां कै अनुभाव जितरां जादा विसतार लियां हुवैला उणां री दुबारा प्रापती उतरीं ई सौ'जता सूं हुवली। अै मनावेग जितरां जादा संघटित रैवै, मनोदसा री प्रनर्प्रस्तुत होणै री संभावना भी उतरीं ज्यादा हुवै। इण कारण रिचर्ड्स कैवै कै इेक कवि नै चायजै कै बो किणी 'स्थिति' रै अळगै–अळगै अगां री ठीक–ठीक जाणकारी लेय'र उण स्थिति नै अखंड सूं ग्रैण करै। क्यूं कै 'वस्तु' री ठीक जाणकारी जद ई हुवै जद आपां उण रै अळगै–अळगै तत्त्वां री ठीक–ठीक जाणकारी लेय'र पूर्ण रूप में ग्रैण करणै में सामरथवान हुवां।

वस्तु या स्थिति री पूरी जाणकारी तांई कलाकार में अैड़ी जागरूक निरीक्षण तागत री दरकार हुवै जिण नै भारतीय काव्य सास्त्र में समाधी रो नांव दियो गयो है। इण साथै–साथै कलाकार में 'साधारणता' रो गुण भी दियो गयो है। इण गुण भी होणो चायजै क्यूं कै जद तांई उण रा अनुभव दूसरां रै अनुभवां सूं मेळ नीं खावैला, सम्प्रेसण रो काम पूरो नीं हुवैलो। संप्रेसण तांई ओ घणो जरूरी हुवै कै कलाकार रा जादातर आवेग अर उणां रा विभाव पाठक सिरखा होणा चायजै। जठै–कठै थोड़ा फर्क हुवै तो उण जग्यां कलाकार आपरी कल्पना री मदद सूं एण नै सम्प्रेसणीय बणा देवै।

इण भांत रिचर्ड्स रै मत मुजब तीन बातां जरूरी है –

1. कलाकृति री प्रतिक्रियावां अेकरस होणी चायजै।
2. बै पर्याप्त रूप सूं अळगी–अळगी भांत री होणी चायजै।
3. आप रै उत्तेजक कारणां सूं पेदा कर्यै जाणै लायक हुवै।

रिचर्ड्स सम्प्रेसण नै कला सूं बारै री तागत कोनी मानै। सम्प्रेसण नै कला सूं बारै री तागत कोनी मानै। सम्प्रेसण कलां रो तात्विक धर्म हुवै। कला सिर्फ मन री आन्तरिक क्रिया ई बण'र नीं रै जाणी जायजै उण सूं एस्थेटिक अनुभव भी निवेदित होणो चायजै।

9.3.5 काव्य री भासा :

काव्य में प्रेसणीयता रो माध्यम भासा हुवै। भासा अर्थ नै सूचित करै अर इण अर्थ रा च्यार भेद बताया गया है –

1. वाच्यार्थ
2. भाव
3. बोलण वाळै री वाणीगत चेस्ठा
4. अभिप्राय

विसय अर परिस्थिति भेद सूं अै च्यारूं भेद अळगै–अळगै अनुपातां में काम करै। अर्थ रो भाव साथै गैरो सम्बन्ध हुवै। रिचर्ड्स अर्थ अर भाव रै इण सम्बन्ध री अनुभूति रा तीन रूप मान्या है।

1. जठै अर्थ ई भाव रो बोधक हुवै।
2. जठै अर्थ ई भाव री अनुभूति रो सूचक हुवै।
3. जठै किणी खास प्रसंग रै कारण ई अर्थ अळगै–अळगै भावां रो सूचक हुवै।

काव्य री आस्वादन प्रक्रिया नै रिचर्ड्स छः अवस्थावां में बांटी है। बै छः अवस्थावां इण भांत है–

1. छपेड़ा सब्द आँख्यां सूं भणणा या ग्रैण करणा।
2. आँख्यां सूं प्रापत संवेदनावां रै मुजब बिंब ग्रेण करणा।
3. सुतंतर बिंब ग्रैण करणा।
4. अळगी–अळगी वस्तुआं रो बोध।
5. भावानुभूति

6. द्रिस्टीकोण सूं ताळमेळ।

इण रै माध्यम सूं ई स्थाई भाव री उद्दीपति नै बो काव्य रो लक्ष्य मानै।

9.3.6 कला रो प्रयोजन :

रिचर्ड्स रै मुजब सिर्फ भाव पैदा कर देणो ई साहित्य या कला रो प्रयोजन कोनी। किणी भी अनुभव रै माध्यम सूं जैड़ी प्रवृत्तियाँ पैदा करी जावै उणां री ई महत्त्व हुवै। उणां रे मत मुजब कला रो प्रयोजन सिर्फ सुख री अनुभूति कोनी हुवै। उणां रो कैवणो है कला सुख री हेतु कोनी सिर्फ सम्प्रेसण री हेतु है। कलाकार नै अगर सुख री अनुभूति हुवै तो बा इण बात नै लेय'र हुवै कै उण रै अनुभव री अभिव्यक्ति सफलता साथै कर दी है। इण रो मतलब हुयौ कै सुख री अनुभूति तो अभिव्यक्ति साथै जुड़ेडी प्रक्रिया है। साहित्य रो महत्व इणी बात में है कै उण नै मिनख री अनुभूतियाँ रै क्षेत्र नै और व्यापक बणावणो चायजै। साहित्य रो ओ फर्ज है कै बो व्यस्टि सूं जोड़ै अर अंकान्तिकता रा पड़दा नै उठा देवै।

रिचर्ड्स रो कथन है कै मन रै अळगै–अळगै आवेगां रै कारण उण रो समतोलन हुय जावै। इण समतोलन नै कारण पाछो ल्यावणै तांई ओ जरूरी है कै आवेग व्यवस्थित होय'र अेक सुर में हो ज्यावै। मिनख री जिणगाणी में असमतोलन अर समतोलन बराबर होंता रैवै। कविता रो प्रयोजन है कै बा आवेगां में संगति अर संतुलन री थापना कर अंक सुर री अवस्था पैदा करै। आवेगां नै अैड़ी विगत प्रदान करै कै मन या स्नायु मंडळ नै आराम पुगावै। अठै रिचर्ड्स कविता नै उपयोगिता साथै जोड़ देवै। उणां रै सिद्धान्त मुजब कविता अेक उपयोगी वस्तु है जिण री उपयोगिता मनोविज्ञान रै धरातल पर सिद्ध करी जा सकै। उणां रो मानणो है कै साहित्य री उपयोगिता दूजी वस्तु आं सिरखी है। इणीज कारण रिचर्ड्स कलावादियां रो घोर विरोध कर्‌यो।

उत्कृस्ठ कविता रो प्रभाव आत्म सम्पादन हुवै अर्थात् कविता आप रै रचयिता नै संस्कारित भी करै। रिचर्ड्स रै मुजब आ सन्तुलित अवस्था अेक कानी मन री सून्य अवस्था सूं अळगी है तो दूजी कानी उत्तेजना पूर्ण अवस्था सूं। इण कारण साहित्य या कला रो प्रयोजन ना तो पाठक रै मन में सून्य री स्थिति पैदा करणो है अद ना ही उण नै उत्तेजित कर उण री बाहरी क्रिया सूं दूर करणो। उण रो प्रयोजन तो अैड़ी मनः स्थिति पैदा करणो है जिण में संतुलन हुवै अर मिनख में बाहरी क्रिया तांई तत्परता पैदा हुय ज्यावै। रिचर्ड्स अेक तरां काव्य आणंद रे आस्वादन री मनौवैज्ञानिक व्याख्या करी है।

9.3.7 काव्य रा मूल्य :

काव्य रा मूल्य कांई है ? रिचर्ड्स रै मुजब इण रो निर्धारण मनोविज्ञान रै आधार पर होणो चायजै। काव्य रचना अेक मानवीय क्रिया है इण कारण उण रा मूल्य अर मान बै ई होणा चायलै जैड़ा मानवीीय क्रियावां रा हुवै। उणां रो कैवणो हो कै आपणी मूल्यांकन मुजब धारणावां रो सम्बन्ध मानसिक उद्वेगां सूं रैवै। इण उद्वेगां या आवेगां रो दो रूप हुवै –

1. प्रवृत्ति मूलक
2. निवृन्ति मूलक

प्रवृति मूलक में भूख, वासना या त्रिस्णा आद हुवै तो निवृत्ति मूलक में वितृस्णा, घृणा, निर्वेद आद हुवै। इण भांत जैड़ा प्रवृत्ति मूलक उद्वेगां री संतुष्टी करै बै घणामोला है। इणा नै सामान्य 'मूल्य मान' कैया जावै। मिनख री इण त्रिसणावां में कीं जादा महताऊ हुवै अर कीं कम। हरेक मिनख ओईज चावै कै उणां रै मन री अळगी–अळगी मानां री जादा सूं जादा संतुष्टी हुवै। मन री बै स्थितियां सब सूं घणी मूल्यवान हुवै जिण में मिनख री क्रियावां री सबसूं जादा अर सबसूं उत्कृस्ट संगति थापित हुवैअर मांगां रो कम सू कम संघर्स, कांट–छां, हनन अर नियमन हुवै। रिचर्ड्स नैतिकता री समस्या नै ठीक संगती या संघटना री समस्या मानै। मिनख रो व्यक्तिगत जीवण हुवै या सामाजिक जीवण इण रा संभवतम मूल्य मांगा री संगतीपूर्ण वैवस्था पर निर्भर करै। साहित्य रो मूल्य इणमें है कै बो मिनख रै आवेगा में संगती अर संतुलन री थापना करै। साहित्य में मूल्य उण प्रवृत्तियां रो है जैड़ी किणी अनुभव या मानसिक क्रिया सूं पैदा करी जावै। इण प्रवृत्तियां रो है जैड़ी किणी अनुभव या मानसिक क्रिया सूं पैदा करी जावै। इण प्रवृत्तियां रै गठन अर रूप पर उण अनुभव या मानसिक क्रिया रो मूल्य निर्भर करै

अर्थात् किणी भी अनुभव रो मोल उण रै पिछै पड़ेडै असर सूं आंकणो सायजै। इण भांत रिचर्ड्स साहित्य रै प्रभाव–मूल्य नै घणो महत्त्व देवै। बो साहित्य अर समाज रै गै'रै सम्बन्धा री थापना कर साहित्य नै समाज री तरक्की कारण वाळो, कल्याणकारी, प्रेरक अर पथ प्रदर्सक सिद्ध करै।

9.3.8 काव्य अनुभूति अर कला :

साहित्य में 'सत्यं सिवं सुनदरम' पर घणो पैली समं विच्यार होंतो आयो है। जर्मनी रै दार्सनिक कांट 'सत्य' रो सम्बन्ध औप पत्तिक बुद्धि सूं, 'सुन्दर' रो भावात्मक मनोविरत सूं अर 'सिव' रो क्रियात्मक मनोविरत जोड़् यो। रिचर्ड्स 'सत्य', सिवं, री व्याख्या करतां 'सत्यं' रो सम्बन्ध मिनख री बुद्धि सूं अर 'सिव' रो सम्बनध इच्छा सूं जोड़्यो पण उण 'सुन्दर' रो सम्बन्ध भाव सूं कोनी मान्यो। आज रा विचारक मानसिक क्रियासीलता री उण वृत्ति ना तो वस्तुआं भव नै स्पस्ट करै 'एसथेटिक वृत्ति' कैवै। आ वृत्ति ना तो वस्तुआं रै सुभाय मुजब कोई खोज करै कै वस्तु रो सांच कांई है अर ना उण रै इच्छापूरी करणै रो साधन मानै कै बा वस्तु किण भांत मिनख तांई उपयोगी है या हुवैली। इण सौन्दर्य वृति नै अेक खास सुभाय वाळी अर असम्बन्धित बताई है। इण रो ओ खास सुभाय दो तरीकां सूं कायम कर्यो गयो है। अेक रै मुजब अेक अजीब तरां रो मानसिक तत्व या सौन्दर्य भाव मिनख रै सौन्दर्यानुभव नै निर्दिस्ट करै अर दूजै मुजब रो खास लक्षण आत्मप्रेसण है। पण मनो विज्ञान ना तो सौन्दर्य गत भाव नै मानै उण ना ही आत्म प्रेसण नै। रिचर्ड्स अेक मनो वैज्ञानिक हो इण कारण उण सौन्दर्य रै अनुभव नै अेक नाम औपपात्तिक अनुभव जैड़ो ई मान्यो, बस उण रो रूप अेक खास भांत रो हुवै।

कई विद्वान एस्थेटिक अनुभव रा अै गुण जरूरी मानै

1. उदासिनता
2. वियोग
3. दूरी
4. निर्वैयक्तिकता अर आस्तिक व्यापकता

पण रिचर्ड्स रो कैवणो है अै अेस्थेटिक अनुभव रा गुण नीं होय'र निवेदन री दसा या उण रै असर री खासियत है। उण रै मुजब अेस्थेटिक अनुभव में विरूद्ध प्रेरणावां रो संतुलन हो ज्यावै। अैड़ी प्ररेणावां री साथै–साथै तुस्टी हुवै जिणां रो अेक साथै होणो मिनख तांई क्षोम रो विसय हुवै। अै सगळा अनुभव सगळा अनुभवां सूं बांध'र साथै ई जटिल हुवै। जितरां जादा सौन्दर्य रा अनुभव हुवैला उतरीं ई घणी जटिलता हुवैली। इण नै इण भांत भी कै सकां कै उण में अेक साथै तुस्ट होवणाळी प्रेरणावां अळगी–अळगी हुवैली अर तादाद में भी घणी हुवैली।

9.3.9 कला मुजब विचार :

कॉलरीज कल्पना रा छः अर्थ बताया जिण नै रिचर्ड्स भी ज्यूं री ल्यूं मानै। बै अर्थ इण भांत है–

1. कल्पना रै माध्यम सूं मिनख अैड़ी वस्तुआं री मूर्ति बणावै जिण नै आंख्यां सूं देखी जा सकै।
2. दूजै अर्थ में कल्पना अलंकार भयी भासा रै प्रयोग सूं जुड़ेडी है अर्थात् कवि जद अलंकारां रो प्रयोग करै तो उण में कल्पना सूं काम लेवै।
3. कल्पना री तीसरी अवस्था रो सम्बन्ध दूसरै मिनखां री चित्त री अवस्था, मनोवेगां ने सहजानुभूति साथै प्रस्तुत करणै सूं है अर्थात् कवि जद किणी चरित्र रो चित्रण करै तो पैली बो कल्पना में बिण पात्र नै जीवै।
4. कल्पना कलाकार नै जुगत रो कौसल प्रदान करै। इण सूं बो विरोधी तत्वां नै अेक साथै मिला देवै।
5. कल्पना मिनख री अेक मानसिक तागत है जिण रै माध्यम सूं वैज्ञानिक आम तौर पर नीं दीखण वाळी वस्तुआं में संगत अर सम्बन्ध दिखावै।
6. कल्पना रै माध्यम सूं कलाकार विपरीत अर विसम गुणां में ताळमेह बिठावै।

कल्पना रा सर्वश्रेस्ठ गुण अर काम अैईज है कै बा अळगा अर विपरीत मनावेगां, अनुभवां नै अेक रस कर उणां में सन्तुलन पैदा करै। रिचर्ड्स त्रसदी नै इणी कारण श्रेस्ठ काव्य मानं क्यूं कै उण में दो विरोधी भवां नै (भय, करूणा आद) अेक साथै उपस्थित कर उणां में समन्वय बिठायो जावै। इण भांत रिचर्ड्स कल्पनां रो काम सिर्फ बिम्बां री रचना तक सीमित कोनी मानै बल्कि उण सूं विरोध नै भी दूर कर्यो जावै। कल्पना रै माध्यम सूं कवि आवैगा ने भी व्यवस्थित करै जैड़ा अेक दिसा में भी जिका सामान्तर रूप सूं प्रभावित हुवै अर उणां में भी जिका अळगा–अळगा अर आपस में विरोधी हुवै। म्हारै विच्यार में कल्पना मुजब रिचर्ड्स रा अै विच्यार जादा व्यवस्थित अर उत्तेजक है।

9.3.10 कला अर नीति :

रिचर्ड्स नैतिकता री समस्या नै मन री मांगां री संघटन री समस्या मानै। इण भांत बिणां नैतिकता नै मनोवैज्ञानिक मानववादी नजरियै सूं निर्धारित करी है। उणां मुजब आछो बो है जिको घणभोलो है अर घण मोलो बो है जिको मन में संगीत मै संतुलन री थापना करै। उणां रो ओ भी कैवणो है कै कला घणमोला अनुभव उणां नै बतावै जैड़ा में अळगी अंगभूत मांगां री तुस्टी इण भांत हुवै कै उणां सूं जादा महताऊ मांगां री तुस्टी में रूकावट कोनी आवै। सुभ अनुभूति सूं मतलब उण अनुभूति सूं है जिण में उण रा मूलवर्ती आवेग सफल अर तुस्ट हो ज्यावै। रिचर्ड्स नैतिक सवालां नै आचार रै बोझ अर आंधा विस्वासां सूं भरेड़ा तत्वां सूं मुगत करवाणो जरूरी मानै। इण भांत कला री सफलता इण बात में है कै बा आवेगां नै संगठित करै अर अैडी परिस्थिति रो चित्रण करै जिण में कम सूं कम रोध, द्वन्द्व, नियंत्रण आद रो समावेस हुवै अर अैड़ी क्षय अर कुंठा नै दूर करणै तांई तत्पर हुवै। कैवण रो मतलब हुयो कै रिचर्ड्स हालांकि रूढ़ नैतिकता रै खिलाफ है पण बो मनोवैज्ञानिक नजरियै सूं नैतिकता नै अेक कलाकार तांई सुभाविक मानै। इण रो ओ अर्थ हुयो कै रिचर्ड्स आणंद रै साथै–साथै सहज नैतिकता नै भी कला रै साथै जोड़'र देखै।

'कविता, कविता खातर' सिद्धान्त रै समर्थ ब्रैडलै री जुगतियां रो खंडन करतां थकां भी रिचर्ड्स नीति अर कला रो आपसी सम्बन्ध स्वीकार कर्यो है। सत्कला री मूलभूत सरतां पूरी कर्यां पछै कलां नै मिनख रै सुख में बधोतरी करणै तांई लगणो चायजै अर दुखी, पीड़ित मिनखां रे उद्वार, उणां रे आपसी ब्यौहार में अनुभूति बधावणै रो कमा करणो चाजजै।

ब्रैडले रै मत मुजब सौन्दर्य री अनुभूति विसिस्ट अर आपणै आप में पूरी हुवै अर खुद ई खुद री साध्य हुवै। इण कारण उण रै मूल्यांकन तांई बो बीजै परोक्ष मूल्यां ने गैर जरूरी अर कला तांई घातक बतावै। बो संस्कृति, धर्म, सिक्षा, भावां रै कंवळैपण, यस, धन कमावणै आद नै परोक्ष मूल्य मानै अर काव्य रे मूल्यांकन में इणां नै नकार देवै। रिचर्ड्स रो इण मुजब जवाब है कै कवि तांई यस, धन कमावणो आद तो ठीक कोनी पण संस्कृति, धर्म, भावां रो कंवळोपण आद रो कलां सूं सीधो सम्बन्ध है, इणां बिना तो काव्य अर्थहीन सब्द मात्र रै ज्यावैलो। रिचर्ड्स रो ओ मत भारतीय आचार्या रै परम्परागत अर आधुनिक मत सूं पूरी तरां मेळ खावै।

ब्रैडले रै मत मुजब कल्पनात्मक अनुभूति री परख उण रो विरोध करतां थकां कैवै कै उणां री परख भीतर सूं कोनी हो सकै। उण री परख तांई आयां नै 'स्मृतियों' नै आधार बणाणी पड़ैलो, साथै ओ भी ध्यान राखणो पड़ैलो कै मिनख रै जीवण री महान संघटना में उणा रो कांई दर्जो है ? उण रै दर्जै रे आधार पर ई उण रो मोळ आंक्यों जा सकै।

ब्रैडले आ थापना भी करी कै सृजन प्रक्रिया में कवि नै अर अनुभव प्रक्रिया में पाठक नै परोक्ष सध्यां नै महत्व नीं देणो चायजै। इण भांत करणै सूं काव्य मूलयां रो ह्रास हुवै। इण बात में सांच रो अंस थोड़ो सो ई कै क्यूंकै सगहो कीं इण बात पर निर्भर करै कै साध्य कांई है ? अर कविता किण भांत री है ? कई तरां रै काव्य में तो परोक्ष मूलयां रै आगै सूं काव्य रो मोल कम हो ज्यावैलो पण कइयां मे काव्य रो मोह परोक्ष साध्य पर निर्भर करैलो।

ब्रैडले रो कथन है कै ''काव्य री प्रकृति आ कोनी कै बो वस्तु जगत रो कोई अंग या उण री नकल हुवै। उण री निजता तो इण बात में है कै बो अेक सुतंतर, अपणै नाम में पूरो, निरपेक्ष अर स्वायत्त जगत हुवै।'' उण

रै मुजब कविता रो प्रकृति नै आत्मसात करणै तांई पाठक नै भी उण दुनियां में दाखिल होणे पड़ैलो। उण रा ई नियम मानणा पड़ैला अर कीं बखत तांई इण भौतिक जगत नै भूलणो पडैद्यलों इण भांत ब्रैडले कविता अर जीवण में विरोध मानै। जद कै वास्तविकता तो आ है ब्रैडले रो ओ मत ठीक कोनी क्यूं कै काव्य जगत री सत्ता बाकी जगत री सत्ता सूं अळगी हो ई कोनी सकै। काव्य रे आणंद नै ब्रह्मानंद या लोकोत्तर आणंद चाये कैयो जावै पण बो इण दुनिया रै बीजै अनुभवां सूं केटड़ी भी कोनी हुवै। फर्क सिर्फ इतरों ई तो हुवै कै काव्य रा अनुभव कम अर टुकड़ां–टुकड़ां में हुवै। काव्य रा अनुभव साधारण अनुभवां री अपेक्षा जादा कंवळा अर भव्य हुवै। काव्य रा अनुभव संप्रेसण रै गुणां सूं भरपूर हुवै क्यूंकै बै थौड़े–घणै फर्क साथै अनेक लोगां रै मन रा अनुभव हो सकै। इण कारण कवि रो फर्ज है कै बो आप रै अनुभवां नै गंदा नीं होवण देवै उणां नै साधारणीकृत कर'र लोगां रै आस्वाद रो विसय बणावै। इण भांत रिचर्ड्स समीक्षा रै क्षेत्र में पैली सूं थापित रूढ़, धार्मिक अर नैतिक मान्यतावां रै विरोध ा में सुद्ध मनोवैज्ञानिक मत री थापना करी। आदर्सवादी, मानववादी, मनोवैज्ञानिक द्रिस्टीकोण उणां री सब सूं बड़ी देन है।

9.3.11 कलात्मक समीक्षा रा काम :

रिचर्ड्स मुजब व्याख्याता रो काम है कै बो कलाकृति मुजब मूर्त स्रिस्टी रो पुनर्रचना करै अर उण पुरर्नचना नै तार्किक बुद्धि सूं सब्दां रै माध्यम सूं अभिव्यक्त करे श्रच्न्ज्ञ नै भली भांत समझणै तांई बो उण रै असली रूप में देखै अर अैड़ी मानसिक दउसा पैदा करै जैड़ी रचना रै अनुकूल हुवै। रिचर्ड्स रो कैवणो है कै किणी लेख या वक्तव्य रे पूरै अर्थ में कई धारावां हुवै पण मुख रूप सूं च्यार हुवै। 1. आसय 2. भाव 3. ध्वनि 4. उद्देस्य।

9.3.11.1 आसय :

जेड़ौ रचना में सब्दां रै माध्यम सूं कैयो जाव। कवि रचना में कई बातां इण कारण कैवै कै पाठक उणां पर मनन करै अर उणां मुजब उणां रो विचार उत्तेजित हुवै। इण नै आसय कैयो जावै। आसय रो महत्व विज्ञान मुजब लेखां में घणो हुवै। कविता में उण रो हमत्त्व गौण हुवै। भाव मै कविता, लोरी, छोटै टाबरां तांई गीतां में तो और भी घणो कम हुवै।

9.3.11.2 भाव :

जिण वस्तु रो पाठक ज्ञान करणो चावे उण मुजब उण रा की भाव हुवै। कोई सुझाव या अनुराग री प्रबलता भी हुवै। कविता में तो भाव रो ई महत्व जादा हुवै। विज्ञान में कम अर गणित में तो हुवै नै कोनी।

9.3.11.3 ध्वनि :

भाव री अभिव्यंजना तांई लेखक ठीक–ठीक ध्वनियां अर अर्थवाळै सब्दां नैं चुणै। उण री भासा अलंकारां सूं सजेड़ी हुवै। इण नै ई ध्वनि कैयो जावै।

4.11.4 उद्देस्य :

उद्देस्य रो मतलब हुवै – बो चेतन या अचेतन लक्ष्य जैड़ो हरेक रचना में इण भांत घुळेड़ो हुवै जिण भांत पाणी में सक्कर। बो अैड़ो प्रभाव हुवै जिण नै सब्दां रै माध्यम सूं लेकख आपरै श्रोता या पाठक पर डालणो चावै। उद्देस्य भासण कला में मुख हुवै कविता में गौण।

9.3.12 व्याख्याता अर आलोचक में भेद :

व्याख्या ओलाचक रो आपस में फर्क बंतावतो रिचर्ड्स केवै कै व्याख्या आलोचना सूं पैली री चीज है। ओलोचक पैली रचना नै भणै, उण रो मनन करै पछै उण रै गण अर दोसां मुजब आप रो निरणै देवै। जद कै व्याख्याता रचना रो बोध ग्रैण करै। व्याख्याकार, रचनाकार री चित्त स्रिस्टी रो पुननिर्माण करै। व्याख्या, रचनाकार री किणी बिजी रचना सूं तुलना कोनी हुवै जद कै ओलाचना सील, क्यू कै बा मूल्यांकन भी करै। इण भांत व्याख्या रचना नै समझावणै अर भीतर तांई उतरणै रो काम करै। व्याख्या नै घणी नीं खींचणी चायजै क्यूकै इण सूं रस में रूकावट पैदा होणै रो खतरो हो ज्यावै। व्याख्या तांई रिचर्ड्स कई बातां जरूरी बताई है।

9.3.13 व्याख्या अर व्याख्याकार तांई जरूरी सरतां :

(क) व्याख्याकार नै किणी कृतिरी व्याख्या करती बारी उण में पूरी तरां लीन ज्याणो चायजै। उणनैरचनाकार रै उण अनुभव री पुनर्रचना करणी चायज जिण में कृति री रचना हुई। इण पुररूत्पादन रै बखत व्याख्याकार नै संवेदनसील होणो चायजै। पुनरूत्पादन करती बारी व्याख्याकार सामी कई रूकावटां आवै जिण में असंगत स्मृतियां, सन्नद्ध प्रतिक्रियावां, जादा भावुकता, निरोध, किणी खास धर्म, सम्प्रदाय या विचार मुजब आस्था या घृणा प्रमुख है।

रचना भणती बारी अगर उण सूं मिलती–जुलती कोई रचना भणेड़ी है तो उण री याद आणो सुभाविक है। इण सूं अर्थ भंग हो ज्यावै। इणी भांत सन्नद्ध प्रतिक्रियावां भी अर्थ ग्रैण में बाधक हुवै। अै रचना रै अर्थ ग्रैण में उण बखत रूकावट पैदा करै जद रचना में अैड़ै विच्यारां अर अन्तर्वेगां रो समावेस हुवै जिका पाठक रै मन में पैली सूं ई विराजै हा।

(ख) व्याख्याकार तांई किणी रचना री मौलिकता नै समझणै तांई रूढ़ियां सूं मुगत होणो जरूरी है।

(ग) ज्यादा भावुकता भी अर्थ ग्रहण करणै में रूकावट पैदा करै। इण में अनुचित भावनावां रो उद्रेक, भावनावां रो तेजी सूं संचरण, भावां री अपरिवक्वता (काचोपण) आवै। जादा भावुकता कारण रचना रो ना तो भली भांत मूल्यांकन हुवै अर ना ही अर्थ ग्रैण, क्यूं कै निरोध रै कारण व्याख्याता कई अैड़ा अनुभव पकड़णै में असमर्थ घटना जुड़ेड़ी हुवै। इण कारण व्याख्याकार नै अति वादिता सूं रैवणो चायजै।

(अ) किणी खास धर्म, सम्प्रदाय या विचार मुजब गैरी आस्था या घृणा भी अथ्र ग्रैण में रूकावट पैदा करै, क्यूं कै किणी रंग रा चस्मा लगायां पछै उण रंग में ई रंगैड़ो दिख्या करै। इण सूं कृति साथै न्याव कोनी हो सकै। व्याख्याकार आप री पूर्व धारणावां रो त्याग करयां पछै ई किणी कृति साथै न्याव कर सकै।

(ब) रिचर्ड्स व्याख्याकार नै सलाह देवै कै उण रो व्यक्तित्व ईमानदार अर आत्म समपूर्ण होणो चायजै। उण नै मेहनती ईमानदार अर नीर – खीर विवेकी होणो चायजै। व्याख्याकार नै पूर्वाग्रहां सूं मुगत होय'र ई रचना री व्याख्या करणी चायजै। कविता में ओ होणो चायजै, ओ नीं होणो चायजै, अैड़ो तो ज्यांवतो तो ठीक रैवंतो आद जुमला नीं कैवणा चायजै। व्याख्याकार रो उद्देस्य तो रचना में निहित सौन्दर्य नै पाठक तांई पुगावणो ई हुवै।

इण भांत व्याख्यात्मक अध्ययन आप री हद में रैय'र चोखे उपयोगी है। इलियट भी 'अतिरेक' नै नुक्सान पुगावणाळो मानै। इण तरां रिचर्ड्स रा सिद्धान्त अर विचार मनौवैज्ञानिक, सुभाविक, संतुलित अर असरदार है।

9.4 इकाई रो सार

रिचर्ड्स सूं पैली साहित्य में साहित्य रो प्रयोजन, साहित्य रा मूल्य, साहित्य अर नीति सास्त्र आद जितरां भी साहित्य नै लेय'र सवाल हा उणां नै रिचर्ड्स मनोवैज्ञानिक आधार दियो। उण ओ भी बतायो कै साहित्य दिव्य या अलौकिक कोनी। साहित्य री रचना समाज में रैय'र ई समाज तांई हुवै। इण भांत रिचर्ड्स 'कविता, कविता खातर' सिद्धान्त नै खारिज कर साहित्य नै उपयोगिता साथै जोड़'र देख्यो। रिचर्ड्स असली अर्थ में आदर्सवादी समीक्षक हो। उण री काव्य मुजब उपलब्धियां नै ऊपर सूं देखणै पर कोई फर्क कोनी दीखै पण उणां में आधारगत फर्क जरूर है। इण भांत रिचर्ड्स नै आदर्सवादी मनोवैज्ञानिक समीक्षक कैयो जा सकै। उण साहित्य नै समाज तांई कल्याण कारी, पथ प्रदर्सक अर प्रेरक बतायो। इण भांत रिचर्ड्स समीक्षा रै व्यवहारिक क्षेत्र में उल्लेख जोग काम कर्‌यो है।

9.5 अभ्यास रा प्रस्न

1. काव्य अर समर्पण मुजब रिचर्ड्स रा विचार लिखो।
2. कला रो प्रयोजन कांई हुवै ? इण मुजब रिचर्ड्स रा कांई विचार है।

3. सौन्दर्यानुभूति अर कला मुजब रिचर्ड्स रै विचारां री समीक्षा करो।
4. 'कल्पना' मुजब रिचर्ड्स रो कांई कैवणो है ?
5. कला अर नीति मुजब रिचर्ड्स रै विचारां री समीक्षा करो।
6. व्याख्याता अर ओलाचक में भेद करतां थकां व्याख्या करण तांई व्याख्याकार नै किण बातां रो ध्यान राखणो चायजै ?

9.6 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. प्रो. बृज भूसण सर्मा – पास्चात्य काव्य समीक्षा।
2. डॉ. सान्ति स्वरूप गुप्त – पास्चात्य काव्य सास्त्र।
3. प्रो. भागीरथ दीक्षित – समीक्षा लोक।
4. प्रो. डॉ. सुरेस अग्रवाल – भारतीय काव्य सास्त्र।
5. डॉ. नगेन्द्र – भारतीय काव्य सास्त्र।
6. डॉ. सान्ति स्वरूप गुप्त – साहित्यिक निबन्ध।
7. डॉ. राजनाथ सर्मा – साहित्यिक निबन्ध।

इकाई – 10

प्रमुख चिंतक – कॉलरिज अर वांरा सिद्धान्त

इकाई रो मंडाण –

10.0 उद्देस्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 कॉलरिज रो कल्पना सिद्धान्त

10.2.1 कल्पना अर ललित कल्पना

10.2.2 कल्पना सिद्धान्त रो दार्सनिक आधार

10.2.3 कल्पना रा भेद

(i) पैली कल्पना

(ii) गौण कल्पना

(iii) पैली अर गौण कल्पना में भेद

(iv) कल्पना रा काम

10.3 कल्पना सिद्धान्त री उपलब्धियां

10.4 कॉलरिज रा प्रमुख काव्य सिद्धान्त

10.4.1 काव्य री परिभासा

10.4.2 आछै काव्य रा गुण

(अ) छंद (ब) काव्य री तटस्थता

(स) प्रधान भाव री मौजूदगी (द) अलंकृत भासा

(च) दर्सन री अनिवार्यता (छ) कवि रा गुण

(ज) विचार री गैराई अर सगती

10.5 इकाई रो सार

10.6 अभ्यास रा प्रस्न

10.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

10.0 उद्देस्य

किणी भी देस या भासा रै साहित्य रो मरम समझण तांई, उण रो आलोचना सास्त्र चोखो मददगार हुवै। पच्छमी देसां रा साहित्य जगत में सुकरात, प्लेटो, अरस्तू सूं लैय'र आज तक जकां भी साहित्यिक सिद्धान्तां रो प्रणयन हुयो उणां आखी दुनियां रै साहित्य अर साहित्यकारां नै प्रभावित कर्‌या। उगणीसवैं सइकै में अंग्रेजी–काव्य में सुछन्दतावादी प्रवृत्तियां रो पूरो जोर दीखै। इण पुनरजागरण काल में मिनख नै ईसो कीं मान'र 'मानवतावाद' पर ध्यान दियो गयो। इण जुग में अैड़ा भी साहित्यकार हुया है। जका पुराणै साहित्य–सिद्धान्तां रो बहिस्कार कर साहित्यकार रै व्यक्तित्व अर उण री मौलिकता रो पख लेवै हा। वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, सैलै, कीट्स आद कवि समीक्षकां सुछन्दतावाद (कल्पना सिद्धान्त) री प्रतिस्ठा करी। उणां काव्य रो ध्येय आणंद प्रदान करणो मान पुराणी रूढ़ियां, परम्परावां सूं मुगती तांई कोसीस करी। इण जुग में कवि, आलोचक कॉलरिज रो प्रमुख स्थान है। उणां साहित्य समीक्षा रो सन्दर्भ दर्सन, मनोविग्यान अर तत्त्व मीमांसा सूं जोड़्यो। इण इकाई में कॉलरिज रै कल्पना सिद्धान्त अर उण रै साहित्यिक योगदान री समीक्षा करणो उद्देस्य है।

10.1 प्रस्तावना :

पच्छमी रोमानी आलोचनां नै सिखर तांई पुगावणियां में आध्यत्मिक दीठ अर आलोचना प्रतिभा सूं सम्पन्न रोमानी कवि कॉलरिज रो अैड़ो स्थान है जिण नै दूजो कोई आज तक छू भी कोनी सक्यो। उणां उण बखत रै बणावटी अर रूढ़ काव्य–मूल्यां रै उन्मूलन मे अर सुछन्दतावादी प्रकृति री प्रतिस्ठा करण में घणो महताऊ योगदान दियो। कॉलरिज अैड़ो पैलो आलोचक हो जिण दरसण अर काव्य रो ना टूटणावा समबन्ध बतायो। उणां साहित्यिक आलोचना नै मनोवैज्ञानिक दरसण सास्त्र सूं जोड़ी। उण री 'एनसियन्ट मेरिना' अर 'क्रिस्टोबल' आद रचनावां रोमानी काव्य सिल्प रो अमर रचनावां है। अर 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' आलोचना सास्त्र रो सरावण जोग ग्रन्थ है। इण ग्रन्थ में काव्य सास्त्र रै अलग–अलग अंगां पर जितरी गहराई सूं विवेचन कर्‌यो गयो है बो ओर कठै ई मिलणो मुस्किल है। इण बात पर सगळाई विद्वान अेकमत है कै उण रै चिन्तन रो आधार जर्मन दारसनिकां रो चिन्तन है पण इण सूं उण रो महत्त्व घटै कोनी। कॉलरिज रै 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' नै आर्थर साइमन्स अंग्रेजी भासा रो स्रेस्ठ आलोचना ग्रन्थ मान्यो है। हर्बट रीड उणां नै बीजै अंग्रेजी आलोचकां सूं महान बतायो तो आई. जे. रिचर्ड्स उण नै Forerrumer of the modern science of semanties कैयो। आज अमरीकी आलोचक अरस्तू पछै कॉलरिज रो ई विवेचन करै। कॉलरिज कवि करम रै साथै–साथै आलोचना नै भी उतरो ई महत्व दियो है। उण रै सिद्धान्तां में ''कल्पना सिद्धान्त'' घणो महताऊ है।

10.2 कॉलरिज रो कल्पना सिद्धान्त :

पच्छमी आलोचना री दुनियां में कवि जिण सगती सूं काव्य रचना करै उण सगती विसेस नै जिण सूं बो अलग–अलग विचारां या प्रत्ययां नै भेळा या संयोजित कर नुवैं–नुवैं बिम्बां री रचना करै उण नै फैंसी (Fancy) या इमेजिनेसन (Imagination) कैयो जांवतो। ड्राइडन इण रो मुख रूप सूं प्रयोग फैंसी रै अरथ में ई कर्‌यौ है। अठारवें सइकै में तो कल्पना अर ललित कल्पना रो प्रयोग उण सगती रो पर्यायवाची हो जिण सूं मन रा विचार आपस में रळ–मिळ'र नुवैं बिम्बां रो निर्माण करै। इण सगती नै उच्छृंखल मानी गई पण ड्राइडन रै मुजब विवेक या ज्ञान आद सूं इण पर नियंत्रण कर्‌यो जा सकै। बियां तो कल्पना अर ललित कल्पना रै भेदरी चरचा सत्रहवैं सइकै में ई होवण लागगी पण सैसूं पैली वैज्ञानिक आधार पर भेद कॉलरिज ई कर्‌यौ जिण नै घणा बरसां पछै आलोचना में मानता मिली। कॉलरिज फैंसी नै ललित कल्पना अर 'इमेजिनेसन' नै कल्पना बताय'र कल्पना रो दरजो ललित कल्पना सूं ऊँचो बतायो।

10.2.1 कल्पना अर ललित कल्पना :

अठै ओ सवाल उठणो सुभाविक ई है कै जद कल्पना अर ललित कल्पना दो ही तो इण नै अेक समझण रा कांई कारण हा ? आं दोनुवां नै आलोचक पैली अळग–अळग क्यूं कोनी पिछाण सक्या ? सरसरी निजर सूं देखतां तो दोन्यूं अेक सरीखी लागै क्यूं कै कल्पना अर ललित कल्पना सूं ई आप री संवेदनावां ग्रहण करै। मिनख आप री इन्द्रियां सूं जैड़ी संवेदनावां या ज्ञान हासिल करै उण नै बो सदैव ज्यूं रो त्यूं कोनी रैवण दे वो आमतौर पर बा संवेदनावां रो संस्लेषण कर उण सूं नुवीं संवेदनावां नै जलम देवै। मन जैड़ो कीं ग्रहण करै उण मुजब दो भांत री प्रतिक्रियावां है – विस्लेसण अर संस्लेसण। विस्लेसण सूं इन्द्रीय ज्ञान रै उण रै घटक तत्वां में गुणां अर तत्वा आद में बांट्यौ जावै। संस्लेसण सूं विस्लेसित करेड़ै तत्त्वां या गुणां रो संजोग कर नुंवै बिम्बां रो निरमाण करयौ जावै। अठै अेक उदारण सूं इण नै समझयो जा सकै –

नील परिधान बीच सुकुमार,
मृदुल अधखुला अंग।
खिल राह ज्यों बिजली का फूल,
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।

अठै 'मेघ वन' में खिलेड़ो बीजळी रो गुलाबी रंग रो फूल मन रै संस्लेषण सूं उपजेड़ो अेक बिंब है। मन में बीजळी, फूल, मेघ अर बन सगळां रा प्रत्यय मौजूद है। अठै बो आं सगळै तत्वां रो संजोग कर मेघ बन में बीजळी रो गुलाबी रंग रै फूल रो आविस्कार करै। इण में अेन्द्रिय प्रत्यय नै आपस में मिलार अणगिणत बिम्बां

नै बणाया जा सकै। इणां 'संस्लिस्ट' बिंबां नै बणावणावाळी मानसिक सगती नै पैली अेक इकाई समझ्यो गयो अर आ बात कदैई गंभीरता सूं सोचणै री कोसीस कोनी करीजी कै बिम्बां री रचना करणावाळी आ मानसिक तागत अेकाधिकार री हो सकै। इण बात मुजब आलोचक घणा सावचेत लागै कै कीं सुधरेड़ा बिंब सारथक अर सरस हुवै। बै विगतवार भी हुवै। बै दूसरां तांई आसवाद्य भी हुवै। जद कै कीं दूसरा संस्लेसित बिम्ब अनरगल अर उच्छृंखल हुवै। बै ना तो विगतवार हुई अर ना ही दूसरां तांई आसवाद्य बल्कै हास्यास्पद हुवै। इणमें पैली भांत रा बिंब कविता में हुवै अर दूजी भांत रा दिवा सपनै में। कविता रै बिंबां में अर दिवा सपनां रै बिंबा में विगत, अरथ अर असर देखतां धरती अर आसमान रो फरक हुवै पण रचना प्रक्रिया अेकसी हुवै। पुराणै आलोचकां रो ध्यान प्रत्ययां रै संयोग कानी ई मुख रूप सूं गयो अर इण संजोग नै साधणा वाळी मन री सगती नै कल्पना, ललित कल्पना आद नांवां सूं सम्बोधित कर्‌यो गयो। ड्राइडन कैयो है कै कविता रै बिम्बां पर विवेक रो नियंत्रण हुवै पण दिवा सपना बणाबणा वाळी अर कविता रा बिंब पैदा करणा वाळी सगतीयां में फरक कोनी कर्‌यो।

कॉलरिज दिवा सपनां री रचना करणाळी तागत नै ललित कल्पना अर कविता में बिम्ब रचना करणवाळी तागत नै कल्पना कैयो है अर आं दोनुवां में अेक भांत सूं फरक मान्यो है। उण मुजब फैंसी या ललित कल्पना अैड़ी सगती है जकी प्रत्ययां रो संस्लेसण तो करै पण ओ संस्लेसण रचनात्मक कोनी हुवै बल्कै जड़ अर बिखरेड़ो हुवै। आ अेक नीचै दरजै री तागत है जैड़ी मिनख री जिनदगी में दिवा सपनां री रचना तांई उपयोगी हुवै पण बा किणी सारथक आसवाद्य बिंब री रचना कोनी कर सकै। 'बायोग्राफिया लिट्रेरिया पोथी' में कॉलरिज कल्पना अर ललित कल्पना की क्रीड़ा की अचलता और निर्दिष्टता के क्षेत्र के अतिरिक्त और कोई ठिकाना। ललित कल्पना, वास्तव में देशकाल के अनुशासन से मुक्त स्मरण की एक रीति है और कुछ नहीं। वह इच्छाशक्ति के उस अनुभव मूलक व्यापार से पुष्ट और परिवर्तित होते हैं जिसे चयन शब्द से व्यंजित करते है। परन्तु साधारण स्मृति की भांति ललित कल्पना भी अपनी सम्पूर्ण सामग्री साहचर्य नियम से यथावत ग्रहण करती है।''

कॉलरिज री मानता है कै प्रतिभा (Genius) प्रज्ञा (Talent) सूं ऊंचै दरजै री हुवै उणी'ज भांत कल्पना (Imagination) भी ललित कल्पना (Fancy) सूं स्रेस्ठ हुवै। जिण भांत प्रतिभा नै प्रज्ञा री जरूरत हुवै बियां ई कल्पना नै ललित कल्पना री। हालांकि अै दोन्यूं अलग तागत (Faculties) है। कल्पना रो कमा अेकीकरण कर उण में सामंजस्य बिठाणो (ilnifying adn reconciling) है जद कै ललित कल्पना करति संयोजन (Combinatory) रो काम करै। इण संयोजन में सरसता अर मार्मिकता कोनी हुवै अर्थात् अर "Aggregater and associative power" हुवै।

कल्पना रो सम्बन्ध मिनख री आतमा अर मन सूं हुवै जद कै ललित कल्पना रो सम्बन्ध विचार या दिमाग सूं। ललित कल्पना निर्जीव तागत हुवै। बा निरंकुस, सुच्छन्द, विवेक रै अंकुस अर गंभीर लक्ष्य सूं रहित हुवै। कल्पना आत्मिक हुवै जद कै ललित कल्पना जान्तरिक। ललित कल्पना वस्तुआं रो ढेर लगावै। उणमें ना चुणाव करै ना कोई तरतीब देवै जद कै कल्पनां चीजां रो चुणाव कर उणां नै भेळी अर तरतीब देणै रो काम करै।

The materials lie ready formed for the mind and the fancy acts only by a sort Iustaposition. ललित कल्पना याद करणै रो अेक भांत रो तरीको है। कॉलरिज इण नै याद रो अेक प्रकार (Mode) बतायो है। वर्ड्सवर्थ ललित कल्पना रै 'आवर' अर कल्पना नै 'प्रवर' बताय'र दोनुवां नै ई रचनात्मक तागत कैयो है। कैयो जा सकै, सपैन्सर री कविता में कल्पना री प्रधानता है तो मिल्टन अर सैक्सपियर रै काव्य में भी।

कॉलरिज मुजब ललित कल्पना रै विपरीत कल्पना आतमा री तागत जैड़ी दिव्य तो है ई साथै रचनात्मक भी है। रचनात्मकता उण रा मूल गुण है इण करण विवेक रो ज्ञान कल्पना रो जरूरी अर अंतरंग गुण है। कल्पना जैड़ो बिम्ब विधान रचै उणमें संबधता, क्रमबधता, हरैक अंग में अेकता अर बै आस्वाध हुवै। ललित कल्पना अेक हेठे दरजै री तागत है। जकी बिम्ब रचना तो करै पण उण में वै बातां कोनी हुवै जकी कल्पना में हुवै इण कारण आनै दिवा सपना कैया जावै। जको याद रो अेक रूप हुवै। कॉलरिज रै बाद रा आलोचकां सामी कल्पना अर ललित कल्पना रो भेद साफ हुग्यौ अर कवि री कल्पना नै ललित कल्पना सूं ऊँची तागत मानी गई। पण कॉलरिज कल्पना रो जैड़ो दार्सनिक विवेचन कर्‌यौ उण नै मानता कोनी मिली। अगर इण विवेचन नै अळगो कर'र देखण सूं कॉलरिज रा कल्पना विवेचन में जैड़ा गुण बताया है, उणां नै मानता मिली है।

10.2.2 कल्पना सिद्धान्त रो दार्सनिक आधार :

कॉलरिज पर जर्मन विचारधारा रो घणो असर हो। उणरी आस्था आतमवादी चिन्तन में ही, इण कारण कल्पना सिद्धान्त नै आतमवाद रै आधार पर 'रूप री परिकल्पना' कैयो गयो है। कॉलरिज री मानता ही कै स्रिस्टी रचना ही आधार भूत सगती कल्पना ई है। उण मुजब ईस्वर कल्पना सगती री मदद सूं स्रिस्टी री रचना करी है। विसय, विसयी रो भाव अर विचारां रो दुंद ईस्वर री कल्पना री उपज है। जिण भांत संकर भगवान माया नै स्रिस्टी रचना रो कारण मानै उणीज भांत कल्पना स्रिस्टी रचना करै। कॉलरिज मुजब, ''ईश्वर अपनी दिव्य एवं विराट कल्पना शक्ति का निर्माण करता है तथा प्रकृति ईश्वर की कल्पना है।''

मिनख री चेतना में परमात्मा री चेतना रो अंस है इण कारण उणमें भी (मिनख री चेतना) रचनात्मक सगती (कल्पना) थोड़ै रूप में मौजूद रैवै। मिनख री आईज कल्पना सगती प्रकृति री नकल कर करूं सिरजण करै जिणसूं उण री आतमा नै आणंद मिळै। मिनख री आ कल्पना सगती रचनात्मक विवेकवाळी अर नुवैं सिरजण रै सहज गुण सूं भरपूर हुवै।

10.2.3 कलपना रा भेद :

कॉलरिज कल्पना रो दो भेद मानै। मुख्य या प्राथमिक कल्पना (Primary Imagination) प्रतिनिधि या विसिस्ट या गौण कल्पना (Secondary Imagination) आप रै ग्रंथ 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' में कॉलरिज कल्पना मुजब कैवै – ''मेरे विचार से कल्पना या तो मुख्य होती है या गौण। मुख्य कल्पना ही मेरे अनुसार समस्त मानव ज्ञान की जीवन्त शक्ति और प्रमुख माध्यम होती है। वह असीम होने वाली अनन्त सृजन प्रक्रिया की समीम मन में आवृत्ति होती है। गौण कल्पना को मैं मुख्य कल्पना की छाया मात्र समझता हू''। सचेतन संकल्प शक्ति के साथ उसका सह अस्तित्व होता है किन्तु फिर भी माध्यम का प्रकार वह वैसी ही होती है जैसी मुख्य कल्पना। अन्तर होता है मात्रा और क्रिया विधि का। पुनः सृजन के निमित्त उसका तिरोधान, विकीरण, विघटन होता है या जहाँ यह प्रक्रिया असंभव होती है। वहाँ भी आदर्शीकरण तथा एकीकरण का प्रयत्न तो होता ही है। वह मूलतः सजीव होती है वैसे ही जैसे (वस्तुओं के रूप में) सभी वस्तुएँ मूलतः अचल और निर्जीव होती है।''

(i) पैली कल्पना :

मुख या प्राथमिक कल्पना अैड़ी सगती है जिण रै माध्यम सूं मिनख रै दिखणवाळा जगत रो पूरो अर वैवस्थित ज्ञान हुवै। बा पूरै संसार रै पड़पंच री मिनख नै जाणकारी करवाय'र अेक–अेक चीज नै मन में मांडै। आ पूरै मानखै रै प्रत्यक्षीकरण रो मुख आधार है। आई'ज चेतना नै खण्ड–खण्ड कर विसय अर विसयी नै अळगा–अळगा मान'र चालै।

(ii) गौण कल्पना :

इण नै कला विधायनी कल्पना कैईजै। बा'रली दुनियां सूं इवणवाळी अेन्द्रिय सौन्दर्य नै नुवैं रूप–आकृति में ढाळणै रो काम गौण कल्पना ई करै जिणसूं परतख वस्तु में ज्यादा रमणीयता अर मोहकता आवै। गौण या विसिस्ट कल्पना कलाकारां में हुवै आम मिनख में कोनी हुवै। इणी कल्पना सूं कलाकार विसय अर विसयी रो मेळ करै। अलग–अलग रूपां नै मिला'र उणमें अेकरूपता री थापना करै।

(iii) पैली अर गौण कल्पना में भेद –

(1) प्राथमिक कल्पना परतख पर आधारित है पण गौण कल्पना आतमा, बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियां, इच्छा, भाव आद री मदद सूं कला री सिरजना में लागै।

(2) मुख कल्पना रै अस्तित्व पर ई गौण कल्पना दिलयौड़ी है अर्थात् मुख कल्पना जैड़ै ज्ञान, सामग्री आद रो संचै करै उण सूं बा आपरा उपकरण चुणै।

(3) मुख कल्पना रो काम अचेतन अर अनैच्छिक हुवै जद कै गौण कल्पना रा क्रिया व्यापार चेतन अर अैच्छिक हुवै।

(4) मुख कल्पना निर्माण अर संघटन करै पण गौण कल्पना विघटन अर संघटन, विनास अर निर्माण दोन्यूं ई करै।

(5) प्राथमिक कल्पना आम मिनख में हुवै जद कै गौण कल्पना कलाकार में ही हुवै।

(6) प्राथमिक या मुख कल्पना 'पूर्ववर्ती' है अर गौण–कल्पना 'परवर्ती'।

(7) प्राथमिक कल्पना सूं वस्तुआं रो ज्ञान ई हुवै पण गौण कल्पना अलग–अलग वस्तुआं नै संस्लेसित कर उणा नै सोवणो रूप दैय'र आपणै सामी राखै।

(iv) कल्पना रा काम :

कॉलरिज री मानता है कै कल्पना विसमवादी जुग में संतुलन अर सामंजस्य बिठाणै रो महताऊ काम करै। कल्पना समानता–असमानता, ससीम–असीम, सामान्य–विसिस्ट, विचार–बिम्ब, प्रतिनिधिक–वैयक्तिक, पुराणा अर जाणकार पदार्थ – नुवां अर ताजा, विवेक अर आतम–निग्रह, उत्साह अर प्रखर भावना आद में सामंजस्य बिठाववै। कॉलरिज कैवै –

"Is is iluifying facullty of imagination thaat these opposite forece are reconeiled. The infinite spirit presents to itself finite objects."

कल्पना जिनदगी रो सजीव रूपान्तर करै। बा पदार्थ अर मन, विचार अर भावना, तर्क अर राग रै बिचाळै नहीं टूटण भींतां है उण नै तोड़'र आपस में तालमेल बिठावै। बा बाहरी नै आंतरिक अर आंतरिक नै बाहरी बणावै में सक्षम है। इणीज कारण इण रो महत्त्व अर खिमता सदीव बणी रैवै। कलाकार उत्कर्स अर आदर्स रै पल में ई इणरो प्रयोग कर सकै। कॉलरिज कैवै –

"The imagination is power which the artist can only use when he is at his best when the is in the fullest possession of himself when he is not writing from caprice or for arguments sake or in accordance with convention."

कॉलरिज कल्पना नै अेकीकरण री तागत बतायी है। कल्पना ओ अेकीकरण किण भांत करै ओ बता सकणो मुस्किल है। इणीज कारण कॉलरिज इण नै जादुई सगती कैवै जिण रो काम तो दीखै पण तरीको कोनी दीखै।

10.3 कल्पना सिद्धान्त री उपलब्धियाँ :

(1) कॉलरिज सूं पैली पच्छमी आलोचना में कवि री उण विसेस सगती नै जिण सूं बो अलग–अलग प्रत्ययां नै संयोजित कर नुवै। बिम्बां री रचना करै जिणनै फैंसी या 'इमेजिनेसन' कैयो जांवतो। आमतौर सगळा आलोचक इण नै अेक ई मानता। कॉलरिज पैली बार 'इमेजिनेसन' अर 'फैंसी' दोनुवां अलग बताई अर कवि री इण कल्पना सगती नै उण जादुई सगती बतायो। कॉलरिज सूं पैली आई. अे. रिचर्ड्स भी कल्पना रो विवेचन तो कर्‌यौ पण उण रो आधार मनोवैज्ञानिक हो जद कै उण रो (कॉलरिज) आधार दर्सनसास्त्र हो।

(2) कॉलरिज कवि री कल्पना सूं झीणो विवेचन कर्‌यौ। उण मुजब कल्पना रचना में विरोधी तत्त्वां रो मेळ बिठा'र नुवैं–नुवैं बिंबां रो विधान करै। अठै क्रोंचे अर कॉलरिज री मानतावां में सम्बन्ध देख्यो जा सकै। दोन्यूं ई विचारवादी आलोचक है। कॉलरिज तो कल्पना री बात करै पण क्रोंचे अपणै आप आवणवाळा मन रा भाव (Intution) री बात करै। कॉलरिज कल्पना नै ईस्वर री सगती मानै अर क्रोचे आत्मा री। कॉलरिज रै विचार में कवि में जैड़ी कल्पना सगती हुवै जा सकै।

(3) कल्पना सिद्धान्त फगत काव्य सिरजण में ई नहीं बल्कै आलोचना रै खेतर (क्षेत्र) में भी कारगर हुयौ। इणरो आसरो लेय'र आगै चाल'र आलोचना री सुछन्दतावादी, भाववादी, सौस्ठववादी आद

सैलियां रो विकास हुयौ।

(4) कॉलरिज खुद कवि अर आलोचक दोन्यूं हो इण कारण उण आप रै काव्य रो आधार दरसण या विचार नै बणायो। उण रै मुजब अेक ऊँचे दरजै रो कवि अक सुळझेड़ो विचारक भी हुवै।

(5) अेम्ब्रस रो कैवणो है कै कॉलरिज कल्पना सिद्धान्त सूं आखी स्रिस्टी री सिरजण सगती पर विचार कर्‌यो है। उण रै कल्पना सिद्धान्त रा तीन समान्तर रूप है :–

(1) अेन्द्रिय जगत परमात्मा री स्रिस्टी री सास्वत क्रिया रो लौकिक प्रतिभास है।

(2) मन री दुनियां मुख कल्पना री मदद सूं अेन्द्रिय संवेदना नै वैवस्थित कर अेक भांत री मानसिक स्रिस्टी करै।

(3) कला री दुनियां गौण कल्पना रै आसरै सूं अेन्द्रिय दुनियां, मन री दुनियां रै आपसी घात–प्रतिघात सूं कलात्म स्रिस्टी करणै में सक्षम हुवै।

इण विवेचन सूं अेक बात साफ हुवै कै कॉलरिज रै सगळै विवेचन रो आधार दार्सनिक है जिण खातर आस्था अर विस्वास री जरूरत है। बा इण जुग में संभव कोनी लागै। इणीज कारण काव्य में इण री मंजूरी कोनी हुई। दार्सनिकता रै आधार पर कॉलरिज रो ओ विवेचन उळझणा भरियौ है, इण कारण सगळां इण नै कोनी मान्यो। इणरै बावजूद आलोचना रै इतिहास में इणरी घणी महताऊ जागा है। काव्य सास्त्र रै अलग–अलग अंगां पर इतरो झीणो अर विसद विवेचन ओर कठै ई मुस्किल है। गंभीरता री दीठ सूं पच्छमी काव्य सास्त्र में कॉलरिज नै अरस्तू जितरों ई आदर दिरीज्यौ है।

10.4 कॉलरिज रा प्रमुख काव्य सिद्धान्त :

कॉलरिज काव्य सास्त्र बाबत जैड़ा विचार कर्‌या है बै आज भी प्रासंगिक है। उणा कवि करम रै साथै आलोचना नै भी उतरों है महत्त्व दियो। उणारै प्रमुख सिद्धान्तां रो विवेचन इण भांत है–

10.4.1 काव्य री परिभासा :

कॉलरिज री मानता है कै काव्य अेक खास रचना हुवै। उण रो उद्देस्य आणंद प्रदान करणो हुवै। बा विज्ञान सूं अळगी हुवै क्यूं कै विज्ञान रो उद्देस्य 'सांच' री उपलब्धि हुवै। काव्य तो सौन्दर्य रै माध्यम सूं तात्कालिक (immediate) आणंद उद्रेक तांई भावां रो उद्वेलन करै। कॉलरिज कैवै –

"It is the exitment to emotion for the purpose of immediate pleasure, through the medium of beauty."

काव्य मुजब कॉलरिज री आ परिभासा साहित्य री आखी विधावां बाबत कोनी सिर्फ कविता रै प्रकारां (प्रगीत, महाकाव्य, मुक्तक आद) सारू है। इणीज आधार पर कॉलरिज साहित्य री कहाणी, उपन्यास आद विधावां नै कविता सूं अलग बतावै। उणा रो मतलब है कविता रचना अेक कानी दरसण, इतिहास, विज्ञान आद सूं न्यारी हुवै क्यूंकै इणरो ध्येय तात्कालिक आणंद प्रदान करणो हुवै। आणंद नै ई प्रमुख मान'र साहित्य में लिखीजण वाळी बीजी विधावां आप–आप रै संघटन कौसल रै कारण अलग हुवै। कविता रो आणंद उणरै संघटन कौसल में अनुभूतियां री अन्विति हुवै।

10.4.2 स्रेस्ठ काव्य रा गुण :

कॉलरिज रै मत मुजब अैड़ो काव्य ई स्रेस्ठ कैयो जा सकै जिण में हृदय अर बुद्धि रो मिलन (Unity of heart and head) है। जैड़ी कविता पाठक या स्रोता पर असर डालणै में कामयाब हुवै उण कविता नै ई स्रेस्ठ कैयो जावैलो। उण रो कैवणो है – "The poet beings the whole soul of man in to activity, with the sub-ordination of its faculties to each other, according to their relative worth and dignity. अर्थात् कविता मिनख री सम्पूर्ण आतमा नै सक्रिय अर गतिमान कर देवै अर उण री अलग–अलग तागतां नै उण रै सापेक्सिक महत्ता अर गरिमा मुजब अेक–दूसरै रै आधीन राखै।

कॉलरिज सबसूं आछै काव्य रा गुण इण भांत बताया है – छन्द, काव्य री तटस्थता, प्रधान भाव री मौजूदगी, अलंकार भरी भासा, दरसण री अनिवार्यता, विचार री गैराई अर सगती आद।

(अ) छन्द :

अरस्तू छंद नै कविता खातर जरूरी कोनी मानै। वर्ड्सवर्थ रो विचार भी कीं कण सूं मिलतो–जुलतो है। उणा रै मुजब कविता अर गद्य री भासा में कोई मौलिक फरक कोनी हुवै। कॉलरिज अरस्तू रै विचारां रो आदर करतो इण कारण अरस्तू रै कथन रो बचाव करतां थकां कैयो कै ''कवित्व कविता रै संघटन कौसल रै कारण अलग है।'' अरस्तू कैयो कै छंद कविता रो ध्येय कोनी, बो कविता में या काव्य रै विसय में लागू कोनी हुवै क्यूं कै कविता कवित्व सूं है।'' इण रो जवाब वर्ड्सवर्थ नै देंतां थकां कॉलरिज लिखै कै गद्य अर कविता री कीं न्यारी विसेसतावां हुवै। छंद रो सम्बन्ध भावातिरेक री स्थिति सूं है इण कारण बो काव्य रो अन्तरंग गुण है जको सगळा तत्त्वां नै संयोजित कर'र अन्विति री प्रतिस्ठा करै। ओ गुण कवि में जलमजात हुवै। इणरो अभ्यास सूं संस्कार या परिमार्जन तो हो सकै पण मेळ कोनी कर्‌यो जा सकै। कॉलरिज मुजब छंद या 'आदर्स लयात्मकता' काव्यरो पैलो गुण है। बिना छंद अर 'संगीतात्मक अभिव्यक्ति' रै कदै भी महान् काव्य री रचना कोनी करी जा सकै। अठै कॉलरिज रो इसारो है कै छंद चाये ना भी हुवै पण कविता में लय जरूरी है।

(ब) काव्य री तटस्थता :

हिन्दी रा मानीता आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रो माणो है कै काव्य रो विसय विसेस होणो चायजै पण साथै ई बै साधारणीकरण पर भी जोर देवै। इण रै विपरीत वर्ड्सवर्थ, गेटे, कॉलरिज आद पास्चात्य आलोचकां रो कैवणो है कै काव्य रो निर्विसेस होणो जरूरी है। गेटे री मानता है, ''उत्कृष्ट प्रकार की कविता पूर्णतः वस्तु परक रूप से स्वयं को अभिव्यक्त करती है। जब बाह्य सृष्टि से विमुख होकर अंतरमुखी हो जाती है, उसका ह्रास होने लगता है। जब कवि अपनी विषयीगत भावनाओं को मुखर करता है, उसको कवि कहलाने का कोई अधिकार नहीं है।'' इण मुजब कॉलरिज रो कैणो है कै निजी जीवन सूं जुड़ेयौड़ा विसयां रो काव्य में प्रयोग करणै सूं कवित्व नै नुक्सान पूगै। स्रेस्ठ काव्य रो गुण ई ओईज है कै कवि री निजी जिनदगी सूं दूर होणो चायजै। इण बात पर अठै विवाद कर्‌यो जा सकै कै कविता रो विसय कवि री स्वानुभूति हुवै या लोकानुभूति। स्कॉट जेम्स इण बात पर आप रो मत बतावता कैवै कै निस्पक्षता रा दो अरथाव हो सकै। पैलो तो ओ कै काव्य रो विसय तटस्थ हुवै अर कविरी जिनदगी सूं जुड़ेयोड़ो नीं हुवै। दूजो ओ कै विसय रो प्रतिपादन तटस्थ तरीकै सूं कर्‌यो जावै। अठै दूजो कथन ई ठीक लागै। अठै अेक सवाल ओ भी उठै कै निर्वैयक्ति काव्य अर भावावेग रो सिद्धान्त दोन्यूं अेक दूजै रा विरोधी है। फैर काव्य कीकर लिख्यौ जावै ? इण मुजब कैयो जा सकै कै कॉलरिज काव्य में कवि रो व्यक्तित्व अर उणरो निजीवण खतम करणो चावै हो। अठै कैयो जा सकै कै ओ सिद्धान्त भारतीय साधारणीकरण रै जेड़ै है।

(स) प्रधान भाव री मौजूदगी :

वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज अर गेटे रो जुग वैज्ञानिक, अर जंत्र री सरुआत रो जुग हो। मिनख रो व्यक्तित्व संगठित अर संयोजित तत्व सूं अेकता री भावना खास ही। कॉलरिज रै मत मुजब ऊँचै दर्जै रै काव्य में अेक प्रधान भाव रो गुण मौजूद होणो चायजै जको सगळै बिम्बां, सगळी घटनांवां आद री अनेकता नै अेकसूत्र में बांध सकै अर रचना में अन्वितिल्या सकै। भारतीय काव्य सास्त्र मुजब भी महाकाव्य में अेकरस प्रधान अर बाकी अंग रूप में आपणो चायजै। अठै कॉलरिज रो प्रधान भाव कल्पना सूं जुड़यौड़ो है।

(द) अलंकृत भासा :

कॉलरिज रै मत मुजब जद कवि तेज भावावेग सूं आवेसित हुवै उण री भासा री अलंकृत हुवै। ऊँचै दर्जे रै काव्य री भासा भी नामी हुवै। अलंकारां रो जलम भी मूळरूप सूं भावावेग में ई हुवै। तेज भावावेग री भासा आम बोलचाल री भासा सूं जादा गरिमामय अर संतुलित हुवै–

"Strong passions command figurfive language.... Figures os speech are originally the offsprin of passion... strong passion has a language more measured than is employed in common speaking."

(च) दरसण री अनिवार्यता :

कॉलरिज रै मत मुजब महान् कवि जरूरी रूप सूं अेक महान दार्सनिक भी हुवै। बै कैवै ''कविता सम्पूर्ण मानव ज्ञान, मानवीय विचारों, मानवीय आवेगों, भावों एवं भाषा की चरम परिणति है।'' कवि सैली भी 'इन डिफेंस ऑफ पोयट्री' में कैबै कै कविता अैड़ी दिव्य सगती है जिण में मिनख री बीजी सगळी उपलब्धियाँ रो, ज्ञान–विज्ञान आद रो समाबेस जरूरी है। कविता में दार्सनिकता ल्याणै तांई कवि नै दार्सनिक अर तत्त्ववेत्ता (Meta Physician) होणो जरूरी मानै क्यूं कै उण मुजब कवि अर कविता में कोई भेद कोनी हुवै –

Poetry is that which is composed by a poet.

(छ) कवि रा गुण :

कॉलरिज रै मुजब कवि में काव्य–सगती जलम–जात हुवै। इण सगती रो विगसाव तो लगोलग अभ्यास सूं कर्‌यो जा सकै पण इणरो अरजन करणो मुमकिन कोनी। इण सगती नै प्रतिभा कैयो गयो है। उण मुजब केई अैड़ा काव्यगत गुण हुवै जका सहज प्रतिभा सूं पैदा हुवै। कॉलरिज कवि प्रतिभा री कसौटियां बतांवतो कैवै कै कवि में संगीत रै आणंद री अनुभूति अर उणनै पैदा करणै री सगती होणी चायजै। इणीज भांत कृति में 'निवैयक्तिकता' 'आनन्दोद्रेक री खिमता', 'कलाकृति में निरन्तरता अर अन्विति' 'सार्व जनीनता', 'मूर्ति विधान' आद गुण अगर है तो इणरो मतलब है इणरो रचनाकार कवि प्रतिभा सम्पन्न है।

(ज) विचार री गैराई अर सगती :

कॉलरिज रो कैवणो है कै आज तांई कोई भी अैड़ो महान कवि कोनी हुयो जको महान विचारक नीं रैयो हुवै, क्यूं कै कविता सगळै मानव विज्ञान, विचारां, भावां, भावावेगां अर भासावां रो फूल अर सुंगध है। कैवण रो मतलब ओ कै कवि में अनुभूति री प्रखरता रै साथै–साथै चिन्तन री सगती होवणो जरूरी है। इणरै साथै ई आं दोनुवां में संतुलन अर अन्विति भी जरूरी है जिण नै 'मणिकांचन' संजोग कैयो जावै। इण रै अलावा कॉलरिज रो मानणो हो कै कवि नै मिनख रै उपयोग में आवणाळै सगळै ज्ञान–विज्ञान री जाणकारी होणी चायजै।

10.5 इकाई रो सार

पच्छमी आलोचना नै उणरी ऊँचाई तांई पुगावणियां अर कल्पना सिद्धान्त रो प्रतिपादन करणवाळा कॉलरिज प्रखर कवि अर प्रबुध चिन्तक हा। उणां पच्छमी कविता अर आलोचना नै परम्परावां अर रूढ़ियां सूं मुगती दिराई। उण सूं पैली आलोचना री दुनियां में कल्पना सगती पर विचार तो कर्‌यो गयो पण 'फैंसी' अर 'इमेजिनेसन' रो भेद कोनी कर्‌यो गयो हो। कॉलरिज पैली बार कल्पना रा 'कल्पना' अर ललित कल्पना कैय'र दो भेद कर्‌िया। उणां बतायो कै कल्पना मिनख री अैड़ी सगती हुवै जकी संस्लिस्ट बिम्बां री रचना करै। ललित कल्पना नै याद रो अेक प्रकार बता'र कॉलरिज कल्पना रा भी दो भेद कर्‌या – प्राथमिक कल्पना अर गौण कल्पना। उण बतायो कै गौण कल्पना कलाकार में ई हुवै। प्राथमिक कल्पनां वस्तुआं रो जको ज्ञान करवावै उण

नै संस्लेसित कर गौण कल्पना फ्रुटरापै रै रूप में प्रस्तुत करै। कॉलरिज कल्पना रा काम भी बताया कै बा सम अर विसम में संतुलन बिठावै पण कलाकार उत्कर्स अर आदर्स रै पलां में ई इण रो सफळता साथै प्रयोग कर सकै।

कल्पना सिद्धान्त रै अलावा कॉलरिज विज्ञान अर काव्य में फरक करतां काव्य री परिभासा करता बतायो कै काव्य अेक विसिस्ट रचना हुवै जिण रो उद्देस्य आणंद प्रदान करणो हुवै। उण आ परिभासा विसेस रूप सूं कवितां तांई ही बताई ही। स्रेस्ठ काव्य तांई कॉलरिज रो विचार हो कै उण में हृदय अर बुयोरो बराबर मिलन हुवै। कॉलरिज मुजब ऊँचै दर्जे रै काव्य रा छंद, लय संगीत आद अैड़ा गुण है जका कवि प्रतिभा सूं अपणै आप आ जावै। साथै ओ भी बतायो कै महान काव्य में महान कवि रा महान विचार हुवै। कॉलरिज कविता नै सगळै ज्ञान विज्ञान रो फूल बता'र उण री गंध बतायौ है।

10.6 अभ्यास रा प्रस्न

1. कॉलरिज रै कल्पना सिद्धान्त री व्याख्या करो।
2. 'कल्पना' रा कितरां भेद है ? विवेचना करो।
3. प्राथमिक कल्पना अर गौण कल्पना में कांई अन्तर है ?
4. कल्पना सिद्धान्त री कांई विसेसतावां है ?
5. कॉलरिज मुजब काव्य री परिभासा करतां थकां स्रेस्ठ काव्य रा गुण बतायो।
6. कविता में छन्द, भासा अर दार्सनिक विचारां मुजब कॉलरिज रै विचारां रो विवेचन करो।

10.7 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. बूचर (अनुवाद – डॉ. नगेन्द्र) – अरस्तू का काव्य सिद्धान्त।
2. डॉ. नगेन्द्र – रस सिद्धान्त।
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – चिन्तामणि।
4. प्रो. बृज भूषण शर्मा – पाश्चात्य काव्य समीक्षा।
5. डॉ. नगेन्द्र – भारतीय काव्य शास्त्र।
6. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – पाश्चात्य काव्य शास्त्र।
7. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – साहित्यिक निबन्ध।
8. डॉ. राजनाथ शर्मा – साहित्यिक निबन्ध।
9. डॉ. नन्द दुलारे वाजपेयी – आधुकिन साहित्य।
10. प्रो. भागीरथ दीक्षित – समीक्षा लोक।
11. स्कॉट जेम्स – The Making of Literature।
12. प्रो. कल्याण सिंह शेखावत – मणिमाळ।

इकाई – 11

प्रमुख चिंतक – अरस्तू अर वांरा सिद्धान्त

इकाई रो मंडाण –

11.0 उद्देस्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 अरस्तू रा काव्य सिद्धान्त

11.2.1 अनुकरण सिद्धान्त

11.2.1.1 अरस्तू रै पैली रा विचारकांरा अनुकरण – मुजब विचार

11.2.1.2 अरस्तू रा अनुकरण मुजब विचार

11.2.1.3 कला अर प्रक्रिति

11.2.1.4 इतिहास अर कला में भेद

11.2.1.5 अनुकरण सिद्धान्त री सींव

11.2.1.6 कार्य रो मतलब

11.2.1.7 आणंद रो मतलब

11.2.1.8 सारांस

11.2.2 अरस्तू रो विरेचन सिद्धान्त

11.2.2.1 काव्य मुजब प्लेटो रो मत

11.2.2.2 विरेचन सिद्धान्त

11.2.3 विरेचन रो अरथाव

11.2.3.1 धर्म परक

11.2.3.2 नीति परक

11.2.3.3 कला परक

11.2.4 व्याख्यावां री समीक्सा

11.2.5 विरेचन सिद्धान्त रा दोस अर निराकरण

11.2.6 विरेचन अर आणंद

11.2.7 विरेचन अर करुण रस

11.3 इकाई रो सार

11.4 अभ्यास रा प्रस्न

11.5 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

11.0 उद्देस्य

भू मंडलीकरण रै इण दौर में आज अेक देस बीजै देस रै सिर्फ ज्ञान–विज्ञान या तकनीक सूं ई प्रभावित कोनी हुवै बल्कै बठै रो कला–कौसल, रहन–सहन, साहित्य अर विचारधारावां भी उणां नै प्रभावित करै। संचार रै साधनां रै कारण आज दुनियां, 'ग्लोबल विलेज' बणती जावै। इण कारण अेक–दूजै री विचारधारावां नै समझणो

और भी जरूरी है। इण इकाई में पच्छम रा प्रखर चिन्तक अरस्तू जिकां साहित्य नै 'अनुकरण' अर 'विरेचन' जैड़ा सिद्धान्त दिया, उणा मुजब विचार करणो है। आज रो कोई भी विद्यार्थी सिर्फ भारतीय विचारधारा या पच्छमी विचारधारा भण'र साहित्य रो पूरो मर्म कोनी समझ सकै। उण तांई पूर्वी अर पच्छमी दोन्यूं विचारधारावां रो सम्यक् अध्ययन जरूरी है। इण इकाई में अरस्तू रै 'अनुकरण' अर 'विरेचन' सिद्धान्त नै अर उणां मुजब पच्छम री अवधारणा नै समझणै री कोसीस करणो आपणो उद्देस्य है।

11.1 प्रस्तावना

अेम. अे. राजस्थानी रै इण प्रस्न पत्र में आप अरस्तू रै 'विरेचन' अर 'अनुकरण' सिद्धान्त मुजब जाणकारी प्रापत करोला। अरस्तू चूंकि चिकित्सा स्यास्त्र सूं जुड़ेड़ो हो। उण जैड़ै 'विरेचन' रै सिद्धान्त रो साहित्य में प्रतिपादन कर्‌यो बो मनोवैज्ञानिक अर अद्‌भुत है। इणीज भांत मिनख री अनुकरण री प्रवृत्ति नै महताऊ बतावंता थकां इण सिद्धान्त रो प्रतिपादन कर्‌यो कै साहित्य आप रै मूळ रूप सूं तो अनुकरण सूं जुड़ेड़ो है पण साथै ई आप रै गुरु प्लेटो रै सिद्धान्त (अनुकरण) में सुधार कर, दि्सा देय'र आगै बधायो।

लेखक या कवि जैड़ो कीं देखै, भणै, सुणै या भोगै बिण री कल्पना कर, विचार देय'र सबदां में अभिव्यक्त करै। उण रो ओ पुनर्सृजन साहित्य कैइजै। इण नै प्लेटो अनुकरण कैयो पण अरस्तू पुनर्सृजन कैय'र इण नै प्रतिस्ठा दी क्यूं कै साहित्य मात्र अनुकरण ई कोनी हुवै इण सूं आगै अर बध'र हुवै। इणीज भांत विरेचन चाये वैद्यक स्यास्त्र रो सबद है पण अरस्तू इण रो साहित्य रै सन्दर्भ में प्रयोग कर इण नै व्यापाकता दी है। उणां मुजब जिण भांत विरेचन सूं पेट साफ हुय जावै अर सरीर तंदुरुस्त हुवै उणी'ज भांत ओ 'भाव विरेचन' है मिनख जद आप री भावनावां रो त्रासदी (ट्रेजेडी) या कामदी (कॉमेडी) रै माध्यम सूं खुद रै भावां रो विरेचन कर देवैं तो हळको हुय जावै। किणी रचनाकार री रचना नै समझणै तांई अगर रचनाकार रो मनोविज्ञान भी जाण लियो जावै तो ओ सोनै में सुहागै रो काम करै। क्यूंकै रचना अखीर रचनाकार रै मानस सूं ई तो जलम ई अनुकृति हुवै। इण भांत अरस्तू रा काव्य सिद्धान्त भणणै सूं विद्यार्थियां में काव्य नै समझणै अर कूंतणै री खिमता रो विकास अर बधेपो हुवै लो। भावनात्मक ट्रिस्टी सूं हजारूं बरसां पछै भी मिनख में कीं खास फर्क कोनी बरसां पछै भी मिनख में कीं खास फर्क कोनी पड़ै। इण कारण अरस्तू रा अै विचार आज भी उतरां ई प्रासंगिक है जितरां उणां रै जुग में।

11.2 अरस्तू रा काव्य सिद्धान्त

11.2.1 अनुकरण सिद्धान्त :

भारत री भांत यूनान में भी कलावां रो विवेचन नैतिकता री द्रिस्टी सूं होंवतो। सबसूं बड़ो उपदेसक सब सूं स्रेस्ठ कवि ही होंवतो। पुराणै विचारकां री मानता मुजब कला आप रै असल रूप में अनुकरणात्मक हुवै। महान् दार्सनिक सुकरात रो कैवणो हो कै कविता री ध्वनियाँ जिनगी री ध्वनियाँ री नकल है अर कविता में जैड़ी गतियाँ हैं वै भी जिनगी री मानता ही कै कवि असल दुनियां रै पदारयां री रचना या उत्पादन कोनी बल्कै छियां सिरखो आभास (apprarance) मात्र ई रचै। प्लेटो भी कला नै अनुकरण मानतो। इण भांत 'अनुकरण सिद्धान्त' जाबक नवों कोनी हो। अठै आपां अरस्तू रै अनुकरण सिद्धान्त रै विवेचन सूं पैली उणां सूं पैली हुया प्लेटो अर बीजै विचारकां री द्रिस्टी इण सिद्धान्त मुजब लाण लेवां तो इण सिद्धान्त नै समझणै में आसानी रैवैली।

11.2.1.1 अरस्तू रै पैली विचारकां रा अनुकरण–मुजब विचार :–

अरस्तू रो गुरु प्लेटो मूल रूप सूं गणितज्ञ हो इण कारण बो विचार सूं वस्तु कानी बधतो। उण सामी रेखा रो आदरस पैली हो रेखा पछै आकार लेंवती। उणां री मानता ही कै घणी खेचळकर कोसीस रै बावजूद आदरस रेखा कोनी बण सकै इण कारण अनुकरण सदीव अधूरो रैवै। प्लेटो मुजब भगवान रो रचेड़ो मूल आदरस (Ideal) ई असल हुवै। मूल आदरसां री अेक सूच्छम (सूक्ष्म) दुनियां हुवै। दिखणाळी दुनियां इणी सूच्छम दुनियां रो अनुकरण हुवै। प्लेटो रो बिसास है कै आ दुनियां वैचारिक आदरसां री दुनियां रो अनुकरण है। भारतीय मत 'प्रतिबिम्बवाद' भी ओई'ज बतावै। प्लेटो

मुजब अगर भगवान है तो ओ ब्रह्माण्ड बिण री नकल है, अगर पदारथ है तो उण री प्रतिछियां नकल हैं।

प्लेटो ईस्वर की कलावां (Divine Arts) नै दो भागां में बांटी है – प्रक्रिति रा पदारथ, जैड़ा परमात्मा सूं पैदा हुया है अर उणां री अनुक्रिति जैड़ी आपां नै सपनै में या पाणी में पड़छियां रै रूप में दीखै। इणीज भांत मिनख री कलावां रा भी दो भाग कर्‌या है– (i) उपयोगी कलावां (ii) अनुकरणात्मक कलावां। उपयोगी कलावां में वै खातीपणो आद नै मानै तो अनुकरणात्मक में अैड़ी कलावां है जैड़ी बणायेड़ी उपयोगी वस्तुआं (मेज आद) रो बिम्ब प्रस्तुत करै। इण भांत खाली उत्पादक कलाकार है तो चित्रकार अनुकरणात्मक कलाकार। प्लेटो इण सूं आगै अनुकरणात्मक कला रा भी दो भाग करै

(i) Copy making या oPhotographic

(ii) Fantastic Art

प्लेटो मुजब पैलै में चित्रकार उतरीं लाम्बी–चौड़ी मेज बणावै जितरीं उण रै सामणै है, दूसरै में बो सामणै पड़ी मेज रो चितरांम अनुपातिक ढंग सूं बणावै जिण सूं बो सोवणो लागै। इण में पैलै नै बो Copy अर दूसरै नै appearance या Phantasm कैंवतो। प्लैटो वस्तु रा तीन रूप मानतो – (i) आदरस (ii) वास्तविक या जथार्थ (iii) अनुकरणात्मक। इण नै समझणै तांई बो पलंग रो उदा'रण देवै। पैलो पलंग रो आदरस रूप, दूजो खाती रो घड़ेड़ो अर तीजो चित्रकार रो बणायेड़ो चितरांम। प्लेटो इण में पैलै नै सबसूं आछो मानै क्यों कै पैली वाळा दो Copy अर Phantasm नै समझणै तांई पैलै नै समझणो जरूर है जियां चन्द्रमा नै जाण्या बिना पाणी में उणरी छियां नै पाणी में देख'र आणंद कोनी लियो जा सकै। इण भांत प्लेटो मूल आदरस नै महताऊ मानै। उण रै कैवणै मुजब कलाकार री रचना Twice removed from the truth अर्थात् सांच सूं दूणी दूणी दूर हुवै इण कारण त्यागणै जोग हुवै। क्यूं कै पूरी कोसीस रै बावजूद खाती आदरस रै मुताबक पलंग कोनी बणा सकै। कैवण रो मतलब हुयो कलाकार रो चितरांम नकल री नकल हुवै। इणी'ज कारण प्लेटो अनुकरणात्मक कलावां रो विरोध कर्‌यो क्यूं कै उणा रो आधार आधो ई सांच हुवै।

प्लेटो री मानती ही है मूल आदरस में कदे बदळाव कोनी हुवै जद कै कलाकार रो सम्बन्ध उण वस्तुआं सूं हुवै जैड़ी सदीव बदळती रैवै। कलाकार री रचना में सांच रो अंस भोत कन हुवै इण कारण Phantasm मूल आदरस सूं घटिया हुवै क्यूंकै बो पाठक या दर्सक में भरम पैदा करै। प्लेटो कला नै गंभीर काम नीं मान'र मात्र मनोरंजन रो अेक तरीको मानै। इण भांत द्रिस्यमान जगत नै छियां तो भारतीय दर्सन भी मानै।

दरअसल प्लेटो कविता अर कला री परख नीति अर दर्सन स्यास्तर रै द्रिस्टी कोण सूं करै। इण कारण बो कला री उच्चता रा आधार इण भांत मानै :– (i) मूल वस्तु रो अनुकरण किण हद तक हुयो है (ii) जैड़ी वस्तु रो अनुकरण हुयो है बा सुभ है या असुभ। अगर अनुकरण सांच रै नेड़ै है अर बो जन कल्याणकारी है तो उण नै प्लेटो ठीक मानै। इण भांत प्लेटो अनुकरण रो पूरी तरां विरोधी कोनी। बो कविता नै त्यागणै जोग इण कारण मानै कै अनुकरण आधो–पड़दो हुवै। उण में सांच रो अभाव हुवै। बिण सूं मिलणाळो आणंद झूठो अर निकृष्ट हुवै। सारांस रूप में केयो जा सकै कै प्लेटो कविता अर कला रो सम्बन्ध अनुकरण सूं मानै पण आ अनुकृति आधी अधूरी हुवै इण कारण कला भी हीण हुवै। प्लेटो अनुकरण नै गंभीर कोनी मानै क्यूंकै बिण में अज्ञान, असावधानी, भ्रान्ति, उत्तेजना आद लुकेड़ा हुवै जैड़ा त्यागणै जोग है। प्लेटो अनुकरण रो समर्थन उण हद तक ई करै जठै तांई बो सुभ अर लोक कल्याणकारी हुवै।

11.2.1.2 अरस्तू रा अनुकरण मुजब विचार :–

अरस्तू काव्य–कला नै सौन्दर्य री द्रिस्टी सूं देखी, परखी। स्कॉट जेम्स अरस्तू मुजब कैयो, ''उणां काव्य नै दर्सन, राजनीति अर नीति स्यास्त्र रै जुल्म सूं मुगत करायो। उणां हरेक कला कृति नै

सौन्दर्य री वस्तु मानी। ओई'ज कारण है कै 'अनुकरण' मुजब अरस्तू रो मत प्लेटो सूं अळगो है।'' अरस्तू प्लेटो रै mimesis सबद रो प्रयोग नूंवैं अर्थ में कर्‌यो। प्लेटो 'अनुकरण' रो अर्थ हूबहू नकल रै रूप में पण अरस्तू इण रो अेक सीमित अर खास अर्थ ग्रैण कर्‌यो। बूचर रै सबदां में कै सकां, ''अरस्तू आप रै युग में प्रचलित 'कला अनुकरण है' इण सूत्र नै मान्यो तो हो पण इण री नवीं व्याख्या करी।''

11.2.1.3 कला अर प्रक्रिति :–

अरस्तू कला नै प्रक्रिति री अनुक्रिति मानै। उणां रो कैवणो है, ''कविता आमतौर सूं मिनख री दो प्रवृत्तियां सूं पैदा हुयी लागै। इण में अेक अनुकरण री अर बीजी संगीत अर लय री। कला प्रक्रिति रो अनुकरण करै।'' अठै सवाल उठै के अरस्तू रो प्रक्रिति सूं कांई मतलब है ? तो अठै कैयो जा सकै कै अरस्तू मुजब कवि या कलाकार प्रक्रिति री गोचर वस्तुआं रो नईं बल्कै प्रक्रिति री सृजन प्रक्रिया रो अनुकरण करै –

(His nature is not the visible physical universe but the creative primibe operating in it.) उण मुजब अनुकरण रा विषय प्रक्रिति रा नियम है। उण आप रै ग्रंथ polities में लिख्यो है, ''हरेक वस्तु पूरी विकसित होणै पर जैड़ी हुवै, उण नै आपां प्रक्रिति कैवां। प्रक्रिति इणी आदरस रूप री उपलब्धी करणै तांई आगै बधती रैवै पण केई कारणां सूं बा आपरै लक्ष्य प्रापत करणै में सफल कोनी हुवै। कवि या कलाकार उण अवरोधक कारणां नै हटा'र प्रक्रिति रो अनुकरण करतां थकां उण रै अधूरै काम नै पूरो करै – Generally art partly completes what nature can not bring to a finish adn partly initates her.

अेयर क्रोंबे रै मत मुजब वस्तु जगत रै माध्यम सूं कवि री कल्पना में वस्तु रा जैड़ा रूप प्रस्तुत हुवै उण नै बो भासा में प्रस्तुत करै। ओ पुनर्प्रस्तुतीकरण ई अनुकरण हुवै। बीजै सबदां में कै सकां अनुकरण बो तन्तर है जिकै रै माध्यम सूं कवि आपरी कल्पनात्मक अनुभूति री प्रक्षेपणीय अभिव्यक्ति नै आखरी रूप देवै। सार रूप में कैयो जा सके कै अनुकरण हूबहू नकल (Minicry) कोनी बल्कै संवेदना, अनुभूति, कल्पना, आदरस आद रै प्रयोग सूं अधूरै नै पूरो बणाणो है। काव्य मिनख री जिनगी में सार्वभौम तत्व रो अनुकरण करै। मिनख में जैड़ा सार्वभौम गुण है उण रो उद्‌घाटन करै। अनुकरण सूं कलाकार सार्वभौम नै पिछाण'र उण नै सोरौ अर अेन्द्रिय रूप में दुबारा उत्पादित करै। अरस्तू मुजब कलाकार तीन भांत री वस्तुआं मांय सूं किणी भी अेक रो अनुकरण कर सकै। अै तीन रूप इण भांत है –

(1) जिसी बै पैलां ही या है।

(2) जिसी बै समझी या कैयी जावै।

(3) जिसी उणां नै होणो चायजै।

11.2.1.4 इतिहास अर कला में भेद :–

अरस्तू इतिहास अर काव्य रो भेद कर'र अनुकरण रो अर्थ समझावै। उण मुजब इतिहासकार जैड़ो वर्णन करै बो घटित हो चुक्यो हुवै या घटित हो सकै। इतिहास खास री अभिव्यक्ति है जद कै काव्य सामान्य री। इतिहास रो सांच मूर्त्त अर अव्यापक हुवै। बो वस्तु परक हुवै। कवि रो चित्रण अमूर्त्त हुवै जैड़ो कल्पना, अनुभूति अर विचार पर आस्रित हुवै। इण भांत कैयो जा सकै कै अनुकरण सूं अरस्तू रो तात्पर्य भाव परक अनुकरण सूं हो जथार्थ वस्तु परक सूं नईं। इण री पुस्टी अरस्तू रै इण कथन सूं करी जा सकै – A likely impossibility is always preferable to an unconvincing possiblility.

इण विवचेन सूं स्पस्ट हो ज्यावै कै अरस्तू अनुकरण नै नवां अर्थ देय'र कला रो सुतंतर अस्तित्व

स्थापित कर्‌यो। सुन्दर रो विस्तार सिव सूं जादा बतायो। काव्य नै दर्सन, नीति आद वादां सूं मुगत करवायो। इण रै बावजूद अरस्तू रै अनुकरण सिद्धान्त री सीमावां है।

11.2.1.5 अनुकरण सिद्धान्त री सींव :–

(1) कल्पना अर आतम तत्त्व नै स्वीकार करतां थकां भी अरस्तू वस्तु तत्त्व नै प्रधानता देवै। वस्तु नै उद्दीपन रो निमित्त मात्र नीं मान'र आधार रूप मानै।

(2) उण रो दायरो बड़ो तंग है। उण कवि री अन्तस चेतना नै उतरों महत्त्व कोनी दियो जितरों देणो चायजै। आप री जिनगी अळगी–अळगी परिस्थितियां सूं रूबरू हों तो कवि उणां रो प्रभाव ग्रैण करै जिण सूं उण री अन्तः चेतना रो निर्माण हुवै। अरस्तू रो अनुकरण सिद्धान्त वस्तु परक भाव तत्त्व पर ई जादा जोर देवै।

(3) गीति काव्य मुजब भी अरस्तु कोई गंभीरता सूं विचार कोनी कर्‌यो। उण में भावनावां अर वैयक्तिक अनुभूतियां री प्रधानता हुवै जैड़ी अनुकरण रै दायरै में कोनी आवै।

(4) आज अनुकरण री बजाय कल्पना या नवोन्मेस (Invention) पर जोर दियो जावै। आज अनुकार्य री महानता या उपयोगिता सूं जादा सौन्दर्य तत्त्व (Aesthetic Pleasure) नै महत्त्व दियो जावै।

(5) आज रो कलाकार अचेतन मन री अनुभूति नै परम उपलब्धी समझै।

11.2.1.6 कार्य रो मतलब :–

'त्रासदी' रो विवेचन करतां थकां अरस्तू कैयो कै कला मिनख रो नईं बल्कै कार्य रो (Men in Action) अर जिनगी रो अनुकरण करै। उण कार्य सबद रो प्रयोग मिनख री जिनगी रै चितरांम (Image of human life) रै अर्थ में कर्‌यो है। जैड़ो कीं मिनख रै भीतर लै पख अर बुधी मानै अैड़े व्यक्तित्व रो उद्‌घाटन कर सकै बो 'कार्य' सबद में आवै। इण भांत कार्य आद भी आवै कैय'र 'कार्य' सबद नै व्यापकता प्रदान करी। अरस्तू कैयो कै काव्य में मिनख रो चरित्र सामान्य सूं आछो भी हो सकै अर बुरो भी अर है जैड़ो भी। अठै उण 'है जैड़ो' री चर्चा नीं कर 'आछै' अर बुरै पर जोर दियो। इण सूं स्पस्ट है कै अरस्तू प्रक्रिति रै अंधानुकरण कोनी है। अनुकरण सूं बिण रो मतलब कलात्मक पुनः रचना हो।

11.2.1.7 आणंद रो मतलब :–

अरस्तू री मानता ही कै जिनगी में दुःख पुगाववाळी वस्तु रो अनुकृत रूप आणंद प्रदान करै। इण रो तात्पर्य हुयौ कै अनुकरण जथार्थ परक नीं होय'र भावनात्मक अर कल्पनात्मक हुवैलो। अरस्तू रो ओ मत भारतीय 'रस सिधान्त' सूं मिलतो–जुलतो है। अठै ओ भी बताणो जरूरी है कै सहृदय नै आणंद री उपलब्धी जद ई हुवैली जद कवि रै हृदय में आणंद री अनुभूति हुवैली। इण भांत अनुकरण में आतम तत्त्व रो प्रकासन जरूरी है। वस्तु रो जथार्थपरक चित्रण चाये नीं हुवै पण आत्माभिव्यंजना जरूरी है। सिर्फ जथार्थ चित्रण रै माध्यम सूं आणंद री अनुभूति हो ई कोनी सकै।

11.2.1.8 सारांस :–

इण अध्ययन पछै कैयो जा सकै कै अरस्तू रो अनुकरण सूं तात्पर्य 'भावनापूर्ण अनुकरण' हो ना कै जथार्थ परक। उण री मानता मुजब अनुकरण अगर सुन्दर हुवैलो तो ई पाठक या सहृदय नै आणंद प्रदान करैलो। इण तांईं वा आणंद पैली कवि रै हृदय में जरूरी है। इण भांत अरस्तू व्यस्टी अर समस्टी दोनुवां नै अेक बिंदु पर जोड़ै अर अनुकरण मुजब उण री विचारधारा नै प्लेटो सूं अळगी करै। स्कॉट जेम्स अरस्तू रै इण अनुकरण नै कलात्मक पुनर्निर्माण बतांवतो कैवै –

11.2.2 अरस्तू रो विरेचन सिधान्त :–

11.2.2.1 काव्य मुजब प्लेटो रो मत :–

प्लेटो आप री पोथी 'रिपब्लिक' में कविता री व्याख्या करतां थकां उण नै अनुकरण रो अनुकरण बताय'र सांच सूं दो गुणी दूर बतायी। उणां मुजब कविता मिनख री वासनावां रो दमन नीं कर उणां नै उभारै अर पोखै। वा बुधी नै नईं बल्कै भावनावां नै प्रभावित करै। प्लेटो री इण धारणा रो कारण ओइ'ज हो कै बो कला नै नीति स्यास्त्र री नजर सूं भणतो। इण रै विपरीत अरस्तू कविता अर कला री परख सौन्दर्य स्यास्त्र रै द्रिस्टी कोण मुजब करी। प्लेटो रै सिधान्त रो विरोध कर अरस्तू 'भाव विरेचन री बात कैयी। अरस्तू खुद वैद्यक स्यास्त्र सूं जुड़ेड़ो हो इण कारण उण विरेचन या Katharsis सबद रो प्रयोग कर्यो।'

11.2.2.2 विरेचन सिधान्त :–

अरस्तू ना तो कठैई विरेचन सिधान्त री परिभासा दी अर ना कोई व्याख्या करी। उण आपरै ग्रंथ 'पोइटिक्स' में प्लेटो रै कविता मुजब विचारां रो विरोध करतां 'त्रासदी' रै सन्दर्भ में पैली बार विरेचन (Katharsis) सबद रो प्रयोग कर्यो। उण त्रासदी मुजब कैयो, ''त्रासदी किणी गंभीर, अपणै आप में पूरी, तै सुदा आयाम सूं जुड़ेड़ै कार्य री अनुक्रिति रो नांव है, जिण रो माध्यम नाटक रै अळगा–अळगा रूपां में प्रयुक्त सगळै भांत रै अलंकारां सूं सजेड़ी भासा हुवै जैड़ी समाख्यान रूप में नहीं होय'र कार्य व्यापार रूप में हुवै अर जिण में करुणा अर त्रास रै उद्रेक सूं मनोविकारां रो ठीक–ठीक विरेचन कर्यो जावै।'' इण भांत प्लेटो रै आक्षेप रो जवाब देंतां थकां बतायो कै त्रासदी रो मुख उद्देस्य मिनख रै भावां नै उद्वेलित कर विरेचन रै माध्यम सूं उण रै मन रो परिस्कार करणो हुवै।

दूजी बर विरेचन सबद रो प्रयोग अरस्तू आप रै ग्रंथ 'Polities' में कर्यो है। उण रो कैणो है, ''संगीत रो अध्ययन अेक नीं बल्कै घणकरा उद्देस्यां री सिधी तांई होणो चायजै– (i) सिक्षा खातर (ii) विरेचन खातर (iii) संगीत सूं बौधिक आनन्द प्रापत हुवै। अरस्तू अठै 'विरेचन' सबद रो प्रयोग मानसिक सुधी तांईं करै। उण रो कैवणो है कै धार्मिक राग रा असर सूं, अैड़ै रागां रै असर सूं जैड़ा रहस्यात्मक आवेस उद्बोध करै बै सगळा स्यान्त हो जावै मानो उण रै आवेस रो समन अर विरेचन होग्यो हुवै। करुणा अर त्रास सूं घिरेड़ो मिनख, हरेक भावुक मिनख इण भांत रो अनुभव करै अर दूसरा भी आप–आप री संवेदन सगती रै मुजब अक्सर सगळा इण तरीकै सूं अेक भांत री सुधी रो अनुभव करै। उण री आतमा विसद अर खुस हो जावै। इण भांत विरेचन सूं मिनख समाज नै सुध अर निर्दोस आणंद री उपलब्धी हुवै। इण भांत विरेचन रो तात्पर्य सुधी, परिस्करण अर मन रै स्वास्थ्य सूं जुड़ेड़ो है।

11.2.3 विरेचन रो अरथाव :–

अरस्तू कैथारसिस (Katharsis) सबद रो प्रयोग कर्यो जिण रा हिन्दी में 'रेचन', 'विरेचन', 'परिस्कार' आद समानार्थी सबद है। पण विरेचन सबद स्सै सूं जादा प्रचलित है। जिण भांत (Katharsis) सबद यूनान री चिकित्सा पद्धति सूं जुड़ेड़ो सबद है उणीज भांत विरेचन सबद भारतीय आयुर्वेद स्यास्त्र सूं जुड़ेड़ो है। चिकित्सा स्यास्त्र में इण रो अरथाव रेचक दवायां सूं सरीर रै भीतराळो मल या नुक्सान देणाळै पदारथां (Foreign matter) नै बारै काढ़णो है। अरस्तू रो मत है कै इणीज भांत त्रासदी करुणा अर त्रास रै बणावटी उद्रेक सूं मिनख री असल जिनगी री करुणा अर त्रास भावनावां नै काढ़'र बारै करै। त्रासदी नै भणणै अर प्रेक्सण सूं संयत रूप में करुणा अर भय रो जिण भांत संचार हुवै, उण सूं असल जिनगी में करुणा अर भय रै प्रचंड आवेगां नै झेलणै री तागत आवै। बियां अरस्तू तांईं ओ विचार जाबक नवों या मौलिक कोनी हो। उण सूं पैली प्लेटो बता चुक्यो हो कै विकृत उत्साह (Morbid Enthusiasm) रो इलाज उद्दाम संगीत सूं संभव है। उण आप री पोथी 'Laws' में स्पस्ट लिख्यो है Movement was applied to cure movement अरस्तू

ओ सिध कर्‌यो कै कला अर काव्य सूं मिनख रो विरेचन हुवै इण कारण पै नुक्सानदायक नीं बल्कै फायदेमंद हुवै।

अरस्तु रै परवर्ती व्याख्याकारां लक्षणा रै आधार पर विरेचन रा तीन अरथाव कर्‌या –

(i) धर्म परक (ii) नीति परक (iii) कला परक

11.2.3.1 धर्म परक :–

यूनान में नाटकां रो बिगसाव धार्मिक उच्छवां सूं हुयो है। प्रो. मरे मुजब साल री सरूआत में दिओन्यसस देवता री पूजा री जांवती अर उच्छव मनायो जांवतो। इण बखत देवता सूं प्रार्थना करी जांवती कै बो आपरै सरधालुआं नै सुख–स्यांती प्रदान। पापां सू मुगत करद्‌यै अर उणां नै विवेकसील बणाय'र बीमारी, मौत आद सूं उणां रो बचाव करै। ओ अेक भांत सूं सुधी रो प्रतीक उच्छव हो। अरस्तू आप रै ग्रंथ में Polities लिख्यो है 'हाल'री हालत सूं पैदा हुयेड़ै आवेस नै दबावणै तांई यूनान में उद्दाम संगीत रो प्रयोग कर्‌यो जांवतो। इण सूं बेरो चालै कै यूनान री धार्मिक संस्थावां मं बा'रलै विकारां सूं आन्तरिक विकारां नै दबाणै रै उपाय रो अरस्तू नै बेरो हो अर इण सूं ई उण नै Katharsis री प्रेरणा मिली हुवै। धर्म परक अरथाव नै मानणाळा विद्वानां रो मत है कै अरस्तू इण सबद Katharsis रो प्रयोग धार्मिक अर्थ में ई कर्‌यो है। बियां अेक हद तांई धार्मिक साहित्य विरेचन रो काम करै भी है।

11.2.3.2 नीति परक :

जर्मन विद्वान वारनेज नीति परक अरथाव करतो बतावै कै मिनख रै मन में विराजणाळा करुणा अर त्रास जैड़ा मनोवेग मूळ रूप सूं दुःखी करणाळा हुवै। त्रासदी में अै मनोवेग मंच पर अतिरंजित रूप सूं प्रस्तुत कर्‌या जावै। इण कारण प्रेक्सक रै मन में भी पैली तो अै भाव अपार वेग सूं उद्वेलित हुवै पण पछै उपसमित होय'र प्रेक्सक ने स्यान्ती रो सुख देणाळो अनुभव करावै क्यूंकै इण प्रक्रिया सूं इण मनोवेगां दंस खतम हुय जावै। इण भांत इण रो नीतिपरक अरथाव हुयो पैली मनोवेगां रो उद्वेलन अर पछै समन अर उण पैदा हुयेड़ी मानसिक स्यांती रो सुख अर हृदय री विसदता। साहित्य अर ललित कलावां भी ओइ'ज काम करै।

11.2.3.3 कला परक :–

विरेचन सिधान्त रै कलात्मक अर्थ कानी जर्मन कवि गेटे अर अंग्रेजी रै सुच्छन्दतावादी कवि आलोचका भी इसारो कर्‌यो पण प्रो. बूचर इण नै स्पस्ट करतां कैयो, ''विरेचन सबद सिर्फ मनोविज्ञान या चिकित्सा स्यास्त्र सूं ई सम्बन्धित कोनी बल्कै अेक कला सिधान्त रो भी अभिव्यंजक है.... त्रासदी रो कर्तव्य कर्म सिर्फ त्रास या करुणा तांई अभिव्यक्ति रो माध्यम ई प्रस्तुत करणो कोनी, इणनै अेक खास कलात्मक परितोस प्रदान करणो है, इण नै कला रै माध्यम में ढाळ'र परिस्क्रित अर स्पस्ट करणो भी है।''

11.2.4 व्याख्यावां री समीक्सा :–

धर्म, नीति अर कला रै द्रिस्टीकोण सूं अळगै–अळगै विद्वानां 'विरेचन' री अळगी–अळगी व्याख्या करी। अै सगळा अरथाव अरस्तू करणो चां'वतो या कोनी ओ बताणो मुस्कल है क्यूं कै अरस्तू जैड़ी व्याख्या करी है बा इतरीं कम है कै कोई भी कयास लगाणो बेमानी है। हाँ ! इण मुजब धार्मिक सुधी कानी उण खुद इसारो कर्‌यो है। मानसिक सुधी री चर्चा उण रै Polities ग्रंथ में मिलै। तो ओ भी कैयो जा सकै कै इण रा (Katharsis) कोई नीति परक अरथाव भी अरस्तू कर्‌या ई हुवैला। पण अब सवाल उठै कै कांई अरस्तू इण सबद रो कोई कलात्मक अरथाव भी कर्‌या है। बूचर जैड़ी 'कलात्मक परितोस' री बात कैयी है उण रा कोई संकेत अरस्तू री पोथियां में कोनी मिलै। अरस्तू री जैड़ी पोथियां मिली है वै आधी–अधूरी है इण कारण कैयो जा सकै कै स्यात अरस्तू इण रो

संकेत कठै ई कर्‌यो हुवै।

दरअसल इण व्याख्याकारां थोड़ो 'अति' सूं काम लियो है। प्रो. मरे 'विरेचन' नै सीधो यूनान री प्राचीन धार्मिक प्रथा सूं जोड़ै हालांकि अरस्तू रै मन में आ बात रैयी हुवैली पण उणां सीधो जिक्र कोनी कर्‌यो। अठै नीति परक अरथाव री बात करां तो आज रो मनोविज्ञान री इण बात री पुष्टी करै। फ्रायड, अेडलर, जुंग आद मनोवैज्ञानिकां रो कैवणो है कै दमित या कुंठित वासनावां मिनख रै व्यक्तित्व नै प्रभावित करै। इण रो निस्कान जरूरी है वरना मिनख दिमागी रूप सूं बीमार हो ज्यावै लो। अरस्तू अठै भावां रै दमन या निस्कासन री बात नीं कैय'र संतुलन री बात कैयी है – A pleasurable vent for overcharged feelings अर्थात् अरस्तू रो मतलब हो कै त्रासदी मिनख रै मन सूं करुण अर त्रास रा अवांछित अंस उभार'र बारै काढ़द्यै। प्रो. बूचर ''त्रास अर करुणा रै साधारणीकृत रूप में हाजिर होय'र अव्यवस्था में व्यवस्था री थापनां सूं कलात्मक प्रक्रिया री बात कैयी है।'' पण डॉ. नगेन्द्र, प्रो. बूचर रै कथन री समीक्सा करता कैवै, ''उण प्रक्रिया सूं प्रेक्सक सिर्फ मन री स्यांती रो अनुभव करै आणंद रो उपभोग कोनी कर सकै। भारतीय दर्सन मुजब तो आ स्थिति आणंद री भूमिका मात्र है, आणंद कोनी।

11.2.5 विरेचन सिधान्त रा दोस अर निराकरण

(i) घणकरै आलोचकां विरेचन सिधान्त पर आक्सेप लगाबंता थकां कैयो है कै त्रासदी नै देख'र करुणा, भय आद मनोवेग जाग्रत तो हो ज्यावै पण उणां रै रेचन सूं सदीव स्यांती कोनी मिलै। घणकरा'क नाटक तो भावां नै सिर्फ 'क्षुब्ध' कर'र ई रै ज्यावै। इण रो जवाब देंता डॉ. नगेन्द्र कैवै, ''सफल त्रासदी का चमत्कार मूलतः रागात्मक है। वह विरेचन प्रक्रिया द्वारा भावों को उद्‌बुध करती है, उसका समंजन करती है और इस प्रकार आनंद की भूमिका प्रस्तुत करती है। यही विरेचन सिद्धान्त की मतत्त्वपूर्ण देन है।''

(ii) विरेचन सिधान्त पर ओ भी आरोप लगायो जावै कै त्रासदी में दिखाया गया भाव नकली हुवै इण कारण बै भावां नै उत्तेजित कोनी कर सकै, विरेचन तो दूर कौड़ी है। इण आरोप पर विचार करां तो बड़ो अदूर दरसी अर घटिया है। जिनगी रो अनुभव तो ओइ'ज बतावै कै कोई भी चोखो नाटक प्रेक्सक नै प्रभावित करै। आपणै सामी उदाहरण है कै 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक देख'र गाँधी जी री जिनगी पर कितरों असर पड्‌यो। बियां भी आज नाटक या सिनेमा आद रो प्रभाव समाज पर देख्यो जावै तो इण कथन री असलियत सामी आ जावै।

11.2.6 विरेचन अर आणंद :

आमतौर पर दुःख सूं सुख प्रापत करणै रो कैवणो विरोधाभास है। करुणा अर त्रास दोन्यूं ई दुःख देणाळा कटु भाव है। अरस्तू रो मत है कै मानसिक विरेचन सूं आ कटुता या दंस खतम हुय जावै। मिनख री उत्तेजना जद खतम हुय जावै तो मन विसद हुय जावै अर बो सुख री अनुभूति करै। प्रो. बूचर 'दुःख सूं सुख' रा प्रतीयमान विरोध री स्यांती रा दो कारण बताया है – (i) 'स्व' री क्षुद्रता सूं मुगती अर (ii) कलात्मक प्रक्रिया। त्रासदी में करुणा अर त्रासरी दुःखद अनुभूतियां रो साधारणीकरण होणै सूं मिनख इण रै वैयक्तिक दुःख रै दंस सूं मुगत हुय जावै। राम या सकुन्तला री विरह दसा, लिछमण री मूर्छा देख'र प्रेक्सक रो हिरर्दे करुणा सूं भर उठै अर उण नै पछै आणंद री अनुभूति हुवै। इण आन्तरिक प्रक्रिया में स्व नै भूल'र व्यस्टी सूं जुड़ जावै। बो अेक सार्वभौम चेतना सूं जुड़ जावै। इण मुजब बूचर रौ कैवणो है त्रासदी अेक कलात्मक सिरजना है। कलात्मक प्रक्रिया में ढळ'र त्रास अर करुणा रा दंस खतम हुय जावै अर दुःख, सुख में बदळ जावै।

11.2.7 विरेचन अर करुण रस :

अरस्तू रो प्रतिपादित त्रासद प्रभाव अर भारतीय काव्य स्यास्त्र रै करुण रस आस्वाद वाळै सिधान्त में घणकरी'क समानता है अर विसमता भी। त्रासदी में करुणा अर त्रास है अर करुण रस

में सो स्थायी भाव है। आधार दोनुवां रो दुःख है। सोक रा जैड़ा लक्सण 'नाट्य स्यास्त्र', 'साहित्य दर्पण', 'दस रूपक' आद में बताया गया है उण सूं ओइ'ज सिध हुवै कै करुण रस में त्रास अर करुण दोन्यूं भावां रो समावेस है। इण भांत विरेचन सिधान्त अर करुण रस में समानता है। साथै इण में विसमता भी घणी इ है। पैली तो आइ'ज कै अरस्तू करुणा अर त्रास दोन्यूं भावां नै अेक साथै यानी जोड़ै रै रूप में मानै जद कै भारतीय मत मुजब करुण अर भयानक अळगा–अळगा रस है। करुण रस में सोक रा जैड़ा कारण गिणाया गया है उणां घणा अैड़ा है जैड़ी बिना त्रास रै भी घटित हो सकै। सोचणाळी बात है कै मौत कांई कम त्रास है ? विरेचन सिधान्त अर करुण रस रै आस्वाद सूं घणी उत्तेजनां रै कारण मनोवेगां रो समन अर उण पछै उपजी स्थांयी तक तो समानान्तर है। विरेचन सिधान्त री आ आखरी हद है पण भारतीय मत मुजब उद्वेग रो समन ई नईं उण रो भोग भी है। भारतीय रस सिधान्त मुजब दुःख रो अभाव आणंद कोनी बल्कै सुध रूप सूं आतमा रो भोग है। डॉ. नगेन्द्र मुजब ओ फर्क उतरों ई है जितरों हरजानों लेणो या लाभ कमावणै में हुवै।

इण भांत कैयो जा सकै कै विरेचन सिधान्त सिर्फ भावां रै उद्वेलन सूं मन नै स्यांती पुगावै जद कै करुण रस आणंद री स्थिति तांई पुगावै।

11.3 इकाई रो सार

विरेचन सिधान्त पस्चिमी काव्य स्यास्त्र नै अरस्तु री घणी महताऊ देन है। काव्य पर प्लेटो रै आक्षेपां रो जवाब देय'र काव्य रै महत्त्व री थापनां करी। आगै चाल'र विरेचन सिधान्त फ्रायड, अेडलर, जुंग सिरखै मनोवैज्ञानिकां रो पथ प्रदर्सण भी कर्‌यो। अरस्तू रो विरेचन सिधान्त, आई. अे. रिचर्ड रो 'अन्तर वृत्तियां रो सामंजस्य' अर आचार्य सुक्ल री 'हृदय री मुगत औस्था' तीनुवां में कीं भेद कोनी। त्रासदी री व्याख्या करतां विद्वान आलोचकां बतायो कै त्रासदी सूं मन नै सुख पूगणै रो कारण बतायो कै त्रासदी में जैड़ै पात्रां पर विपदा रो दुःख पड़ै बै दुस्ट अर क्षुद्र कोनी हुवै। धीरोदात्त हुवै। दुस्ट मिनख रै पतन री कथा सूं किणी नै भी सहानुभूति कोनी हो सकै। त्रासदी रो नायक 'जीवन–मूल्यां' रो पोसक अर संघर्ससील हुवै। त्रासदी में डण साथै प्रेक्सक रो साधारणी करण हुवै क्यूंकै बो जीवन मूल्यां री रक्षा करै। उण री असाधरणता ई आम मिनख नै प्रभावित कर उण रै दिल में सहानुभूति अर आदर भाव पैदा करै। क्षुद्र मिनख री छोटी गळतियां त्रासदी रो निर्माण कोनी कर सकै। इण मुजब स्कॉट जेम्स रो कैवणो है – There is no tragedy in the petty mistakes of petty peson.

सांची त्रासदी मिनख नै सार्वभौमिक अर सर्वकालिक जीवन मूल्यां सूं रूबरू कराय'र उण नै अेक 'जीवण–दरसण' देवै जिण नै अपनाय'र बो आपरी जिनगी नै कीं और खुसहाल कीं और सुखी बणा सकै। त्रासदी मिनख में कस्टां सूं लड़णै रो भाव जगाय'र जिनगी री प्रेरणा देवै।

11.4 अभ्यास रा प्रस्न

1. अरस्तू रै अनुकरण सिधान्त री व्याख्या करो।
2. प्लेटो अर उण सूं पूर्ववर्ती विचारकां रा अनुकरण मुजब विचार लिखो।
3. कला अर प्रक्रिति मुजब अरस्तू रा विचार लिखो।
4. इतिहास अर कला में भेद पर अरस्तू कांई विचार प्रकट कर्‌या है ?
5. अनुकरण सिधान्त रै गुण अर दोसां री व्याख्या करो।
6. अरस्तू रै विरेचन सिधांत री विवेचना करो।
7. काव्य मुजब प्लेटो रै मत री व्याख्या करो।
8. विरेचन मुजब विद्वानां री व्याख्या री समीक्सा करो।
9. विरेचन अर आणंद, विरेचन अर करुण रस पर आप री विचार प्रकट करो।

11.5 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. बूचर (अनुवाद – डॉ. नगेन्द्र) – अरस्तू का काव्य सिद्धान्त।
2. स्कॉट जेम्स : The making of literature
3. डॉ. नगेन्द्र – रस सिद्धान्त।
4. प्रो. बृज भूषण शर्मा – पाश्चात्य काव्य समीक्षा।
5. डॉ. नगेन्द्र – भारतीय काव्य शास्त्र।
6. प्रो. भागीरथ दीक्षित – समीक्षालोक।
7. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – पाश्चात्य काव्य शास्त्र।
8. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – साहित्यिक निबन्ध।
9. डॉ. राजनाथ शर्मा – साहित्यिक निबन्ध।
10. डॉ. नन्द दुलारे वाजपेयी – आधुनिक साहित्य।

इकाई – 12

प्रमुख चिंतक–क्रोंचे अर वांरा सिद्धान्त

इकाई रो मंडाण –

12.0 उद्देस्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 उपयोगिता

12.3 अभिव्यंजना वाद रो प्रवर्तक

12.4 अभिव्यंजना वाद अेक परिचै

12.5 क्रोचे रा दार्सनिक विचार

(क) प्रातिम ज्ञान

(ख) प्रमेय ज्ञान

12.6 सहज अनुभूति

12.7 कला मुजब विचार

12.8 कला रो आणदं

12.9 अभिव्यंजनवाद पर आपेक्ष

12.10 इकाई रो सार

12.11 अभ्यास रा प्रस्न

12.12 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

12.0 उद्देस्य –

पास्चात्य काव्य सास्त्र में अभिव्यंजना वाद घणो महताऊ है। इण इकाई में आप भणोला कै अभिव्यजंनावाद रो स्त्रो कांई है अर इण रा प्रवर्तक कुण हैं ? स्वच्छन्दतावाद सूं अेक स्त्रोत अभिव्यजंनावाद रै रूप में फूट'र साहित्य नै किण भांत प्रभावित कर्‌यो ? बीजै साहित्यिक वादां सूं इण रो कांई सम्बन्ध है ? इण इकाई में आप भणोला ! इण इकाई में आप जाणस्यो –

1. पास्चात्य कावय सिद्धान्त मुजब जाण सकोला।
2. अभिव्यजंना वाद रो साहित्य पर कांई प्रभाव पड्‌यो ?
3. अभिव्यजनावाद पुराणी रूढ़ियां, परम्परावां रो विरोध कर खुद री स्थापना करै।

12.1 प्रस्तावना

अेम. ए. राजस्थानी रे इण प्रस्न–पत्र में काव्य सास्त्र रो अध्ययन करांला। भारतीय काव्य सास्त्र री भांत पास्चात्य काव्य शास्त्र भी घणो जूनो है। पास्चात्य साहित्य साथै भारतीय साहित्य नै भी प्रभावित कर्‌यो है इण कारण पास्चात्य कावय सास्त्र रो अध्ययन करणो जरूरी है। इण इकाई में अभिव्यंजना वाद रो अध्ययन कर्‌यो जावैला।

12.2 उपयोगिता

साहित्य देस अर काल री सीमावां कोनी मानै। अेक देस रो साहित्य दूसरै देस रै साहित्य अर बठै रै पाठकां नै उतरों ई प्रभावित करै। इण कारण साहित्य नै कीं और गैराई सूं जाणणै खार अर बिण रो विस्तृत

अध्ययन करणै खातर अळगै–अळगै साहित्यक वादां मुजब जाणणो जरूरी है। अभिव्यंजना वाद पुराणी रूढ़ियां, पम्परावां, मान्यतावां नै धवस्त करतो बड़ी द्रिढ़ता सूं आप रै विचारां री थापना करै। इण रै अध्ययन सूं विद्यार्थी 'कला' रो महत्व अर साहित्य में समष्टि री जग्यां व्यष्टि रो कितरों महत्व है जाण सकैला।

12.3 अभिव्यंजना वाद रो प्रवर्तक :–

अभिव्यंजना वाद रो प्रवर्तक इटली रो दार्सनिक बेन्डेट क्राचे हो। साहित्य अर कला साथै दर्सन–भीमांसक भी हो। क्रोचे इतिहास रै सरूप, सौन्दर्य सास्त्र, मार्कस्वादी व्यवसा आद रो आप रै द्रिस्टीकोण अर चिन्तनधारा मुजब चिन्तन, मनन कर्‌यो। असल में क्रोच आत्मवादी, दार्सनिक होपण णिरे चिन्तण। सम्बन्ध परोक्ष रूप सूं है। बिणां भौतिकवादी चिंतधारा रै खिलाफ आवाज उठाई। काव्य सास्त्र रा सूक्ष्म विवेचन करता थंका क्रोचे सौन्दर्य सास्त्र (Aesthetice) रो सूक्ष्म विवेचन करतां नावं रै ग्रथं री रचना करी पण बो अरस्तु अर होरेस रै भांत काव्य सास्त्री कोनी हो। सौन्दर्य क्रोचे रै सुतंतर प्रतिपादन रो विसय कोनी हो। उणां मुजब आत्मा री क्रियावां सूं सौन्दर्यनुभूति अेक है। क्रोचे रो उद्देस्य या सिद्धान्त आत्मा री 'अन्तः सत्ता' री थापना करणो हो। इणरै प्रभाव सूं अभिव्यंजनावाद उठ खड्‌या हुयो।

12.4 अभिव्यंजना वाद अेक परिचै :–

अभिव्यंजना वादरो मूल स्त्रसेत स्वच्छन्दतावाद री उण प्रवृत्ति में है जैड़ी परम्परा, रूढ़ी, नियम आद रो विरोध करै। ओ सरू में तो घणो तागतवर अर स्वस्थ आन्दोलन हो जिण परम्परावादिता या रूढ़िवाद रो विरोध कर व्यक्तिवाद पर जो दियो। इणी आन्दोलन रै काण 'कला, कला खातर' सिद्धान्त रो जनम हुयो जिणनै मानणै आळा व्यक्तिवाद में गैरी आस्था कारण कैयो –

".... each then thold a little candle locked up in the chamber of this soul and try the light of it saw with in himself the only reality that mattered.

इण भांत अभिव्यंजनवाद रै सिद्धान्त कवि या कलाकार आप रै अन्तर री भावना रो चित्रण करै बो किणी बाहरली वस्तु रो रूपांकन कोनी करै। दूसरे सब्दां में कै सकां कैहरेक कलाकार आत्मारै च्यानणे में असल सांच ने देखै। बिण नै बिणी ऑख्यां देखेड़ै भीतरलै सांच रै कलारै माध्यम सूं अभिव्यक्त करणो चायजै। आ भावना कलाकार री विसुद्ध वैयक्तिक ई है। इण अभिव्यक्ति में कलाकार री ट्रिस्टी (Vision) काम करै। आ ट्रिस्टी या विजन आत्मा रै प्रकास सूं प्रकासित हुवै। बो या तो आपरै मन री भावना रै मुजब जथार्थ रो 'जस रो तस' चित्राण करणो कोनी हुवै। बो या तो आपरै मन री भावना रै मुजब जथार्थ रो चित्राण कै या अेक खास अवसी नै ई अभिव्यंजित करै। भाव ओ हुयौ कै कलाकार री रचना उण रै मन री उण अवस्था सिरखी ई हुवै पण ओ कींकर हुवै हण री व्याख्या कोनी करी जा सकै।

इण वाद रै समर्थकां रो कैवणो हो, 'आत्मा म्हारी दुनिया है। आप चावो तो ग्रैण करो चावो तो छोडऋद्‌यो'। क्यूं कै उणां मुजब मिनख ई सगळी बांता री कसौटी है –

"Man is the measure of all things" इण बात सूं कैड़ी भी स्थिति में कुण मुकर सकै। रोमांटिसिज्म री सरूआत में कला में व्यक्तिवाद री प्रमुखता ही। उण बखत तक कवि रै भावजात रै 'स्वीकार कोनी कर्‌यो जांवतो पण गेटे अर कॉलरिज सिखै कवि अर समीक्षकां उठाय'र 'सार्वजनिक वस्तु' रै रूप में प्रतिस्ठित करणै री कोसीस करी। इण भांत अभिव्यंजना रै सिद्धान्त नै अेक भो बड़ो क्षेत्र मिलग्यो जिणनै आगै चाल'र क्रोचे सासत्रीय रूप दे दियो। क्रोचे सब सूं पैली अभिव्यंजना नै अेक वाद रै रूप में प्रतिस्ठित कर इण नै कावय रो अेक मात्र सिद्धान्त या सांच घोसित कर्‌यो।

12.5 क्रोचे रा दार्सनिक विचार :–

क्रोचे आत्मवादी दार्सनिक हो। उण कला रो विवेचन दर्सन रै परिप्रेक्ष्य में कर्‌यो है। क्रोचे आत्मा री दो मूल क्रियावां मानै – (1) सिद्धान्त वादी (2) ब्योहारात्मक पैली सूं मिनख ज्ञान प्राप्त करै। अर दूजी सूं जिनगाणी

में ब्योहा करै। बो ज्ञान नै दो भागां में बांटै :–

(क) प्रातिम ज्ञान (Intuition)

(ख) प्रमेय ज्ञान (Logic of Concept)

(क) प्रातिभ ज्ञान :

इण नै कल्पना सूं पैदा हुयो ज्ञान भी कैयो जावै। बुद्धि री क्रिया बिना मन में आपी–आप उठण वाळी मूर्त्त भावना नै प्रातिभ ज्ञान या सहज अनुभूति कैयो जावै। इण नै व्यष्टि रो ज्ञान भी कैयो जावै। ओ ज्ञान वस्तुआं रै बिम्बां अर भावनावां रो निर्माण करै। इण सूं अळगी–अळगी कलावां रो उत्पादन हुवै। प्रातिभ ज्ञान, बौद्धिक ज्ञान सूं सुतंतर हुवै। बिण नै अेक तरां री अलौकिक कै सकां जैड़ी पल भर में दृश्य या भावना नै अपणाय'र बिण नै साकार मूर्त्त अर सोवणो रूप दे देवै। प्रातिभज्ञान आपणै मन में अेक अैड़ै प्राणी रो चितराम बणा देवै जिण में विच्चार करणै री खिमता भी हुवै।

(ख) प्रमेय ज्ञान

इण रो सम्बन्ध तर्क शास्त्र सूं है। तर्क ज्ञान रै माध्यम सूं आपां प्रातिभ ज्ञान रै प्रभावां री आपस में तुलनां करां। बिण रै गुणां री समता, विषमता मुजब बिणां रो वर्गीकरण करां। ओ सामान्य रो ज्ञान हुवै जिण नै आपां बुद्धि सूं प्रापत करां। इण ज्ञान रो सम्बन्ध निश्चात्मक बुद्धि सूं जुड़ेड़ो हुवै। इण सूं सामान्य विच्चारां (Concepts) रो बोध हुवै। प्रमेय ज्ञान विज्ञान अर दर्शन रो जनक है।

12.6 सहज अनुभूति :

क्रोचे सहज ज्ञान नै प्रभाव (Impression) अर संवेदन (Sensation) सूं अळगो मानै। बिण रै मुजब ''जद आपां किणी वस्तु री प्रत्तख अनुभूति या संवेदन प्रापत करां तो आपणो अन्तर्मन निष्क्रिय रैवै। बाहरली वस्तु री प्रतीति री रचना में अन्तर्मन रो सैयोग कोनी हुवै। बा अन्तर्मन री उत्पत्ति ई कोनी हुवै।'' क्रोचे आगै कैवै, ''संवेदन आप रै निरपेख रूप में यांत्रिकता–निष्क्रियता है। इण नै मिनख रो अन्तर्मन मैसूस करै, पैदा कोनी करै।'' मिनख रो अन्तर्मन जद संवेदना नै खापाय'र अेक मेक कर देवै तो बै फेर प्रकृत रा दियोड़ा अनुभव कोनी रैवै आत्मानुभूति बण ज्यावै। बिण बखत बै यांत्रिकता री रचना नीं रैय'र कल्पना री स्रिस्टी हो ज्यावै। इण कारण सहज ज्ञान यांत्रिक अर निष्क्रिय नीं होय'र अैड़ो ज्ञान है जिको सहजता सूं हियै में उतरियावै। आ प्रभाव री सक्रिय अभिव्यंजना है –

"Every true intitution or representation is also expression. That which does not objectify itself in expression is not intution or representation, but sensation and naturality. The spirit does not obtain intutions otherwise than by making for ming, expression."

आप री बात नै क्रोचे उदाहरण देय'र समझांवतां थकां कैवै, – जद चित्रकार किणी वस्तु री झलक मात्र देखै तो आपां आ बात कोनी कै सकां कै बिण नै सहज ज्ञान हुयो है। आपां बिण नै सहज ज्ञान री उपलब्धी जद मानस्यां जब बो बिण नै भलीभांत पूरी तरां आत्मसात कर मन में अभिव्यक्त कर लेवी। इण भांत सहजानुभूति अन्तर्मन री क्रिया अर आन्तरिक अभिव्यंजना है जिकी सौन्दर्य नै जलम देवै। सहजानूभूति आत्मा रो अभिव्यंतनात्मक कर्म (Expressive activity) हुवै। इणी कर्म रै माध्यम सूं कलाकार भावनावां अर संवेगां रै वेग नै नियंत्रित करै अर प्रभावां नै बिंब रूप में अभिव्यक्त करै। इण भांत क्रोचे सहजानूभूति नै अभिव्यंजना मानै–

It is impossible to distinguish intution from expression in this cognitive process. The one appears with the other at the same instant, because they are not two, but one.

आ अभिव्यंजना गूंगी अर आन्तरिक हुवै, आ बारै फूटण वाळी अर शाब्दिक कोनी हुवै। सिर्फ मन रै भीतर ई भीतर हुवै। बारै कठैई कागद, भींत या पाथर पर कोनी हुवै। इण रो मतलब हुयो कै क्रोचे रै विचार में कला

सिर्फ मन में अभिव्यक्ति हुवै। क्रोचे इणी आन्तरिक अभिव्यक्ति नै कला बतावै। स्काट जेम्स क्रोचे रै विच्चारां रो खुलासो करतो कैवै –

12.7 कला मुजब विचार

क्रोचे कला नै आध्यात्मिक प्रक्रिया मानै। बिण रै मुजब कलाकार रै मानस पटल पर जद कोई बिम्ब मूर्त्त रूप धारण कर लेवै तो फेर ओ कतई जरुरी कोनी कै बिण नै कैनवास, पाथर, शब्द या संगीत रै सुरां में व्यक्त भी करै। कल्पना कलाकार रै अन्तर्मन री नजर हुवै। जिण भांत री स्रिस्टी हुवैली उणी भांत रो रूप बाहरी वस्तु नै प्रदान करसी। हरेक मिनख री नजर में अेक निजी विशिष्टता हुवै। क्रोचे मुजब आ द्रिस्टी ही सब कुछ हुवै। जिकै कलाकार रो प्रत्यक्षी करण जितरों विशद हुवैलो उणरी अभिव्यक्ति उतरीं जादा सफल हुवैली। क्रोचे तो अभिव्यक्ति नै ई कला मानै इण कारण बिण री कला भी उतरीं ई ऊँची अर सफल मानी जावैली। अठै उत्कृष्टता विषय वस्तु में नीं होय'र द्रिस्टी (Vision) में हुवै। इण कारण भदेस या कठरूप भी अगर कलाकार रै अन्तर्मन नै प्रभावित करै तो बो बिणां नै भी कला रा विषय बणा सकै। कला में किणी भांत रै विषय री अभिव्यक्ति करी जा सकै। क्रोचे रो कैवणो है कै काव्य विषय रो चुणाव कोनी कर्‌यो जा सकै। कवि खुद रै आळै–दुआळै रै वातावरण सूं जैड़ी भी संवेदनावां ग्रैण करै चाये बै कठरूप या गौण हुवै बिणां नै अभिव्यंजना प्रदान करै। चुणावं करणो तो इच्छा रो काम है जिकी तर्क ज्ञान सूं जुड़ेड़ी है जद कै अभिव्यंजना आत्मा री सहज ज्ञान री प्रक्रिया है। इण कारण अभिव्यंजना (कला) रो चुणाव कोनी हो सकै। क्रोचे मुजब काव्य या कला भीतरी रचना है। बारै जिको कीं है बो कला कोनी –

"The work of art is always internal and what is called external is no longer a work of art."

संवेदनावां नै अभिव्यंजनात्मक रो रूप मिलतां ई कला रो काम सम्पन्न हुय जावै। जद कलाकार आप रै अन्तर्मन में कोई शब्द प्रापत कर लेवै, कोई शक्ल या मूर्ती बणा लेवै, बिण री स्पष्ट भावना ग्रैण कर लेवै तो ओ मान्यो जावैलो कै 'अभिव्यंजना' पैदा होय'र पूरी होगी –

The aesthetic fact is altogether completed in the expressive claboration of the impressions.

बो सहजानुभूति नै शब्दां या रंगा में अभिव्यक्त करण नै अेक फालतू क्रिया अर गैर जरूरी काम मानै। बिण रै मुजब मिनख रो अन्तर्मन ही काव्य अर कवि द्रस्टा है। कदे–कदे अैड़ा हालात पैदा हो ज्यावै कै कलाकार बाहरी अभिव्यंजना करै पण इण बाहरी या शब्दां री अभिव्यंजना सूं कला रै विशुद्ध क्षेत्र रो कीं सम्बन्ध कोनी हुवै। कलाकार री कलाकार रै रूप में स्थिति सिर्फ बिण बखत ई हुवै जद बो खुद प्रेरणा रै पलां में हुवै। जद बिण नै लागतो हुवै कै बो विषय सूं 'तदाकार' हो चुक्यो है। अगर कोई कलाकार अैड़ै प्रेरणा रै पलां बाद कोई रचना करैलो तो बो साचो कलाकार नीं हुवैलो अर बिण री रचना उच्चकोटी री कला नीं होय'र सिर्फ नकल हुवैली। क्रोचे रै इण सिद्धान्त नै अगर बिण री पूरी काव्य विवेचना रै साथै धर'र देख्यो जावै तो बिण मे चोखी सच्चाई मिलैली। इण मुजब महाकवि शैले भी कैयो है –

When coposition degins, inspiration is already on the declive.

आ बात ठीक ई है क्यूंकै दुनिया में जितरीं भी महान रचनावां है बै कलाकारां रै अन्तर्मन री सिर्फ छियां मात्र है।

अठै सवाल उठै कै तस्वीर, मूर्ती, कविता आद अगर कला कोनी तो कांई है ? क्रोचे मुजब अै चीजां स्मृति री सहायक चीजां (aids to memory) है। इणां री सहायता रै माध्यम सूं कलाकार आप री सहज अनुभूति नै दुबारा (Re produce) प्रस्तुत कर लेवै। इणां रै कारण कलाकार री सहज अनुभूतियां बिम्ब आद नष्ट होणै सूं बच जावै। क्रोचे मुजब बाहरी अभिव्यक्ति री उपयोगित इणी बात में है कै इण रै कारण कलाकार आपरी सहज अनुभूति नै लम्बै अरसै तक सुरक्षित राख सकै। क्रोचे रो कैवणो है, ''कदे–कदे आपणै अन्तर्मन में अैड़ा विच्चार पैदा हुवै जैड़ा 'प्रातिम ज्ञान' रै रूप में हुवै पण बिणां री छोटी अर विचित्र सी अभिव्यंजना हुवै बै आपणै खुद तांईं तो ठीक–ठाक हुवै पण दूसरां तांईं सम्प्रेषित करणै में पर्यापत कोनी हुवै।'' इण उद्धरण सूं इतरों तो स्पष्ट हुवै

कै क्रोचे संप्रेषण या प्रातिभ अनुभूति नै दूसरां तक पुगावणै री बात मानै तो है। बो बाहरी अभिव्यक्ति री उपेक्षा तो कोनी करै पण बिण नै सर्वेसर्वा कोनी मानै अगर बो बाहरी अभिव्यक्ति री उपेक्षा करतो तो फेर कविता रो जिको विवेचन अर बचाव कर्‌यो है, बो क्यूं करतो !

खासकर बो आन्तरिक अभिव्यंजना री अभिव्यक्ति कर ई देवै। क्यूं कै बिण रो ओ मानणो है कै जिण नै आन्तरिक अभिव्यंजना री उपलब्धी हुवै बौ अभिव्यक्ति तो करै ई करै। बाहरी अभिव्यक्ति भी बिणां री सफल हुवै जिणां नै भीतरी अभिव्यंजना भली–भांत हो ज्यावै।

12.8 कला रो आणंद

क्रोचे मुजब कला रो आणंद, सफल अभिव्यक्ति सूं प्रापत आत्म मुक्ती रो आणंद हुवै। बिण रै कैवणै मुजब अगर अभिव्यक्ति सफल कोनी तो बा अभिव्यक्ति भी कोनी। बिणां रो कैवणो है –

"Beauty successful expression or better, expression and nothing more, because expression when it is not successful is not expression.

इण रो ओ ईज मतलब हुयो कै क्रोचे सहजानुभूति, अभिव्यंजना अर कला नै पर्यायवाची मानै। बो अभिव्यंजना बाहरी रै बजाय मानसिक अर आन्तरिक मानै अर बिणनै मुगत प्रेरणा कैवै। बिण रै मुजब असफल अभिव्यंजना जैड़ी कोई चीज हुवै ई कोनी। बिण तांई बाहरी रचनावां aids to memory है। क्रोचे कला सृजन रा च्यार पायदान मानै –

(i) अरूप संवेदन

(ii) कल्पना सूं बिणां री आन्तरिक अन्विति

(iii) आन्तरिक अभिव्यंजना

(iv) आन्तरिक अभिव्यंजना रो मूर्ति करण

इण में क्रोचे चौथै अर्थात् आन्तरिक अभिव्यंजना रै मूर्तीकरण नै जरूरी कोनी मानै। बिण रै मुजब कला तांई कोई वस्तु अग्रहणीय कोनी हुवै। इण कारण वस्तु रो चुणाव गैर जरूरी है। अभिव्यंजना अगर असली है तो बारै अभिव्यक्त जरूर हुवैली। चुणाव रो मौको है भी कठै। बिण रै इणी सिद्धान्तां नै अभिव्यंजनावाद रो नांव दियो गयो है।

12.9 अभिव्यंजना वाद पर आक्षेप :

क्रोचे रै मत पर पैलो आक्षेप तो ओईज है कै बो बाहरी अभिव्यक्ति नै गैरजरूरी मान'र कलाकार नै अैड़ी सुछन्दता प्रदान करै जिण सूं अराजता अर अैवैवस्था पैदा हो सकै। बिण रै मुजब सौन्दर्य री घटना कलाकार रै अन्तर्मन में घटित हुवै। अर बिण री अभिव्यंजना भी बिण रै भीतर हुवै। जैड़ा प्रभाव या पदार्थ बो मूर्तिमान करै बै सिर्फ बिण खुद खातर ई मूर्तिमान हुवै। बै बाहरी आकार धारण कोनी करै। अब सोचणै री बात है कै अैड़ी अभिव्यंजना तो हरेक मिनख रै भीतर हुवै। फेर कांई बिण नै कलाकार कैयो जा सकै ? क्यूं कै रचना री अभिव्यंजना सिर्फ अन्तर्मन में ई होय'र रै जावैली अर बा बारै कोई रूप ई नईं धारण करैली तो आलोचक बिणां रो मूल्यांकन किण भांत करैलो ? बो अभिव्यंजना रै सुन्दर अर असुन्दर रो निरणै कींकर करैलो ? कलाकार पर भी जद कोई अंकुश नीं हुवैलो तो भी मनमानी करैलो। बाहरी रचना री कमी रै कारण दंभी, झूठा लोग अपणै आप नै साचो कलाकार बतावैला कै बिणां भी आप रै मन सहजानुभूति प्रापत करली है।

क्रोचे अेक कानी तो कैवै कला सहज अनुभूति है अर सहज अनुभूति वैयक्तिक हुवै। वैयक्तिक अनुभूति रो कदे 'पुनर्भाव' (Repetition) कोनी हुवै। दूजै कानी बिण रो कैवणो है कै सोवणी बाहरी रचना रै माध्यम सूं भाविक भी बा सागी सहजानुभूति अनुभव करै जैड़ी सहजानुभूति कदे कलाकार नै होई। जद सहजानुभूति वैयक्तिक हुवै अर बिणरो पुनर्भाव कोनी हो सकै तो फेर भाविक बिण रो भावन किण भांत करैलो। क्रोचे कनै इण सवाल रो कोई जवाब कोनी। बिण रै इण सिद्धान्त में आ घणी बड़ी खामी है। हालांकि क्रोचे कैवै कै कल्पना

सार्वभौमिक है अर इण रै कारण अेक सिरखा बिंब अळगै–अळगै मिनखां रै मन में अेक सिरखी सहजानुभूतियां नै जनम देवै पण कोनी खावै। जद कलाकार री सहजानूभूति वैयक्तिक अर अभूतपूर्व (Unique) हुवै तो फेर आलोचक बिण री रचना नै देख'र बिण सिरखी सहजानुभूति कींकर प्रापत कर लेवैगो ? बो खुद कींकर कलाकार री मानसिक स्थिति नै प्रापत कर सकै? क्रोचे इण बात नै जाणै हो इणीज कारण बिण आलोचक तांई ओ जरूरी मान्यो कै बिण में ज्ञान, कल्पना अर अैड़ी सुरुचि होणी चायजै जिण सूं बो कलाकार रै द्रिस्टीकोण नै आत्मसात कर सकै।

क्रोचे रो कैवणो है कै जिनगाणी सिर्फ संवेदन कोनी हुवै। संवेदन अर अनुभव तो बाहरली जिनगाणी रा अंग है। बै जद तांईं कला रूप धारण कोनी कर सकै जद तांईं कलाकार बिणां सूं निर्लिप्त होय'र, कल्पना री मदद सूं बिणां री पुनर्रचना नीं कर देवै। असल में संवेदना रै इणी अवलोकन में, पुनर्रचना अर अभिव्यंजना प्रक्रियां में कलाकार नै आणंद री उपलब्धी हुवै। क्रोचे री बात अठै तक ठीक है पण मुस्कल तो जद आवै जद बो कला शब्द रो प्रयोग बिण परम्परागत रूप में कोनी करै जिकै में बो सर्वमान्य है। बिण तांई कला रो अस्तित्व जद तांई रैवै जद तांई कोई कलाकार हाथ में कलम, रंग री कूंची या छैणी–हथौड़ी नीं पकड़ लेवै। सिर्फ मानसिक प्रक्रिया में लाग्यो रैवै। जियां ई कलाकार मनोलोक सूं बारै निकळ कला री अभिव्यक्ति रै साधनां रो प्रयोग करण तांई प्रवृत्त हुवैलो, कला पीछै रै ज्यावैली। आम आदमी तो कला रा दर्शण कलाकृति में ई करै, बै क्रोचे री कला मुजब इण धारणा नै नीं समझ'र उळझण में पड़ ज्यावै। जिण नै दूजा लोग कलाकृति या सौन्दर्य री वस्तु कैवै, बिण तांई बा कलाकृति या सौन्दर्य री वस्तु कोनी। घटिया नकल है। आईज बात सगळी उळझण री जड़ है। इण कारण क्रोचे रो ओ सिद्धान्त बेकार होय'र रै जावै।

क्रोचे अभिव्यंजना पर सबसूं जादा जोर देवै अर ओ भी कै अभिव्यंजना कैड़ी ई भांत री हुवै काव्य हुय सकै। इण रो मतलब आलोचकगणां ओ कर्‌यो कै क्रोचे किणी भांत रो चुनाव विषय वस्तु तांई पसन्द कोनी करै। बिण री नजर में तो विषय वस्तु कितरीं ई निकृष्ट या हीन क्यूं नीं हुवै बा कला रो विषय बण सकै अगर बिण री अभिव्यंजना सफल अर स्पष्ट हो ज्यावै। इण रो अेक नतीजो तो हुयो कै कला रै नांव पर इतरों भदेस अर ऊल–जुलूल बातां रै चित्रण रो खतरो पैदा हुयग्यौ। इण सूं तो विकृत मानसिकताळो अर सणकी मिनख सहजानुभूति नै नांव पर भदेस, कठरूप अर अश्लील आद रो चित्रण कर बिण नै आप री ईमानदार अभिव्यक्ति बता सकै। दूसरां कनै बिण नै नापणै तांई पैमानो भी कैड़ो है ? पण अठै क्रोचे रो अैड़ो मत कोनी हो। जद बो भौतिक रचना या बाहरली अभिव्यक्ति री बात करै तो आलोचक नै पूरी छूट देवै को बिण रचना नै स्वीकार करै या बिण रो तिरस्कार करै। क्रोचे रो कैवणो है कै कलाकार जद आप री मानसिक कला–दुनिया नै छोड'र बाहरली दुनिया सूं मुखातिब हुवै यानी रचना नै मूर्त्तरूप देणै तांई प्रस्तुत हुवै तो बिण पर दुनिया अर समाज रा सगळा नीति, नियम लागू हुवै। बो विशुद्ध कला रै धरातल पर अवस्थित नीं रैय'र हेठां आ ज्यावै इण कारण बो विशुद्ध कलाकार रै अधिकारां सूं भी वंचित हो ज्यावै। बिण भी समाल रै नियमां रो पालन करणो पड़ै अर फैसलो भी, कै बो किण संवेदनां नै अभिव्यक्त करै अर किण नै नीं करै। बिण रो कैवणो है –

We donot externalize all our impressions.

We selected from the crowed of intutions

कलाकार नै ओ सगळो कीं इण खातर करणो पड़ै कै बाहरली कलाकृति री रचना करती बखत बो बिण असल दुनियां में दाखिल हुवै जठै अर्थ अर नीति आद रो घणो महत्त्व हुवै। दुनिया में जीवण नै अर्थ अर नीति आद रो घणो महत्त्व हुवै। दुनिया में जीवण नै अर्थ अर नीति घणा प्रभावित करै। अठै इण बाहरी कला प्रक्रिया नै क्रोचे कला कोनी मानै क्यूं कै कला आप रै विशुद्ध रूप में, उपयोगिता, नैतिकता, व्यौहारिक आद मूल्यां सूं सुतंतर हुवै, पण जद कोई कलाकार बाहरी कलाकृति रो निर्माण करै तो बिण तांई नीति अर नियमां रो पालण उतरों ई जरूरी है जितरों दूसरै लोगां तांई। क्रोचे मुजब काव्य कवि रै पूरै व्यक्तित्व रो चितंराम हुवै बिण में नैतिकता अर सामाजिक नियमां री अणदेखी कोनी करी जा सकै। क्रोचे री इण बात स्कॉट जेम्स भलीभांत समझा'र कैवै –

"...The artist may see what he likes, but he must not say what he likes. He is as free as the wind when his art is not what we mean by art; but when he begins to create as we understand creation, his liberty is gone. "

कठै–कठै ई क्रोचे री बात में विरोधा भास दीखै पण विरोधाभास कोनी। असलियत में क्रोचे दार्शनिक हो इण कारण बो काव्य नै दार्शनिक आधार देय'र निमख री उत्कृष्ट कृति बतायो चावै। काव्य मुजब बो कैवै, ''विच्यारां सूं सम्पन्न नैतिक आदर्शां अर बिणां संघर्षां सूं जाणकारी कर्‌यां बिनां किणी मिनख रो कवि या कलाकार बणणो घणो दौरौ है। कला नैतिकता अर दार्शनिकता री ना तो दासी है अर ना ही कठपूतली फेर भी दोनुवां रो सम्बन्ध इण सूं रैवै। इणीज कारण सगळै जुगां अर राष्ट्रां रै सांचै कवियां री रचनावां अेक उदात्तता देखी जा सकै जैड़ी आपां नै पांखां पर बिठा'र 'सामान्य अर शाश्वत' तांई उडाय'र ले जावै। आ उदात्तता 'एन्द्रिक प्रभावबादी' रचना में कोनी मिल सकै। कला स्वास्थ्य है रोग कोनी क्यूं कै आ जीवण अर महानतर मिनखपणै री मां है। इतिहास में आपनै कोई भी अैड़ो कवि कोनी मिलैलो जिण रो दिल तंग हुवै अर दिमाग सड़ियल, आत्मा क्षुद्र दर्जै री हुवै।'' अठै क्रोचे कवि अर काव्य नै सीधो ई समाज सूं नीं जोड़यो है तो कांई कर्‌यो है ?

क्रोचे पर ओ आक्षेप लगायो जावै कै बो कला रै भाव पख या अनुभूति पख नै कोनी तवज्जह देवै। बिण मुजब तो अभिव्यक्ति रै बलबूतै पर उत्कृष्ट कृति री रचना करी जा सकै। इण भांत क्रोचे कला में जीवण अर जगत री बातां नै कोई जग्यां कोनी देवै। बो बिना बातरी बात कैवण में बिसास राखै इणीज कारण अभिव्यंजना वाद 'कला, कला खातर' सिद्धान्त रो जबरो समर्थक हो। क्रोचे मुजब तो मन री ही अेक प्रक्रिया इण द्रिस्य जगत नै अेक स्वरूप देवै अर दूसरी प्रक्रिया बिण रो कलात्मक आकलन करै। इण हिसाब सूं काव्य रो बौपार अेक मानसिक क्रिया बतावै इणीज कारण क्रोचे सौन्दर्य नै वस्तुगत नीं मान'र मन में ई मानै। आमतौर पर अभिव्यंजना कला रै अभिव्यक्त या बाहरलै रूप नै कैयो जावै। जियां कविता री अभिव्यक्ति छन्द अर शब्द है पण क्रोचे इण नै अभिव्यंजना कोनी मानै। बिण मुजब शब्द या छन्द बारै जद ई प्रकट हुवै जद मन बिण नै पैली गा लेवै। इण भांत अभिव्यंजना ही सौन्दर्य अर सौन्दर्य ही अभिव्यंजना है। इण री आलोचना करता शुक्ल जी कैवै ''अभिव्यंजनावाद भी कलावाद रै भांत काव्य में बेल–बूंटा री नक्कासी आळो सौन्दर्य मान'र चालै जिण रो मार्मिकता या भावुकता सूं कोई सम्बन्ध कोनी।''

क्रोचे इण बात पर जोर कोनी दियो कै कलाकार रो सब सूं बड़ो फर्ज आप री भावनावां नै दूसरां तांई पुगाणो (Communication) हुवै अर कलाकृति दूसरां नै प्रभावित करण तांई या बिणां रै भावां रो उत्कर्ष करणै तांई रची जावै। दुनिया बिण कलाकृति रो मूल्यांकन भी बिण री इणी सफलता रै अनुपात में करै। क्रोचे रै मुजब तो संप्रेषण या निवेदन ब्यौहारिक तथ है जैड़ो क्रियात्मक मनोवृत्ति रो बोपार है जैड़ो बिण अनुभव नै ठावो राखणै तांई या फैलावणै री इच्छा सूं परिचालित हुवै। इणी कारण बो इण बोपार नै कला सूं अळगो मानैजद कै असलियत तो आ है संप्रेषित होणो कला रो तात्विक धर्म हुवै।

सामाजिक प्राणी होण रै कारण मिनख सामाजिक मन रो बिगसाव कर्‌यो है। मिनख चेतन या अचेतन रूप सूं जैड़ो कोई अनुभव भेळो करै बिण नै दूसरां तक पुगावणै री कोसीस करै। बो ई एस्थैटिक अनुभव सफल कैयो जा सकै जैड़ो ठीक–ठाक दूसरां तांई संप्रेषण में सफल हुय जावै। कोई भी कलाकार ना तो जीवण मुजब उपेक्षा रो भाव धारण कर सकै अर ना ही दुनियां सूं कट'र रै सकै पण क्रोचे अैड़ो करणौ रो कैवै। असल में क्रोचे कलाकार नै बाहरली अभिव्यंजना रो मौको नीं देय'र, बिण नै हीणो काम बताय'र कला साथै अन्याव कर्‌यो है। आ इण सिद्धान्त री सब सूं बड़ी कमी है। क्रोचे री कल्पना रो कलाकार इण दुनिया में हो भी कोनी सकै जैड़ो सहजानुभूति में मगन रैवै अर बारै अभिव्यक्ति कोनी करै।

वास्तव में कला नै अभिव्यक्ति तांई माध्यम री जरूरत हुवै ई हुवै। माध्यम चाये भाषा रो हुवै, रंगां रो या पाथर रो। ओ माध्यम ई कलाकार अर भाविक रै मन नै मिलावण आळी कड़ी हुवै। बो इणी सूं कलाकृति या रचना नै समझ'र आणंद प्रापत करै। जिण रचना री भाषा जितरी असरदार, सोवणी अर कलापूर्ण हुवै बा रचना उतरीं ई मार्मिक हुवै।

क्रोचे आप रै इण सिद्धान्त में जिनवाणी मुजब उपेक्षा दिखाई है। बो कलाकार रै अन्तर्मन में विचरण करण आळै अस्पष्ट, अर्थहीन प्रभावां (impressions) री आन्तरिक अभिव्यक्ति नै कला कैवै पण अै प्रभाव अभिव्यक्त होणै सूं पैली, जिनवाणी सूं जुड्यां बिना कैड़ा'क हुवै, ओ कोई कोनी बता सकै। कला अर जिनवाणी रो चोली–दामण रो साथ है। दोन्यूं अेक ई सिक्कै रा दो पहलू है। अेक री कमी रै कारण दूजै री उपस्थिति में शक है। कलाकार आप रै कला भवन री नींव जिनगाणी पर ही धरै जद ई बिण री सफलता है। जीवण अर मिनख सुभाय रै मूल भूत तत्वां, संवेगां अर अनुभवां नै ई कलाकृति में जग्यां देय'र कोई कलाकार आप री रचना नै संप्रेषणीय बणावै।

साहित्यकार या कलाकार जिनगाणी रो रूप आप री कला में किणी फोटोग्राफर री भांत चित्रित कोनी करै। बो जिनगाणी रो अैड़ो रूप कला में दिखाणै री कोसीस करै जिणमें सार्वभौमिकता साथै–साथै सर्वकालिकता हुवै। इण रै अभाव में बिण री रचना 'फोटोग्राफ' दोई पुराणी पड़ सकै। कलाकार रो सहज ज्ञान जिनगाणी अर बिण री प्रक्रिया सूं पूरी–पूरी जाणकारी राखै। इण जाणकारी रै अभाव में बिण री रचना अधूरी रै ज्यावैली इण कारण कलाकार, जीवण री उपेक्षा कोनी कर सकै। बिण री इण अभिव्यक्ति में अगर संप्रेषणीयता कोनी तो बेकार है इण कारण बिण नै रचना री सफलता तांई आप री अभिव्यंजना नै निवेदित बणाणी पड़ै।

कलाकार नै आप रा अनुभव पूरी मिनख जात तांई संवेद्य बणाणै तांई बिणां नै सहज अर बोधगम्य भाषा रै माध्यम सूं प्रकट करणा पड़ैला। आ बात ठीक है कै कला अभिव्यंजना है पण बा जिनगाणी री अभिव्यंजना है जिण नै कलाकार बिण रूप में देखी है अर अैड़ै रूप में प्रकट करी है जिण नै दूसरा भी समझ सकै।

इण पूरै विवेचन पछै कैयो जा सकै कै क्रोचे रो सिद्धान्त दर्शन शास्त्र रै क्षेत्र में तो सहही हो सकै पण काव्य शास्त्र अर कला रै विवेचन रै सन्दर्भ में बिण में घणी ई कमियॉ है। बिण नै अधूरो सिद्धान्त ई कैयो जावैलो।

12.10 इकाई रो सार

अभिव्यंजना वाद रो प्रवर्तक बैन्डेट क्रोचे आत्मवादी दार्शनिक हो पण बिण आप रा विच्यार कला अर साहित रै क्षेत्र में भी प्रकट कर्‌या। बिण मुजब कला रो बाहरी रूप कोनी हुवै अर्थात् बिण रो कैवणो हो कै किणी रचना रो उद्‌घाटन सब सूं पैली मिनख रै अन्तर्मन में हुवै। इण रचना री रंगां, पाथर या शब्दां रै माध्यम सूं बारै रचणै री दरकार कोनी क्यूंकै अैड़ी कोई भी कोसीस बिण अन्तर्मन रै सोवणै सरूप नै नकल या घटिया बणा देवैली। दूसरै शब्दां में कै सकां कै क्रोचे बाहरली अभिव्यक्ति नै दोयम दर्जै री माने। क्रोचे ज्ञान नै दो हिस्सा में बांट्यो जिणमें प्रातिभ ज्ञान कल्पना सूं जुड़ेड़ो बतायो अर प्रेमय ज्ञान रो सम्बन्ध बुद्धि सूं बतायो। क्रोचे मान्यो कै कला तांई सहज अनूभूति जरूरी हुवै। इण सहज अनुभूति रो जनम अन्तर्मन में हुवै जिण नै अभिव्यक्त करणो जरूरी कोनी हुवै। क्रोचे मुजब सौन्दर्य वस्तु में नीं होय'र कलाकार रै मन में हुवै। इण कारण कला रै चितरांम में कोई चीज भदेस, अश्लील या अग्राह्य कोनी। प्रकारान्तर में क्रोचे हालांकि कलाकार रो सामाजिक दायित्व मानै भी है पण अन्तर्मन री कला नै जद बो बाहरी रूप में अभिव्यक्त करै तो कलाकार रै ऊँचै दर्जै सूं हेठां पड़ ज्यावै अर बिण पर दुनिया री रीत, नीत लागू हो ज्यावै। क्रोचे कला रै आणंद नै सफल अभिव्यक्ति सूं प्रापत आत्म मुक्ती रो आणंद मौन। अभिव्यंजनावाद में हालांकि घणी कमियां अर अधूरोपण है पण विशुद्ध कला रै क्षेत्र में इण सूं कला पर कई गैरा असर भी पड्‌या। बाहरी अभिव्यक्ति पर जोर नी होण रै कारण कला क्षेत्र में भ्रान्तियां भी फैली।

12.11 अभ्यास रा प्रस्न

1. सहजानुभूति मुजब विस्तार सूं समझाओ।
2. कला मुजब क्रोचे रा कांई विच्यार है ?
3. सहज आधारित ज्ञान अर तर्क आधारित ज्ञान मुजब क्रोचे रा विच्यार बताओ।
4. 'कला रै आणंद' मुजब क्रोचे रा विच्यार बताओं।
5. अभिव्यंजना वाद पर लेख लिखो।
6. विद्वानगण 'अभिव्यंजनावाद' पर कांई आरोप लगावै ? विस्तार सूं समझायो।

12.12 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. आचार्य रामचन्द्र – शुक्ल चिन्तामणी।
2. आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी – आधुनिक साहित्य।
3. डॉ. नगेन्द्र – भारतीय काव्य शास्त्र।
4. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – भारतीय काव्य शास्त्र।
5. प्रो. ब्रज भूषण शर्मा – पाश्चात्य काव्य समीक्षा।
6. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – पाश्चात्य काव्य शास्त्र।
7. प्रो. भागीरथ दीक्षित – समीक्षा लोक।
8. डॉ. राजनाथ शर्मा – साहित्यिक निबन्ध।
9. डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त – साहित्यिक निबन्ध।

इकाई–13

राजस्थानी छंदसास्त्र अेक ओळखाण

इकाई रो मंडाण –

13.0 उद्देस्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 छंद री उत्पत्ति अर ओळखाण

13.3 छंदा रो महत्व

13.4 छंदा रो सरूप अर भेद

13.5 काव्यसास्त्र अर छंदसास्त्र रौ संबंध

13.6 छंदसास्त्र री परंपरा

13.7 राजस्थानी छंदसास्त्र रौ विकास अर पंरपरा

13.8 डिंगळ रा गीत–छंद अर उणांरी छंदसास्त्रीय विसेसतावां

13.9 डिंगळ गीतां रौ पाठ

13.10 डिंगळ गीतां रा छंदसास्त्रीय साधन

13.11 उक्ति प्रयोग

13.12 डिंगळ गीता के काव्य दोष

13.13 इकाई रो सार

13.14 अभ्यास रा प्रस्न

13.15 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

13.0 उदेस्य

राजस्थानी छंदसास्त्र री सामान्य जाणकारी अर उणरी विसेसतावां वाळी इण इकाई रौ मूळ ध्येय पाठकां नैं राजस्थानी छंदसास्त्र री पिछाण करावण रौ है। इण इकाई रै मांय आपनैं आं बिंदुवां री जाणकारी मिळैला–

1. छंद सबद री व्युत्पत्ति, अरथ, परिभासा
2. छंदां रौ सरूप, भेद
3. छंदां री महताऊ ठौड़
4. काव्यसास्त्र अर छंदसास्त्र रौ सम्बन्ध
5. छंदसास्त्र री परंपरा
6. राजस्थानी छंदसास्त्र रौ विकास अर परंपरा

इणांरै साथै राजस्थानी रा खास गीत–छंदां री मोटी–मोटी विसेसतावां रौ वरणाव करयौ जावैला। राजस्थानी छंदसास्त्र सूं जुड़्योड़ी महताऊ बातां री आवगी ओळखाण करावण रौ ध्येय रैयौ है।

13.1 प्रस्तावना

राजस्थानी छंदसास्त्र नैं जाणण वास्तै राजस्थानी कवियां रा रच्योड़ा डिंगळ गीतां नैं कियां भूल जावां? जूनाकाळ सूं राजस्थानी कवियां खासकर चारण कवियां गीत–छंद रौ प्रयोग कर आपरै जुग परिवेस रा वीर

जोधांरा री कीरत रा बखाण करतां वांरी विरदावळियां गाई। कवि आपरी वीर–वाणी सूं गीतां में वां वीरां नैं अमर कर दिया। राजस्थान में विरलो ई अैड़ौ वीर होवैला जिणरी वीरता रौ कोई गीत नीं रचिज्यौ होवै। अलेखूं वीरां री करणी, वांरी वीरता नैं जीवती राखण वाळा आं गीतां नैं डिंगळ री निजू सम्पदा कैवां तो अपजोगती बात नीं लागै। जका वीरां नैं इतिहास भूलग्यौ वांनैं डिंगळ कवि आपरा गीतां में विरुदाया अर इतिहास रा साखीधर बणाया। अै डिंगळ गीत गेय कोनी, पण आंनैं पढण री अेक कळा है जिकी बेजोड़ अर घणी असरदार है।

गीत–छंद डिंगळ कवियां री मठोठ है, उणां रौ मान अर सान है। गीत–छंद री उत्पत्ति नीं तो अपभ्रंस सूं अर नीं ई ब्रजभासा सूं होयी है। आ रचना डिंगळ कवियां रै हिये री उपज है। वांरै बुद्धबळ री सैलाणी है अै गीत–छंद। जिण भांत सूं दूहो अपभ्रंश रौ मेरुदंड है, उणी'ज भांत गीत–छंद डिंगळ कवियां रौ मूळाधार है। राजस्थानी छंदसास्त्रकारां आपौ आपरी दीठ में गीतां रा कैई–कैई भेद बताया है। 'पिंगळ–सिरोमणि' में 33 भेद, 'हरिपिंगळ' में 22 भेद, 'पिंगळ–प्रकास' में 30 भेद, 'लखपत पिंगळ' में 24 भेद, 'कविकुळबोध' में 84 भेद, 'रघुनाथ रूपक' में 72 भेद अर 'रघुवर जसप्रकास' में 92 भेद आं गीत–छंदां रा उदाहरण समेत बताईज्या है। छंदसास्त्र रै नियमां अर विसेसतावां नैं आं गीत–छंदां सूं ई ओळखिया जा सकै। आं गीतां रा उदाहरण देवतां थकां ई छंदसास्त्रकारां राजस्थानी छंदसास्त्र री पिछाण कराई है।

13.2 छंद सबद री उत्पत्ति अर ओळखाण

काव्य–सास्त्र रै मुजब वरण, विराम, मात्रा, यति, गति रो विचार करनै जिकी सबद–रचना करी जावै उणनैं छंद कैवै। छंद तय करयौड़ा वरणां अर मात्रावां में रच्योड़ी अेक पद्य–रचना है। इणरी व्युत्पत्ति संस्कृत रा छद् धातु सूं होयी है। छंदां रो पेलड़ौ उल्लेख वेदां में मिळै। प्राचीनसमै में रिसी–मुनि छंदां सूं आपरै भावां नैं प्रगट करता। रिसी–मुनियां रै ग्यान री गंगा छंदां में खळकती वेद–पुराणां अर मोटा–मोटा धरम–ग्रंथां रै रूप में लिपिबद्ध होयोड़ी मिळै। ओ ईज कारण है कै वेदां नैं बगत री जातरा करावण वाळा अेक जरूरी अंग रै रूप में छंदां नैं मानता मिळी।

संस्कृत रा 'छद्' धातु रै अरथ में आवृत्त, रक्षित अर प्रसन्न करणौ आवै। जद राजसभावां में चारण अर चारणेत्तर कवि विरुदावली बोलता तो राजा राजी होवता, जुद्ध रा मैदान में जद कविवर वीर रस सूं सराबोर रचनावां बोल'र वीरां री हूंस बधावता तो उणसूं च्यारूंमेर रो रणखेतर अर वीर, वीरता सूं ओतप्रोत होय जावता। इणमें आपरै आश्रयदाता री कीरत नैं उबारण रा भाव होवता। वीरता ई क्यूं राजस्थानी कवियां जठै जिण रस री रचनावां सुणावता बठै रो वातावरण उण रस में रंगीज जावतौ। कैवण रो अरथ ओ कै राजस्थानी कवियां री अे रचनावां ई छंदां रै नांव सूं जाणीजै। जिण रचना में आसरो देवण वाळां नैं राजी करण रो भाव, माटी री मरजाद, मातृभोम री रिछ्या करण रा भाव अर आपरै भावां नै आत्मसात करण री पौंच होवै, वा रचना छंद है। आराध्य रो गुणगान अर हरैक स्तुतिपरक रचना छंद है।

इण खातर प्राचीन काल रा कवि आपरै आश्रयदातावां रै चरित्र सूं जुड़्यौड़ी जिकी रचनावां करी वांनैं छंदां री संग्या दिरीजी। अे रचनावां दोय तरै री होवै। अेक तो वा रचना, जिकी अेक ही जाति रा छंद में रच्योड़ी होवै अर दूजी वा रचना, जिकी न्यारा–न्यारा जाति रा छंदां में रच्योड़ी मिळै। ज्यूं 'नागदमण', 'वेलि क्रिसन रुकमणी री', 'द्रोपदी विनय', 'वीर सतसई' आद अनेक रचनावां रा नांव गिणाया जाय सकै जिकी अेक जाति रा छंदां में रच्यौड़ी है। 'नागदमण' में मंगळाचरण रा दूहां रै पछै आखी रचना अेक ई जाति रा छंद भुजंगप्रयात में रच्योड़ी है। वेलि में वेलियो छंद रो प्रयोग होयौ है। रणमल्ल छंद फगत 72 छंदां री रचना होवतां थकां ई इणमें भांत–भांत रा छंदां रो प्रयोग होयौ है।

स्तुति परक रचना ई छंद कहीजै। स्तुति आपरै इस्ट देवता री होवै कै इस्ट देवी री अर भलांई आपरै आश्रयदाता री, जिणमें वांरै गुणां रो बखाण करीजै, अैड़ी अलेखूं रचनावां राजस्थानी साहित्य में है। 'राउ जैतसी रो छंद', 'रणमल्ल छंद', 'माताजी रो छंद', 'गोरखनाथजी रो छंद', 'रामदेवजी रो छंद' आद रचनावां में नायक रै चरित्र रो पुरजोर गुणगान होयौ है। जिण रचना में मात्रा, वरण, यति, गति अर लय–सुर साथै तुकबंदी रो नियम अपणाइजै अैड़ी काव्य–रचना नैं छंद कैवै। ''पद्य'' अर ''छंद'' अेक अरथ में लिरीजै।

छंद रो अेक अरथ बांधणौ (बंधन) भी हुवै। छंदां में बंध'र कविता नैं ठैराव, वेग, राग अर फूटरापौ (सौंदर्य) मिळै। नदी जिण भांत आपरै दोय किनारां में बंधियोड़ी आपरै अेक निस्चै मारग माथै निरबाध गति सूं बैवती जावै उणी'ज भांत छंद काव्य नैं गति प्रदान करै।

13.3 छंदां रो महत्त्व

छंदां रै माध्यम सूं कवि थोड़ा सबदां रै मांय गूढ अर गैरा अरथ नैं समझावण री खैचल करै। छंदां में तुकबंदी, लय अर सुर रै कारण संगीतात्मकता रो गुण होवै जिणसूं छंद सुणण में आछा लागै। संगीत सूं वातावरण सरस हुय जावै। अैड़ा छंदां नैं सुण'र मानखौ घड़ी भर आपरा दुखड़ां नैं बिसार संगीत री मीठी राग में डूब जावै। कैई छंद हिये रा कंवळा, मीठा अर निरमळ भावां नैं उजागर करण वास्तै बरतीजै। माधुर्य अर प्रसाद गुण सूं लबालब आं छंदां री घणी दरकार है। इण आर्थिक अर भौतिक जुग में मिनख सान्ति चावै। अपरोगी दुनिया में अपणायत चावै। अेकलौ बैठौ मिनख रेडियौ, टेपरिकॉर्डर सूं अैड़ा छंदां नैं सुण'र जीवण री घड़ियां सरस बणाय सकै।

कैई छंद ओज गुण वाळा हुवै। आज ई जद ओजस्वी वाणी में वीर रस रा छंद सुणां तो सुणावण वाळा अर सुणण वाळां रै उणियारां माथै वीर–भावां रा सैलाण देख्यां बिना नीं रैवां। छंदां में वा ताकत है, वो बूतौ है कै जिण रस अर भाव रो छंद पढीजै या बोलीजै उठै वैड़ा ईज भाव रो वातावरण बण जावै। राग–रागिनियां रो छंदां सूं गेरो संबंध है। सोरठ, मांड अर मल्हार राग रा छंद आपरै हेताळू रै हिये हाथ घालण वाळा है।

13.4 छंदां रो सरूप अर भेद

छंद मात्रा अर वरणां (आखर) री गिणती सूं बणै। लघु या छोटा आखरां वास्तै ''। '' रो संकेत हुवै। छोटा आखर– अ, इ, उ, क, कि, कु, ख, ग, घ.....। इणी भांत गुरु रै वास्तै ''S'' रो संकेत हुवै। मोटी मात्रावां वाळा आखर इणमें आवै। ज्यूंकै– आ, ई, ऊ, ऐ, ओ, औ, को, कौ.....।

उदाहरण

लघु में अेक री गिणती, गुरु में दोय री गिणती करीजै–

अ म र – तीन मात्रावां (लघु)

। । ।

मा ळा – (गुरु) चार मात्रावां गिणीजै।

S S

मंगळ भवन अमंगळ हारी = 16 मात्रावां

S।। ।।। । S।। S S

हरैक छंद रै बिचाळै विराम (ठैराव) री ठौड़ हुवै जिणनैं यति कैवै। छंद बोलण री लय नैं गति कैवै। इणमें यति रो ध्यान राखणौ जरूरी समझीजै।

छंद में मोटै रूप सूं चार चरण मानीजै। हरैक में यति रो न्यारौ–न्यारौ नियम हुवै। इणां नैं पद ई कैवै। तीन वरणां री भेळप नैं 'गण' कैवै। वरणां री लघुता अर गुरुता रा विचार सूं गणां रा आठ भेद मानीजै। आं गणां रा नांव इण सूत्र सूं घणा सोरा समझ सकां–

'यमाताराजभानसलगा'

इण सूत्र सूं जिण 'गण' रो रूप जाणणौ हुवै उणरा पैलड़ा आखर रै आगै वाळा दोय आखर फैर मिलावण सूं उण गण रो रूप सांमी आय जावै–

गणां रा नांव	**गिणण रो इलम**	**मात्रावां सूं गण रो रूप**
यगण	यमाता	। S S (ओ यगण रो रूप है।)
मगण	मातारा	S S S

तगण	ताराज	ऽ ऽ ।
रगण	राजभा	ऽ । ऽ
जगण	जभान	। ऽ ।
भगण	भानस	ऽ । ।
नगण	नसल	। । ।
सगण	सलगा	। । ऽ

गणां रौ प्रयोग वरणिक वृत्तां में होवै। छंद रै चरणां में या पदां में आखरी वरणां री समानता नैं 'तुक' कैवै। जका छंदां रै चरणां में 'तुक' नीं मिळै वांनैं अतुकांत रचना कैवै।

छंदां रा भेद

(i) **मात्रिक छंद** :– जिण छंद में मात्रावां री गिणती करीजै वो मात्रिक छंद मानीजै। दूहो, चौपाई, उल्लाला, रोला, छप्पय, गीत, हरि गीतिका मात्रिक छंद है।

(ii) **वरणिक छंद** :– जिणमें वरणां (आखर) री गिणती करी जावै वो छंद वरणिक छंद हुवै। भुजंगी, भुजंगप्रयात, त्रोटक, सवैया, कवित्त, अे वरणिक छंद है। आं दोनूं तरै रा छंदां में ई वांरै चरणां री मात्रावां अर वरणां री गिणती रै हिसाब सूं तीन भेद हुवै–

(i) सम छंद :– सम छंदां रै च्यारूं चरणां री मात्रावां या कै वरण बरोबर गिणती वाळा हुवै। ज्यूंकै चौपाई रा च्यारूं चरण बरोबर हुवै। इण वास्तै चौपाई सम मात्रिक छंद है।

(ii) विसम छंद :– विसम छंदां में चरणां री मात्रा या वरण न्यारा–न्यारा (असमान) हुवै। छप्पय, कुंडळिया आद विसम छंद है।

(iii) अरधसम छंद :– आं छंदां में पैला–तीजा चरण में अर दूजा–चौथा चरण में मात्रावां या वरणां री गिणती बरोबर हुवै या आंरौ क्रम अेक जैड़ौ ई हुवै। दूहो अरधसम मात्रिक छंद रौ पुख्ता उदाहरण है।

आं रै अलावा छंदां रा कीं भेद इण भांत है–

गणबद्ध छंद :– इण भांत रा छंदां में वरणां अर गणां री गिणती तय हुवै। ज्यूंकै– सवैया, भुजंगप्रयात, मंदाक्रांता।

मुक्तक छंद :– इण भांत रा छंदां में वरणां री गिणती तय होवै। गण अर लघु गुरु रौ कोई नियम इणां में लागू नीं होवै।

साधारण छंद :– जिणमें 32 सूं कम मात्रावां अर 26 सूं कम वरण हुवै वो साधारण छंद मानीजै।

दंडक छंद :– जिण छंद रा हरैक चरण में 26 सूं बेसी वरण या 32 सूं बेसी मात्रावां हुवै वो छंद दंडक री ओळी में आवै। दो छंदां रै मेळ सूं जिकौ छंद बणै उणनैं ई दंडक छंद कैवै। छप्पय, कवित्त अर कुंडळिया छंद दंडक रा उदाहरण है।

राजस्थानी काव्य में यूं तो अनेक छंद है पण मोटै रूप सूं तीन छंदां रा नाम घण मोद सूं गिणाया जावै। अै राजस्थानी साहित्य रा खास छंद मानीजै दूहो, गीत छंद अर नीसांणी छंद जूनी राजस्थानी कविता रा प्राण तत्त्व मानीजै।

13.5 काव्यसास्त्र अर छंदसास्त्र रौ संबंध

काव्यसास्त्र काव्य–रचना रै दोनूं पखां कलापख अर भावपख, बारला अर मांयला दोनूं रूपां री विरोळ करै। छंदसास्त्र कविता रौ बारलौ बानौ मानीजै। विद्वानां री मानता रैयी है कै काव्यसास्त्र अर छंदसास्त्र दोनां रौ खेतर न्यारौ निकेवळौ है। आ धारणा दमखम वाळी नीं लागै क्यूंकै काव्य रा सरूप, उणरी रचना–बुणगट, काव्य रा प्राण तत्त्व, कला, सिल्प, भाव आद माथै विचार करण वाळौ काव्यसास्त्र छंदसास्त्र नैं नकार नी सकै।

डॉ. भागीरथ मिश्र रौ कैवणौ है कै छंदसास्त्र कला–खेतर में सबदां रै गति विधान रौ अध्ययन करण वाळौ है। छंदसास्त्र कविता री छंद सम्बन्धी गति रौ विवेचन करै। मात्रा, गण, स्वाराघात आद रै मुजब विविध छंदां रौ सरूप कीकर तय होवै इणरौ अध्ययन करां तो मात्रा या गणां रा मेळ सूं औ तय करीजै कै किण तरै रा छंद सूं किण तरै रौ भाव अर वातावरण बण सकै। किण छंद रौ असर किण तरै रै भावां नैं बधावण में सहायक बण सकै, इणरी कूंत छंदसास्त्र रौ काम है। इण दीठ सूं पतो चालै कै छंदसास्त्र रै बिना 'सबद–अरथ मय काव्य' री कित्ती ई कूंत करलौ वो अधूरौ ई रैवैला। इण बात नैं समझण सारूं घणा थोड़ा'क पण गैरा अरथां में आचार्य भरत मुनि ई लिखै कै 'नीं तो कोई सबद अरथहीण है अर नीं कोई छंद सबदहीण है'। काव्य री आत्मा नैं सजीव, सरस, मनमोवणी, रूपाळी अर बोधगम्य बणावण वास्तै सबद री गतिविधियां अर सबद रा प्रभावां नैं समझावण वाळौ छंदसास्त्र काव्यसास्त्र रौ अंग मानीजै। कोई भी काव्य–रचना होवै उणमें यति–गति, लय–ताल, सुर आद तत्त्व कमोबेसी होवै पण होवैला अवस अर औ सगळा तत्त्व सबदां री गति सूं जाणीजै, इण वास्तै ई छंदसास्त्र अर काव्यसास्त्र रै मेळ री दरकार पड़ै।

13.6 छंदसास्त्र री परंपरा

भारतीय साहित्य रा आदि ग्रंथ वेद है। आ बात तो पुख्ता है कै साहित्य रा जित्ता ई तत्त्व या जूना सैलाण है वै वेदां में लाधै। छंदां रौ पैलड़ौ प्रयोग या उल्लेख ई वेदां में ई होयौ। छंदसास्त्र री परंपरा ऋग्वेद सूं सरू होयी, इणमें गायत्री, त्रिष्टुप अर वृहति छंदां रौ प्रयोग मिळै। सामवेद री रचना छंदां में होयी है। आदिकवि वाल्मीकि रामायण में कैई छंदां रौ प्रयोग पूरै धणियाप सागै कर्‌यौ है। उण बगत छंदां री विरोळ या कूंत खातर किणी सास्त्र री रचना भलांई नीं होयी, पण उण बगत रा विद्वानां नैं छंद रचना रै सिद्धांतां अर नेमधरम रौ पूरौ ज्ञान हो। वाल्मीकि रै पछै आचार्य पिंगल आपरा ग्रंथ 'पिंगल' में कैई वैदिक अर लौकिक छंदां री रचना अर नियमां रौ विवेचन कर्‌यौ है। पिंगलाचार्य रै 'छंदसूत्र' रै साथै ई भारतीय छंदसास्त्र री सरूआत होयी। इण वास्तै छंदसास्त्र अर पिंगलसास्त्र अेक–दूजै रै पर्याय अरथ में ओळखीजै। पिंगल रा इण ग्रंथ में कैई छंदसास्त्रकारां रै नामां रौ उल्लेख तो मिळै, पण वांरी रचनावां कठैई निजर नीं आवण सूं आचार्य पिंगल ई छंदसास्त्र रा आदि आचार्य मानीजै। पिंगल रा इण ग्रंथ रौ नाम 'पिंगल–सूत्र' है। इणरी रचना सूत्रां में करीजी है।

पिंगल रै पछै संस्कृत साहित्य में छंदसास्त्र री रचना करण वाळा विद्वानां में केदार भट्ट 'वृत्त–रत्नाकर' री रचना करी। छंदां री रचना नैं समझण वास्तै ओ ग्रंथ घणौ महताऊ मानीजै। इण ग्रंथ री सबसूं मोटी विसेसता आ है कै इणमें हरैक छंद रा लक्षण उणी'ज छंद में बतायोड़ा है, जिणसूं छंद रौ न्यारौ उदाहरण देवण री जरूत नीं पड़ै। इणरै पछै महाकवि कालिदास (श्रुतबोध), गंगादास (छंदो–मंजरी), अर क्षेमेन्द्र (सुवृत्त–तिलक) रा नाम गिणाया जाय सकै।

बारवीं सताब्दी में हुया हेमचन्द्राचार्य कृत 'छन्दानुशासन' ग्रंथ ई छंद–विवेचन री दीठ सूं खासो महताऊ है, जिणमें संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंश रै छंदां रौ आछौ वरणाव करीज्यौ है। छंदसास्त्र री परंपरा में 'प्राकृत पैंगलम्' ग्रंथ रौ नाम ई आया बिना नीं रैवै। इणरै रचनाकाल नैं लेय'र विद्वानां में मतभेद है, पण घणखरा विद्वान इणनैं चवदवीं सताब्दी री रचना मानै।

हिन्दी में छंदसास्त्र री परंपरा नैं आगै बधावण में आचार्य केशवदास, चिन्तामणि, मतिराम, भिखारीदास, पद्माकर, गजाधर, सुखदेव जैड़ा आचार्यां रौ योगदान रैयौ। केशवदास नूंवां छंदां रौ प्रयोग 'रामचन्द्रिका' ग्रंथ में कर्‌यौ पण स्वतंत्र रूप सूं किणी तरै रौ छंदग्रंथ नीं लिख्यौ। इणरै पछै विगतवार चिन्तामणि कृत 'छन्द–विचार', मतिराम कृत 'छंद–सार', भिखारीदास कृत 'छन्दोर्णव', पद्माकर कृत 'छंद–मंजरी', गजाधर कृत 'वृत्त–चन्द्रिका' अर सुखदेव कृत 'वृत्त–विचार' विसेस रूप सूं उल्लेखजोग है, पण हिन्दी रा रीतिकाल में रच्योड़ा आं सगळा ग्रंथां में 'संस्कृत छंदसास्त्र' री ई नकल करीजी है या उणनैं ई दूजी वार लिखीज्यौ है। हां, कीं अैड़ा छंदां री परिभासावां ई दिरीजी है, जिकै संस्कृत छंदां रै पछै रचिज्या। इण भांत आदिकालीन हिन्दी साहित्य में घणकरा छप्पय, रोला, दोहा, तोमर, त्रोटक, गाथा, उल्लाला आद छंदां रौ प्रयोग होयौ है।

13.7 राजस्थानी छंदसास्त्र रौ विकास अर परंपरा

राजस्थानी साहित्य री आद–जुगाद साहित्य परंपरा अर साहित्य रा इतिहास नै जाणण अर समझण वास्तै उणरै छंदसास्त्र अर अलंकारां री खास प्रवृत्तियां नैं समझणौ घणौ जरूरी है। राजस्थानी साहित्य, साहित्य रै इतिहास में नींव रौ वो मजबूत भाटो है जिण माथै हिन्दी साहित्य रौ रूपाळौ मैल बण्योड़ौ है। उणी'ज समृद्ध साहित्य री आपरी न्यारी छंद परंपरा ई रैयी है। संस्कृत आचार्य कैई नूंवी सैली रै छंदां रौ सिरजण कस्यौ। संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंश री उणी'ज छंद परंपरा नैं अपणाय'र राजस्थानी कवियां कीं मौलिक छंदां री रचना करी। अंवेर री कमी रै कारण कैई छंदसास्त्र तो निजरां ई नीं आवै, फगत वांरौ नामोल्लेख कैई ग्रंथां में मिळ जावै। 'नागराज पिंगल' उण मांय अेक है, पण डॉ. सीताराम लाळस आपरा अेक निबंध में लिखै कै वै इण ग्रंथ (नागराज पिंगल) नैं निजरां देख्यौ है।

राजस्थानी छंदसास्त्र री परंपरा में **'पिंगल शिरोमणि'** ग्रंथ रौ नाम घणौ चावौ है। सिरै ओळी में आवण वाळा इण ग्रंथ रा रचनाकार जैसलमेर रा रावल हरराज भाटी हा। सम्राट अकबर रै बगत में होया रावळ हरराज भाटी री विद्वता इण ग्रंथ में सुभट ई निजर आवै। कवि इण ग्रंथ में 71 भांत रै छप्पय रौ वरणाव करै जिणमें 69 छप्पय तो गुण अर उदाहरण समेत लिख्योड़ा मिळै। इण ग्रंथ में अनेक गीत छंदां रा नाम ई आया है जिकै छंदसास्त्र सूं न्यारा निकेवळा लागै। इण ग्रंथ में ठौड़–ठौड़ माथै वारतावां ई दियोड़ी है, जिणसूं छंदां रा गुण सोरा समझ में आवै। छंद अर वारतावां रै मेळ सूं ग्रंथ घणौ असरदार लागै। छंदां री समझाइस नैं सरल बणावण खातर वारतावां रौ प्रयोग कवि री कुसळता री सैलाणी है। इण जोड़ रौ ग्रंथ राजस्थानी छंदसास्त्र परंपरा में दोरो निजर आवै। इण ग्रंथ में चम्पू काव्य–शैली रौ प्रयोग होयौ है।

संवत् 1721 में जोगीदास चारण रौ लिख्योड़ौ **'हरि पिंगल'** नाम रौ ग्रंथ मिळै। इणरी पांडुलिपि सरस्वती भंडार, उदयपुर में है। डॉ. सीताराम लाळस रा ई अेक लेख सूं आ जाणकारी मिळै कै चारण जोगीदास प्रतापगढ नरेस हरिसिंहजी रै बठै रैवता अर उणांरी बडाई में ई 22 डिंगळ गीत छंदां रौ सिरजण कवि कस्यौ। 'रघुवर जस प्रकास' रा रचयिता किसना आढा ई इण ग्रंथ री साख भरै अर आपरै ग्रंथ में इणरौ उल्लेख करै। डिंगळ री छंद परंपरा नैं समझण सारू इणरौ आपरौ महत्त्व है। इण ग्रंथ रौ अंतिम छंद–

संवत् सतर इकवीस में, कातिक सुभ पख चंद।
हरि पिंगल हरिअंद जस, वणियौ खीर समंद।।

इणमें कीं संकोच री बात कोनी कै राजस्थानी छंदसास्त्र री परंपरा अपभ्रंश सूं आगै आई है। डॉ. नारायणसिंह भाटी आपरा अेक लेख में ओ लिखै कै छंदसास्त्र री परंपरा आपरौ जूनौ वेस बदळ आधुनिक भारतीय भासावां में आई, जिणमें डिंगळ छंद परंपरा रौ संबंध अपभ्रंश परंपरा सूं रैयौ है। अपभ्रंश रा कैई छंद तो आपरा उणी'ज सरूप में डिंगळ कवियां री हठौटी बण्या। उणरै पछै डिंगळ आपरी न्यारी निकेवळी छंदसास्त्र री परंपरा नैं थापित करी।

राजस्थानी छंदसास्त्रकारां में मारवाड़ रै घड़ौई गांव रा रैवासी हमीरदान रतनू रौ नाम ई घणौ चावौ है। आप कच्छ (गुजरात) रा राजकुंवर लखपत रा आश्रित कवि हा। डिंगळ कवियां में हमीरदान रतनू अेक ख्यातनाम छंदसास्त्रकार मानीजै। आप एक सौ पिचत्तर ग्रंथ लिख्या, जिणमें लखपत पिंगल, गुण पिंगल प्रकास, हमीर नाममाळा, जोतिस जड़ाव, ब्रह्माण्ड पुराण, भागवत दरपण आद रा नाम गिणावणजोग है।

लखपत पिंगल :– इण ग्रंथ रौ रचनाकाल वि. सं. 1796 बतायौ जावै–

संवत् सत्तर छिन्नवौ, पणन्तर वरस पटंतर।
तिथि उत्तिम सातिम, वार उत्तिम गुरवासर।।

इण ग्रंथ में कवि 26 भेद गाहा, आठ प्रत्यय अर 23 भेद गीतां रा दिया है। आपरै आश्रयदाता लखपत रै गुणां रौ बखाण आं छंदां में करीज्यौ है। छंदां री प्रस्तुति अर अभिव्यक्ति री दीठ सूं ओ ग्रंथ बेजोड़ है। छंदसास्त्र री ओळी में घण महताऊ इण ग्रंथ में चित विलास, सींहचलो, झड़मुगट, चित्तइलोळ, गौख, साणौर

सामुलौ, अठतालौ मुड़ैल, झमाल, घोड़ादमौ, हरिणझप, त्रिकुटबंध, लहचाळ, सोरठियौ, भमरगुंजार, सावंझड़ौ, भाखड़ी, पालवणी, पाड़गति, वेलियौ, जांगड़ौ, प्रहास, रसखरौ, केवार अर सपंखरो गीत छंदां रौ सांतरौ वरणन होयौ है।

गुण पिंगल प्रकास :– कवि हमीरदान रतनू रचित इण ग्रंथ रौ बगत 1768 वि. सं. रैयौ है। ग्रंथ रै अंत में रचनाकाल रौ उल्लेख इण भांत करीज्यौ है–

संवत सतरह अड़सटे, माह सीत रित मास।
जैहड़ो जोड़े जांणियो, इहड़ो कियो अभ्यास।।
सुणतां पुणतां सीखतां, अधक होय आणंद।
कहियो ग्रंथ हमीर कवि, गुण ग्राहक गोविंद।।

ईस्वर रै गुणां रौ बखाण करतां कवि ग्रंथ–रचना करी है। मात्रिक अर वरणिक छंदां री रीत अर गुणां रो वरणन् इणमें होयौ है। इणमें 71 भेद छप्पय रा, 23 भेद दूहां रा, 36 भेद गाथावां रा है। कविवर खंधाण गाथा रौ विस्तार सूं विचार करतां इणरा 28 भेद बताया है।

गीत छंदां री दीठ सूं इण ग्रंथ में वेलियो सांणोर रा 30 भेद मात्रा प्रस्तार मुजब करीज्या है। मात्रा प्रस्तार रौ नियम गीतां रै सम्बन्ध में दूजा छंदसास्त्रियां नीं अपणायौ। हमीरदान रतनू डिंगळ रा नामी कवियां में आवै। आपरी रचनावां अर सिरजण खिमता री बरोबरी करण वाळा कवि घणा थोड़ा है। हमीरदान रतनू काव्य–सिरजण रै साथै उणरै सास्त्रिय पख नैं लेय'र गैराई अर निजू सोझी सूं विचार कर्‌यौ है।

कवि कुळबोध :– डिंगळ छंदसास्त्र रा रचनाकारां में उदयराम रौ नांव ई सिरै गिणीजै। मारवाड़ रा थबूकड़ा गांव रा रैवासी उदयरामजी जोधपुर महाराजा मानसिंघजी रा कृपापात्र कवियां में अेक हा। इण कवि रौ नाम कठैई–कठैई उमेदाराम ई लिख्योड़ौ मिळै। कवि रौ घणकरौ जीवण तो कच्छ–भुज रा महाराजा देसल (द्वितीय) रा आसरा में बीत्यौ। आप कैई ग्रंथ लिख्या अर काव्यसास्त्र रा तो नामी विद्वान हा अर कैई कलावां रा ज्ञाता हा। आपरौ लिख्योड़ौ छंदसास्त्र रौ ग्रंथ 'कवि कुळबोध' राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर में सुरक्षित है। इणरा विसय 10 तरंगां में बंट्योड़ा है– 1. गीतां रौ वरणन, 2. गीतां रा भेद अर जथावां, 3. अस्त्र–सस्त्र वरणन, 4. डिंगळ–पिंगळ प्रस्नोत्तर, 5. उकत वरणन, 6. रस वरणन, 7–8. अवधांन माळा, 9. एकाक्षरी नाम माळा, 10. अनेकार्थी नाम माळा।

इण ग्रंथ में गीतां रा गुण उदाहरण समेत चौरासी भेद दियोड़ा है। जथावां अर उकत माथै ई कवि पूरौ–पूरौ विचार कर खुलासौ करै। ग्रंथ री सरूआत में अेक गीत रै मांय ई 84 गीतां रौ नामोल्लेख करणौ कवि री चतुराई है। इणरौ रूप अठै देखणजोग है–

मंदार [1] मनमद [2] खुड़द [3] मधकर [4]।
सोख [5] गोख [6] त्रंबक [7] संकर [8]।
सोहणो [9] भ्रमझंप स्रावक [10] भाखड़ी [11] अधभाख [12]।।
गजल [13] मुडियल [14] अरट [15] गजगत [16]।
प्रौढ [17] डोढो [18] सवा [19] स्रीपत [20]।
पाटंत झड़मुगट [21] दीपक [22] सुधभाख [23] रस [24] साख [25]।।
चंद [26] चितयलोळ [27] चंदण [28]।
वीरकंठ [29] विवांण [30] वंदण [31]।
कमळ [32] धमळ [33] प्रहास [34] काछौ [35] सपंखरो [36] सारंग [37]।।
सतरवणौ [38] सालूर [39] सायक [40]।
अेक अछर [41] मधुर भायक [42]।

पालवण [43]ताटंक [44] लुपता सोख [45] अधरस [46] सरंग।।

झडूथळ [47] घडूथळ [48] मदझर [49]।

विकट [50] बंधर त्रिकुट [51] केवर [52]।

मधुर [53] चित्तविलास [54] मंगळ [55] गंधसार [56] गयंद [57]।।

वेळियो [58] मुगतावळी [59] वर [60]।

जांगड़ो [61] गुंजार भमर [62]।

हांसलो [63] लहचाळ [64] हेला [65] मालगीत [66] मयंद [67]।।

त्रंबकड़ो [68] त्रंबाळ [69] खुसर [70]।

सोरठो [71] सेलार [72] सुंदर [73]।

अडळ [74] मनसुख [75] अड़ताळौ [76] चंग [77] चोटियाळ [78]।।

ललत मुगट [79] झमाल़ [80] लंगर [81]।

सींहचलौ [82] दुरमेल़ [83] संगर।

मनउमंग [84] प्रकास मनसुख भेल़ अंक झमाल़।।

ओ ग्रंथ छंदां री बणगट अर रस विवेचन री दीठ सूं महत्त्व राखै। सरू सूं अंत तांई कवि आपरै आश्रयदाता 'देसल' रौ गुणगान अर वांरी कीरत रा बखाण कर्‌या है। गीतां री सैलीगत विलक्षणता में कवि री कुसळाई, ऊंडी निरख–परख निजर आवै। आपरा अेक गीत में समुंदर रा चवदे रतनां साथै खुद रै काव्य री चवदै विसेसतावां नैं तोलतां कवि आश्रयदाता रै गुणां री कूंत इण भांत करी है–

गीतां रा जठै गौड़ीरव, लाट छंद अठै लहर।

वांकी कविता घाट भमर विध, ज्वाळ झाट मुगवतां जहर।।

अम्रत ससंक संख मिण उकती, धनुख धनंतर जथा धर।

मद रस छाक गुणां महिपतियां, छेक जमक रूपी अच्छर।।

वांणी पढै बाज गज वेळां, धनुख चढै सर क्रीत धज।

सुजस धाव सपतारु प्रिथीसर, गुण कमल़ा सारै गरज।।

वार प्रभाव चतुरदस विद्या, राव गुणां भरयिो रतन।

धरम नाव देसल छत्रधारी, मौज सभाव समंद मन।।

रघुनाथ रूपक :– 'रघुनाथ रूपक' रा रचयिता मंछराम सेवग रौ जलम वि. सं. 1827 में होयौ। आपनैं टाबरपणां सूं ई काव्य सिरजण रौ चाव हो। कवि रूप में आपरौ जलम अैड़ी वेळा में होयौ जद मारवाड़ में अनेक कवि अेक सागै आपरी काव्य कुसळाई सूं डिंगळ रा भंडार नैं भरण रा जतन करै हा। सगळा कवि अेक–अेक सूं आगै हा। मंछाराम जोधपुर महाराजा मानसिंघजी अर वांरा गुरु आयस नाथजी री प्रसंसा रौ काव्य सुणायौ जिणसूं राजी होय'र मानसिंघजी 720 रिपियां री सालीणा 'पेन्सन' पीढ़ी–दर–पीढ़ी बांध दी। वांरी आवण वाळी आल–औलाद नैं आ 'पेन्सन' महाराजा सुमेरसिंघजी रै राज तांई मिळती रैयी। मंछ कवि रौ लिख्योड़ौ 'रघुनाथ रूपक' राजस्थानी (डिंगळ) रौ घण चावौ छंदसास्त्रीय ग्रंथ रतन है। पूरौ ग्रंथ 'नव विलास' में रचिज्यौ है। रामकथा रै साथै गीत छंदां री व्याख्या घणी निराळी नै मनमोवणी है। गीत छंदां रै साथै वैणसगाई, जथा, उकति, दोस आद माथै ई कवि विचारां रौ पुरजोर खुलासौ कर्‌यौ है। इणमें 72 गीतां रा गुण उदाहरण समेत दियोड़ा मिळै। गीत–छंदां रा नाम देवणा अठै जरूरी कोनी क्यूंकै 'रघुनाथ रूपक' केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, नूंवी दिल्ली सूं छप'र पाठकां सांमी आयोड़ौ है। इण काळजयी रचना रौ सोरो हाथ लागणौ ई अेक मोटी मैहमा री बात है। रामकथा रौ सोवणौ, रूपाळौ विगतवार फूटरो वरणन हुयो है, जिणमें सरलता अर सहजता है। आ पोथी आपरी गुण गाहकता रै कारण घणी चावी है। चारणेतर कवि री रचना होवतां थकां ई डिंगळ रा चारण कवि इणनैं घणी

दाय करी है। छंदसास्त्र री सीख वास्तै तो इणरा उदाहरण काव्यमय परिभासावां हिये में वैगी ई ढूक जावै। कंठस्थ करण में ई इण ग्रंथ रा उदाहरण सरल अर सहज जाणीजै। विदेसी विद्वान डॉ. ग्रियर्सन ई इणरै लोकचावी होवण री हांमळ भरै। डिंगळ गीतां रौ छंदसास्त्रीय अध्ययन करणौ होवै तो ओ ग्रंथ घणो महताऊ है। काव्यसैली नैं निरखण–परखण वास्तै उदाहरण सरूप अै ओळ्यां देखीजै –

अछरंग अत विध वेद उत्तम, रचै मंडप रीत।
सुत चार दसरथ तणां साथै, परणिया कर प्रीत।।
बड़ कंवरि सीत विदेह री, रघुनाथ वर राजेस।
अरू अनुज कंवरि उरमिला, सो सकज ब्याही सेस।।
न्रपभ्रात कुसधुज तणै नागर, देख पुत्री दोय।
इक मांडवी वर भरत अरिधिन, सुतत कीरत सोय।।
परणाया सुत उजवाळ पाखां, दान लाखां दीध।
गिरवाण हरख्या गगन–मारग, कुसम बरखा कीध।।

रघुवर जस प्रकास :– 'रघुवर जस प्रकास' छंदसास्त्र रौ नामी ग्रंथ है। डिंगळ रा लोकचावा कवि दुरसा आढा री आठवीं पीढी में जलम्या किसना आढा रो ओ ग्रंथ रतन डिंगळ में आपरी ऊजळी पेठ राखै। किसना आढा कैई भासावां रा जाणकार अर प्रतिभावान कवि हा। उदयपुर रा महाराणा भीमसिंघ री आपरै माथै मेहरबानी ही। कवेसर 'भीम विलास' री रचना आपरै आश्रयदाता रा विरद बखाणण वास्तै करी। आपरी कैई स्फुट रचनावां रै साथै अै दोय रचनावां 'भीम विलास' अर 'रघुवर जस प्रकास' घणी सरावणजोग है।

'रघुवर जस प्रकास' डिंगळ छंदसास्त्र रौ मोटौ अर चावौ ग्रंथ है। इणरा चार प्रकरण या अध्याय है, जिणमें पैला प्रकरण में गणागण, दग्धाक्षर, गुरु लघु अर छंदसास्त्र रा आठ प्रत्यय रौ वरणाव कवि कर्‌यौ है। दूजा प्रकरण में 224 मात्रिक छंदां रा लक्षण उदाहरण समेत दिरीज्या है। डिंगळ री कीं गद्य सैलियां में दवावैत, वचनिका, वारतावां आद माथै ई कवि आपरा विचार राख्या है। चित्रकाव्य रा कीं उदाहरण ई इण प्रकरण में दिया है। तीजा प्रकरण में 117 वरण–वृत्तां रा लक्षण अर उदाहरण है। छप्पय छंद रै अनेक रूपां नैं कवि गैराई सूं उजागर कर्‌या है। चौथा प्रकरण में 91 गीत छंदां रा लक्षण उदाहरण समेत दिया है। गीतां रा खास साधन वैणसगाई, अखरोट, जथा, उकति, दोस आद पर आपरा विचार राख्या है। गीत प्रकरण री सरूआत में कवि अेक छंद में ई 91 गीतां रा नाम गिणाय दिया है। राजस्थानी छंदसास्त्र में सबसूं बेसी गीतां रा उदाहरण इण ग्रंथ में मिळै। उदाहरणां रै साथै गीतां रा लक्षण गद्य मांय लिखण रै कारण सोरा अर झट समझ में आय जावै। ग्रंथकार लिखै कै लोग 99 भांत रै गीतां री बात करै, पण म्हैं जित्ती तरै रा गीत पढ्या अर सुणिया हूं उणांरौ इज वरणन अठै कर्‌यौ हूं।

गीत निनाण नाम गिणावै,
सुणिया दीठा जकै लखीजै,
विण दीठा किण भांत वदीजै।

इणसूं आ बात तो पुख्ता होय जावै कै कवि मनचावै ज्यूं गीतां रा नाम अर रूप नीं देय'र डिंगळ में बरतीजण वाळा गीत छंदां रा उदाहरण ई आपरै ग्रंथ में दिया है। ग्रंथ रामकथा माथै लिखीज्यौ है जैड़ौ कै ग्रंथ रै नाम सूं पतौ चालै। ग्रंथ री भासा टकसाळी डिंगळ है। ग्रंथ में कैई ठौड़ काव्य–चमत्कार ई निजर आवै। इण ग्रंथ में दियोड़ा गीत–छंदां रै अलावा ई कैई स्वतंत्र गीत रचनावां ई कवि करी है।

डिंगळ कोस :– महाकवि सूर्यमल्ल मीसण रा खोळायत बेटा मुरारीदान नैं अधूरा 'वंस भास्कर' नैं पूरौ करण रौ जस तो जावै ई है, इणरै साथै आप 'वंश समुच्चय' अर 'डिंगळ कोष' नाम रा ग्रंथा री रचना करी। पिंगळ अर डिंगळ रा पारखी इण कवि रौ 'डिंगळ कोष' ई आधुनिक राजस्थानी छंदसास्त्र परंपरा में नूंवौ प्रयोग

है। डिंगळ कोष मूळ रूप सूं तो डिंगळ रै पर्यायवाची सबदां रौ पद्यबद्ध संग्रै है, इणमें डिंगळ रा 7000 रै लगैटगै सबद मिळै। कवि पर्यायवाची सबदां नैं पद्यमय करण रै साथै कीं गीतां रा प्रयोग ई कर्‍या है। आं गीतां रा लक्षण दूहां में समझायोड़ा है। कुल 16 गीतां रा लक्षण इण ग्रंथ में है। डिंगळ रा छंद सास्त्रियां में मुरारीदान ई अैड़ा विद्वान है जिका छंदां रै उदाहरण में सबदकोस नैं ई सामिल करै। इण ग्रंथ में कीं गीतां रा उदाहरण ई मिळै, पण डिंगळ छंदसास्त्र री परंपरा में वांरौ ओ अेक नूंवौ प्रयास होवण रै कारण ओ ग्रंथ महताऊ है।

आधुनिक छंदसास्त्र री परंपरा में 'डिंगळ कोष' रै पछै राजकोट रा दीवांण रणछोड़जी रौ छंदसास्त्र 'रण पिंगल', महाराजा मानसिंघजी रै बगत रा कवि उदैचन्द भंडारी रौ लिख्योड़ौ अेक छंदसास्त्र रौ ग्रंथ मिळै। जोधपुर रैवासी हरिकिसन **रूपदीप पिंगल** री रचना करी, जिणमें 52 तरै रै छंदां रौ उल्लेख मिळै। मोगड़ा रैवासी हरदान सिंढायच 'छंद दिवाकर' री रचना करी। मोगड़ा गांव रा ई दुलजी सिंढायच छंदां माथै ग्रंथ रचना करी अर गीतां रा लक्षण उजागर कर्‍या। जयपुर रैवासी हिंगळाजदान कविया ई छंदां रौ मोटौ ग्रंथ रचियौ।

इण भांत राजस्थानी छंदसास्त्र री परंपरा ई उणरी साहित्य परंपरा रै ज्यूं ई संपन्न अर समृद्ध रैयी है। छंदसास्त्रां नैं पढण सूं जूनी अर परंपरागत राजस्थानी कविता नैं सरलता सूं समझी जाय सकै।

13.8 डिंगळ रा गीत–छंद अर उणांरी छंदसास्त्रीय विसेसतावां

प्राचीन राजस्थानी साहित्य में डिंगळ गीत–साहित्य री आपरी अनूठी ठौड़ है। डिंगळ गीत अेक खास तरै रौ छंद है। अनेक अैतिहासिक घटनावां नैं आधार बणाय'र चारण कवियां डिंगळ गीत–छंदां रौ सिरजण कर्‍यौ है। राजस्थानी साहित्य में डिंगळ गीतां नैं टाळ देवां तो स्यात इण साहित्य रौ मोल आधौ ई नीं आंकीजैला। डिंगळ गीतां में साहित्यिक विविधता रा दरसण होवै। अै गीत इतिहास री सांची साख भरै। डॉ. नारायणसिंह भाटी रा विचारां में आं डिंगळ गीतां रौ फगत कलात्मक अर साहित्यिक महत्त्व ई कोनी, अै सामाजिक जीवण में अेक तरै री अलख जगावण री खिमता ई राखै। आं डिंगळ गीतां सूं राष्ट्रीय भाव उजागर होवै जिणमें जुग–धरम रौ हेलौ सांपरत निजर आवै। गीत छंद राजस्थानी साहित्य में आपरी न्यारी ओळख राखै। अैड़ी घण महताऊ साहित्यिक विधा रा स्वरूप नैं समझण सारूं इणरी कैई विसेसतावां नैं जाणणौ जरूरी है।

गीत सबद रौ अरथ अर डिंगळ गीत

संस्कृत रा 'गै' धातु रै 'क्त' प्रत्यय लगावण सूं 'गीत' री व्युत्पत्ति होवै। ओ धातु गावण या गेयता रै अरथ में ई नीं आयौ है, इणरौ दूजौ अरथ कैवणौ, वरणन करणौ, अनुवाचन करणौ आद रै अरथ में ई 'गै' धातु रौ प्रयोग करीज्यौ है। डिंगळ गीतां में गेयता रौ गुण नीं होवै, लोकवाद्यां री मदत सूं ई अै गीत नीं गाईजै, अेक खास लय रै साथै आं डिंगळ गीतां रौ पाठ करीजै। छंदोबद्ध रचना होवण रै कारण 'लय' रौ होवणौ तो स्वाभाविक है। लयात्मक पद्धति सूं जुद्ध–वरणन, गुणकथन या विरुदावळी, जसगान रै 'व्युत्पत्तिलभ्य' अरथ में डिंगळ गीतां नैं गीत कैवणौ सारथक लागै। आं गीतां रै वास्तै 'रूपक' या 'रूपग' सबद रौ प्रयोग ई मिळै।

कविराजा बांकीदास,[1] उम्मेदराम बारठ,[2] मंछाराम,[3] अर किसना आढा[4] जैड़ा विद्वानां रूपक नैं गीत रौ पर्याय मान्यौ है। रूपक रौ अरथ राजस्थान में प्रसंसा या सोभा करणी होवै। अठै घणकरा डिंगळ गीत वीर, जोधारां, जूंझारां, दातारां अर महामानवीयां रा जसगान में लिखीज्या। हां, दूजा अनेक विसय ई आं गीतां रा रैया है, पण मूळ सुर विरुदावळी अर कीरत रौ रैयौ है। व्युत्पत्ति अर प्रवृत्ति दोनूं ई दीठ सूं गीत सबद री अठै सारथकता ई है–

1. रचथारा घरकां रा रूपग, रूपग म्हारा काय रचै।
2. समस्त रूपक यधक, रचौ सीस वितरेक।
3. धुर रूपक ज्यांही धरै, विखमा वरण विसेख।
4. अगीयार दोख कवि आखिया, ए निवार रूपग ऊचार।

डिंगळ गीतां रौ नामकरण

डिंगळ काव्य में ज्यूं–ज्यूं डिंगळ गीतां रौ प्रयोग बधण लागौ, उणरा कैई भेद अर न्यारा–न्यारा नाम राखीज्या। हरैक गीत रा नाम रै लारै कीं न कीं कारण छिप्योड़ौ है। 'चौपाई', 'षट्पदी', 'अष्टपदी' जैड़ा छंदां रै नाम सूं ई वांरै गुणां रौ पतौ चाल जावै। आं कारणां सूं गीत री रूपगत विसेसतावां नैं जाणी जा सकै है।

गीत री लय या ध्वनि रै आधार माथै

गीत मृगझंप :– इण गीत में 14–14 मात्रावां रा चरणां रै पछै अेकण साथै 24 मात्रावां री ओळी आवै। इणी'ज क्रम सूं गीत री रचना होवै। हिरण उछाळा मारै जैड़ी छंद री गति होवण सूं इणरौ नाम मृगझंप राख्यौ गयो है–

निज आठ जोग अभ्यास अहनिस,

सधै सुर धर जुगम रवि सस,

करै रोचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम।

गीत जंघखोड़ो :– इण गीत री चौथी ओळी में अनुप्रास री अैड़ी जुगत बैठ्योड़ी होवै कै गीत री गति अर उच्चारण में लड़खड़ावता आदमी री गत दीखै–

घणा दळ हेड़वण जेम राजा सघण, वंस खटतीस जस पाळिवा खट वरण।

रेणवां निवाजणा सदा हेकण रहण, तौ हरीयण, हरीयण, हरीयण, हरीयण।।

इणी'ज भांत गीत 'चितइलोळ', 'गीत गजगति' आद रा ई नाम राखीज्या होवैला।

ओळ्यां अर द्वाळां रै आधार माथै

गीत दोढो :– इण गीत में सामान्य रूप सूं चार द्वाळा होवै। जिण गीत में छह द्वाळा होवै तो वो 'गीत दोढो' बाजै। पांच द्वाळां रा गीत नैं 'सवायौ' अर आठ द्वाळा रा गीत नैं 'गीत दूणौ' कैवै।

गीत सतखणो :– सात–सात मात्रावां माथै यति होवण सूं ओळ्यां में सात खाना (खण) बणण सूं गीत रौ ओ नाम पड़्यौ है।

गीत त्रिपंखड़ो :– इण गीत रौ हरैक द्वाळो तीन ओळ्यां रौ होवण सूं इणनैं त्रिपंखड़ो गीत कैवै।

गीत झड़उथळ :– इण गीत री दूजी ओळी थोड़ा–घणा बदळाव रै साथै तीजी ओळी री ठौड़ राखीजै। पुनरावृत्ति रै कारण इणनैं झड़उथळ गीत कैवै।

कळ चंद्रकळा तंह झड़ कीजै।
रस गीत धड़थळ कुण रीझै।।
रस गीत धड़थळ सुण रीझै।

कळ चंद्रकळा गुण झड़ कीजै।।

इणी'ज भांत जथा या अलंकारां रै आधार सूं गीत विधानीक, गीत चौसर, गीत घणकंठ, गीत चोटियो या चोटीबंध, झड़मुगट अर सिंहचलौ नाम राखीज्या।

तुक या मोहरा–मेळ

तुक या मोहरा–मेळ रै आधार माथै छंदां री बणगट करीजै, जिणमें मोहरा–मेळ रौ विसेस महत्त्व है।

गीत दुमेळो :– इण गीत री हरैक पंक्ति रा आखरी दोय वरणां री तुक दूजी पंक्ति सूं मिळै। अमेळौ गीत, छठताळौ, अहिबंध, झड़लुपत, गीत यकखरो आद रा नाम ई इणी'ज आधार माथै राखीज्या है।

छंदां रै मेळ रौ आधार ई इणांरै नामकरण रौ साखीधर है। कैई छंद दो या दोय सूं बेसी छंदां रै मेळ सूं बणै उणमें वां छंदां रा गुण निजर आवै। गीत गाहणी, गाहा गाहणी, बसंत रमणी, जयवंत, मुणाल सावझड़ो, पालवणी अर त्रिमेळ गीत इणी तरै रा उदाहरण है। इण भांत गीतां रा नाम राखण रै लारै कीं न कीं कारण अवस रैयौ होवैला।

13.9 डिंगळ गीतां रौ पाठ

डिंगळ गीत गाईजै कोनी। आपरी खास कळा अर हठोटी पेटै आंरौ ऊंचै अर ओजस्वी सुर में पाठ कर्‌यौ जावै। कायरां उर सालण वाळा अर वीरां रा वीरत्व नैं बढावण वाळा आं गीतां रौ चारण कवियां जुद्ध रा मैदान में पाठ कर्‌यौ तो मारग भूल्योड़ां नैं कर्तव्य रौ पाठ ई पढायौ। अै गीत वीरां नैं जीवण रौ मोह छोड'र मायड़भोम वास्तै प्राण निछावर करण री सीख देवण वाळा है। आपरा ऊंचा, ओज भर्‌या जोसीला बोलां में काव्यपाठ रौ खास रूप है, लय है। सबदां नैं वाणी रौ संबळ मिलतां ई गीत आपरा मूळ भाव रै साथै सुणण वाळा दुगणौ असर करै। गीत रै सबदां में जिकी ललकार, सीख, तानो, मैणी या कै पछै ओळमै रा भाव है वै कवि रै मूंडै जद असरदार ढाळै सूं प्रगटीजै तो सुणण वाळा कांई च्यारूंमेर रौ वातावरण उण भाव सूं सराबोर होय जावै। कोई विरलौ ई उणसूं उबर सकै। इण कारण डिंगळ गीतां रै पाठ री कळा रौ आपरौ खास महत्त्व रैयौ है क्यूंकै गीत री असल काव्यकळा नैं उजागर करणौ होवै तो उणरौ पाठ करण रौ ढब आवणौ घणौ जरूरी मानीजै। खास उच्चारण रै बिना गीत रौ भाव दब'र रैय जावै। काव्यपाठ री खूबी में कहीजण वाळौ ओ दूहो पढणजोग है–

1. कवि के अक्खर सब सक्खर, कछु कहिबे के वैण।
वो ही काजळ ठीकरी, वो ही काजळ नैण।।
2. वो ही चंदो दीह रो, वो ही चंदो रैण।।

डिंगळ गीतां रै पाठ करण री दोय सैलियां है–

1. **एकादोई सैली** :– इण सैली में गीत री पैली ओळी अेक सांस में अेकण समचै पढी जावै। पछै गीत री दोय–दोय ओळ्यां नै अेक साथै अेक सांस में पढणौ पड़ै। गीत रा अंत में गीत री पैलड़ी ओळी आखरी ओळी रै साथै पढी जावै।

2. **पंचादोई सैली** :– इणरौ पाठ करणौ घणौ अबखौ काम है। इण मुजब तो गीत री पैलड़ी पांच ओळ्यां अेकण सागै अेक सांस में बिना ढबियां बोलणी पड़ै। इणरै पछै दोय–दोय ओळ्यां अेकण साथै पढीजै। गीत रा अंत में उणरी आखरी ओळी रै साथै पैलड़ी चार ओळ्यां पाछी उणी'ज ढाळै पढणी पड़ै। आं दोनूं सैलियां में खास कर सांणोर गीत अर उणरा भेदां रौ पाठ कर्‌यौ जावै। इणरै साथै ई सुपंखरो, पंखाळो, हंसावळो, गोख आद गीत ई इण रीत सूं पढीजै। कैई गीत अैड़ा ई है जिका भांत–भांत सूं पढ्‌या जाय सकै जिंयां 'ढोल गीत'। आठ तरै सूं ढोल बजायो जावै अर आठ ई तरै सूं गीत 'ढोल' रौ पाठ होवै। कैई गीतां रौ पाठ उणांरै लक्षणां मुजब कर्‌यौ जावै। गीतां में वैणसगाई अर जथावां माथै बळ दिरीज्यौ है। इणरौ कारण डिंगळ गीतां नैं घणा प्रभावी बणावणौ रैयौ है।

3. **गीत नायक संबंधी पिछाण** :– अैतिहासिक पात्रां नैं लेय'र करीजी छंद रचनावां में उणरा वंस, पिता, बडेरा, जाति, ठौड़ रौ हवालौ दिया बिना गीत रौ कोई अरथ नीं निकळै क्यूंकै अेक नाम रा कैई सासक अठै होया है। गीत नायकां रौ पूरौ परिचै गीत में होवणौ चाहिजै। इणरै बिना गीत में 'हीण दोस' आय जावै। नायक रौ नाम कैई वार छोटै रूप में होवै– अजीतो, जीतो, पतो, पातल, प्रीथी आद। कैई वार नायक रै नाम रा पर्यायवाची सबदां रौ प्रयोग ई कवि करै रूक्म नै सोनानांमी महेसदास नैं भूतेसनांमी लिख देवै। पिता या पूर्वज रा नाम आगै– तणउ, तणो, सुत, वाळो, हरो जैड़ा सबदां रौ प्रयोग कर नायक रौ वरणन करै– 'वसुदेवउत', 'वसुदेव तणा' तो अठै कृष्ण ई नायक है। नायक री जात, वंस, ठौड़ विसेस सूं ई उणरौ वरणन करीजै। ज्यूंकै मेवाड़ो, कूरम, आमेरपत, सांभरियो जैड़ा सबदां री सांतरी पिछाण होयां पछै ई पाठक गीत रा अैतिहासिक मरम नैं समझ सकै। नायक रै विसय में पूरी जाणकारी राखण वास्तै पाठकां नैं आं सगळी बातां रौ मूळ जाणणौ घणौ जरूरी है।

1310 डिंगळ गीतां रा छंदसास्त्रीय साधन

डिंगळ गीतां रौ छंदसास्त्रीय सरूप अेक न्यारी इकाई रौ विसय होय सकै। अठै फगत कीं छंदसास्त्रीय साधनां री बात करीजैला, जिकौ गीतां री रचना में लागू होवण वाळा नियमां नैं समझण में मददगार बण सकै।

डिंगळ गीतां में जथावां रौ प्रयोग :– कह्योड़ी बात नैं नूंवै ढाळै सूं पाछी कैवण री खास कळा नैं 'जथा' कैवै। इणरी आ विसेसता होवै कै छंद रै पैलै द्वाळै में कह्योड़ी बात नैं खास कळा रै साथै पाछी कैवणी जिणमें पुनरुक्ति होवतां थकां ई पुनरुक्ति दोस नीं लागै। कविता में वरणन करण वास्तै जिण रीत रौ प्रयोग होयौ, उणरै क्रमवार निभाव नैं 'जथा' कैवै। रघुनाथ रूपककार रा सबदां में–

रूपक मांहे रीत जो, वरणन करे विचार।
सो क्रम निबहै सो जथा, तवै मंछ विसतार।।

आं जथावां रै निभाव में अलंकारां रौ ई पूरौ सैयोग रैवै। मंछ कवि आपरा ग्रंथ में इग्यारा जथावां रौ नाम गिणावतां उणांरौ सांतरौ वरणाव कर्‌यौ है। रूपककार रै सबदां में इग्यारा जथावां रा नाम इण भांत है–

विद्यानीक, सर, सिर, वरण, अहिगत, आद अतांण।
सुद्ध, इधक, सम, नून, सो, जथा ग्यारह जांण।।

कवि किसना आढा 'रघुवर जस प्रकास' में इग्यारा जथावां री बात करै पण उदयराम 'कवि कुळबोध' में जथावां रा इक्कीस भेद बताया है। डिंगळ गीतां रै सिरजण में आं जथावां रौ घणौ महत्त्व है। उदाहरण रूप में अठै 'अहिगत जथा' रौ प्रयोग इण गीत में पढणजोग है–

तरवर नदियाण सुरसरी सुरतर, सरपां गज एरावत सेस।
सरां नखत रजनीस मानसर, अवनीसां ओपम अवधेस।।

जिण कविता में कवि मन सरप री चाल मुजब वरणन करै उणनैं अहिगत जथा कैवै। इण जथा में भगवान राम रौ गुणगान करतां कवि कैवै कै रूंखां में कल्पवृक्ष, नदियां में गंगा, सरपां में सेसनाग, हाथियां में एरावत, तळाबां में मानसरोवर अर नखतरां में चन्द्रमा है उणी'ज भांत राजावां में साकेताधिपति भगवान राम री घणी भारी सोभा है।

डिंगळ गीतां में वैणसगाई रौ प्रयोग :– वैणसगाई डिंगळ काव्य रौ चावौ सबदालंकार है, जिणमें काव्य–रचना रै पैलै चरण रौ पैलौ वरण उणी'ज चरण रै अंतिम सबद रै पैली आवै अर अंतिम सबद रै आदि में नीं तो मध्य या अंत में ई आवौ, पण उणरौ इण भांत प्रयोग ई वैणसगाई अलंकार है। छंद रै हरैक चरण में आं वरणां रै संबंध रौ नियम मुजब निभाव करणौ ई 'वैणसगाई' है। डिंगळ कवियां रौ मानणौ है कै सबदां अर वरणां रै इण संबंध रौ पालण करै तो कविता में किणी भांत रौ कोई दोस ई नीं रैवै। काव्य में रस पोखीजै सो न्यारौ। सूर्यमल्ल मीसण रै मत मुजब–

वयण सगाई वाळियां, पेखीजै रस पोस।
वीर हुतासण बोल में, दीसै हेक न दोस।।

वीररस रा कवि इणरै प्रयोग खातर सावचेत रैया है। ओ अनुप्रास रौ ई अेक रूप है। इणरै प्रयोग सूं कविता री सबद योजना में अेक चमत्कार निजर आवण लागै। 'वैणसगाई' में वरणां (आखरां) रौ आपसी संबंध इण भांत बैठायौ जावै कै जिणसूं कविता में नादसौंदर्य प्रगट होवै। वरणां री ध्वनि साम्यता रै कारण 'वैणसगाई' सूं सराबोर रचना नैं कंठस्थ करणौ ई सोरो लागै। इणरा प्रयोग सूं दग्धाखर अर असुभ गणां रौ दोस नैड़ौ ई नीं रैवै–

आवै इण भासा अवस, वैणसगाई वेस।
दग्ध अखर बद दुगण रो, लागै नह लवलेस।।

काव्य दोस ई 'वैणसगाई' रा प्रयोग सूं मिट जावै। इण बाबत रघुनाथ रूपककार लिखै–

खून कियां जाणै खलक, हाड बैर जो होय।
वैण सगाई वयण तो, कलपत रहे न कोय।।

मध्यकालीन डिंगळ कवियां इण अलंकार रौ भरपूर प्रयोग कर्‌यौ है। 'रघुवर जस प्रकास' में इणरै दस भेदोपभेद री व्याख्या करीजी है, पण आदि, मध्य अर अंतमेळ वैणसगाई रा तीन खास भेद बताइज्या है।

13.11 डिंगळ गीतां में उक्ति प्रयोग

डिंगळ गीतां में 'उकत' या 'उक्ति' री आपरी ठौड़ है। गीत में कुण, किणसूं अर किणरै वास्तै किण भांत रा वचन कैवै। उक्ति रा कैई भेद है। उक्ति रौ सावळ प्रयोग नीं करण सूं काव्य में अंध दोस लागै। 'रघुनाथ रूपक' अर 'रघुवर जस प्रकास' में नव तरै री उक्तियां रौ प्रयोग होयौ है। कवि उदयराम 'कवि कुळबोध' में कीं उक्तियां रा नाम इण भांत गिणाया है–

1. सन्मुख उक्ति, 2. परमुख उक्ति, 3. परामुख उक्ति, 4. श्रीमुख उक्ति, 5. मिश्रित उक्ति। इणां री ई न्यारी–न्यारी सुद्ध[1] अर गरभित[2] रूप में व्याख्या करीजी है। रघुनाथ रूपककार उक्ति रै विसय में कैवै कै 'स्याणा–समझणा मिनखां रै मूंडै सूं निकळण वाळा सुद्ध सखरा बोल ई उक्ति है।' बानगी देखीजै–

भाखै धारण बुध भला, सखरा वचन सुजांण।
कहै मंछ कवि जिकण नूं उक्त सदाहिज आंण।।
परमुख सनमुख परामुख, श्रीमुख वळै सुजांण।
कहै मंछ कवि जुक्तकर, चार उकत पहिचाण।।

वरणनीय रौ कोई दूजौ मिनख वरणन करै तो 'परमुख' उक्ति है। वरणनीय रौ जस उणरै सांमी ई करीजै तो 'सनमुख' उक्ति है अर परामुख उक्ति 'प्रौढोक्ति' है। किणी ओर जुगत सूं वरणनीय रौ जस करणौ या वरणन करणौ 'परामुख' उक्ति है। आपरा मुख सूं ई मिनख खुद री बात करै वा 'श्रीमुख उक्ति' है। इणमें कलपत अर साख्यात दो भेद कहीजै।

डिंगळ गीतां में आं उक्तियां रौ विसेस महत्त्व रैयौ है। 'रघुनाथ रूपक' में उक्तियां रै प्रयोग रौ सांतरौ खुलासौ कवि कर्‌यौ है। उदाहरण सहित उक्तियां नैं समझण सारूं इण ग्रंथ री महताऊ भूमिका है।

13.12 डिंगळ गीतां में काव्य–दोस

कोई भी कविता जद तैय कर्‌योड़ा सास्त्रीय नियमां नैं तोड़ती थकी रचीजै, सबदां री तोड़–मरोड़ अर अरथ–अनरथ रौ भांन जठै नीं रैवै वठै काव्य–दोस री गुंजाइस बणै। 'रघुनाथ रूपक' में कवि मंछाराम ई काव्य दोसां बाबत अै इज बातां बताई है। अरथ रौ अनरथ, सबदां रौ जथाजोग प्रयोग नीं करणौ, मात्रावां री घटत–बढत आद काव्य–दोस रा कारण है। रूपककार दस काव्य दोसां रौ वरणन आपरा ग्रंथ में करै अर 'रघुवर जस प्रकास' में किसना आढा इग्यारा काव्य दोसां री बात करै। आं काव्य दोसां रा नाम मिनखादेह अर मिनख रै जातिगत दोसां अर खामियां रै आधार माथै राखीज्या है। अेक न्यारा अध्याय में काव्य दोसां री व्याख्या करीजी है। अठै फगत नामां रौ उल्लेख करणौ ई वाजबी समझूं–

उक्ति दोस होवै बठै 'अंध दोस' मानीजै। भासा विविधता नैं 'छबकाळ दोस' कैवै। वरणनीय रै पिता, बडेरा या जात रौ खुलासौ नीं होवै तो 'हीण दोस' मानीजै। मात्रा या वरणां री घटत–बढत नैं 'पांगळो दोस' कैवै। अेक ही छंद में रचना नीं होवण सूं 'जातविरोध दोस' होवै। अरथ रौ खुलासौ नीं होवै उठै 'अपस दोस' लागै। जथावां रौ निभाव नीं होवै तो 'नाळछेद दोस' मानीजै। इणी भांत कठैई अनुप्रास अर कठैई अनुप्रासहीण रचना होवै बठै 'पखतूट दोस' लागै। पैली री बात पछै अर पछै री बात पैली कैवण सूं क्रमभंग होवै तो 'निनंग दोस' बणै। अेक ही ठौड़ या चरण में दोय अरथ निकळै उठै 'बहरौ दोस' होवै। चरण में अमंगळकारी सबद बणै तो उठै 'अमंगळ दोस' बणै।

छंदसास्त्रकारां काव्य सिरजण करण वाळां नैं सावचेत कर कैवै कै आं काव्य दोसां सूं काव्य नैं पूरी तरै मुक्त राखणौ है। काव्य–दोस कविता री मोटी खामी है, बैमारी है। सांतरी, सजोरी कविता में काव्य–दोस नीं लाधै। रूपककार काव्य नैं काव्य दोसां सूं उबारण रौ आदेस दियौ है। ऊपरला वरणन सूं डिंगळ गीतां रै छंदसास्त्रीय उपकरणां रौ ग्यान होवै। छंदसास्त्रीय नियमां रौ निभाव ई काव्य रौ सांचौ बांनौ है।

13.13 इकाई रो सार

राजस्थानी छंदसास्त्र री सामान्य जाणकारी रै साथै छंदसास्त्र री विकास परंपरा अर आज तांई रा छंदसास्त्रीय ग्रंथां रौ हवालौ देय'र आ बात पुख्ता करीजी है कै राजस्थानी छंदसास्त्र री आपरी गुमेजजोग परंपरा रैयी है। डिंगळ गीतां रै माध्यम सूं छंदसास्त्रीय परंपरा नैं आगै बधावतां, छंदां रा महताऊपण, छंद रै सरूप अर भेद, काव्यसास्त्र अर छंदसास्त्र रा संबंध, डिंगळ रा घण महताऊ छंदसास्त्रीय ग्रंथां रौ वरणन, छंदां रा नाम अर जात, छंदां री बणगट, डिंगळ गीतां री छंदसास्त्रीय विसेसतावां रौ वरणन इण इकाई में करीज्यौ है।

डिंगळ गीतां रै नामकरण री आपरी रीत है। गीत री लय, ध्वनि अर गति री पकड़ सूं उणरा न्यारा–न्यारा नाम दिरीज्या है। डिंगळ गीतां रै वाचन री भी आपरी न्यारी कळा रैयी है। वाचन री 'एकादोई' अर 'पंचादोई' सैली रौ उल्लेख करतां डिंगळ गीतां रै बारला सरूप रौ खुलासौ होयौ है। आं गीत छंदां री पूरी जाणकारी वास्तै उणरै सास्त्रीय साधनां री ओळखाण राखणी घणी जरूरी है। काव्य रा छंदसास्त्रीय सरूप नैं जाणण वास्तै ओ अध्याय अवस ई पाठकां री मदद करैला। अैतिहासिक जाणकारी, सबदां रौ ग्यान, सबद पर्याय, अनेकार्थी सबदां रौ ग्यान आद सूं पाठक डिंगळ गीतां रै असल मरम अर अरथ नैं पकड़ण री खिमता राखै। राजस्थानी भासा रा चावा छंदसास्त्रीय ग्रंथां 'लखपत पिंगळ', 'गुण पिंगळ प्रकास', कवि कुळबोध, रघुनाथ रूपक, रघुवर जस प्रकास अर 'डिंगळ कोस' आद रै माध्यम सूं आं गीत छंदां री ओळखांण करी जाय सकै। आंनैं पढण री आपरी हठोटी पण पाठक अपणाय सकै। आं छंदसास्त्रीय ग्रंथां सूं राजस्थानी छंदसास्त्र सबळ अर समृद्ध होयौ है। अै रीति ग्रंथ राजस्थानी साहित्य रा कीरत थंभ ई नीं, आधार देवण वाळा 'टोडा' है। जूनी कैवत रै मुजब 'टाटी टूट पड़ै अर भींतां भार झेलै' राजस्थानी रा समृद्ध काव्य साहित्य रौ सगळौ भार आं छंदसास्त्रीय ग्रंथां माथै है। इणरौ निभाव आवण वाळा साहित्य सिरजकां नैं ई करणौ चाहिजै।

13.14 अभ्यास रा प्रस्न

साव छोटा सवाल

(सबद सीमा 15 सबद)

1. 'चौपाई' अर 'अष्टपदी' में कांई भेद है ?
2. हमीरदान रतनू री कोई दोय रचनावां रा नाम लिखौ।
3. कविराजा मुरारीदान री छंदसास्त्रीय रचना रौ नाम लिखौ।
4. 'गुण पिंगळ प्रकास' किण कवि री रचना है ?
5. राजस्थानी रा दोय छंदसास्त्रां रा नाम लिखौ।
6. चावा छंदसास्त्रकार रै रूप में किणी दोय रा नाम लिखौ।
7. छंदसास्त्रां में मूळ रूप सूं किणरौ वरणन होयौ है।
8. गीतां में कवियां किणरा बखाण करचा है ?
9. छंद री बणगट में किण बातां रौ ध्यान राखणौ पड़ै ?
10. छंद रचना में किण–किण माथै विचार करीजै ?
11. छंदां रौ सरूपोत रौ पैलड़ौ रूप किणमें मिळै ?
12. छंद रौ साब्दिक अरथ कांई है ?
13. लघु–गुरु रा संकेत कांई है ?
14. गीत 'मृगझंप' सूं आप कांई समझौ ?
15. गण बणावण वाळौ सूत्र लिखौ।
16. छंदां रा कित्ता भेद मानीजै ?

छोटा सवाल

(सबद सीमा 100 सबद)

1. छंदां रै भेदोपभेद नैं समझावौ।
2. काव्यसास्त्र अर छंदसास्त्र में कांई संबंध है ?
3. राजस्थानी छंदसास्त्र री विकास परंपरा नैं समझावौ।
4. 'लखपत पिंगळ' ग्रंथ री ओळखाण करावौ।
5. 'कवि कुळबोध' किण कवि री रचना है। इणमें वरणित गीत छंदां रौ उल्लेख करौ।
6. डिंगळ गीतां रै पाठ री आपरी न्यारी सैली है। खुलासौ करावौ।
7. डिंगळ गीतां रा छंदसास्त्रीय साधनां री व्याख्या करौ।
8. डिंगळ गीतां री विसेसतावां रौ वरणन करौ।
9. डिंगळ गीतां रै नामकरण रौ आधार कांई है ?
10. एकादोई अर पंचादोई सैली सूं आप कांई समझौ ?

निबन्धात्मक सवाल

(सबद सीमा 500 सबद)

1. राजस्थानी छंदसास्त्र री ओळखाण अर विसेसतावां री विरोळ करौ।
2. 'डिंगळ गीतां री न्यारी मठोठ अर हठोटी है' इण कथन नै समझावो।
3. ''रघुनाथ रूपक'' गीतां रो अर 'रघुवर जस प्रकास' ग्रंथां री अेकरूपता अर अंतर नैं समझावौ।
4. राजस्थानी छंदसास्त्र रै खास–खास सास्त्रां माथै लेख लिखौ।
5. गीत सबद रौ अरथ अर डिंगळ गीतां री खास विसेसतावां रौ वरणन करौ।

13.15 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. रघुनाथ रूपक, सं. महताबचन्द खारेड़, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
2. डॉ. नारायणसिंह भाटी, प्राचीन डिंगळ गीत साहित्य, राजस्थानी शोध–संस्थान, चौपासनी, जोधपुर।
3. डॉ. आलमशाह खान, वंश भास्कर; एक अध्ययन, राजस्थानी साहित्य अकादमी (संगम), उदयपुर।
4. डॉ. वेंकट शर्मा, काव्यशास्त्र : भारतीय दीठ, आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध संस्थान, गंगाशहर, बीकानेर।
5. सं. डॉ. नारायणसिंह भाटी, परंपरा (भाग 76), राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर।
6. डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति,।
7. डॉ. मनहर गोपाल भार्गव एवं श्री राकेश (संपादकद्वय), रस, दोष, छंद, अलंकार निरूपण।

इकाई–14

राजस्थानी काव्य रा प्रमुख छंद, अलंकार अर काव्य–दोस

इकाई रो मंडाण

14.0 उद्देस्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 छंद

14.3 अलंकार

14.3.1 सबदालंकार

14.3.2 अरथालंकार

14.4 काव्य–दोस

14.5 इकाई रो सार

14.6 अभ्यास रा प्रस्न

14.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

14.0 उद्देस्य

किणीं भासा री काव्यगत विसेसतावां री विरोळ करण वास्तै उणरा भाव–पख अर अभिव्यक्ति–पख माथै गैराई सूं विचार कस्यौ जावै। भाव–पख रो जुड़ाव रस सूं होवै तो अभिव्यक्ति रो सम्बन्ध भासा, छंद अर अलंकारां आद सूं होवै। काव्य नैं परखण खातर काव्य–सास्त्रियां छंद–अलंकारां रै साथै जथावां अर काव्य–दोसां रौ वरणाव ई करियौ। इण इकाई रौ ध्येय विद्यार्थियां नै राजस्थानी भासा काव्य में बरतीजणवाळा खास छंदां, अलंकारां अर काव्य–दोसां री ओळखाण करावणौ है।

1. इण इकाई में दूहा छंद रौ महत्त्व अर उणरा भेद दिरीज्या है।
2. वेलियो, निसांणी, उल्लाळा, छप्पय, रोळा, त्रिभंगी इत्याद डिंगळ गीत छंदां रै खास रूपां री ओळख अर बणगट री जाणकारी मिलैला।
3. अलंकार प्रयोग, राजस्थानी रा खास अलंकार– वैण सगाई अर उणरा भेद, अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आद रौ परिचै मिलैला।
4. काव्य–दोसां री परिभासा अर उदाहरण इत्याद रौ खुलासौ होवैला।

14.1 प्रस्तावना

आत्मा री मुगत दसा ग्यान दसा है। उणी'ज भांत हिरदै री मुगत दसा रस दसा होवै। इण मुगत दसा रै वास्तै मिनख री वाणी जिकी सबद संरचना करै उणनैं कविता कैवै। इण कविता में मिनख जीवण रौ सांच अर कल्पना दोनूं होवै। सबद अर अरथ रा सैंजोड़ रै साथै कविता रा फुठरापा नैं बधावण सारू काव्य–तत्त्वां री पूरी खैंचळ होवै। काव्य रसमय अर असरदार बणै इण खातर गुण, रीति, भासा, छंद, अलंकारां रौ सैयोग घणौ जरूरी है। रूप, रस, गंध, तेज अर प्राण सूं ज्यूं पंचभूत मिनखा देह बणै उणी'ज भांत काव्य ई सबद, अरथ, ध्वनि, अलंकार, रीति, गुण, छंद अर रस तत्त्वां सूं बणै।

राजस्थानी साहित्य री जूनी अर समृद्ध परंपरा रैयी है। इण भासा रा साहित्य नैं समझण सारू उणरै छंद–सास्त्र अर अलंकारां री खास विसेसतावां नैं जाणणौ घणौ जरूरी है। काव्य–सास्त्र रै मुजब वरण, विराम, मात्रा, यति, गति रो विचार करनै जिकी सबद रचना करी जावै उणनैं छंद कैवै। छंद कीं तैय वरणां अर मात्रावां

में रच्योड़ी अेक पद्य रचना है। इणरी व्युत्पत्ति संस्कृत रा छद् धातु सूं होयी है। छंदां रौ पैलड़ौ उल्लेख वेदां में मिळै।

छंदां री उत्पत्ति, ओळखाण, छंदां रौ महताऊपणौ, छंद–सरूप अर भेद अेक न्यारी–निरवाळी इकाई रौ विसय है। छंदां रै माध्यम सूं कवि थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता राखै। गूढ़ अर गैरा अरथां नैं समझावण री खैचळ आं छंदां में होवै। छंद कविता रो बानौ है, अेक संचौ है। जिण भांत नदी आपरै दोनूं तटां रै बिचाळै बैवती चोखी लागै उणी'ज भांत छंदां में बंध्योड़ी भाव–सरिता रौ असर ई ओपतौ अर फाबतौ लागै। अठै घणी बात नीं पोळावतां थकां राजस्थानी रा कीं महताऊ छंदां, डिंगळ गीतां, अलंकारां अर काव्य–दोसां री पिछाण कराई जावैला। मोटै रूप सूं छंदां रा दो भेद, मात्रिक छंद अर वरणिक छंद कथीजै। जिणमें मात्रावां री गिणती करीजै वो मात्रिक छंद अर जिणमें वरणां री गिणती करीजै वो वरणिक छंद मानीजै। आं दोनूं तरै रा छंदां में ई बणगट रै हिसाब सूं तीन भेद करीज्या है– सम छंद, विसम छंद, अरधसम छंद। इणरै पछै ई कैई गणबद्ध छंद, मुक्तक छंद, साधारण छंद अर दंडक छंद रा भेद ई करीज्या है। आं में न्यारी–न्यारी गिणती रा वरण अर मात्रावां मुजब छंदां रा भेद इण भांत करीज्या है–

14.2 छंद

1. जिण छंद में मात्रावां री गिणती करीजै वो **मात्रिक छंद** मानीजै।
2. जिण छंद में वरणां या आखरां री गिणती मुजब काव्य–रचना करी जावै वो **वरणिक छंद** कहीजै।

आं दोनूं तरै रा छंदां में ई वांरै चरणां रै हिसाब सूं तीन भेद हुवै–

(i) **सम छंद** – इण छंद रै च्यारूं चरणां री मात्रावां या कै वरण बरोबर गिणती वाळा हुवै।

(ii) **विसम छंद**– इण छंद में चरणां री मात्रावां या वरण न्यारा–न्यारा गिणती वाळा हुवै।

(iii) **अरधसम छंद**– आं छंदां में पैला अर तीजा चरण री नै दूजा अर चौथा चरण री मात्रावां अथवा वरण बरोबर गिणती वाळा हुवै।

इणां रै अलावा छंदां रा कीं ओर भेद ई करीज्या है, जिणमें गणबद्ध छंद, मुक्तक छंद, साधारण छंद अर दंडक छंद रा नांव गिणाया जा सकै।

(1) मात्रिक छंद

(i) दूहो –

दूहो राजस्थानी कवियां रौ सबसूं वाल्हो नै चावो छंद है। ओ सबसूं जूनौ छंद भी है। इण छंद री रचना घणी सोरी है अर ओ पढण में ई संवळौ है। 'दूहा' बाबत ओ दूहो घणौ ओपतौ लागै–

छोटी तुक रो दूहरौ, गीत कवित्त रो भूप।
ज्यूं हरि बलि छळण कौं, रच्यौज बावन रूप।।

राजस्थानी भासा में घटता–बधता चरणां मुजब दूहे रा बारह (12) भेद मिळै, जिणमें सुद्ध दूहो, सोरठियौ, बडौ दूहो, तूंबेरी, खोड़ौ, चरणां दूहो, पंचा दूहो, नंदा दूहो, चौटियौ, उपदूहो, चूडाळ दूहो अर छकड़ियौ दूहो। कठैई–कठैई दूहा रा 23 भेदां रो उल्लेख ई मिळै।

(ii) सुद्ध दूहो –

ओ अरधसम मात्रिक छंद है। इणमें चार चरण, दो द्वाळा हुवै। पैला अर तीजा चरणां में 13–13 मात्रावां, दूजा अर चौथा चरणां में 11–11 मात्रावां रो नियम हुवै। दूजा अर चौथा चरण री तुक मिळै। अेक द्वाळा में 24 मात्रावां हुवै। चरणांत में लघु (।) हुवै–

इळा न देणी आपणी, हालरिये हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई मांय।।

(iii) **सोरठियौ दूहो** –

सोरठौ दूहा सूं साव उलटौ हुवै। इणरा पैला अर तीजा (विसम) चरणां में 11–11 मात्रावां, दूजा अर चौथा (सम) चरणां में 13–13 मात्रावां हुवै। इणमें पैला अर तीजा चरणां री तुक मिळै। सोरठौ राजस्थानी कवियां रौ मनरंग छंद रैयौ है। इणरी बडाई अर इधकाई में कवियां कैयौ है, कै–

सोरठियौ दूहो भलौ, भल मरवण री बात।

जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।

सोरठियौ दूहो भलौ, कपड़ौ भलौ सपेत।

ठाकरियौ दाता भलौ, घोड़ौ भलौ कुमेत।।

राजस्थानी साहित्य में सोरठिया दूहा रौ बोहळाई सूं प्रयोग हुयौ है। करुण, वीर अर सिणगार रस रै साथै नीति–साहित्य रौ तो सोरठां में ई सिरजण हुयौ है। राजिया, किसनिया, बींजरा, नाथिया, मोतिया, भानिया, नागजी अर जेठवा आद रा सोरठिया दूहा घणां चावा है। उदाहरण :–

आई समंद हिलोळ, डूबण वाळा डूबसी।

तिरै सुतंतर छौळ, भारत परजा भानिया।।

उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखित करै।

कड़वौ लागै काग, रसना रा गुण राजिया।।

(iv) **बडौ दूहो** –

इणनैं सांकळियौ दूहो अर अंतमेळ दूहो ई कैवै। वीर रस वरणाव में इणरौ घणकरौ प्रयोग हुयौ है। वीर रस वरणाव में इणरौ न्यारौ ठरकौ भी रैयौ है। इणरै पैला अर चौथा चरणां में 11–11 मात्रावां अर दूजा अर तीजा चरणां में 13–13 मात्रावां रौ नियम है। पैला अर चौथा चरणां री तुक मिळै।

उदाहरण –

रोपी अकबर राड़, कोट झड़ै नँह कांगरा।

पटकै हाथळ सींह पण, बादळ व्है न बिगाड़।।

(v)**तूंबेरी दूहो** –

तूंबेरी दूहा रै पैला अर चौथा चरणां में 13–13 मात्रावां, दूजा अर तीजा चरणां में 11–11 मात्रावां हुवै। ओ बडै दूहे रो विपरीत है। इणमें दूजा अर तीजा चरणां री तुक मिळै।

उदाहरण –

मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख।

केळा छेत विसेख, जाय विदुर घर जीमिया।।

(vi) **खोड़ौ दूहो** –

इणनैं लंगड़ियौ दूहो ई कैवै। इणरै पैला अर तीजा चरणां में 11–11 मात्रावां, दूजा में 13 मात्रावां अर चौथा चरण में 6 मात्रावां ईज हुवै।

उदाहरण –

राखो छिनैक धीर, मरजादा लोपो मती।

कठै कहावौ वीर, वो देखो।।

(vii) **चौपाई** –

चौपाई सम मात्रिक छंद है। इणमें चार चरण हुवै। हरैक में 15 मात्रावां हुवै बठै चरणांत में गुरु लघु हुवै

अर 16 मात्रावां हुवै बठै चरणांत में लघु नीं होय'र दो गुरु रैवण सूं घणी असरदार ढाळ आवै।

(i) उदारहण :– 15 मात्रावां (ऽ ।)

असुर वौड गिर तारह आप, पाथर जळ रघुनाथ प्रताप।

प्रथम चवदह जोजंन पाज, बीजे दिन छाईस बंधाज।।

(ii) उदारहण :– 16 मात्रावां (ऽ ऽ)

मंगळ भवन अमंगळ हारी।

द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी।

2. छंद पद्धरी –

इणरै हरैक चरण में 16–16 मात्रावां हुवै। चरणांत में एक जगण (। ऽ ।) आवै, वो पद्धरी छंद कहीजै।

उदारहण :–

सहाय थाह हरि गुण समंद, चढ़ि तांम लहूं तट रांमचंद।

मंगळ सरूप मंगळ सुमत्ति, सूरजिवंस धुजरांम सत्ति।।

जेहि ठांम रांम लैसे जनम, धनि पुरी अजोध्या क्रम–ध्रम।

ऐहवी उजागर पुरि ऐह, यछ्याक बंध वांधै अछेह।।

3. रोळा –

रोळा में 24–24 मात्रावां रा चार चरण हुवै। हरैक चरण में 11 अर 13 माथै यति हुवै, चरणांत में दो गुरु (ऽ ऽ) रौ विधान है पण सब ठौड़ ओ नियम लागू नीं हुवै।

उदाहरण :–

अनुवा उपत अनूप, जुगत कवत्त रस जांणै।

अमल ग्रंथ उजळा, पिंगळ छंदां परमांणै।

काव्य गीत कवत्त, दूहा गाहा निसांणी।

कह वातां कहूंक, बडा कै मुखां बखांणी।।

ऽ। ऽ ऽ । ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ

4. उल्लाळा छंद –

उल्लाळा छंद रा पांच भेद बताया है–

रस उल्लाळा तिथ तेर मत। छवीस सम पद स्यांम।

स्यांमक रस दूहा सहित। मुणतै छप्पय नांम।।

उलटौ रस उल्लाळ उण। आख वरंग उल्लाळ।

दाख त्रिदस फिर पंचदस। तुक बिहुंवै पड़ताळ।।

15 अर 13 मात्रावां वाळौ छंद 'रस उल्लाळा', 13–13 मात्रावां वाळौ 'स्यांम उल्लाळा', 13–11 मात्रावां वाळौ 'छप्पय उल्लाळा', 13–15 मात्रावां वाळौ 'वरंग उल्लाळा' अर 15–15 मात्रावां वाळौ 'कांम उल्लाळा' कहीजै। अठै 15 अर 13 मात्रावां वाळा उल्लाळा रौ उदाहरण दैखीजै –

ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ ।।। । ऽ । ऽ ऽ ऽ ।ऽ

सांमि ध्रम कांमि पुरा सुमति, वडा मतै आझै वरै।

दीपै सुग्यांन परधांन दस, राज द्वार दसरथ्थ रै।।

ऽ ऽ । ऽ । ।। ऽ। । । ऽ। ऽ। ।।। ऽ ऽ

5. छप्पय छंद –

ओ विसम मात्रिक छंद है। इणमें चार पद रोळा रा अर आखिर रा दोय पद उल्लाळा रा हुवै। आं दोनूं छंदां रै मेळ सूं बणण वाळौ छप्पय (छः पद) छंद है। ओ दण्डक छंद ई है।

उदाहरण :–

घणां घाट लंघणा, नदी परवत नद नाळां।
वन है बेटा विकट, पंथ चालणौ उपाळां।।
कहर भूख काटणी, गिणै दुख किसा गुणिजै।
कहूं बात अे कंवर श्रवण, वै भ्रात सुणीजै।
दंती वराह नाहर दनुज, सो तिण ठां रह साबता।
रे पुत्र घणी विध राखजौ, जनक सुता रा जाबता।।

6. सारसी छंद –

इणरै हरैक चरण में 16 अर 11 माथै यति हुवै। इण भांत कुल 27 मात्रावां अर अंत में लघु गुरु हुवै। ओ सम मात्रिक छंद है।

उदाहरण :–

पीसण उथाळण संत पाळण, भीर हालण भाणवां।
सालम सालण वसू वाळण, जग उजाळण जाणवां।।
सेंव्यां संभाळण चाड चाळण दुख दाळण दीसरी।
कीरपा ज सिन्धू कर अनन्दू, आप चन्दू ईसरी।।
ताकवां तरणी हाण हरणी उमंग करणी ऊद रै।
धिन माड धरणी वेद वरणी, इळा जरणी अवतरै।।
भंडार भरणी सकळ सरणी, सूळ धरणी संकरी।
कीरपा ज सिन्धू कर अनन्दू, आप चन्दू ईसरी।।

7. कुण्डळिया छंद –

इणरा छः चरण हुवै। पैला दो चरण दूहा रा, उणरै पछै रा चरण रोळा रा हुवै। दूहे रौ चोथो चरण, रोळा रै सरूपांत में आवै। दूहे रौ पैलौ सबद रोळा रौ अंतिम सबद हुवै।

उदाहरण :–

जीव उधारे जगत रा, किता सुधारे काम।
भार उतारे भूम रो, धणी पधारे धाम।।
धणी पधारे धाम, सुजस खाटे जग सारै।
राज कियो बड रीत, गिणै ब्रख सैंस इग्यारै।।
रह्या जिते रघुराव, धरम मरजादा धारे।
आप पधारत लोक, अवधपुर जीव उधारे।।

8. त्रिभंगी छंद –

इण छंद में कुल 32 मात्रावां आवै। 10, 8, 8 अर 6 मात्रावां माथै विराम लागै।

उदाहरण :–

1. परसत पद पावन, सोक नसावन, प्रगट भई तप, पुंज सही।

देखत रघुनायक, जनसुखदायक, सनमुख व्है कर, जोरि रही।।

2. कन कुंडळ धारी, कमंडळ वारी, गिरजा नारी, गिरनारी।

भोळौ भंडारी, विजया जारी, आपू भारी, आहारी।

दुनिया दुखियारी, सिमरै सारी, संकट हारी, संभेसर।

भगवान भुतेसर, जोग जटेसर, नमो नंदेसर, नटवेसर।।

9. गीतिका छंद –

ओ अेक मात्रिक सम छंद है। इण मांय 26 मात्रावां हुवै। 14 अर 12 माथै यति लागै। कैई छंदां में 12, 8, 6 पर ई विराम रौ विधान है। चरणांत में लघु गुरु आवै।

उदाहरण –

हे प्रभु आनन्द दाता, ग्यान म्हांनै दीजियो।

तुरत सारा अवगुणां नैं, दूर म्हासूं कीजियो।

लीजियो म्हांनैं सरण में, म्हैं सदाचारी बणां।

ब्रह्मचारी धरम रच्छक, वीर व्रतधारी बणां।।

10. हरिगीतिका छंद –

ओ अेक मात्रिक सम छंद है। इण मांय 28 मात्रावां हरैक चरण में लागै। 16 अर 12 पर यति आवै। चरणांत में लघु गुरु आवै।

उदाहरण –

प्रणमामि मातू प्रेम मूरती, पारबती परमेसरी।

सांति छमामय कृपासागरि, सुखप्रभा सरवेसरी।

सेवग सिसु के दुरित दारिद, विघ्न दोस विदारणी।

आदिया सक्ति नमो अम्बा, हिंगळा अघहारणी।।

11 वरणिक छंद

(i) भुजंगी छंद –

इण छंद में तीन यगण (। ऽ ऽ) अर चरणांत में कठैई लघु गुरु (। ऽ) अर कठैई दो गुरु (ऽ ऽ) आवै।
उदाहरण –

नमो विसन वधाविया चिहुं वेदे। नमो सुरिअणे गुणे संत सुभेदे।

नमो सिध चारण अछर सिधि सभागे। नमो नाथ वषाणियो नर नागे।

नमो नवनवा कलप अवतार नवा। नमो किसन कलि अवतरे प्रवित करिवा।

नमो एक एका भलो अवतारं। नमो प्रवाड़ा तास कुंण लहै पारं।

नमो ईसरा सांमि अणकल अनंतं। नमो बाप वैराट चा नामवंतं।

(ii) भुजंगप्रयात छंद –

चार चरणां रै इण छंद में हरैक चरण में चार यगण (। ऽ ऽ) या 12 वरण हुवै।

उदाहरण –

तु ही भक्त बेळू तु ही सन्त तारी। सब विघ्न बाधावि तू ही निवारी।

तु ही सर्वव्यापी सबै लोक मानी। सदा जै सदा जै सदा जै भवानी।।

(iii) **त्रोटक छंद –**

ओ वरणिक छंद है। इणमें चार चरण हुवै। हरैक में चार सगण (। । ऽ, । । ऽ, । । ऽ, । । ऽ) या 12 वरण हुवै।

उदाहरण –

महमाय सहाय कर प्रणमू। नित बीस भुजा तुझ सीस नमू।

धिन इळ सुता प्रभुता धरणी। कुळवाट निराट दया करणी।

भुज चक्र त्रिसूळ सुं चक्र भमै। रिम टादण खग बज्राग रमै।

सिंघ वाहण ढाहण दैत सही। कर साहण सेल उबेल कही।।

(iv) **सवैया –**

वरणिक छंदां में 22 सूं 26 तांई वरणां री गिणती वाळा छंदां नैं सवैया कैवै। सवैया रा कैई भेद बताया जावै जिणमें मदिरा सवैया, सुमुखी सवैया, मालती सवैया, दुर्मिल सवैया, किरीट सवैया, अरसात सवैया, सुंदरी सवैया, सिंहावलोकन सवैया, चकोर सवैया, मुक्ताहार सवैया, लवंगलता, गंगोदक सवैया आद खास है।

उदाहरण :–

वरणी चहुँ वेदन में करणी, भरणी सुख संपद भूरी भरो,

धरणी जग जीवण की धरणी, नित मात कृपा मम काज सरो,

कुळ चारण तारण ओ तरणी, म्हां बाळक पर सुभ द्रस्टि धरो,

हरणी नित दासन के दुख की, करणी महमाय सहाय करो।

(v) **कवित्त मनहर –**

इणरै हरैक चरण में 16, 15 पर यति अर कुल 31 वरण हुवै। ओ दण्डक छंद रौ उदाहरण है। अंत रौ वरण गुरु (ऽ) जरूरी है। इणमें 8, 8, 8, 7 वरणां माथै ई यति रौ नियम है। इणीज कवित्त रै अेक चरण रा आखरी वरणां या सबदां नैं दूजा चरण रै सरू में जोड़णो, इण तरै सबदां री आवृत्ति जिणमें हुवै वो 'सिंहावलोकन कवित्त' कहीजै–

अेकतीस आखर अवस, अंत गुरु सह जांण।

मुंण दण्डक रा भेद मंह, जिको मनोहर जांण।।

उदाहरण :–

देव आदि देवन में, भूतेस्वर भै उनमें,

रुद्र पास रेवन में, अम्बा गृह ओनि छै,

साथै गृह सेवन में, लंक राज लेवन में।

देत कस्ट देन में, जनक सुता जांणी छै।

गोपी लीला गान में, रास एक रचावन में।

कृष्ण मन भावन में, राधे पटराणी छै।

वास अरक वासन में, सासन उसासन में।

पात विजै पान में, करणी किनियांणी छै।

(vi) **छंद मोतीदाम –**

इणमें 12 आखर अर हरैक चरण में चार जगण हुवै। (। ऽ ।)

उदाहरण :–

इसो दसरथ्थ वडै तपिआज। वडा भड़ जोध वडा गजवाज।

राजे दिन उग्र इसा दसरथ्थ। सुर नर सेव करे सहि सत्थ।

(vii) **डिंगळ गीत छंद –**

डिंगळ गीतां री उत्पत्ति अपभ्रंश या दूजी भासा सूं नीं हुई। अै तो डिंगळ कवियां रै हिये री उपज है। जिण भांत दूहो अपभ्रंश रौ मेरुदण्ड मानीजै उणी'ज भांत गीत छंद डिंगळ कवियां रौ मूळाधार है। उत्तर भारत री दूजी भासावां में आं गीत–छंदां जैड़ी रचनावां सांमी नीं आवै। डॉ. एल.पी. तैस्सीतोरी आं डिंगळ गीतां नैं ''साख री कविता'' बतावै। अै गीत छंद गेय कोनी होवै, आंरो खास ढंग सूं ऊंचै सुर में पाठ करयौ जावै। साधारण कविता रा पाठ सूं ओ पाठ साव न्यारौ है। हरैक पढ्यौ–लिख्यौ मिनख बिना अटकळ अर अभ्यास रै आं छंदां नैं नीं पढ सकै। राजस्थानी छंदसास्त्र में आं गीतां रा मोकळा भेद मिळै। कवि मंछाराम 'रघुनाथरूपक' में इणांरा 72 भेद गिणाया है तो किसना आढा 'रघुवर जसप्रकास' में 92 तरै रै गीत छंदां रा लक्षण बताया है। डिंगळ रा कीं चावा गीत छंदां री परिभासा अठै देवणी जरूरी है, जिणां रौ प्रयोग डिंगळ कवियां विसेस रूप सूं करयौ अर आज ई डिंगळ कवि इणां री रचना करै। आं गीतां में सांणोर अर उणरा भेद– वेलियो, सावझड़ो, झमाळ, सुपंखरौ, निसांणी आद खास है।

(viii) **सांणोर छंद –**

सांणोर रा कैई भेद रघुनाथरूपककार बताया है। खुद कवि इणरी महिमा में कैवै कै काव्य री रीत रौ सरूप, चतुर कवियां रा चित्त नैं चोरण वाळौ गीत है– सांणोर। बडौ सांणोर, सुद्ध सांणोर, प्रहास सांणोर, छोटो सांणोर, खुड़द सांणोर, जांगड़ो सांणोर, सोहणो सांणोर अर वेलियो सांणोर इणरा खास भेद है।

(ix) **सुद्ध सांणोर –**

वसम बीस समचरण अठारह धुर पद कळ तेवीस धरो।

मंछ कहै गुरु लघु अंत मोहरै कवि इमि सुध सांणोर करो।।

इणरै विसम चरणां में 20 मात्रावां, सम चरणां में 18 मात्रावां हुवै। पैला द्वाळा रा पैला पद में 23 मात्रावां अर अंत में गुरु लघु आवण सूं सुद्ध सांणोर गीत छंद बणै। 'प्रहास सांणोर' अर 'सुद्ध सांणोर' में भेद इत्तो ईज है कै इणरै सम चरणां में 17 मात्रावां अर अंत में गुरु आवै।

उदाहरण (प्रहास सांणोर) :–

सो सुणावूं बात हूं सीख री सैणां नैं, जुगत सूं जिकी नै हियै जारो।

राज रा राज इण दारूड़ी रोळिया, धामै तो इणनैं मती धारो।

(x) **छोटो सांणोर –**

रघुनाथरूपककार कैवै–

कहुँ गुरु मोहरा लघु कहुँ, बणै द्वाळा बेस।

सो छोटो सांणोर सज, कहे सुमंछ कवेस।।

इणरा विसम पदां में 13 मात्रावां, सम पदां में जठै गुरु आवै उठै 14 मात्रावां अर लघु हुवै उठै 15 मात्रावां बणै। पैला द्वाळा रा पैला पद में 19 मात्रावां हुवै।

उदाहरण –

अेकण दिन अमर सकळ मिल आया, करी अरज सांभळ किरतार।

राज बिना मारै कुण रावण, भू रो कवण उतारै भार।।

छोटो सांणोर रा चार भेद कवि 'रघुनाथरूपक' में इण भांत बताया है–

चार भेद तिणरा चवै, कवियण बड़ ओकूब।

समझ वेळियो, सोहणो, खुड़द, जांगड़ो खूब।।

12. वेलियो गीत –

सोळै कळा विसम पद साजै, समपद पनरै कळा समाजै।

धुर अठार मोहरा गुरु लघु धर, कहजै मंछ वेळियो इमकर।।

इणरै विसम चरणां में 16 मात्रावां अर सम चरणां में 15 मात्रावां हुवै। आ तो छंद री साधारण परिभासा है। इणरै पैला द्वाळा रै पैला चरण में 16 री ठौड़ 18 मात्रावां अर तुकांत में गुरु लघु आवै। ओ अरधसम मात्रिक छंद है। पृथ्वीराज राठौड़ री 'क्रिसन रुकमणी री वेलि'में डिंगळ–काव्य में वेलियो छंद रौ ई प्रयोग करीज्यौ है–

उदारहण –

दिल अंतर अेह विचारी दसरथ,

धर पदवी जुवराज सधीर।

सो दैणी विसवा ही वीसै,

राज जोग दीसे रघुवीर।।

13. सुपंखरो गीत छंद –

ओ वरणिक छंद है। इणरै विसम पदां में 16 वरण अर समपदां में 14 वरण हुवै। पैला द्वाळा रा पैला पद में 19 वरण होवण सूं गीत सुपंखरो बणै।

उदाहरण –

दाखां दांणवां सोखणी देसणोक री ई दीवांण देवी,
सुपातां पोखणी सदा राखणी सहाय।
अठारा पुराणां सोभा बरनी, अपार आछी,
कळू में करणी सांची सगत कहाय।।

14. गीत सेलार –

इण गीत रा हरैक पद में 16–16 मात्रावां आवै अर चौथा चरण में विधि अलंकार हुवै जद गीत सेलार बणै–

अलंकार विधि सिद्धि जो, अर्थ साधिये फेर।
कोकिल है कोकिल जबै, करि हैं ऋतु में टेर।।

उदाहरण –

विग्रह कीध असंभ महाबल, चांच परां तोड़ै रथ चंचळ।
लख लोहा पड़ षगधर लागौ, भागोरे नभ मारग भागो।।

15. गीत झमाळ –

दूहे पर चन्द्रायणो, धरै उलाळो धार।

गीतां रूप झमाळ गुण, वरणै मंछ विचार।।

ओ मात्रिक गीत छंद है। छंद रै सरूआत में दूहो अर पछै चन्द्रायण छंद। दूहे री चौथी झड़, चन्द्रायण री पैली झड़ हुवै या चौथी तुक री आवृत्ति हुवै, वो झमाळ गीत मानीजै।

उदाहरण –

हुवै प्रफुल्लित गात हद, सांभळ बात सकोय।

गरक घटा उमड़ी गरज, हरष सिखंडी होय।।

हरष सिखंडी होय, अनंत उछाह सूं।

जण पुरजण नर नार, मिलै बहु चाह सूं।।

खासा पट खरजूर, सुभूषण सार नै।

दीधी दौलत पूर, बधाईदार नै।।

16. निसांणी गीत छंद –

किणी घटना या मिनख रा गुणां नैं अमर करण वास्तै या याद राखण नैं अेक छंद विसेस रौ सिरजण करीज्यौ। वो छंद नीसांणी है। निसांणी छंद रा कैई भेद अर उपभेद कहीजै। 'रघुनाथरूपक गीतां रो' में निसांणी छंदां रा 12 भेद बताईज्या है–

जथा इग्यारह जेण में, रची सतुत कविराज।

द्वादस नीसांणी दखूं, भूप अवध परभाव।।

किसना आढ़ा रा 'रघुवरजस प्रकास' में इण भांत वरणाव आवै–

रे नीसांणी छंद रा, पढिया च्यार प्रकार।

तिन लछण निरणै तिका, वरणै सुकवि विचार।।

इणरा मोटै रूप सूं सुद्ध निसांणी, गरवत निसांणी, गघ्घर निसांणी अर पैड़ी निसांणी अे च्यार भेद घणां चावा रैया है।

(i) सुद्ध निसांणी छंद –

इणमें 13 अर 10 मात्रावां पर यति हुवै। पदान्त में दोय गुरु तुकांत सहित आवै उणनैं सुद्ध निसांणी कैवै। 23 मात्रावां हरैक पद में हुवै वो सुद्ध निसांणी छंद मानीजै।

कळ तेरह फिर दस कळा, दे मोहरे गुरु दोय।

कळी एक ते बीस कळ, सुद्ध नीसांणी होय।।

उदाहरण –

सिंघ अजा सामळ सलल, पीवै इक थाळा।

तसकर दबै उलूक ज्यूं, ऊगां किरणाळां।

पड़ी न छेड़ै पारकी, चिहुँ वरण विचाळा।

ऐसा राज करै अवध, दसरथ नृप वाळा।।

14.3 अलंकार

अलंकार रौ साधारण अरथ है– सोभा सवाई बधावण वाळौ। कविता री सोभा बधावण वाळा सबदां नैं अलंकार कैवै। काव्य में अलंकारां रौ प्रयोग काव्य नैं सवायौ असरदार बणाय देवै। कवि री आ कळा हुवै कै बिना जतन कस्यां ई सुभाविक रूप सूं काव्य में अलंकारां रौ प्रयोग हुय ई जावै। काव्य में सहजता सरसता अर चमत्कार लावण वाळा अै अलंकार कवि कुसळता री सैलाणी है। गैणां गांठां सूं लुगाई फूठरी फररी लागै, उणी'ज भांत काव्य में अलंकार फूठरापौ लावै। अलंकारां सूं काव्य संचरित हुवै। कथन रौ जुगतिसंगत सुंदर ढंग ही अलंकार है। ''मूंडै रा दांत मूंडा में ई ओपै, बारै आयां कीं कार रा नीं रैवै'', अलंकार काव्य री सोभा अवस बधावै, पण सहज सुभाविक रूप सूं ईज इणां रौ प्रयोग होवणौ चाहिजै। घणौ खायां अजीण होवै। साग–भाजी

रो स्वाद लूण सूं आवै पण घणौ लूण साग नैं खारौ कर देवै। अलंकारां रौ प्रयोग ई इणी'ज माफिक होवणौ चाहिजै।

अलंकार दो तरै रा होवै– 1. सबदालंकार, 2. अरथालंकार

14.3.1 सबदालंकार –

(i) वैण सगाई –

ओ डिंगळ काव्य रौ खास अलंकार है। डिंगळ कविता में इणरौ भरपूर प्रयोग होयौ है। 'वैण' रौ अरथ 'वरण' या आखर सूं है। सगाई रौ अरथ सम्बन्ध है। वरणां रौ सम्बन्ध जठै होवै बठै वैण सगाई अलंकार होवै। डिंगळ कवियां इण अलंकार बाबत कैई दूहा छंदां में आपरा विचार राखिया है।

वयण सगाई वाळियां, पेखिजै रस पोस।

वीर हुतासण बोल में, दीसै हेक न दोस।।

'वैण सगाई' सूं डिंगळ काव्य रै वाचन में अेक चमत्कार आ जावै। कवियां रौ ओ मानणौ है कै इण अलंकार रा प्रयोग सूं काव्य दोस नीं लागै। काव्य 'दोष' मिट जावै। वैण सगाई रा मोटै रूप सूं तीन भेद कहीजै– आदि मेळ, मध्य मेळ अर अंत मेळ।

(ii) **आदि मेळ वैण सगाई** :– इणनैं उत्तम मेळ वैण सगाई भी केवै। इणमें चरण रौ पैलौ आखर उणी'ज चरण रै अंतिम सबद रै पैली आवणौ चाहिजै।

उदाहरण :–

रामत चौपड़ राज री, है धिक बार हजार।

सहणी सबरी हूँ सखी, दो उर उलटी दाह।

विहाणु नवो नाथ जागो वहेळा, हुवौ दोहिवा धेनु गोपाळ हेला।

(iii) **मध्य मेळ वैण सगाई** :– चरण रौ पैलड़ौ आखर उणी'ज चरण रा अंतिम सबद रै बिचाळै आवण सूं मध्य मेळ वैण सगाई बणै।

उदाहरण :–

नाम लियां सूं मानवां, सरकै कलुस विसाळ।

मह ज्यूं मेटै तिमिर, रसम परस किरमाळ।।

आथमिया दुणिअंद, चहुँ कोसे रघुचंद।

लियां लक्कड़ी कंध ऊभा हुलासै।

(iv) **अंत मेळ वैण सगाई** :– इणमें किणी चरण रौ पैलड़ौ आखर छैलड़ा सबद रै अंत में आवै। चरण रौ पैलौ अर छैलौ आखर जठै मेळ खावै उठै अंत मेळ वैण सगाई अलंकार होवै।

उदाहरण :–

मरद जिकै संसार में, लखजै जीव विसाळ।

रात दिवस रघुनाथ रा, लेवै नाम रसाळ।।

सूती परजा अरध निसि, तमसा श्रीमति गोमती।

तदे नंद रै नेस बलभद्र न हूंता।

'रघुवरजसप्रकास' में कवि किसना आढ़ा उदाहरण सहित वैण सगाई रा भेद इण भांत दिया है–

वयण सगाई तीन विध, आद मध्य तुक अंत। (आदि मेळ)

(मध्य मेळ) मध्य मेळ हरि महमहण, तारण दास अनंत।। (अंत मेळ)

अरधमेळ वैण सगाई रौ प्रयोग ई काव्य में घणौ होयौ है। कवि मंछाराम इणनैं 'अखरोट' रौ ई रूप बतावै। आदि वरण री आवृत्ति चरण रै बिचाळै रा सबदां में हुवै तो अरधमेळ बणै। इणरा मोकळा उदाहरण मिळै।

2. अनुप्रास –

अनुप्रास सबदालंकार है। अेक जैड़ा वरणां या सबदां री आवृत्ति नैं अनुप्रास कैवै। अेक ई आखर या वरण जद काव्य रै चरणां में कैई वार आवै तो बठै अनुप्रास अलंकार होवै।

'बळ वो **सा**दर वरणवूं, **सा**रद करो प**सा**य', इणमें 'स' वरण तीन वार आयौ है। वरणां री आवृत्ति रै कारण अठै अनुप्रास अलंकार है।

अनुप्रास ई दोय तरै रा होवै। 'वरणालंकार' अर 'सबदालंकार'। इणरा ई कैई भेद–उपभेद है जिणमें वरणालंकार रा ई च्यार भेद मानीजै– 1. छेकानुप्रास, 2. वृत्यानुप्रास, 3. श्रुत्यानुप्रास, 4. अंत्यानुप्रास अर लाटानुप्रास जिणमें सबदां री आवृत्ति होवै।

उदारहण –

बळ वो सादर वरणवूं सारद करौ पसाय।

'स', 'र' अर 'व' वरण कई बार आयौ है। अठै अनुप्रास अलंकार बणै।

प्रभु घणां चा पाड़िया, दैत वडां चा दंत।
के पालंणै पोढियां, के पय पान करंत।।

ऊपरलै दूहे में 'प' वरण छह वार आयौ है। 'च', 'त' अर 'य' वरण री भी आवृत्ति होयी है। काव्य रा फूठरापा वास्तै तुकबंदी अन्त्यानुप्रसास कहीजै।

उदाहरण :–

पगां घूघरी रोळ आनंद पुंजा।

गळै हार मोती रुळै माळ गुंजा।।

सबदां अर पदां री आवृत्ति है पण 'अन्वय' सूं यति आगै लारै लागण रै कारण अरथ री भिन्नता आवै बठै लाटानुप्रास अलंकार मानणौ चाहिजै।

उदाहरण :–

हरि रूप दरसण हों निकट नहि नरग सुरग बण जाय।
हरि रूप दरसण हों निकट नहि, नरग सुरग बण जाय।

अठै पैली ओळी में हरि रौ रूप दरसण होवण सूं सुरग बण जावै नरग नीं रैवै, ओ अरथ बणै। दूजी ओळी में 'विराम' नहि रै पछै आवण सूं अरथ दूजो होय जावै कै जठै भगवान री छवि रा दरसण नीं होवै बठै सुरग ई नरग बण जावै।

3. यमक –

यमक भी सबदालंकार है। अेक सबद रौ कैई वार आवणौ अर अरथ न्यारा–न्यारा होवण सूं यमक अलंकार होवै।

उदाहरण :–

रण कर रज रज नैं रंगै, रवि ढकै रज हूंत।
रज जैती धर नह दियै, रज रज व्है रजपूत।।

इणमें 'रज' सबद अनेक बार आयौ है पण उणरा न्यारा–न्यारा अरथ निकळै–

रज रज = आखी धरती नैं।

रज = रेत, खेह।

रज = रेत रो कण।

रज रज = टुकड़ा–टुकड़ा।

रज पूत = धरती रो रुखाळौ (क्षत्रिय)

4. स्लेस –

इण अलंकार में अेक सबद रा कैई अरथ निकळै–

चाळा मा करै, सामुहा जुद्ध चाळा।
बधार्‌या न थारै अजै बाळ–बाळा।।

इणमें 'चाळा' सबद दो बार आयौ है। अेक अरथ होवै टाबर रो टाबरपणौ, सांग नाटक अर दूजौ 'जुद्ध चाळा' रो अरथ होवै जुद्ध नैं छेड़ण वाळी, प्रेरित करण वाळी बात या अटकळ।

14.3.2 अरथालंकार –

1. उपमा –

उपमा अलंकार में वरणनीय वस्तु नैं बढाय–चढायनै बतावण वास्तै किणी प्रसिद्ध वस्तु सूं उणरी बरोबरी करी जावै। ज्यूं टाबर हीरा जैड़ौ है। अर्थात् टाबर रो तोल–मोल (गुण) हीरा (कीमती धातु) सूं करीज्यौ है। जठै उपमेय (वरेण्य वस्तु) उपमान (जिणसूं समानता की जावै) रै बरोबर आंकीजै, उपमा अलंकार होवै।

उदाहरण :–

सुण्यौ वात आघात माता सनेही।
जसोदा ढळी कदळी खंभ जेही।।

श्रीकृष्ण जमना रा ऊंडा पाणी में कूदग्या, आ बात सुणतां ई माता जसोदा कदळी रा खंभ (केळा रो थोथौ तणौ) ज्यूं नीचै पड़गी।

इणी भांत–

वसै रस्सणै डस्सणै विख्खवासै।

अर्थात् खारा अर आडा–डौढा बोलां नैं ज़हर री उपमा दिरीजी है। ऊपर जसोदा री कंवळी काया नैं केळ–खंभ री उपमा दिरीजी है।

2. रूपक –

वरणण करण वाळी वस्तु नैं किणी लोकचावी वस्तु रौ रूप दे दियौ जावै अथवा जठै उपमेय अर उपमान में अभेद होवै बठै रूपक अलंकार मानणौ चाहिजै।

उदाहरण :–

'मुखड़ौ पूनम रो चांद'

मूंडौ अर चांद न्यारी–न्यारी वस्तुवां है पण दोनुवां में अभेद थापन करी गयी है। जठै संका री गुंजाइस नीं रैवै। 'मुख चांद है', ओ रूपक अलंकार मानीजै। 'बेटी कांई पारस है', अठै बेटी नैं पारस रा गुण दिरीज्या है। साहित्य में रूपक अलंकार रै कैई भेद–उपभेदां री व्याख्या करीजी है अर उणांरा उदाहरण ई घणां'ई मिळै।

समंद्रां पार संसार, होहि गोपद अणुहारी।

उडै डींगळां पींगळा रा अंगारा।

'संसार रूपी सागर' अर 'अंगारा रूपी डिंगळमय, पिंगळमय वचन' रूपक अलंकार में आवै।

3. उत्प्रेक्षा –

जठै माडांणी अेक वस्तु नैं दूजी वस्तु रो रूप देवण री कोसीस करीजै बठै उत्पेक्षा अलंकार हुवै। उपमेय रै वास्तै उपमान नैं महत्त्व देवण खातर बळ प्रयोग हुवै। 'जनहूँ, जांणै मांनै, मनहूँ' जैड़ा सबदां सूं उत्प्रेक्षा री पैचाण हुवै।

उदाहरण :–

हुई नंद री धेन सूं धेन हेला।

भिळै वाळवा जांणि श्रीगंग भेळा।।

'ब्रज री गायां गळी–गळी सूं निकळ'र नंद री गायां भेळी भिळगी जांणै वाळा–खाळा गंगाजी में जाय मिळिया होवै।'

'गयो जाणि चिंतामणि रंक गांठै'

जसोदा कृष्ण रा वियोग में जमना रा तट माथै विलाप करै, मानो निरधन री गांठ सूं चिंतामणी रतन गमग्यौ होवै। इणी भांत कृष्ण री नाक मानो दीयै री लौ है। घुंघराळा काळा बाळ जांणै भंवरां रौ समूह है। आंख्यां जांणै खंजण पंखी रा नैण है। इणी'ज भांत साहित्य में उपमा, रूपक अर उत्पेक्षा रौ भरपूर प्रयोग होयौ है।

उपमा अलंकार में 'डावड़ो हीरा जैड़ौ है'। इणमें समानता रौ भाव है।

रूपक अलंकार में 'डावड़ो तो हीरो है'। दोनां में कीं भेद कोनीं, अभेद है।

उत्प्रेक्षा अलंकार में 'डावड़ो जांणै हीरो व्है'। अठै बळ अर संभावना है।

ओ इत्तौ ई भेद आं तीनूं अलंकारा रै मांय है।

राजस्थानी साहित्य में अलेखूं अलंकारां रौ भरपूर प्रयोग होयौ है। ऊपर लिख्योड़ा अलंकारां रै भेद अर उपभेदां रौ प्रयोग, अतिस्योयोक्ति, भ्रान्तिमान, वक्रोक्ति, दीपक, व्याजस्तुति इत्याद रो प्रयोग भी राजस्थानी साहित्य में मिळै।

14.4 काव्य–दोस –

कविता जद काव्य रा नेमधरम नैं छोड'र अलायदी होय जावै या आपरा मूळ भावां नैं छोड देवै तो बठै कविता में काव्य–दोस मानीजै। ''काव्य रा मूळ अरथ नैं मिटावण वाळी वस्तु काव्य–दोस है।'' कविता में जिकी बात कवि कैवणी चावै वा उणी'ज रूप में पाठक या सुणणवाळा कनैं पूगणी चाइजै, पण काव्य–रस री ज्यूं री ज्यूं त्यूं अनुभूति जे पाठक या सुणणवाळा नैं नीं होवै तो इणरो कारण काव्य–दोस है। कवि री सूझ, प्रतिभा अर पाठक री बुद्धि इणरौ मूळ कारण होय सकै। काव्य नैं असरदार बणावण वास्तै राजस्थानी छंद–सास्त्रां रा रीति ग्रंथां में इग्यारै काव्य–दोसां रौ उल्लेख मिळै। आं काव्य–दोसां सूं कविता नैं उबारण रौ आदेस काव्य–सास्त्रियां दियौ है। डिंगळ रा छंद–सास्त्रां री पोथ्यां 'रघुनाथ रूपक' अर 'रघुवर जस प्रकास' में आं काव्य–दोसां रौ जिकौ बरणाव होयौ है उणमें घणी समानता निजर आवै। आं दोसां रा नांव मिनखा देही री खामियां, रोग, अंगभंग अर जातिगत दोसां रै मुजब राखीज्या है।

''अगियार दोस कवि आखिया, जे निवार रूपग (गीत) उचार''

('रघुवर जस प्रकास')

पुणजै सुध अखरोट पिण, अै दस दोस असाध।

लिखूं जिका ज्यांरी बिगत, अवर न कोय उपाध।।

(रघुनाथ रूपक)

कवि मंछ कैवै कै कविता नैं सुद्ध करण रा कैई उपाय है पण अै दस दोस तो जबर असाध्य, घणा अबखा है, जिणसूं काव्य में 'वैणसगाई' मिट जावै। इणरौ कोई उपाय कोनी। इण वास्तै कविता रौ इलम आवणौ चाहिजै

अर आं दोसां सूं काव्य नैं हमैस अळगौ राखण री बात छंद सास्त्रकार करै। रूपककार आं काव्य–दोसां री ओळखाण छप्पय में इण भांत करावै–

रूळै उकत रौ रूप, अंध सो नाम उचारै।
कहै वळै छबकाळ, विरुध भासा विसतारै।
हीण दोस सो हुवै, जात पित मुदो न जाहर।
निनंग जैण नै निरख, विकळ वरणण बिन ठाहर।।
पांगळो छंद भाषै प्रगट, बद घट कळा बखाणजै।
बिच अवर द्वाळौ बणै, जात विरुध सो जाणजै।।
अपस अमूझ्यौ अरथ, सबद पिण बिण हित साजै।
नाळछेद जिण नाम, जथा हींणौ गुण जाझै।
तवैं दोस पखतूट, जोड़ पतळी अरू जालम।
बहरो सो सुभ वयण, मुड़ै अणसुभ व्है मालम।।
मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित वीदग सार नै।
कहै मंछ भलां रूपक करौ, अै दस दोस निवार नै।।

इण भांत अै दोनूं छप्पय जिणमें दसूं काव्य दोसां री कम सबदां में सरल परिभासा दिरीजी है। किसना आढा आपरा रीति ग्रंथ 'रघुवर जस प्रकास' में इग्यारवों दोस 'अमंगळ दोस' बतायौ है। अठै इंग्यारा काव्य दोसां नैं उदाहरण समेत समझाणां घणा जरूरी है–

1. अंध दोस –

जिण गीत या छंद री काव्य–रचना में परामुख अर सन्मुख उक्तियां री अेकरूपता नीं होवै, बठै अंध दोस मानीजै–

दिलड़ा ! समझ रै सगळौ जग दाखै,
पछै घणौ पिछतासी।
पुरुस जनम कद तू पामेला,
गुण कद हरि रा गासी।।1।।
मात–पिता बंधव दौलत–मद,
सुत तिय जोड़ संधाणौ।
माया रा आडंबर मांहैं,
बंदा ! केम बंधाणौ।।2।।
समुझै क्यूं न अजूं समझाऊं,
भूल मती हिव भाया।
दौड़ै उमर चटका देती,
छित जिम बादळ छाया।।3।।

टीप – इण गीत में पैलै अर दूजै चरण में 'परामुख उक्ति' है, पण तीजा में 'सन्मुख उक्ति' आवण सूं गीत में उक्ति दोस है। न्यारा–न्यारा उक्ति प्रयोग रै कारण अठै अंध दोस मानीजै जिणसूं काव्य नैं उबारणौ चाहिजै।

2. छबकाळ दोस –

जठै अेक सूं अनेक भासावां रै सबदां रौ प्रयोग होवै बठै भासा री अेकरूपता भंग होवै। दूजी भासावां रै

सबदां रौ प्रयोग काव्य में छबकाळ दोस कहीजै–

बन बैठो भलां चढो गिर–बदरी, धरा भेख के धारो।

चित नंहि लग्यो राम के चरनां, नंह जब लग निसतारो।।

भैरव देव अदेव भलांई, निरखो फिर फिर नैनां।

मुगत तणी साता रो मालिक, हरि बिन दाता है नां।।

टीप : इण काव्य में ''नांहि, चरनां, नैनां, जब लग, मालिक, है नां'' आद सब सबद ब्रज भासा अर फारसी रा है। इण डिंगळ गीत में सगळा सबद ठेठ राजस्थानी भासा रा आवणा चाहिजै। भासा विडरूपता रै कारण अठै छबकाळ दोस लागै।

3. हीण दोस –

जिण काव्य–रचना में अरथ रौ अनरथ या अरथ रौ साफ खुलासौ नीं होय सकै बठै हीण दोस लागै–

पात सुजस अखियात पयंपै, दातव असमर बात दुवै।

जग में राम तुहाळै जोड़ै, हुवो न कोई फेर हुवै।।

टीप : इण पद में राम री बडाई करीजी है। 'राम' सबद सूं अरथ रौ खुलासौ पूरौ नीं होवै। राम तो जग में तीन परसराम, बलराम अर रघुवंसी राम है। इण गीत में वांरै वंस, मात–पिता या जात–पांत रौ ई वरणाव कोनी होयौ, फगत राम री स्तुति करीजी है। जठै इण भांत रौ वरणाव होवै बठै हीण दोस कविता में मानीजै।

4. निनंग दोस –

हिंदी में इणनैं 'अक्रमत्व' दोस कैवै। जठै पैली री बात पछै अर पछै री बात पैली कहीजै। विगतवार बात कथीजण रौ भाण जठै नीं होवै वो निनंग दोस मानीजै।

3 वसू मांस कादम मचो असत परवत वणै,
रूधिर मिळ सरतपत हुओ रातो।

1 अजोध्यानाथ दसमाथ रावण अडग,

2 महा बे ओर भाराथ मातो।।

टीप – इण काव्य रचना में वरणाव है कै धरती माथै मांस रौ कादाकीच है। हाडकां रा परबत बणग्या। खून सूं समदर रातौ होग्यौ। राम अर रावण दोनूं जोधा अडिग है अर दोनां में जबर जुद्ध छिड़्योड़ौ है। अठै पैली जोधावां रा नाम, जुद्ध अर पछै जुद्ध रै दरसाव री बात नीं होवण रै कारण क्रमभंग अर निनंग दोस है।

5. पांगळो दोस –

जद किणी छंद में छंद–सास्त्र रै नियमां मुजब मात्रावां या वरणां री गिणती कमो–बेसी होवै बठै पांगळो दोस कविता में मानीजै–

उमा कह्यौ इम ईस नै, उपज्यौ विभ्रम अेह !
किंकरि ऊपर महर कर, संकर ! मेट संदेह।।

टीप – ऊपरलौ छंद दूहौ है जिणमें 13, 11 मात्रावां होवै पण इण छंद रा चौथा या आखरी चरण में फगत 10 मात्रावां ईज होवण रै कारण पांगळो दोस लागै।

6. जात–विरोध दोस

जद अेक गीत में न्यारी–न्यारी जात रा छंदां रौ प्रयोग कर्‌यौ जावै तो बठै जात–विरोध दोस कविता में दीखै–

अवनी में जिके भलांई आया, करै सदा सुकरत रा कांम।

दान सदा वित्त सारू देवै, नित रसणां लेवै हरि नांम।।1।।
गिणजै सद ज्यांरी जिंदगाणी, उभै विरद धरियां अखत।
प्रारंभै दौलत पुन पाणां, पुणै सुबाणां सीतपत।।2।।
धन वे पुरष बडा पणधारी, खलक सिरोमण सुजस खटै।
उमगे दान ऊधमै आचां, राम राम मुख हूंत रटै।।3।।
देह जिकण बातां अै दोई, तिके सदाई तीखा।
बीजा जड़ जंगम वसुधा रा, सारा जीव सरीखा।।4।।

टीप – इण गीत रा हरैक चरण में न्यारा–न्यारा छंदां ज्यूं वेलियो गीत, खुड़द सांणोर, सोहणो सांणोर अर जांगड़ो सांणोर रौ प्रयोग होयो है। अेक गीत रा सगळा द्वाळां में अेक ई छंद काम में लेवणौ चाहिजै। न्यारी जात रा छंदां में ई अठै 'जांगड़ो छंद' आवण सूं जात–विरोध दोस बणै।

7. अपस दोस –

किणी बात रौ सीधौ–सादौ वरणाव नीं कर'र जठै गूढ अरथ या भेद वाळी भासा रौ प्रयोग करयौ जावै। बात कैवण रौ ढाळौ अनोखौ, अटपटौ अर गैराई लियोड़ौ होवै, बठै 'अपस' दोस कहीजै–

गिरतनया पत सिख ग्रभ गंजण, सुध निसबासर सेवै।
जादवपत राणी बंधव जिहिं, दंड कदै नह देवै।।

टीप – गिरि (हिमालय) री बेटी पारबती रा पति भगवान संकर रा सेवग रावण रा मद नैं चूर करणवाळा भगवान रामचन्द्र रौ, जिका समझणहार मिनख ध्यान–अरदास करै, जादवपत कृष्ण री राणी जमुना रौ भाई जमराज वांनैं कदैई दंड नीं देवै। अरथ री गूढ़ता रै कारण अठै 'अपस दोस' है। अठै फगत इत्ती बात कैवणी ही कै रामचन्द्रजी री सेवा करणवाळा नैं जम रौ दंड नीं लागै।

8. नाळच्छेद दोस –

काव्यसास्त्र री रीत मुजब जथावां रौ विगतवार प्रयोग नीं होवण सूं अर मनमान्या ढंग सूं वरणन करण सूं 'नाळच्छेद दोस' होवै–

नरहर समरतां नह बीते नाणों, लब सूं तिको न लेवै।
परनारी निरखै कर प्रीतां, दाम हजारां देवै।।1।।
लेता नाम छिदाम न लागै, विगत जिका नह व्यापै।
आछी त्रिया देख अवरां री, सहसां माल समापै।।2।।
तरसै देख अवर बनतावां, भूलै रघुवर भौळा।
जद करसी पिसतावो जम रा, दूत फिरैला दौळा।।3।।
सुचिता होय भजो साहब नैं, पामै सदगत प्रांणी।
वेद–पुराण कहै पर वामां, नरकां तणी निसांणी।।4।।

टीप – इण गीत में पैली भगवान रो भजन, पछै परनारी प्रीत री वरजना, फेर तीजा चरण में परनारी, प्रभु भजन नैं भूलणौ अर जम रा दूत सगळी बात कैवण सूं जथावां रौ क्रमभंग होयौ है इण वास्तै अठै नाळच्छेद दोस बणै।

9. पखतूट दोस –

जिण कविता रै अेक पद में अनुप्रास होवै अर दूजै में अनुप्रास रौ प्रयोग नीं होवै तो उठै पखतूट दोस कहीजै–

अठी राम रा सुभड़ नै सुभड़ रावण उठी,

लंक रे जोरवर खेत लड़वा।

तीर सेलां छूरां झींक तरवारियां,

बाजिया बिनै ही रंभ–**वरबा**।।

तहक निसांण गिरवांण हरखांण तन,

चिंता सरसांण रंभगांण चाळै।

निडर रिषरांण गणपांण बीणा नचै,

भांण रथ तांण घमसांण भाळै।।

टीप – इण गीत में पैला चरण में कच्ची जोड़ (अनुप्रास रहित) रौ प्रयोग होवण सूं अठै पखतूट दोस लागै।

10. बहरो दोस –

जठै सबद योजना सूं दोय अरथ निकळै। अरथ समझण में भ्रम होवै उठै बहरो दोस लागै। ज्यूंकै–

''रावण हणियौ राम''

अठै 'हणियो' सबद दोनूं कांनी लाग सकै जिणमें दो अरथ बणै, रावण नैं राम मारियौ या पछै राम नैं रावण मारियौ ?

इणी भांत अेक गीत री छेकड़ली ओळी है–

''वीर भागो नहीं सारवागां।''

अठै 'नहीं' सबद दोनूं कांनी आय सकै जिणसूं अेक अरथ बणै कै तरवारां बाजियां पछै ई वीर जुद्ध सूं भाग्यौ कोनी। दूजौ अरथ बणै तरवारां बाजियां बिना ई वीर जुद्ध सूं भागग्यौ। बात रौ दोवड़ौ अरथ निकळै या अरथ रौ अनरथ होवै बठै बहरो दोस कविता में लागै। अेक उदाहरण औरूं देखौ–

दुझल जिण भुजां बळहूंत आठूं दिसां।

लंघ सामंद कीधी लड़ाई।

जीत लीधी जमी कठैथी जेणरी,

पराजै हुई नंह फतै पाई।।

टीप – अठै गीत रा आखरी चरण में 'पराजै हुई नंह' (पराजय कोनी होयी), 'नंह फतै पाई' (विजय कोनी पाई) अरथ रौ खुलासौ नीं होवण रै कारण बहरो दोस है।

11. अमंगळ दोस –

छंद रै चरण रा पैला अर आखरी वरण सूं अमंगळ सूचक सबद बणै तो उठै अमंगळ दोस होवै। ज्यूंकै–

''महपन में पय राम रै।''

अठै पैला अर अंतिम वरण सूं 'मरै' सबद बणै। जिको अमंगळकारी है।

'रघुनाथ रूपक' रा अेक गीत री आ ओळी कै–

''**म**हपत बंदे पांव मुनी **रा**''

'मरा' सबद ई अमंगळ कांनी इसारो करै। इण तरै रा प्रयोग काव्य में अमंगळ दोस नैं दरसावै।

काव्य में अै सगळा दोस वैणसगाई नैं मिटाय देवै। आं ईज दोसां रै कारण दोय पखां रा सगाई संबंध ई छूट जावै। रघुनाथ रूपककार कैवै कै आंधो, धोळा दागवाळौ, नपुंसक, पांगळा, जात विरुद्ध, मिरगी रोगवाळा, नाळभ्रस्ट, पक्षाघात रोगवाळा अर बहरा मिनख नैं कोई आपरी बेटी नीं देवै। आं काव्य–दोसां नैं ध्यान

में राखतां थकां कविता या छंद रचना करणी चाहिजै।

14.5 इकाई रो सार

राजस्थानी कवियां ई संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंस री छंद परंपरा नैं अपणाय'र आपरै परंपरागत अर नूंवै आयामां सूं मौलिक छंदां री रचना करी।

छंद–सास्त्रीय ग्रंथां में पिंगळ मुनि रो पिंगळ सूत्र तो घणौ चावौ है। जूना ग्रंथां में 'पिंगळ सिरोमणि' आपरी न्यारी पिछाण राखै जिणरी रचना जैसलमेर रा रावळ हरराज करी ही। राजस्थानी छंदसास्त्र री परंपरा में 17वीं सताब्दी रै पछै रा कैई महताऊ ग्रंथ सांमी आवै उणमें मारवाड़ रै घड़ोई गांव रा हमीरदान रतनू रो लखपत पिंगळ, गुण पिंगळ प्रकास आद आपरी डेढ सौ सूं ऊपर ग्रंथ–रचनावां रौ उल्लेख मिळै। राजस्थानी छंदसास्त्रकारां में हमीरदान रतनू रो नाम सिरमौड़ है। किसना आढ़ा रचित 'रघुवरजस प्रकास', मंछाराम सेवग रचित 'रघुनाथ रूपक', जोगीदास कृत 'हरि पिंगळ', उदयराम सूंगा रा 'कवि कुळ बोध' आद छंदसास्त्र रा महताऊ ग्रंथ है। छंद–सास्त्रीय परंपरा रै आधुनिक जुग में बूंदी रा कवि मुरारीदान रो 'डिंगळ कोस' छंदां री दीठ सूं अनूठो ग्रंथ है। इणरै पछै उदैचन्द भण्डारी रो 'रूपदीप पिंगळ', हरदान सिंढायच रो 'छंद दिवाकर', दूलजी सिंढायच अर हिंगळाजदान कविया (सेवापुरा) री छंद–रचनावां रीति ग्रंथ रै रूप में सांमी आवै। इणसूं आ बात पुख्ता होवै कै राजस्थानी छंदसास्त्र री परंपरा ई उणरी काव्य परंपरा ज्यूं समृद्ध है।

14.6 अभ्यास रा प्रस्न

1. दूहा छंद बाबत विद्वानां रा विचार अर उणरै भेदां री व्याख्या उदाहरण सहित करौ।
2. किणी दो सम मात्रिक छंदां री व्याख्या उदाहरण सहित करौ।
3. किणी दो वरणिक छंदां री व्याख्या उदाहरण सहित करौ।
4. डिंगळ गीत छंदां री ओळखाण करावतां थकां 'गीत झमाळ' री उदाहरण सहित व्याख्या करौ।
5. गीत छंद सांणोर रै भेदां रा नांव गिणावतां थकां छोटो सांणोर अर वेलियो सांणोर री व्याख्या उदाहरण सहित करौ।
6. वैण सगाई रौ अरथ समझावतां थकां अलंकार रै भेद उपभेद नैं समझावौ।
7. अनुप्रास अलंकार सूं आप कांई समझौ ? इणरै भेदां रा नांव गिणावतां थकां अनुप्रास अलंकार रा उदाहरण देवौ।
8. अरथालंकारां रा नांव गिणावतां थकां वांरौ उदाहरण सहित खुलासौ करौ।
9. 'यमक' अर 'श्लेष' अलंकार किण जाति रा अलंकार है। इणां नैं उदाहरणां सूं समझावौ।
10. उपमा, रूपक अर उत्प्रेक्षा अलंकार नैं सरल रीति सूं कियां समझ्यौ जाय सकै ? उदाहरण सूं खुलासौ करौ।
11. काव्य में अलंकारां रै महत्त्व नैं समझावौ अर भेदोपभेद रा नांव गिणावतां, किणी अेक अलंकार नैं उदाहरण सहित समझावौ।
12. 'वैण सगाई अलंकार राजस्थानी रौ चावौ अलंकार रैयौ है'। इण बाबत आपरा विचार राखौ।
13. राजस्थानी रा काव्य–दोसां रौ उदाहरण समेत वरणाव करावौ।
14. कोई दो छंदां री उदाहरण सहित व्याख्या करौ–
    (i) कवित्त (ii) छप्पय (iii) सवैया (iv) मोतीदांम
15. कोई दोय डिंगळ गीत छंदां री ओळखाण उदाहरण सहित करौ।
    (i) सुपंखरौ (ii) गीत सेलार (iii) छंद निसांणी (iv) सुद्ध सांणोर

14.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. रघुनाथ रूपक, महताब चन्द खारैड़ (सम्पादक), साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
2. डॉ. कल्याणसिंह शेखावत राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर – राजस्थानी भाषा : साहित्य एवं संस्कृति,।
3. डॉ. मनहर गोपाल भार्गव, श्री राकेश (सम्पादकद्वय) –रस, दोष, छंद, अलंकार निरूपण।
4. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, आनन्द प्रकाशन, जोधपुर – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य।
5. 'रामरासौ', सम्पादक शुभकरण देवल (सम्पादक), साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
6. डॉ. नारायणसिंह भाटी (सम्पादक), राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर – परम्परा (भाग 76)।
7. सम्पादक मूलचन्द 'प्राणेश', भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर – 'नागदमण',।
8. सम्पादक सी. पी. देवल, चारण शोध संस्थान, अजमेर – 'माताजी रा छंद'।
9. गिरधरदान रतनू 'दासोड़ी', राजस्थानी सा. एवं सं. जनहित प्रन्यास, बीकानेर – छंदां री छौळ,।

इकाई – 15

पाठालोचन : सिद्धान्त, प्रक्रिया अर प्रशिप्त अंश

इकाई रो मंडाण

15.0 उद्देस्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 पाठालोचन : सिद्धान्त

15.3 पांडुलिपि विग्यान अर पाठालोचन

15.4 पाठालोचन प्रक्रिया

15.5 प्रशिप्त अंश

15.6 इकाई रो सार

15.7 अभ्यास रा प्रस्न

15.8 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

15.0 उद्देस्य

इण इकाई रौ उद्देस्य विद्यार्थियों नैं पाठालोचन री सम्पूर्ण प्रविधि समझावणौ है। सागै ई इणमें औ पण प्रयास करीज्यौ है कै इण इकाई सूं विद्यार्थी आछी तरै समझ लेवै कै पाठालोचन रौ स्वरूप, सिद्धान्त अर उणरी प्रक्रिया कांई है। साथै ई किणी पांडुलिपि रै मूळ पाठ मांय क्षेपक रै रूप में आवण वाळा प्रक्षिप्त अंशां री जाणकारी किण भांत करीजै, इणसूं भी विद्यार्थियां नैं अवगत करावणौ है। इणरै अलावा –

1. पाठालोचन री जरूरत क्यूं मैसूस हुई, इणनैं भी विद्यार्थी आछी तरै समझ सकैला।
2. पाठ–सम्पादन री विधि बाबत सगळी जाणकारी विद्यार्थियां नैं इण इकाई में मिळैला।
3. इण इकाई सूं ठा पड़ैला कै महताऊ काव्यां में प्रक्षिप्त–अंश किण कारण किण भांत सूं जुड़ता रैया है।
4. राजस्थानी री महताऊ पांडुलिपियां रै पाठ–संपादन रौ संक्षिप्त परिचै करावणौ भी इण इकाई रौ अेक उद्देस्य है।

15.1 प्रस्तावना

जूनै जमानै में मिनख आपरै ग्यान, भावां अर विचारां री अभिव्यक्ति मौखिक रूप सूं देंवतौ रैयौ। होळै–होळै लिपिकला रै विगसाव रै साथै ई बीं रा अै भाव–विचार पत्थरां, स्तम्भां, ताम्रपत्रां अर केळै रै पातां माथै लिखित रूप में लिपिबद्ध हुवण लाग्या हुवैला। फेरूं भी औ काम घणौ अबखौ अर अस्थाई हो। पत्थर री शिलावां अर लोह स्तम्भां माथै आपरी अभिव्यक्ति नैं लिखित रूप देवण सारू उणनैं अणूती मैणत करणी पड़ती अर बगत ई घणौ लागतौ। ताम्रपत्रां अर केळै रै पातां माथै लिखीजण वाळा लेखां नैं सुरक्षित राखणौ ई घणौ दो'रौ काम हौ। इणरै पछै ताड़पत्र अर भोजपत्रां माथै लिखावट रौ काम सरू हुयौ अर इणरै साथै ई स्याही बणावण रौ तरीकौ ई ईजाद होयग्यौ अर बगत रै परवाण खुरदरौ कागज ई बणणौ सरू होयग्यौ। इणसूं मिनख रै ग्यान–विग्यान नैं सहेजनै थिर राखण री दिसा में अेक महताऊ काम हुयौ। मिनख रौ औ ग्यान–विग्यान जका माध्यमां सूं सहेजनै सुरक्षित राख्यौ गयौ, मोटै अरथ में वे सगळा माध्यम पांडुलिपि री परिभाषा में आंवता रैया है, क्यूंकै बै सगळा माध्यम मिनख रै हाथ री सैनाण्यां है। पांडु रौ अरथ पीळी खड़िया अर लिपि रौ अरथ लीपणो है। शिलावां माथै उकेर्‌या आखरां मांय खड़िया रै लेपण सूं बणी लिखावट ''पाण्डुलिपि'' कहीजी। बियां बीस बरस पुराणी हस्तलिखित पोथी ''पाण्डुलिपि'' मानी जावै। आजकाल किणीं रचना री टंकित प्रति भी ''पाण्डुलिपि'' रै

नांव सूं जाणी जावै। मोटै रूप मांय पाण्डुलिपि उण हस्तलिखित ग्रंथ नैं मान्यौ जावै, जिणमें खुद लेखक आपरै हाथ सूं गद्य–पद्य मांय कीं–न–कीं उपयोगी सामग्री लिपिबद्ध करै। उणरौ लेखन ग्यान–विग्यान, धरम, अध्यात्म, लोकविश्वास, चिकित्सा, खगोल–भूगोल, नीति, दर्शन अर काव्य इत्याद किणी भी विषय माथै होय सकै।

लेखक री मूळ पाण्डुलिपि रै बाद में बीजा लिपिकर्तागण और केई प्रतिलिपियां बणाय लेंवता। अै प्रतियां अळगा–अळगा ग्रंथ भंडारां अर खास–खास विद्वानां री धरोहर बण जांवती। पण प्रतिलिपि बणावती बगत प्रमादवश गळतियां होवणी सुभाविक ही। मूळ पाठ री अेक प्रतिलिपि बणियां पछै उणमें रैयोड़ी भूलां नै आगलौ प्रतिलिपिकार तौ है ज्यूं कायम राखतौ इज, साथै ई आपरी तरफ सूं केई गळतियां न्यारी कर देंवतो। गळतियां करण रै साथै ई अै प्रतिलिपिकार केई बार आपरै ग्यान रौ बघार लगावता थका उणमें केई क्षेपक (प्रक्षेप) अर्थात् प्रक्षिप्त अंश औरूं जोड़ देंवता, जका मूळ प्रति में कठैई लाघता ई कोनी। आगै सूं आगै आं प्रक्षेपां में बधोतरी होंवती रैवती। केई बार तो बगत बीत्यां मूळ प्रति नष्ट होय जावती अर पछै आं प्रतिलिपियां रै पाठां में इत्तौ घालमेळ होय जावतौ कै पाठ–संपादक सारू मूळ पाठ तांई पूगणौ ई अबखौ काम होंवतौ। अैड़ी दशा में उण प्रति रै मूळ पाठ री पड़ताळ करनै मूळ मंतव्य तांई पूगणौ घणौ अबखौ होंवतौ। किणी ग्रंथ री केई प्रतियां भेळी करनै उणरै मूळ पाठ तांई पूगण रौ जतन जिण विधि सूं करयो जावै, उण विधि रौ नांव इज पाठालोचन, पाठ–सुधार कै पाठ–संपादन री विधि अर पाठालोचन–सिद्धान्त है।

पाठालोचन रौ औ काम यूं तो संसार री केई भाषावां में हुयौ अर इण दिशा में काम करणियां लोगां रा अनुभव अर बांरै काम करण रा तीर–तरीका अेक शास्त्र रौ रूप ग्रहण कर लियौ। इण क्षेत्र मांय **कार्ल लकमैन** रौ नांव सगळां सूं पुराणौ है। लकमैन पाठालोचन री जकी प्रणाली अपणाई, बा इण दिशा में पैलौ प्रयास मानीजै। बींरी आ प्रणाली 'वंशानुगत–पद्धति' मानीजै। इण पद्धति रौ खास सिद्धान्त औ हो कै जकी प्रतियां मांय अेक जैड़ी पाठ–विकृतियां मिळै उणरी आदर्श कै पैलड़ी प्रति अेक ई होसी अर जठै पाठ विकृतियां अेक सरीखी नीं भी मिळै पण खास पाठां री उपलब्धि मांय प्रतियां अेक जैड़ी होवै तो बीं री आदर्श कै पैलड़ी प्रति भी अेक इज होसी।

पाठानुसंधान प्रक्रिया रै क्षेत्र मांय **हेनरी क्वेंटिन** रौ नांव आवै। हालांकै उणां मोटै रूप में लकमैन री प्रणाली नै इज आगै बधाई पण उण मांय इणां री मौलिकता आ ही कै उणां प्रतिलिपियां रै शाखा – निर्धारण सारू अेक न्यारौ सिद्धान्त थापित कर्‌यौ। इण सिद्धान्त रै त्हैत उणां साबित कर्‌यौ कै जे अेक प्रति रौ पाठ दूसरी अर तीसरी प्रति सूं मिळै अर कीं अंश तांई बो दोनां सूं मिळै, पण इणरै उलटौ तीसरी प्रति सूं दूसरी अर पैली प्रति कानी ध्यान कर्‌यां परिणाम शून्य कै अर्द्धशून्य मिळै तौ औ तय है कै पैलड़ी प्रति दूसरी अ तीसरी प्रति री आदर्स प्रति है पण बै दोनूं प्रतियां आपसरी में किणी री आदर्स प्रति नीं है। इण वास्तै पैलड़ी प्रति, दूसरी अर तीसरी प्रति मांय सूं अेक री प्रतिलिपि अर दूजोड़ी री आदर्स प्रति होसी।

पाठानुसंधान री दिशा में इज **विण्टन ए. डीयरिंग** (अमेरिकन) आपरी पद्धति नैं सगळी पद्धतियां सूं सिरै बताई अर इण पद्धति रौ नांव राख्यौ–पाठ–विश्लेषण। उणां 'प्रति' अर 'पाठ' रै अंतर नैं ध्यान में राखता थकां प्रति–परंपरा अर पाठ–परंपरा नैं दो वस्तुआं रै रूप में प्रतिपादित करी। प्रति द्वारा प्रदत्त पाठ अेक मनगत तथ्य है अर पाठ प्रदत्त करण वाळी प्रति अेक शारीरिक क्रिया है। प्रतियां मांय सुरक्षित पाठ अर पाठ रौ संवहन करण वाळी प्रतियां दोनूं रचना री पाठ–परंपरा री स्थिति निर्धारण करण में सहायक मानीजै।

आपरी न्यारी–निकेवळी पद्धति सूं पाठ–समस्या रै सरलीकरण सारू **आर्किबैल्ड हिल** भांत–भांत री सम्भावनावां रै विकल्पां सूं लड़ालूम वंश–वृक्षां रै महत्त्व रै मूल्यांकन रौ सिद्धान्त थरप्यौ। उणां रै मुजब जठै प्रतियां रा पाठ–संबंध केई भांत सूं थरपित होय सकै, बठै बां संबंधां रै महत्त्व नै। आकलित करण सूं पाठ–समस्या अेकदम सरल होय जावैला।

विदेशी विद्वानां रै साथै भारतीय भाषावां में ई पाठालोचन अर्थात् पाठ–संपादन रौ मोकळौ काम होयौ। इण दिशा मांय धार्मिक ग्रंथ 'महाभारत' रौ संपादन घणौ महताऊ मानीजै। इण ग्रंथ रौ पाठ–सम्पादन डॉ. विष्णु सीताराम सुकथांकर रै सान्निध्य मांय केई विद्वानां मिळनै कर्‌यौ। महाभारत रै आदिपर्व रौ पाठ प्रस्तुत करता थकां डॉ. सुकथांकर लिख्यौ, ''भाषा–शास्त्रियां रै प्राचीनतर स्कूल मांय प्राचीन पाठां रा आलोचनात्मक संस्करण त्यार

करण सारू च्यार सीढ़ियां निर्धारित है – 1. सामग्री–संकलन 2. पाठ–चयन 3. पाठ–सुधार 4. उच्चतर आलोचना। आ प्रणाली उण काम सारू घणी सांतरी है जिण सारू इणरौ प्रयोग वांछित है, पण औ नीं भूलणौ चाईजै कै अंतपंत औ इण बात माथै निरभर है कै कमोबेश उण पाठ री प्रतिलिपियां अर उणांरी आदर्श प्रतियां अैड़ी प्रतिलिपि–परम्परां सूं संबद्ध हुवै कै निर्णायक रूप सूं बै अेक आधिकारिक मूळ आदर्श तांई पूग सकै।

'महाभारत' रै मूळ पाठ रौ संपादन सन् 1918 मांय पूना री भंडारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट कानी सूं सरू करीज्यौ। हालांकै इणसूं पैलां इण रो मूळ पाठ तय करण सारू प्रो. अेम. विंटरनित्स रौ ध्यान गियौ हौ। भंडारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना कानी सूं डॉ. विष्णु सीताराम सुकथांकर रै निर्देशन मांय औ काम सरू करीज्यौ। इण सारू महाभारत रै आदिपर्व री अढाई सौ नैड़ी प्रतियां भेळी करीजी। अै प्रतियां संस्कृत समेत विभिन्न भारतीय भाषावां में उपलब्ध ही। आं मांय पैंतीस–चाळीस प्रतियां नै आदर्स प्रतियां मानीजी जकी मूळ पाठ रै नैड़ी ही। सूक्ष्म अर गहन अध्ययन सूं करीज्यै इण पाठ–सम्पादन रै उपरान्त डॉ. सुकथांकर कैयौ, ''इण ग्रंथ सूं औ नीं मान लेवणौ चाईजै कै इणसूं महाभारत रौ मूळ पाठ मिलग्यौ है अर इणमें अबै और कीं गुजांइश नीं है।'' कैवण रौ अरथ औ कै पाठानुसंधान री प्रक्रिया प्राचीन समै सूं चालती आई है अर आ लगौलग चालसी रैसी।

पाठालोचन अर पाठ–सम्पादन रौ औ काम लगैटगै सगळी भारतीय भाषावां में होवतौ रैयौ है। राजस्थानी भाषा रा विद्वान ई इण कार्य में लारै नीं रैया। पांडुलिपि–संपादन री दीठ सूं राजस्थान रा शोध–विद्वान आखै देस में आगीवाण रैया है। अठै जोधपुर रा जैन मुनि जिनविजयजी अर बीकानेर रा अगरचंदजी नाहटा जैड़ा शोधवेत्ता पांडुलिपि – संग्रहालयां री थरपणा करी, बठै इज अलेखूं विद्वानां रौ पाठालोचन रै सीगै मारग–दरसण पण कर्‌यौ। बीकानेर री इज विद्वान त्रयी प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, पं. सूर्यकरण पारीक अर ठा. रामसिंह 'ढोला–मारू रा दूहा', 'क्रिसन रुकमणी री वेलि' अर राजस्थान के लोकगीत (दो भाग) जैड़ा ग्रंथां रै संपादन–प्रकाशन सूं देश–भर में घणा चावा होया। इणसूं पैलां बीकानेर नैं आपरी करमथळी बणावण वाळा इटली रा विद्वान डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी 'वेलि' रै संपादन सूं अर अगरचंद नाहटा 'पृथ्वीराज रासौ' रै संपादन सूं चरचा में आय चुक्या हा। राजस्थान रा शोध–विद्वानां रै संपादित ग्रंथां माथै विचार करां तो अगरचंद–भंवरलाल नाहटा (सीताराम चौपई), आचार्य बद्रीप्रसाद साकरिया (मुंहता नैणसी री ख्यात), डॉ. भूपतिराम साकरिया (दुरसा–आढ़ां ग्रंथावली, अचलदास खीची री वचनिका), डॉ. नारायण सिंह भाटी (मारवाड़ रा परगनां री विगत), डॉ. देव कोठारी (गोरा–बादल पद्मिनी चौपई), श्री सौभाग्यसिंह शेखावत (बिन्है रासौ), डॉ. शक्तिदान कविया (सोढायण), डॉ. हीरालाल माहेश्वरी (जांभोजी री वाणी, मेहोजी कृत रामायण), श्री मूलचंद प्राणेश (नागदमण, लोक महाभारत, छंद राउ जइतसी रउ), डॉ. हीरालाल माहेश्वरी (मेहोजीकृ रामायण), श्री सूर्यशंकर पारीक (गौर ब्यावली), डॉ. मदन सैनी (रामरास, सीत पुराण, कृष्णावतार) अर श्री शुभकरण देवल (रांम रासौ) आद खास है। राजस्थान रै शोध–संस्थानां सूं जुड़्योड़ा डॉ. हुकमसिंह भाटी, डॉ. डी. बी. क्षीरसागर शकुन्त (उदयपुर), शंकरसिंह राजपुरोहित (बीकानेर) इत्याद रा नांव भी पांडुलिपि–संपादन री दीठ सूं घणा महताऊ है। आं रै अलावा डॉ. भूपतिराम साकरिया (गुजरात), डॉ. कल्याण सिंह शेखावत अर डॉ. शक्तिदान कविया (जोधपुर), डॉ. मदन सैनी (बीकानेर) अर भंवरसिंह सामौर (चुरू) इत्याद केई पांडुलिपियारै संपादन रौ काम कर्‌यौ है।

ऊपर लिख्योड़ा ग्रंथा मांय 'राजस्थान के लोकगीत', 'लोक महाभारत' अर 'सीतापुराण' री पांडुलिपियां लोकगायकां सू सुण–सुणनै लिपिबद्ध कर्‌योड़ी प्रतियां सूं संपादित करीजी है। इणसूं आं ग्रंथां री गिणती लोक–साहित्य मांय करीजै। आं ग्रंथां रौ संपादन करती वेळा विद्वान पाठालोचक फुटनोट देंवता थका न्यारी–न्यारी प्रतियां रै सबद–रूपां नैं तो दरसावै इज, इणरै सागै इज कठिन सब्दां माथै क्रमांक दरसांवता थकां बांरै अर्थ नैं भी दरसावै। केई संपादक तौ अैड़ा सबदां री अकारादि क्रम सूं सूची बणायनै परिशिष्ट में अर्थ–सेती सबदकोश देवण रौ भी जतन करै अर केई पाठालोचकां रै संपादन में 'पाठ' रौ अर्थ या भावार्थ भी देखण नैं मिळै। इणरै सागै ई किणी जरूरी संदर्भ माथै ओपती टिप्पणी भी संपादित ग्रंथ नैं महताऊ बणावण में उपयोगी सिद्ध हुवै। ऊपर लिख्योड़ी बातां रौ समावेश जिण पांडुलिपि में मिळै, बा पांडुलिपि शोध–संपादन री दीठ सूं घणी महताऊ मानी जावै।

15.2 पाठालोचन : सिद्धान्त

पाठालोचन :

पांडुलिपि संपादन री दीठ सूं 'पाठालोचन' अेक घणमोलो सबद है। हिन्दी–राजस्थानी सबदकोश अर हिन्दी थिसारस (समान्तर कोश) मांय औ सबद नीं है, पण इणसूं इणरी उपयोगिता कम नीं हुय जावै। पाठलोचन रौ सीधौ–सो अरथ है – पाठ री आलोचना, जांच–पड़ताल, परख अर परीक्षण। किणी रचना री न्यारै–न्यारै पाठां री प्रतिलिपियां रै अध्ययन, अनुशीलन अर निश्चित सिद्धान्त रै अनुगमन द्वारा उण रचना रै मूळ पाठ तांई पूगण री प्रक्रिया पाठालोचन कहीजै। दूजै सबदां में पाठालोचन उण बौद्धिक अर शास्त्रीय विधि नैं कैय सकां जिण मांय पाठ रै संबंध मांय निरणै देंवता थकां मूळ पाठ रौ निर्धारण करयौ जावै। इणरै सागै ई मूळ पाठ रै स्वरूप रौ निर्धारण, सुधार अर उणरौ संपादन भी इणरै त्हैत इज आवै। पाठालोचन सारू 'पाठ' रौ हुवणौ जरूरी है। पाठ सबद रा केई अरथ है, जियां – पढणै री क्रिया, किणी विषय रौ बौ हिस्सौ, जकौ अेक बार में पढायौ जावै, धरमग्रंथ रौ नितनेम सूं पाठ, वेदपाठ, परिच्छेद, वाक्य, सबक अर गद्य–पद्य इत्याद रौ लिखित रूप। पांडुलिपि या हस्तलिखित ग्रंथ में खुद लेखक रै हाथ सूं गद्य–पद्य मांय लिख्योड़ी लेखन–सामग्री इज 'पाठ' या 'मूळ पाठ' रै रूप में जाणी जावै।

मूळ पाठ री उपयोगिता

मूळ पाठ सूं लेखक री लिखावट अर भाषागत ग्यान रौ पतौ चालै। उणरी वर्तनी अर सबद–रूपां सारू सावचेती री भी पिछाण होय जावै। मूळ पाठ सूं लेखक रै वाक्य–विन्यास अर सबद–ग्यान रौ भी पतौ चालै। मूळ पाइ सूं इज पांडुलिपि रा कागज, स्याही, तिथि अर और भी घणी सारी इतियासू बातां री जाणकारी मिळै। इण पाठ सूं बीजी प्रतियां रा पाठां सूं मेळ करयां पाठांतर अर पाठभेदां री लिपि, वर्तनी, सबदं रै अर्थ मांय हुवण वाळै रूपांतर री प्रक्रिया रौ भी ग्यान होय जावै। औ ज्ञान पाठालोचन री प्रक्रिया सूं 'आदर्स पाठ' या मूळ पाठ रै निर्धारण में घणौ सहायक सिद्ध होवै। मूळ प्रति अर उणरी बीजी प्रतियां मांय प्रयोग में आवण वाळी स्याही, हड़ताल रौ उपयोग, चितराम–मांडणा, कागज अर उणरौ आकार, हाशियौ इत्याद भी पाठालोचन में मददगार होवै।

पाठ–विकार या पाठांतर रा कारण :

किणी भी पांडुलिपि रौ मूळ तौ अेक इज होवै, क्यूंकै मूळ लेखक अेक इज प्रति त्यार करै। केई–केई लेखक आपरै अेक ई ग्रंथ री दो–च्यार और भी प्रतियां बणाय लिया करै, पण अैड़ी बानग्यां नीं रै बरोबर इज देखण नै मिळै। पण उण ग्रंथ री महत्ता देखतां थकां बीजा लिपिकर्तागण घणी सारी प्रतियां त्यार कर लिया करता हा अर फेर उण ग्रंथ री प्रतिलिपियां विद्वानां, पोथीखानां अर धनी–मानी शौकीन लोगां री धरोहर बण जांवती।

अै लिपिकर्ता मूळ लेखक रा समकालीन भी हुंवता अर बाद रा भी। ज्यूं–ज्यूं टैम बीततो जांवतौ, बांरी भाषा, सबदां अर अर्थ तकात में पाठाफोर होंवतौ जांवतौ। इणी कारण अेक इज ग्रंथ री न्यारै–न्यारै काळखंडां मांय त्यार करयोड़ी पांडुलिपियां में सबदगत अर अर्थगत मोकळौ फरक देखण नै मिळै। अैड़ी दशा में हरेक पाठक री अेक इज कामना हुवै कै बो उण ग्रंथ रौ मूळ पाठ जाणै–समझै। इणी सारू पाठालोचन री जरूरत पड़ै। उदाहरण री दीठ सूं आपां 'रामचरितमानस' री बात करां। मानस री मूळ प्रति तौ गोस्वामीजी रै हाथ सूं लिख्योड़ी इज ही, जिणनैं बै आपरै कनैं राखता अर लोगां नैं सस्वर गा–गायनै सुणांवता। इणसूं उण ग्रंथ रौ मोल बधतौ गयौ। बांरौ ग्रंथ इत्तौ चावो होयौ कै हर कोई उणरी अेक प्रति आपरै कनैं राखण रा मंसूबा बणावै लाग्यौ, पण सगळां सारू आ बात सम्भव नीं ही। गोस्वामी जी रै उण ग्रंथ सूं लिपिकर्तागण अेक–अेक, दो–दो प्रतियां त्यार करली। इणरै पछै बां त्यार हुयोड़ी प्रतियां सूं बीजा लिपिकर्तागण और केई प्रतियां बणाई। फेर बां प्रतियां सूं भी बीजी प्रतियां बणाईजी। औ क्रम चालतौ इज रैयौ अर देस–भर में रामचरितमानस री हजारूं प्रतियां होयगी, जकी आज भी हस्तलिखित ग्रंथ भंडारां अर संग्रहालयां मांय सुरक्षित है।

इणी भांत बारहठ नरहरिदास रौ ग्रंथ 'अवतार चरित' या 'विजय अवतार गीता' नांव सूं मोकळा

संग्रहालयां मांय मिळै। माधोदास दधवाड़िया रौ 'रांमरासौ' भी मोकळी ठौड़ मिळै। पण अै ग्रंथ जित्ता ज्यादा जगचावा हुया, उणी परिमाण में आंरी प्रतिलिपियां भी मोकळी इज बणाईजी। बां प्रतियां मांय मोकळा विकार आया अर केई ठौड़ तो अरथ रौ अनरथ भी देखण नै मिळै। आं प्रतिलिपियां मांय विद्वानां री दीठ सूं अठारा भांत रा पाठ–दोष गिणाया गया है, जियां–विरस, विसर, विश्लिष्ट अर काक–स्वर। इणरै अलावा अन्वय अर पदच्छेद सूं होवण वाळा दोष भी पांडुलिपियां रै संपादन में बाधा बण जाया करै। पाठ–विकार रौ मोटौ कारण तौ न्यारै–न्यारै काळखंड रा लिपिकां रौ निजू ग्यान, बांरौ परिवेश अर भाषा–ग्यान में समानता रौ नीं होवणौ इज है। लिपि–दोष रा केई और भी कारण होवै, जियां – लिपिकर्ता में पुराणी लिपि नैं सही पढणै री योग्यता रौ अभाव होवै। उणरौ निजू सबदकोश भी थोड़ौ होवै। लिपि रा केई आखरां री लिखावट में घणौ फरक नीं होवण रै कारण कीं–रो–कीं इज पढ लियौ जावणौ, जियां – ध, घ, थ अर द्य में, म, भ में अर य, च, ष, प अर ख जैड़ा आखरां में अेक री ठौड़ बीजै आखर नैं लिख्यौ जाय सकै। राम री ठौड़ राय या राच अर घर री ठौड़ धर पझढ लेवणै में कोई इचरज री बात नीं है। सबद–विकार री दीठ सूं चरचा करां तौ गोस्वामीजी रै हनुमान चाळीसै री अेक ओळी याद आय जावै, जिण माथै विद्वानां में मोकळौ मतभेद रैयौ है। ओळी है – ''संकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जग बंदन।'' इण ओळी में केई विद्वानां रौ कैवणौ है कै 'सुवन' री ठौड़ 'सुतन' या 'सुतन्न' सबद भी केई पांडुलिपियां मांय मिळै। जदकै रामभद्राचार्यजी रौ कैवणौ है कै आ ओळी ''संकर स्वयं केसरी नंदन'' है।

इणी भांत सबदां रै अन्वय सूं भी पाठ में विकार आय जावै। पैलां विराम–चिह्नां रौ प्रयोग नीं होया करतौ। औ काम पाठक री सूझ माथै इज छोड दियौ जांवतौ। तुलसीदासजी री अेक ओळी ''समरथ को नहिं दोस गुंसाई'' नैं लेयनै भी विद्वान पाठालोचकां में विवाद रैयौ है। आं विद्वानां रै अे तबकै रौ औ कैवणौ है कै इण ओळी में 'को' रै बाद में प्रश्नवाचक चिह्न रौ आगम है। बांरी दीठ में गोस्वामी जी कैवै – ''समरथ को ?'' अर्थात् समरथ कुण है ? इणी रौ उत्तर आगै है – ''नहिं दोस गुंसाई'' अर्थात् जिणमें कोई देस नीं हुवै, बो इज समरथ है।

पांडुलिपि रै सरुआती हिस्सै मांय मंगळाचरण इत्याद होवै, उणनैं कळस कैयौ जावै अर छेकड़लौ हिस्सौ पुष्पिका रै नांव सूं ओळखीजै, जठै ग्रंथ–लेखन री तिथि, वार, सवंत्, स्थान अर देसकाळ सूं जुड़्योड़ी सूचनावां हुवै। संवत् निर्धारण सारू पाठालोचक नैं संख्यागत रूढ्यां, बांरा अर्थ अर 'अंकानाम् वामतो गतिः' सिद्धान्त रौ भी ध्यान राखणौ चाहीजै। ग्रंथ री लिपि करणियै रौ नांव अर किणरै कैवण सूं लिपि करी, औ संकेत भी पुष्पिका में मिळै। लिखण में तो लिपिकर्ता आ बात भी बठै लिखै कै जिस्यौ लिख्योड़ौ हो, ठीक बियां रौ बियां ही लिख्यौ है, पण देखणै में आ इज आवै कै लिपिकर्ता सूं प्रमाद अर लापरवाही रै कारण केई ठौड़ लिखणै में चूक होय जावै।

इण चूक नैं छूट, लोप अर आगम विकार रै रूप में भी आपां देख सकां। केई बार लिपिकर्ता किणी सबद रौ पैलौ या छेकड़लौ आखर लिखणौ भूल जावै। केई मात्रावां में भूल रैय जावै, तो केई बार किणी सबद नैं दो बार लिख देवै। पूरी ओळी दुबारा लिख्योड़ी तो पकड़ में घणी सो'री आवै, पण गळत सबद री ठौड़ सही सबद री सोध सरल काम नीं है।

डॉ. सत्येन्द्र इण सारू अेक उदाहरण देंवता थकां लिखै कै 'छरहटा' सबद लिपिक रै दाय नीं आयौ, तौ बौ उणरी ठौड़ 'चिरहटा' लिख दियौ। कठै तौ छरहटा मतळब कै छळ री हाट अर कठै चिरहटा, मतळब कै चिड़िमार ! इणी भांत बै डॉ. किशोरीलालजी रै विचारां री अेक और बानगी देंवता थकां लिखै – 'आखतले' रै पदान्वय में 'आंख तले', 'आखत ले' जैड़ा सबद – रूपां नैं देख्या जाय सकै। अठै 'आ खत ले' भी पढ्यौ जाय सकै। विद्वान संपादक आपरै भाषा–ग्यान अर ग्रंथ री मूळ संवेदना नैं समझतौ थकौ ई पाठालोचन री प्रक्रिया में पाठ–निर्धारण रौ काम करै। 'आंख' रौ मतळब हुवै 'कुदाली' पण लिपिकर्ता नैं इणरौ ग्यान नीं हुवै अर बौ समझै कै अठै अनुस्वार छूटग्यो है, तौ बौ अनुस्वार लगायनै 'आंख' री ठौड़ आंख लिख देवै। 'आखत' रो मतळब अक्षत अर्थात् चावळ होवै अर 'खत' रौ मतळब ओळियो होवै। लिपिकर्ता अर पाठालोचक नैं इण बात रौ भी ध्यान राखणौ चाहीजै कै उण ग्रंथ रौ लिपिकाल कुण–सो है। 'खत' अरबी भाषा रै सबद है अर देस–काळ वातावरण री दीठ

सूं औ सबद उण बगत चलण में हौ कै नीं ? अर अर्थ री दीठ सूं उण ठौड़ ओपतौ लखावै कै नीं लखावै, इण बात रौ निरणै भी पाठालोचक री सूझ सूं इज सम्भव है।

लिपिकर्तागण ब, व/ट, ठ/ज, झ/ग, रा/ख, स्व/च, व/भ, म/नु, तु/स्त, स्व इत्याद वर्णां नैं पढणै में घणी बार भूल कर बैठै। केई लिपिकर्ता किणी रै वाचन नैं सुण–सुणनै लिख्या करता, बठै भी केई भूलां होय जांवती। मोटै रूप में सबदां रो रूपभेद अैड़ा लिपिकर्तावां री लिपि मे देख्या जाय सकै। जियां – जावई, आवइ, खावइ सबदां नैं सुणनै जावै, आवै, खावै लिखणौ अर जावउ, आवउ, खावउ, जैड़ा सबदां नै सुणनै जावौ, आवौ, खावौ अर इणरै पछै भाषा–विकास री दीठ सूं जावो, आवो, खावो सबद–रूपां रौ मिलणौ बोल–सुणनै लिखणै रौ इज परिणाम है।

ग्रंथ मांय भूलां री पड़ताळ सारू लिपिकां रौ वंशवृक्ष बणावणौ घणौ उपयोगी सिद्ध होवै। जियां काळखंड अर भाषा–शैली रै मुजब मूळ प्रति या उणरै घणी नैड़ै री प्रति मान लेवौ कै 'क' है अर उणसूं लिपिबद्ध होयोड़ी प्रति 'ख' है, जिणरी पांच प्रतियां बणाई गई या और भी, पण पाठालोचक कनैं जित्ती भी उपलब्ध होवै, बांनै ख–एक, ख–दो, ख–तीन अर इणी क्रम में आगै भी नंबर दिया जाय सकै। फेर आं प्रतियां सूं लिपिबद्ध करयोड़ी प्रतियां जिण क्रम संख्या रै मूळ पाठ सूं त्यार करयोड़ी मिळै, बांनै भी उण क्रम तळै वंशवृक्ष रै रूप में राखणी चाहीजै। पाठ–भेद अर पाठालोचन सारू औ वंशवृक्ष घणौ महताऊ सिद्ध होवै।

पाठालोचन में सबद अर अर्थ रौ निरणै

पाठालोचन मांय सबद अर अर्थ री महताऊ भूमिका होवै। सबद अर अस्थगत निरणै पाठालोचन नैं भाषा–विग्यान अर साहित्य सूं जोड़ण रौ काम करै। इण दीठ सूं पांडुलिपि–संपादन री दो विधियां मानी जावै–पैली वैग्यानिक विधि अर दूजी साहित्यिक विधि। आं दोनूं विधियां मांय सबद अर अर्थ माथै जोर देवण सूं इज विभेद करीज्यौ है। वैग्यानिक सबद माथै जोर देवै, जदकै साहित्यिक विधि अर्थ माथै। किणी पांडुलिपि रै संपादन में आं दोनूं विधियां री महताऊ भूमिका रैवै। सबद–निर्धारण सूं इज अरथ री उपज होवै। अठै कबीर रै अेक पद री इण ओळी माथै विचार करणौ संगत रैवैला –

''हमघरसूततनहिनिततानाा।''

इण ओळी रौ अन्वय करणै सूं पाठालोचक रै सांभी दो रूप आया, जका इण भांत है – 1. ''हम घर सूत, तनहि नित तानाा।'' इणरौ अर्थ होयौ कै म्हारै घर में मोकळौ सूत है अर अठै रोज ताणां तणता रैवै। मतळब कै कबीर रोजीना कपड़ौ बुणै। आगलौ रूप देखौ – 2. ''हम घर सूतत, नहि नित तानाा।'' इण ओळी रौ अर्थ होयौ म्हैं म्हारै घर में सोंवतौ रैवूं, क्यूंकै म्हारै कनै कपड़ौ बुणण सारू रोजीना ताणां नीं जुड़ै। अठै संभव होय सकै कै रेगिस्तान में रैवणियौ मिनख तौ दूसरौ अर्थ ई खरौ मानै पण जठै कपास री उपज होंवती रैवै, बठै रा लोगां नै पैलौ अर्थ इज ओपतौ लागसी। इणी भांत 'आखतले' रै पदान्वय सारू पैलां इज चरचा होय चुकी है। बठै भी पाठ रै निर्धारण सारू 'अर्थ' इज उपयोगी अर सहायक सिद्ध होय सकै है।

15.3 पांडुलिपि विग्यान अर पाठालोचन

पांडुलिपि–विग्यान रौ जाणकार विद्वान ई पांडुलिपि रौ मोल कूंत सकै। अैड़ौ विद्वान उण ग्रंथ रा कागज, स्याही, वर्तनी अर लिपि सारू आपरौ मतौ प्रगट करनै पाठालोचन मांय आवण वाळी, अबखायां कांनी संकेत करतौ थकौ केई भरमां रौ भी निवारण करणै में सहायता करै। पाठालोचन मूळ पाठ तांई पूगण री वैग्यानिक प्रक्रिया है, इण सारू ग्रंथ रा सगळा अंगां री जाणकारी रै सागै–सागै पाठालोचन री जाणकारी भी घणी जरूरी है।

पाठालोचन री केई प्रणालियां है, जियां– 'स्वेच्छया पाठ–निर्धारण प्रणाली', 'तुलनात्मक स्वेच्छया संपादनार्थ पाठ–निर्धारण प्रणाली' अर 'वैग्यानिक–प्रणाली' इत्याद।

स्वेच्छया पाठ–निर्धारण प्रणाली

इण प्रणाली मांय ग्रंथ–संपादक कनैं जकी प्रति होवै, उणनैं इज ठीक–ठाक करनै छपावण रौ काम करयौ जावै। अैड़ी प्रति में संपादक नैं जकी कमियां निगै आवै, बांनैं बो दूर करणै रौ जतन करै अर आपरी जाण

में अेक आदर्श पाठ त्यार कर लेवै अर उण माथै आपरौ मंतव्य लिखनै उण ग्रंथ नैं छपायनै समाज सांमी लावै।

तुलनात्मक स्वेच्छया संपादनार्थ पाठ–निर्धारण प्रणाली

तुलनात्मक स्वेच्छया संपादनार्थ पाठ–निर्धारण प्रणाली मांय संपादक या पाठालोचक कनैं अेक इज पांडुलिपि रा केई पाठ होवै। बां पाठां मांय सूं पाठालोचक आपरै विवेक सूं जकै पाठ नैं मूळ पाठ रै घणौ नैड़ौ मानै, उणसूं बीजी पांडुलिपियां रै पाठ री तुलना करै अर मूळ पाठ रौ स्वरूप–निर्धारण करनै उण ग्रंथ रौ संपादन करै। इण प्रणाली में स्वेच्छया पाठ–निर्धारण प्रणाली री तुलना में घणी प्रामाणिकता मिळै। इण प्रणाली में भी पाठालोचक आपरै मत नैं इज मंडित करतौ लखावै, पण बीजा पाठांतरां नैं नीचै टिप्पणी में देयनै आपरी टीप भी मांड देवै, जिणसूं पाठक भी उणरी संपादन–दीठ री परख कर सकै।

वैग्यानिक प्रणाली

वैग्यानिक प्रणाली में केई हस्तलेखां नैं भेळा करनै बांरी भूलां अर गळतियां में समानता या असमानता रै आधार माथै बांरौ अेक वंशवृक्ष बणा लियौ जावै। पछै बां हस्तलेखां री आपसरी में तुलना करता थकां मूळ पाठ संपादित करण सारू अेक आदर्श प्रति रौ निर्धारण कर लियौ जावै। अठै सूं इज पाठालोचन री प्रक्रिया सरू होवै, जिणनैं भाषा–विग्यान रौ अंग मान्यौ जावै, साहित्य रौ अंग नीं।

इण भांत आं तीनू ई प्रणालियां रै मार्फत पाठ–संपादन रौ काम कर्‌यौ जावै, पण इणरै सारू संपादक नैं पांडुलिपि विग्यान री पूरी जाणकारी होवणी जरूरी है।

15.4 पाठालोचन प्रक्रिया

पाठालोचन री प्रक्रिया में पैलौ काम मूळ ग्रंथ री प्रतियां रौ पतौ लगावणौ अर बांनैं भेळी करण रौ होवै। इण सारू पाठालोचक खास विद्वानां अर पांडुलिपि संग्रहालयां री सूची त्यार करै अर पछै बठै सूं उण ग्रंथ री प्रति हस्तगत करै। इणरै पछै भेळी कर्‌योड़ी पांडुलिपियां रै पाठ री आपस में तुलना करी जावै। तुलना सूं पैलां हरेक पांडुलिपि री पुष्पिका सूं या किणी बीजै साक्ष्य सूं कालखंड रौ पतौ लगायनै बां प्रतियां नैं अेक क्रम सूं राखी जावै अर बां माथै संकेत मांड्यो जावै। औ संकेत 'क', 'ख', 'ग', प्रति या 1, 2, 3 प्रति रै रूप में भी मांड्यौ जाय सकै, नीं फेर जकी ठौड़ सूं बा प्रति मिळी, उण ठौड़ रै नांव सूं भी उणनैं ओळखी जाय सकै, जियां – बीकानेर वाळी प्रति, भरतपुर वाळी प्रति इत्याद। सूची बणावती वेळा संकेत रै सागै इण उण प्रति रौ थोड़ौ घणौ विवरण भी लिख दियौ जावणौ चाहीजै, जिणसूं उण प्रति रै बाबत उपयोगी बातां रौ ग्यान होय सकै।

'संकेत' मांड्यां पछै भेळी कर्‌योड़ी प्रतियां रै भाषागत रूप रौ अध्ययन करणौ भी घणौ जरूरी होवै। जियां 'पछै' सबद सारू पछि अर पछइ सबद मिळै तौ 'ऊपर' सबद सारू उप्परि अर उप्परइ जैड़ा सबदां रौ प्रयोग देख्यौ जाय सकै। अैड़ा सगळा सबदां री सूची बणावणी संभव नीं है, पण किणी काळखंड में किणी सबद रा जका रूप चाल्या करता, बांरौ ग्यान पाठालोचक नैं होयां इज बौ पाठालोचन री प्रक्रिया में खरौ उतर सकै। अैड़ा केई सबद बानगी सारू अठै दिया जाय रैया है, जियां – दि (दै), मि (मइ), सिं (सइ), पवि (पव्वइ), शायर (सायर), भाजि (भजइ), ति (तइं, तै), बोलै (बोलि), कि (कइ), हि (हइ), इयै (इयइ, ईइ), दिषीह (दिषियइ), सोभीइ (सोभियइ), विरदीउ (विरदियउ), साजीउ (साजियउ), सुं (सउं), भू (भउ) इत्याद। अैड़ी वर्तनीगत विशेषतावां हिंदी मांय कम इज मिळै, पण राजस्थानी पांडुलिपियां मांय अैड़ै सबद–रूपां रौ संभार देख्यौ जाय सकै।

पांडुलिपि रै पाठ–निर्धारण सारू सगळी प्रतिलिपियां रै न्यारै–न्यारै पाठांतरां री तुलना करतां थकां छंद रा सबदां अर चरणां नैं भी निर्धारित कर्‌या जावै। वंशवृक्ष में जकी प्रतियां रै दो या तीन समूहां रै पाठ में समानता मिळ जावै, तो उण पाठ नैं घणौ महताऊ अर प्रामाणिक मान्यौ जावै। इणरै अलावा ग्रंथ में जका सबद–रूपां रौ प्रयोग मिळै, बां मांयसूं कठैई भूल रैय जावै, तौ उणनैं सुधारणै में कोई ताण नीं आवै। चरण री पूर्णता में रैयोड़ी भूल भी ग्रंथ रै अतःब्राह्य साक्ष्य सूं सुधारी जाय सकै।

अठै अेक बात और भी है अर बा आ है कै किणी ग्रंथ री मूळ प्रति मिळै इज नीं अथवा फगत मूळ प्रति इज मिळै, उणरी बीजी प्रतियां नीं मिळै तौ अैड़ी दशा में उण अेक प्रति सूं पाठालोचन या पाठ–संपादन करणौ

तो संभव है, पण अैड़ी दशा में 'स्वेच्छया पाठ–निर्धारण प्रणाली' इज काम में ली जावै। अैड़े पाठ–संपादन में पाठालोचक रौ पांडित्य अर ग्यान इज उणरौ मददगार बणै। इणरै सागै इज उण ग्रंथ रा अंतःब्राह्य साक्ष्य भी उण ग्रंथ रै संपादन में मोकळौ सैयोग करै। आ बात भी महताऊ है कै पाठालोचक नैं न्यारा–न्यारा काळखंडां रै भाषा–व्यवहार री पिछाण भी होवणी चाहीजै। छंदां रा भेद, चरणां री चाल, लय, मात्रावां अर संगीत–पख रौ ग्यान भी पाठ–निर्धारण में घणौ महताऊ सिद्ध होवै। किणी विद्वान पाठालोचक रौ साथ मिळणौ तौ और भी भाग री बात है।

15.5 प्रशिप्त अंश :

किणी पांडुलिपि री प्रतिलिपियां बणावती बगत प्रतिलिपिकार री तरफ सूं उणमें जोड़ीजण वाळा क्षेपकां (प्रक्षिप्त अंश) सूं मूळ पाठ में घणौ फरक आय जावै। इण भांत रा प्रयोग प्रतिलिपिकार द्वारा जाण बूझनै करीजै। कठैई मूळ पाठ समझ में नीं आवै, बठै लिपिकर्ता आपरै अनुमान सूं इज कीं लिखनै आगै बधतौ जावै। केई ठौड़ उणनैं लखावै कै मूळ पाठ में किणी घटना–प्रसंग में थोड़ी बात और जोड़ देवणी चाहीजै, जिणसूं उण मांय वर्णित प्रसंग और भी असरदार बण सकै, तो लिपिकर्ता नैं बठै कुण बरज सकै? पण अैड़ा क्षेपक उण ग्रंथ रै वंशवृक्ष रै बीजै समूह री प्रतियां सूं मिलाण करयां खुदोखुद ई अळगा होय जावै। केठै लिपिकर्ता तो आपरै नांव रौ संकेत भी उण क्षेपक सारू कर देवै, पण अैड़ा लिपिकर्तावां री संख्या कम इज है। मुक्तकां रै संग्रै में तो क्षेपकां री भरमार भी देखण नै मिळै। सूर, तुलसी, कबीर, मीरां अर चंद्रसखी रा पदां मांय अैड़ा मोकळा पद मिळै, जठै पद–रचना करणियौ आपरौ नांव नीं देयनै 'तुलसीदास भजो भगवाना', 'कहत कबीर सुनो भाई साधो' अर 'चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि' जैड़ी छाप लगायनै पाठालोचक सारू अबखाई खड़ी कर देवै।

'पाठ–संपादन के सिद्धान्त' पोथी मांय डॉ. कन्हैया सिंह लिखै, ''सचेष्ट विकृतियों को सामान्यतः प्रक्षेप कहा जाता है। अंग्रेजी में इसका समानार्थी शब्द है – इंटरपोलेशन। यह शब्द 'पालिस' धातु से निकला है जिसका अर्थ होता है चमत्कृत करना या चमकाना। वास्तव में प्रतिलिपिकार जब मूल पाठ में प्रक्षेप करता है तो उसका उद्देस्य उस पाठ को चमत्कृत करने या और चमकाने का ही होता है। संभव भी है कि प्रक्षेप के द्वारा मूल पाठ और सुंदर बन जाय परन्तु वैज्ञानिक पाठालोचन इस प्रक्रिया को हस्तक्षेप मानता है। यह प्रक्रिया चार प्रकार से होती है – आगम, लोप, विपर्यय और व्यत्यय।'' उणां इण तरै प्रक्षिप्त अंशां रा केई उदाहरण भी दिया है।

खैर, घणकरी बार लिपिकर्ता आपरै ग्यान रौ बघार लगावण सारू बिना अधिकार उणमें आपरी तरफ सूं केई सबदां में फोर बदळ कर देवै। जे किणी सबद रौ व्याकरण रूप जूनौ पड़ग्यौ है तौ केई बार लिपिकर्ता उणरै नूंवै रूप नैं मांड देवै, ज्यूंकै महाभारथ नैं महाभारत। राजस्थानी रै जूनै रूप में लड़ाई सारू 'भारथ' सबद ई प्रयोग में आवतौ रैयौ है। ज्यूंकै ''ऊंदरै–ऊंदरी में हुई रे लड़ाई, भारथ मचियौ भारी।'' कौरवां अर पांडुवां रौ जुद्ध चूंकै अेक लूंठौ अर निरणायक जुद्ध हौ, इण वास्तै उणनैं महाभारथ कहीज्यौ। औ इज महाभारथ सबद हिन्दी में 'महाभारत' लिखीजै। अबै राजस्थानी में 'भारथ' री ठौड़ 'भारत' सबद रौ इज प्रचलन है, इण सारू नूंवौ लिपिकार उणनैं 'भारत' रै रूप में मांड देवै। हालांकै इणसूं सबद रै अर्थ में कीं फर्क नीं पड़ै पण मूळ पाठ सागै तो छेड़छाड़ होवै ई है। इणी भांत पुराणै जमानै में 'कागर' सबद कागज अर कागद वास्तै प्रयोग में लिरीजतौ जिणनैं लिपिकर्ता आपरी समझ मुजब जूनी पांडुलिपियां रै 'कागर' सबद री ठौड़ भाषा–विकास री दीठ सूं कागद कै कागज सबद नैं मांडता आया है। राजस्थानी रै डिंगळ साहित्य में तौ अेक ई सबद रा केई रूप देखण नैं मिळै। ज्यूंकै तलवार रा तरवार, तेग, बीजळ, खड्ग आद केई सबद मिळै। लिपिकर्ता छंद री लय अर उणनैं अलंकृत करण सारू अैड़ा सबदां रौ प्रयोग आपरी इच्छा मुजब कर देवै।

इणी भांत केई बार मूळ पांडुलिपि में किणी छंद री कोई ओळी ग्रंथकार लिखणी भूल जावता कै पछै लिखण सारू खाली जाग्यां छोड देंवता। पछै केई बार बा ओळी लिखणी बिसर जावता। अैड़ी पांडुलिपियां री प्रतियां बणावती बगत लिपिकर्ता उण ओळी नैं आपरी तरफ सूं पूरी करण री खेचळ करै, पण पाठ–संपादन री दीठ सूं औ अनुचित है। मूळ पाठ में जे खाली जाग्यां छोडोड़ी है तो लिपिकर्ता नैं उणनै उणी भांत राखणौ चाहीजै अर पाठ–संपादन करण वाळा विद्वान नैं उण ठौड़ आपरी तरफ सूं टीप लिख देवणी चाहीजै।

केई बार मूळ प्रति कै आदर्श प्रति में गळतियां रैय जावै अर उणसूं मूळ रचना में बिखराव नैं मेटण अर टूट्योड़ी कड़ी नैं जोड़ण सारू लिपिकर्ता आपरै मन सूं उणमें कीं–न–कीं सामग्री जोड़ देवै। इणी भांत जे किणी रचनाकार री ख्याति रौ लाभ किणी खास संत–संप्रदाय नैं पूगावण रौ मंतव्य रैवै तौ उणरी रचना में उण संत–संप्रदाय रै सिद्धान्त सूं संबंधित कीं छंद बणायनै आपरै कानी सूं उणमें जोड़ देवै। इणरै अलावा किणी रचना नै औरूं ज्यादा चावी–ठावी करण अर उणनैं बढ़ा–चढायनै प्रस्तुत करण सारू ई इण भांत रा प्रक्षिप्त अंश जोड़ीज जावै।

राजस्थानी री प्रख्यात रचना 'पृथ्वीराज रासौ' रौ संपादन केई विद्वान संपादकां रै हाथां हुयौ है पण सगळा ई विद्वान संपादक इण बात नैं मानै है कै उण मांय मोकळा अर बाधू वरणन लिपिकर्तावां कर दिया, जका कै पाठालोचन री दीठ सूं प्रक्षेप ई मानीजसी। इण भांत रै प्रक्षिप्त अंशां सूं मूळ पाठ अर उण प्रति में घणौ अंतर आय जावै। इणी भांत 'महाभारत' अर 'रामायण' जैड़ै लूंठै धारमिक ग्रंथां मांय ई केई प्रक्षिप्त अंश देखण नैं मिळै। केई विद्वान तो 'रामायण' रै पैलै अर छेहलै कांड नैं पूरी तरै सूं क्षेपक रै रूप में मानै। मूळ पाठ में अै कांड कठैई होवैला, औ आज लग संशय इज बण्योड़ौ है। इणी भांत 'महाभारत' रौ पैली नांव 'जय काव्य' हो, पछै लिपिकर्ता उणरौ नांव फोर'र 'भारत–काव्य' कर दियौ अर आज औ 'महाभारत' रै नावं सूं लोकचावौ है।

पाठालोचन प्रक्रिया में प्रक्षिप्त अंशां माथै विचार करणौ महताऊ बात है। लिपिकर्ता मूल पाठ लिखणियै री भूल सुधारण सारू, उणरै छंद री लय अर गति नैं आपरी समझ सूं ठीक करण सारू अर किणी बात नैं औरूं इधकै तरीकै सूं समझावण सारू आपरी तरफ सूं केई घटना–प्रसंगां री घालमेळ करता रैया है। अैड़ी स्थिति में पाठ–संपादन करती बगत औ पतौ लगावणौ घणौ अबखौ काम है कै मूळ पाठ में किसा प्रक्षिप्त अंश है अर बै किण कारणां सूं जुड़्या है। प्रक्षिप्त अंशां री मौजूदगी सूं मूळ पाठ में घणी विकृति आय जावै, औ अेक तरै सूं उणनैं भ्रष्ट करण रौ प्रयास मानीजणौ चाहीजै। जठै तांइ संभव होवै पाठ–संपादन करती बगत इण तरै रा प्रक्षिप्त अंशां नैं मूळ प्रति सूं मिलायनै हटाय देवणा चाहीजै।

15.6 इकाई रौ सार

पाठालोचन सिद्धान्त अर इणरी प्रक्रिया साहित्य–जगत् री अेक महताऊ विधा है, जिणमें साहित्यकार री विद्वता अर उणरी सूक्ष्म दीठ रा दरसण हुवै। पाठालोचन रै इण काम में धीरज, धुन अर विवेक री दरकार हुवै। पाठालोचन रै इण काम में धीरज, धुन अर विवेक री दरकार रैवै। ग्रंथ री भाषा अर उणरै वंशवृक्ष री प्रतियां री भाषागत विशेषतावां नैं सावचेती सूं संभाळनै किणी अेक आदर्श प्रति नैं पाठालोचन रौ आधार बणावणौ भी घणौ अबखौ काम है। इणरै सागै इज मूळ लेखक अर न्यारा–न्यारा काळखंडां रा लिपिकर्तावां अर बीजा रचनाकारां रै भाषागत उतार–चढ़ाव नैं आंकणौ भी कोई सो'रौ काम नीं है। आं सगळी बातां नैं ध्यान में राखतां थकां इज पाठालोचन, पाठ–सुधार अर पाठ–निर्धारण रौ काम संभव हुय सकै। सावचेती, सुथराई अर वैग्यानिक दीठ सूं कर्‌यौ गयौ पाठालोचन मूळ ग्रंथ रौ खरौ, आदर्श अर शुद्ध पाठ तो पाठकां सांमी लावै इज, सागै ई देसकाळ अर परिवेशगत साच भी परतख करै। इण भांत कैय सकां कै पाठालोचन री वैग्यानिक विधि सूं संपादित पोथी समाज, संस्कृति अर इतियास री दीठ सूं भी घणी महताऊ सिद्ध होवै।

15.7 अभ्यास रा प्रस्न

बड़ा सवाल

1. पाठालोचन री सरूआती परम्परा माथै उजास नांखौ।
2. राजस्थान में पांडुलिपियां रै पाठ–संपादन माथै लघु लेख लिखौ।
3. पाठालोचन किणनैं कैवै ? पाठालोचन रै सिद्धान्त नैं विस्तार सूं समझावौ।
4. पांडुलिपि विग्यान अर पाठालोचन री प्रक्रिया माथै उजास नांखौ।
5. प्रक्षिप्त अंश (प्रक्षेप/क्षेपक) किणनैं कैवै ? लिपिकर्ता द्वारा जोड़ीजण वाळा प्रक्षिप्त अंशां नै कारण समेत समझावौ।

15.8 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. डॉ. सत्येन्द्र : अनुसंधान, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बॉस फाटक, वाराणसी।
2. डॉ. विनय मोहन शर्मा : शोध प्रविधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3 डॉ. नगेन्द्र : अनुसंधान और आलोचना, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. डॉ. उदयभानुसिंह : अनुसंधान का विवेचन, दिल्ली।
5. सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र : अनुसंधान के मूल तत्त्व, क. मा. मुंशी, हिन्दी विद्यापीठ, आगरा।
6. डॉ. शशिभूषण सिंहल, साहित्यिक शोध के आयाम, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली।
7. डॉ. सावित्री सिन्हा तथा विजयेन्द्र स्नातक : अनुसंधान की प्रक्रिया।
8. डॉ. कन्हैया सिंह : पाठ–सम्पादन के सिद्धान्त।
9. डॉ. मिथिलेस कांति तथा डॉ. विमलेश कांति : पाठालोचन सिद्धान्त और प्रक्रिया।
10. डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश : पाण्डुलिपि संपादन कला।
11. डॉ. सत्येन्द्र : पांडुलिपि विज्ञान।
12. डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा : प्राचीन लिपिमाला।
13. डॉ. एस. एम. कत्रे : भारतीय पाठालोचन की भूमिका।
14. डॉ. एम. पी. शर्मा : पांडुलिपि विज्ञान।
15. सं. डॉ. किरण नाहटा : पांडुलिपियाँ री ओळख अर अंवेर।